

विषयसूचिका

विषयः

पुटसङ्ख्या

आरोम्भोद्घातः प्रथमः—दीक्षाक्रमः

| | | | | | | |
|------------------------------------|---|---|---|---|---|----|
| भूमिका | . | . | . | . | . | १ |
| दीक्षाकालनिर्णयः | . | . | . | . | . | २ |
| गुरुलक्षणम् | . | . | . | . | . | ३ |
| शिष्यलक्षणम् | . | . | . | . | . | ६ |
| गुरुवरणम् | . | . | . | . | . | ७ |
| क्रमप्रवर्तनपूर्वकं शिष्याह्वानम् | . | . | . | . | . | ७ |
| त्रैपुरसिद्धान्तः | . | . | . | . | . | ८ |
| मन्त्रोपासनम् | . | . | . | . | . | ८ |
| उपासकधर्माः | . | . | . | . | . | ९ |
| सर्वसारभूते धर्मः | . | . | . | . | . | ९ |
| दीक्षाऽऽवश्यकत्वम् | . | . | . | . | . | ९ |
| शाम्भवी दीक्षा | . | . | . | . | . | ९ |
| शाल्ती दीक्षा | . | . | . | . | . | १० |
| मान्त्री दीक्षा | . | . | . | . | . | १० |
| दीक्षात्रये मुख्यगौणपक्षौ | . | . | . | . | . | ११ |
| इष्टमन्त्रदानम् | . | . | . | . | . | १२ |
| समवाचारानुशासनम् | . | . | . | . | . | १२ |
| कुलधर्मनिष्ठाफलम् | . | . | . | . | . | १३ |
| शिष्यस्य परचिद्रूपापादनम् | . | . | . | . | . | १३ |
| सर्वमन्त्राधिकारलामः | . | . | . | . | . | १३ |
| तत्तत्क्रमानुष्ठाने दीक्षाव्यवस्था | . | . | . | . | . | १३ |
| अधिकारिनिर्णयः | . | . | . | . | . | १४ |

विषयः

पुटसः

तरुणोद्गासो द्वितीयः—गणपतिक्रमः

| | | | | | |
|-------------------------------------|---|---|---|---|---|
| उपोदातः | . | . | . | . | . |
| काल्पटन्यादिकपोविशेषः | . | . | . | . | . |
| चतुराश्रितितर्पणमंकल्पादि | . | . | . | . | . |
| चतुराश्रितितर्पणम् | . | . | . | . | . |
| पूजाविधिः | . | . | . | . | . |
| यागमन्दिरागमनादि विप्रोत्सारणान्तम् | . | . | . | . | . |
| शिखाचन्धनादि मातृकान्यासान्तम् | . | . | . | . | . |
| पङ्कगन्यासः | . | . | . | . | . |
| व्यानम् | . | . | . | . | . |
| अर्घ्यसंस्कारः | . | . | . | . | . |
| पीठे प्राणप्रतिष्ठा | . | . | . | . | . |
| पीठशक्तिपूजा | . | . | . | . | . |
| धर्माद्यष्टकपूजा | . | . | . | . | . |
| महागणपतिपूजा | . | . | . | . | . |
| महागणपतितर्पणम् | . | . | . | . | . |
| पङ्कगपूजा | . | . | . | . | . |
| ओचत्रयपूजा | . | . | . | . | . |
| दिव्यौघः | . | . | . | . | . |
| सिद्धौघः | . | . | . | . | . |
| मानवौघः | . | . | . | . | . |
| दिव्यौघपाठान्तरम् | . | . | . | . | . |
| सिद्धौघपाठान्तरम् | . | . | . | . | . |
| मानवौघपाठान्तरम् | . | . | . | . | . |
| आवरणार्चनम् | . | . | . | . | . |
| प्रथमावरणम् | . | . | . | . | . |
| द्वितीयावरणम् | . | . | . | . | . |
| तृतीयावरणम् | . | . | . | . | . |
| चतुर्थावरणम् | . | . | . | . | . |

विषयः

पुस्तकध्या

| | | | | | |
|---------------------------------------|---|---|---|---|----|
| पञ्चमावरणम् | . | . | . | . | २९ |
| गणनाथस्य पुनस्तर्पणं, षोडशोपचारपूजा च | . | . | . | . | ३० |
| अग्निकार्यम् | . | . | . | . | ३० |
| थलिदानम् | . | . | . | . | ३० |
| तर्पणजपस्तोत्राणि | . | . | . | . | ३१ |
| सदाशिवप्रोक्तं गणेशाष्टकम् | . | . | . | . | ३२ |
| मुवामिनीपूजा | . | . | . | . | ३३ |
| पुरधरणविधिः | . | . | . | . | ३३ |

शैवनोद्घासस्तुतीयः—श्रीक्रमः

| | | | | | |
|-----------------------------------|---|---|---|---|----|
| १—आद्विषप्रकरणम् | . | . | . | . | ३६ |
| गुह्य्यानम् | . | . | . | . | ३६ |
| प्राणायामनम | . | . | . | . | ३७ |
| चिद्विमर्शः | . | . | . | . | ३८ |
| दृष्टा गृह्यार्हतिः | . | . | . | . | ३८ |
| रश्मिमात्रास्मरणम् | . | . | . | . | ३८ |
| अज्ञानमापत्रीभावना | . | . | . | . | ३८ |
| भूपार्थनादि सुखभाजनान्तम | . | . | . | . | ३८ |
| द्यानविधि | . | . | . | . | ३९ |
| मन्त्राविधिः | . | . | . | . | ४० |
| २—स्तपयोप्रकरणम् | . | . | . | . | ४१ |
| पातमन्दिरप्रवेशः | . | . | . | . | ४१ |
| श्रीचक्रपरिक्लृप्तनम | . | . | . | . | ४२ |
| संक्रान्तिसंज्ञा | . | . | . | . | ४२ |
| मन्दिरार्थ | . | . | . | . | ४३ |
| अग्निशक्तिविधानादि शैवप्रकरणान्तम | . | . | . | . | ४३ |
| भूतशुद्धि | . | . | . | . | ४४ |
| अज्ञानप्रतिनिधि | . | . | . | . | ४४ |
| प्रदोषप्रकरणम् | . | . | . | . | ४४ |

| विषयः | पुटसङ्ख्या |
|---|------------|
| पञ्चमावरणम् | २० |
| गणनाथस्य पुनस्तर्पणं, षोडशोपचारपूजा च | ३० |
| अग्निकार्यम् | ३० |
| बलिदानम् | ३० |
| तर्पणजपस्तोत्राणि | ३१ |
| सदाशिवप्रोक्तं गणेशाष्टकम् | ३२ |
| सुवासिनीपूजा | ३३ |
| पुरश्चरणविधिः | ३३ |

यौवनोद्धासस्तृतीयः—श्रीक्रमः

| | |
|--|----|
| १—आह्निकप्रकरणम् | ३६ |
| गुरुव्यानम् | ३६ |
| प्राणसंयमनम् | ३७ |
| चिद्रिमर्गः | ३८ |
| हृदा मूलावृत्तिः | ३८ |
| रश्मिमालास्मरणम् | ३८ |
| अजपागायत्रीभावनम् | ३८ |
| भूपार्थनादि मुखक्षालनान्तम् | ३८ |
| स्नानविधिः | ३९ |
| सन्ध्याविधिः | ४० |
| २—सपर्याप्रकरणम् | ४१ |
| यागमन्दिरप्रवेशः | ४१ |
| श्रीचक्रपरिकल्पनम् | ४२ |
| यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा | ४२ |
| मन्दिरार्चा | ४३ |
| वर्धनीपात्रनिधानादि दीपप्रक्षालनान्तम् | ४३ |
| भूतशुद्धिः | ४४ |
| आन्मप्राणप्रतिष्ठा | ४४ |
| प्रसूहोन्मार्गणम् | ४४ |

तरुणोद्घासो द्वितीयः—गणपतिक्रमः

| | | | | | | |
|-------------------------------------|---|---|---|---|---|----|
| उपोदातः | . | . | . | . | . | १५ |
| काल्पवृत्त्याह्निकयोर्विशेषः | . | . | . | . | . | १५ |
| चतुराशृत्तितर्पणसंकल्पादि | . | . | . | . | . | १५ |
| चतुराशृत्तितर्पणम् | . | . | . | . | . | १६ |
| पूजाविधिः | . | . | . | . | . | २१ |
| यागमन्दिरागमनादि विघ्नोत्सारणान्तम् | . | . | . | . | . | २१ |
| शिखाबन्धनादि मातृकान्यासान्तम् | . | . | . | . | . | २२ |
| पङ्ङगन्यासः | . | . | . | . | . | २२ |
| व्यानम् | . | . | . | . | . | २२ |
| अर्घ्यसंस्कारः | . | . | . | . | . | २३ |
| पीठे प्राणप्रतिष्ठा | . | . | . | . | . | २३ |
| पीठशक्तिपूजा | . | . | . | . | . | २४ |
| धर्माद्यष्टकपूजा | . | . | . | . | . | २४ |
| महागणपतिपूजा | . | . | . | . | . | २४ |
| महागणपतितर्पणम् | . | . | . | . | . | २५ |
| पङ्ङगपूजा | . | . | . | . | . | २५ |
| ओवत्रयपूजा | . | . | . | . | . | २५ |
| दिव्यौघः | . | . | . | . | . | २५ |
| सिद्धौघः | . | . | . | . | . | २६ |
| मानवौघः | . | . | . | . | . | २६ |
| दिव्यौघपाठान्तरम् | . | . | . | . | . | २६ |
| सिद्धौघपाठान्तरम् | . | . | . | . | . | २६ |
| मानवौघपाठान्तरम् | . | . | . | . | . | २६ |
| आवरणार्चनम् | . | . | . | . | . | २८ |
| प्रथमावरणम् | . | . | . | . | . | २८ |
| द्वितीयावरणम् | . | . | . | . | . | २८ |
| तृतीयावरणम् | . | . | . | . | . | २८ |
| चतुर्थावरणम् | . | . | . | . | . | २८ |

मुद्रामकरणम्

श्रीगुरुचरणमुद्राः

अर्चकमुद्राः

वर्षा मुद्रा

मङ्गलशुभमुद्राः

न्यास मुद्राः

जपे मुद्राः

५—न्यासप्रकरणम्

कार्तिकाख्यातः

आन्तरिक्षन्यासः

चतुरासनन्यासः

वाटापट्टन्यासः

यशिन्यादिन्यासः

मूलविद्यावर्णन्यासः

श्रीषोडशाक्षरन्यासः

संमोहनन्यासः

संहारन्यासः

सृष्टिन्यासः

स्थितिन्यासः

लघुषोडान्यासः

गणेशन्यासः

ग्रहन्यासः

नक्षत्रन्यासः

योगिनीन्यासः

राशिन्यासः

पीठन्यासः

श्रीचक्रन्यासः

त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः

सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यासः

१०

१०

११

११

११

१२

१२

१३

१५

१५

१५

१५

१६

१६

१६

१६

१७

१७

१७

१७

१८

१८

१०१

१०२

१०३

१०६

१०७

१०९

११०

११२

पेयः

पुटसङ्ख्या

| | |
|--------------------------|-----|
| १—मुद्रामकरणम् | ०० |
| धीगुरु इन्द्रमुद्राः | ०० |
| अर्पणमुद्रा | ०१ |
| अर्चने मुद्रा | ०१ |
| सङ्क्षोभिण्यादिमुद्राः | ०१ |
| न्यासे मुद्राः | ०२ |
| जपे मुद्राः | ०२ |
| ५—न्यासमकरणम् | ०३ |
| फरट्टिन्यासः | ०५ |
| आत्मरक्षान्यासः | ०५ |
| चतुरासनन्यासः | ०५ |
| बाढापडङ्गन्यासः | ०६ |
| वशिन्यादिन्यासः | ०६ |
| मूढविद्यावर्णन्यासः | ०६ |
| श्रीषोडशाक्षरीन्यासः | ०७ |
| संमोहनन्यासः | ०७ |
| संहारन्यासः | ०७ |
| सृष्टिन्यासः | ०७ |
| स्थितिन्यासः | ०८ |
| लघुषोढान्यासः | ०८ |
| गणेशन्यासः | १०१ |
| ब्रह्मन्यासः | १०२ |
| नक्षत्रन्यासः | १०३ |
| योगिनीन्यासः | १०६ |
| राशिन्यासः | १०७ |
| पीठन्यासः | १०९ |
| श्रीचक्रन्यासः | ११० |
| त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः | ११२ |
| सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यासः | |

विषयः

| | |
|--|-----|
| अर्घ्यशोधनम् | १७६ |
| सप्तार्णवपत्रपत्रपात्रः | १७६ |
| अष्टगण्डन्यासः | १७६ |
| मानुषकार्णवेष्टु भूतपञ्चासः | १७७ |
| तत्त्वाष्टकपात्रः | १७७ |
| यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा | १७८ |
| पीठपूजा | १७८ |
| आसनपूजा | १७८ |
| मूर्तिकल्पनम् | १७९ |
| देवीप्यानम् | १७९ |
| देव्याः षोडशोपचारपूजा | १८० |
| देवीतर्पणम् | १८० |
| ओषध्पयजनम् | १८० |
| आवरणार्चनम् | १८१ |
| देवीपुनःपूजाऽऽदि षड्विदानान्तम् | १८१ |
| वाराहीमन्त्रजपः | १८१ |
| वाराहीस्तोत्रम् | १८१ |
| वृन्दाराधनं, गुरुसन्तोषणं, शक्तिचटुकपूजा च | १८१ |
| हविःप्रतिपत्तिः | १८१ |
| मन्त्रसाधनम् | १८१ |

उन्मनोल्लासः पद्यः—परापद्धतिः

| | |
|----------------------------|--|
| उपोद्घातः | |
| काल्यकृत्यं आह्निकं च | |
| यागमन्दिरप्रवेशः | |
| प्राणायामः | |
| अङ्गन्यासः | |
| चिदम्बौ सर्वतत्त्वविलापनम् | |
| अर्घ्यशोधनम् | |

पुस्तकसूची

तत्त्वज्ञानसौ द्वितीयः—गणपतिक्रमः

| | |
|----------------------------------|----|
| उपोद्घातः | १५ |
| काश्यपहोम्यादिकसंविधिः | १५ |
| चतुस्रचिह्नार्चनसंज्ञादि | १५ |
| चतुस्रचिह्नार्चनम् | १६ |
| पूजाविधिः | २१ |
| यागमन्दिरागमनादि विधौःसारगान्तम् | २१ |
| शिवायन्धनादि मानूफान्यासान्तम् | २२ |
| पडङ्गन्यासः | २२ |
| व्यानम् | २३ |
| अर्पसंस्कारः | २३ |
| पीठे प्राणप्रतिष्ठा | २४ |
| पीठशक्तिपूजा | २४ |
| धर्माचष्टकपूजा | २५ |
| महागणपतिपूजा | २५ |
| महागणपतिर्पणम् | २५ |
| पडङ्गपूजा | २६ |
| ओषधयपूजा | २६ |
| दिव्यौघः | २६ |
| सिद्धौघः | २६ |
| मानवौघः | २६ |
| दिव्यौघपाठान्तरम् | २६ |
| सिद्धौघपाठान्तरम् | २६ |
| मानवौघपाठान्तरम् | २६ |
| आवरणार्चनम् | २६ |
| प्रथमावरणम् | २६ |
| द्वितीयावरणम् | २६ |
| तृतीयावरणम् | २६ |
| चतुर्थावरणम् | २६ |

वेद्यम्

सकृत्सोत्तमो द्वितीयः—गणराजिकम्

| | |
|---------------------------------------|----|
| उपनिषदाः | १५ |
| कालः पशुपतद्विक्रमो विधिः | १५ |
| पशुपतद्विक्रमो विधिः | १६ |
| पशुपतद्विक्रमो विधिः | २१ |
| पूजाविधिः | २१ |
| सागमन्दिशामन्त्रादि विधिः सागमन्त्रम् | २२ |
| शिवसाधनादि सागमन्त्रागमन्त्रम् | २२ |
| पङ्कगन्ध्यासः | २३ |
| प्यानम् | २३ |
| अर्पणसंस्कारः | २४ |
| पीठे प्राणप्रतिष्ठा | २४ |
| पीठराक्षसपूजा | २५ |
| धर्मोपपत्तपूजा | २५ |
| महागणपतिपूजा | २५ |
| महागणपतिवर्षणम् | २५ |
| पङ्कगपूजा | २६ |
| ओवप्रपूजा | २६ |
| दिव्यौघः | २६ |
| सिद्धौघः | २६ |
| मानवौघः | २६ |
| दिव्यौघपाठान्तरम् | २८ |
| सिद्धौघपाठान्तरम् | २८ |
| मानवौघपाठान्तरम् | २८ |
| आवरणार्चनम् | २८ |
| प्रथमावरणम् | २८ |
| द्वितीयावरणम् | २८ |
| तृतीयावरणम् | २८ |
| चतुर्थावरणम् | २८ |

| विषयः | पुटसङ्ख्या |
|---------------------------------------|------------|
| पञ्चमाशरणम् | २० |
| गणनाथस्य पुनस्तर्पणं, पौडभोपचाररूजा च | २० |
| अग्निकार्यम् | ३० |
| बलिदानम् | ३० |
| तर्पणजपस्तोत्राणि | ३१ |
| सदाशिवप्रोक्तं गणेशाष्टकम् | ३२ |
| सुवामिनीरूजा | ३३ |
| पुरधरणविधिः | ३३ |

गौवनोद्घासस्तृतीयः—श्रीक्रमः

| | |
|------------------------------|----|
| १—आदिकप्रकरणम् | ३६ |
| गुणव्यानम् | ३६ |
| प्राणसंयमनम् | ३७ |
| चिद्रिमर्शः | ३८ |
| एता मन्त्राष्टाणिः | ३८ |
| शक्तिमाताशमरणम् | ३८ |
| अज्ञानायापत्रीमाथनम् | ३८ |
| भूप्रार्थनादि गुणव्यानान्तम् | ३८ |
| शान्तिविधिः | ३९ |
| सन्ध्याविधिः | ४० |
| २—सपर्याप्रकरणम् | ४१ |
| शान्तिः | ४१ |
| श्रीशिवपरिवृत्तान्तम् | ४१ |
| स अश्वत्थप्रतिष्ठा | ४१ |
| श्री शान्तिः | ४३ |
| श्रीशिवपरिवृत्तान्तम् | ४३ |
| शुभशान्तिः | ४४ |
| श्रीशिवपरिवृत्तान्तम् | ४४ |
| श्रीशिवपरिवृत्तान्तम् | ४४ |

विषयः

पुटसंख्या

| | |
|---|----|
| न्यासजालविधिः | ४५ |
| पात्रासादनम्—सामान्यार्यविधिः | ४५ |
| विशेषार्यविधिः | ४७ |
| अन्तर्यामिः | ५१ |
| चतुष्पष्ट्युपचारार्चनम् | ५२ |
| पडदुर्गार्चनम् | ५५ |
| नित्यादेवीयजनम् | ५५ |
| गुरुमण्डलार्चनम् | ५७ |
| १—कादिविद्योपासकानाम् | ५७ |
| दिव्यौघः | ५७ |
| सिद्धौघः | ५८ |
| मानवौघः | ५८ |
| २—षोडश्युपासकानाम् | ५८ |
| दिव्यौघः | ५९ |
| सिद्धौघः | ५९ |
| मानवौघः | ५९ |
| ३—हादिविद्योपासकानाम् | ६० |
| दिव्यौघः | ६० |
| सिद्धौघः | ६० |
| मानवौघः | ६० |
| मन्वादिविद्यानां गुरुपम्परा | ६१ |
| दिव्यौघः | ६१ |
| सिद्धौघः | ६१ |
| मानवौघः | ६१ |
| अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमः | ६२ |
| दिव्यौघः | |
| सिद्धौघः | |
| मानवौघः | |
| आवरणपूजा | |

| | |
|-----------------------------------|----|
| न्यासजालविधिः | ४५ |
| पात्रासादनम्—सामान्यार्थविधिः | ४५ |
| विशेषार्थविधिः | ४७ |
| अन्तर्यागः | ५१ |
| चतुष्टयपुष्पचारार्चनम् | ५२ |
| पङ्कगार्चनम् | ५५ |
| नित्यादेयीयजनम् | ५५ |
| गुरुमण्डलार्चनम् | ५७ |
| १—कादिविद्योपासकानाम् | ५७ |
| दिव्यौघः | ५७ |
| सिद्धौघः | ५८ |
| मानवौघः | ५८ |
| २—पोडशुपासकानाम् | ५८ |
| दिव्यौघः | ५९ |
| सिद्धौघः | ५९ |
| मानवौघः | ५९ |
| ३—हादिविद्योपासकानाम् | ६० |
| दिव्यौघः | ६० |
| सिद्धौघः | ६० |
| मानवौघः | ६० |
| मन्वादिविद्यानां गुरुपम्परा | ६१ |
| दिव्यौघः | ६१ |
| सिद्धौघः | ६१ |
| मानवौघः | ६१ |
| अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमः | ६२ |
| दिव्यौघः | ६२ |
| सिद्धौघः | ६२ |
| मानवौघः | ६२ |
| आवरणपूजा | ६३ |

विषयः

पुटसङ्ख्या

| | | | | | |
|------------------------------|---|---|---|---|-----|
| सर्वसङ्क्षोभणचक्रन्यासः | . | . | . | . | ११३ |
| सर्वसौभाग्यदायकचक्रन्यासः | . | . | . | . | ११३ |
| सर्वार्थसाधकचक्रन्यासः | . | . | . | . | ११४ |
| सर्वरक्षाकरचक्रन्यासः | . | . | . | . | ११४ |
| सर्वरोगहरचक्रन्यासः | . | . | . | . | ११५ |
| आयुधन्यासः | . | . | . | . | ११६ |
| सर्वसिद्धिप्रदचक्रन्यासः | . | . | . | . | ११६ |
| सर्वानन्दमयचक्रन्यासः | . | . | . | . | ११७ |
| ६—जपप्रकरणम् | . | . | . | . | ११७ |
| जपविधिः | . | . | . | . | ११८ |
| जपोत्तराङ्गमन्त्राः | . | . | . | . | १२२ |
| रदिममालामन्त्राः | . | . | . | . | १२४ |
| रदिममालामन्त्राणां ऋष्यादयः | . | . | . | . | १२९ |
| ७—नैमित्तिकप्रकरणम् | . | . | . | . | १३६ |
| पर्वमु नैमित्तिकार्चनविधिः | . | . | . | . | १३६ |
| निव्यसनात् नैमित्तिके विशेषः | . | . | . | . | १३७ |
| निषेदने पक्षभेदा | . | . | . | . | १३७ |
| दमनविधिः | . | . | . | . | १३८ |
| चैत्रपूर्णिमाहृत्यम् | . | . | . | . | १३९ |
| वैशाखीहृत्यम् | . | . | . | . | १३९ |
| श्रेष्ठहृत्यम् | . | . | . | . | १३९ |
| आषाढहृत्यम् | . | . | . | . | १३९ |
| पवित्रारोपणविधि | . | . | . | . | १३९ |
| भाद्रपदहृत्यम् | . | . | . | . | १४० |
| आश्वयुजहृत्यम् | . | . | . | . | १४१ |
| कार्तिकहृत्यम् | . | . | . | . | १४१ |
| मार्गशीर्षहृत्यम् | . | . | . | . | १४२ |
| पौषहृत्यम् | . | . | . | . | १४२ |
| माघहृत्यम् | . | . | . | . | १४२ |

| पयः | पुटसङ्ख्या |
|------------------------------------|------------|
| —मुद्राभिकरणम् | ९० |
| श्रीगुरुवन्दनमुद्राः | ९० |
| अर्घ्यस्थापनमुद्राः | ९१ |
| अर्चने मुद्राः | ९१ |
| सङ्क्षोभिण्यादिमुद्राः | ९१ |
| न्यासे मुद्राः | ९२ |
| जपे मुद्राः | ९२ |
| —न्यासप्रकरणम् | ९३ |
| करशुद्धिन्यासः | ९५ |
| आत्मरक्षान्यासः | ९५ |
| चतुरासनन्यासः | ९५ |
| बालापङ्कगन्यासः | ९५ |
| वशिन्यादिन्यासः | ९६ |
| मूलविद्यावर्णन्यासः | ९६ |
| श्रीपोडशाक्षरीन्यासः | ९६ |
| संमोहनन्यासः | ९७ |
| संहारन्यासः | ९७ |
| सृष्टिन्यासः | ९७ |
| स्थितिन्यासः | ९७ |
| लघुपोदान्यासः | ९८ |
| गणेशन्यासः | ९८ |
| ग्रहन्यासः | १०१ |
| नक्षत्रन्यासः | १०२ |
| योगिनीन्यासः | १०३ |
| राशिन्यासः | १०६ |
| पीठन्यासः | १०७ |
| श्रीचक्रन्यासः | १०९ |
| त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः | ११० |
| सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यासः | ११२ |

विषयः

पुटसङ्ख्या

| | | | | | |
|------------------------------------|---|---|---|---|-----|
| होमप्रत्याम्नायो जपः | . | . | . | . | १५९ |
| सिद्धिपर्यन्तं पुरश्चरणस्य अभ्यासः | . | . | . | . | १६१ |
| पुरश्चरणप्रत्याम्नायाः | . | . | . | . | १६१ |
| कूर्मचक्रलक्षणम् | . | . | . | . | १६३ |
| मालासंस्कारः | . | . | . | . | १६३ |
| अक्षमालाया. संस्कारानपेक्षा | . | . | . | . | १६४ |
| रुद्राक्षमालासंस्कारः | . | . | . | . | १६४ |
| मालान्तरसंस्कारः | . | . | . | . | १६५ |
| देवताभेदेन सूत्रभेद | . | . | . | . | १६६ |
| मालासंस्कारकालः | . | . | . | . | १६६ |
| मालाभेदेन फलभेदः | . | . | . | . | १६६ |
| सूत्रजीर्णतादौ प्रायश्चित्तम् | . | . | . | . | १६६ |
| जपभेदाः | . | . | . | . | १६६ |
| कुण्डस्थण्डिलयोः परिमाणम् | . | . | . | . | १६७ |
| होमे इतिफर्तव्यताविशेष | . | . | . | . | १७० |
| साम्यहोमद्रव्याणां मानं फलं च | . | . | . | . | १७० |
| पुरश्चरणकाले विहितानि | . | . | . | . | १७१ |
| निषिद्धानि | . | . | . | . | १७१ |
| भोज्यानि | . | . | . | . | १७१ |
| अभोज्यानि | . | . | . | . | १७२ |
| भोजनपर्यायः | . | . | . | . | १७२ |

तदन्तोद्धारः पञ्चमः—इष्टिनीक्रमः

| | | | | | |
|----------------------|---|---|---|---|-----|
| उपोक्षणः | . | . | . | . | १७३ |
| साल्यहृत्य आद्विषं च | . | . | . | . | १७३ |
| यागमन्दिरप्रवेशः | . | . | . | . | १७४ |
| प्राणायामः | . | . | . | . | १७५ |
| टिकारीन्यासः | . | . | . | . | १७५ |
| वरदहृगन्यासः | . | . | . | . | १७५ |

प्रायश्चित्तः

११३

सौशील्यधर्मः--शान्तिधर्मः

| | |
|-----------------|-----|
| उत्सवः | ११४ |
| उत्सवः संवत्सरे | ११५ |
| प्रायश्चित्तः | ११६ |
| प्रायश्चित्तः | ११७ |
| प्रायश्चित्तः | ११८ |
| प्रायश्चित्तः | ११९ |
| प्रायश्चित्तः | १२० |
| प्रायश्चित्तः | १२१ |
| प्रायश्चित्तः | १२२ |
| प्रायश्चित्तः | १२३ |
| प्रायश्चित्तः | १२४ |
| प्रायश्चित्तः | १२५ |
| प्रायश्चित्तः | १२६ |
| प्रायश्चित्तः | १२७ |
| प्रायश्चित्तः | १२८ |
| प्रायश्चित्तः | १२९ |
| प्रायश्चित्तः | १३० |
| प्रायश्चित्तः | १३१ |
| प्रायश्चित्तः | १३२ |
| प्रायश्चित्तः | १३३ |
| प्रायश्चित्तः | १३४ |
| प्रायश्चित्तः | १३५ |
| प्रायश्चित्तः | १३६ |
| प्रायश्चित्तः | १३७ |
| प्रायश्चित्तः | १३८ |
| प्रायश्चित्तः | १३९ |
| प्रायश्चित्तः | १४० |
| प्रायश्चित्तः | १४१ |
| प्रायश्चित्तः | १४२ |
| प्रायश्चित्तः | १४३ |
| प्रायश्चित्तः | १४४ |
| प्रायश्चित्तः | १४५ |
| प्रायश्चित्तः | १४६ |
| प्रायश्चित्तः | १४७ |
| प्रायश्चित्तः | १४८ |
| प्रायश्चित्तः | १४९ |
| प्रायश्चित्तः | १५० |

विषयः

पुटसङ्ख्या

| | |
|---|-----|
| तत्त्वकदम्बस्य हृत्पद्मस्थापनम् | १०३ |
| पराचक्रनिर्माणम् | १०३ |
| चक्रे देव्याः पूजा | १०३ |
| देव्यां अखिलतत्त्वहोमभावनम् | १०४ |
| गुर्बोघ्नत्रययजनम् | १०४ |
| बलिदानम् | १०५ |
| परामनुजपः | १०५ |
| पराम्बुतिः | १०६ |
| हविःशेषस्वीकरणम् | १०६ |
| मन्त्रमाधनम् | १०७ |

अनवस्योद्धामः सप्तमः—साधारणक्रमः

| | |
|--|-----|
| उपोदानः | १०८ |
| सान्ध्यकृत्यं आदिकं च | १०८ |
| यागमन्दिप्रवेग | १०८ |
| प्राणायामः | १०९ |
| मातृकारद्दृग्गन्धार्गौ | १०९ |
| अर्घ्यशोधनम् | २०० |
| यन्त्रोद्धार | २०० |
| शंके, प्रदानदेवतायाः, तद्दृग्देवतानां च पूजा | २०० |
| गुर्बोघ्नत्रययजनम् | २०१ |
| श्रावणार्चनाय | २०१ |
| देवतायाः पुनः पूजा | २०३ |
| होम | २०३ |
| प्रदक्षिणार्त्तमन्त्रजपाः | २०३ |
| देवतास्तुति | २०४ |
| मन्त्रमाधनम् | २०५ |
| मन्त्राणां त्रिभिर्गोपः अर्चिःकर्त्तव्येदम् | २०५ |
| सर्गः, निरुद्धम् | २०६ |

धिपयः

पुरसङ्ख्या

| | | | | | | |
|--|---|---|---|---|---|-----|
| अर्घ्यशोधनम् | . | . | . | . | . | १७६ |
| सप्तार्णमन्त्रपञ्चकन्यासः | . | . | . | . | . | १७६ |
| अष्टखण्डन्यासः | . | . | . | . | . | १७६ |
| मातृकास्थानेषु मूलपदन्यासः | . | . | . | . | . | १७७ |
| तत्त्वाष्टकन्यासः | . | . | . | . | . | १७७ |
| यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा | . | . | . | . | . | १७८ |
| पीठपूजा | . | . | . | . | . | १७८ |
| आसनपूजा | . | . | . | . | . | १७८ |
| मूर्तिकल्पनम् | . | . | . | . | . | १७९ |
| देवीध्यानम् | . | . | . | . | . | १७९ |
| देव्याः षोडशोपचारपूजा | . | . | . | . | . | १७९ |
| देवीतर्पणम् | . | . | . | . | . | १८० |
| ओषधत्रययजनम् | . | . | . | . | . | १८० |
| आवरणार्चनम् | . | . | . | . | . | १८० |
| देवीपुनःपूजाऽऽदि बलिदानान्तम् | . | . | . | . | . | १८४ |
| वाराहीमन्त्रजपः | . | . | . | . | . | १८४ |
| वाराहीस्तोत्रम् | . | . | . | . | . | १८५ |
| वृन्दाराधनं, गुरुसन्तोषणं, शक्तिवटुकपूजा च | . | . | . | . | . | १८८ |
| हविःप्रतिपत्तिः | . | . | . | . | . | १८८ |
| मन्त्रसाधनम् | . | . | . | . | . | १८९ |

उन्मनोल्लासः पष्टः—परापद्धतिः

| | | | | | | |
|----------------------------|---|---|---|---|---|-----|
| उपोद्घातः | . | . | . | . | . | १९० |
| काल्यकृत्यं आदिकं च | . | . | . | . | . | १९० |
| यागमन्दिरप्रवेशः | . | . | . | . | . | १९१ |
| प्राणायामः | . | . | . | . | . | १९१ |
| अङ्गन्यासः | . | . | . | . | . | १९२ |
| चिदमौ सर्वतत्त्वविज्ञापनम् | . | . | . | . | . | १९२ |
| अर्घ्यशोधनम् | . | . | . | . | . | १९२ |

विषयः

पुस्तकसंख्या

| | |
|---|-----|
| तत्त्वकदम्बस्य हृत्पद्मस्थापनम् | १९३ |
| पराचक्रनिर्माणम् | १९३ |
| चक्रे देव्याः पूजा | १९३ |
| देव्यां अखिलतत्त्वहोमभावनम् | १९४ |
| गुर्बोघत्रययजनम् | १९४ |
| बलिदानम् | १९५ |
| परामनुजपः | १९५ |
| परास्तुतिः | १९६ |
| हविःशेषस्वीकरणम् | १९६ |
| मन्त्रसाधनम् | १९७ |

अनवस्योद्धासः सप्तमः—साधारणक्रमः

| | |
|---|-----|
| उपोद्घातः | १९८ |
| काल्पयज्ञस्य आह्निकं च | १९८ |
| यागमन्दिरप्रवेशः | १९८ |
| प्राणायामः | १९९ |
| मातृकापङ्कगन्धार्सा | १९९ |
| अर्घ्यसाधनम् | २०० |
| यन्त्रोद्धारः | २०० |
| चक्रे प्रधानदेवतायाः तद्दङ्गदेवतानां च पूजा | २०० |
| गुर्बोघत्रययजनम् | २०१ |
| आवरणार्चनम् | २०१ |
| देवतायाः पुनः पूजा | २०३ |
| होमः | २०३ |
| प्रदक्षिणनिर्मूलमन्त्रजपाः | २०३ |
| देवतास्तुति | २०४ |
| मन्त्रसाधनम् | २०५ |
| मन्त्राणां जातिनिर्णयः अधिकाग्निदेवध | २०५ |
| पत्नी सिद्धमन्त्राः | २०६ |

| विषयः | पृष्ठसंख्या |
|---|-------------|
| मुनिपुत्रो मन्त्रेणार्ति-पत्रम् | २०७ |
| मन्त्रेणैव विदियता मन्त्रः | २०८ |
| मन्त्राणां स्तुतिविधिः | २०९ |
| विद्याविद्येयान्तरम् | २०९ |
| मन्त्रान्तरेणान्तरम् | २११ |
| मन्त्रान्तरविधिः | २११ |
| मुनिपुत्रो मन्त्रेणार्ति-पत्रम् | २१२ |
| मन्त्राणां संख्या | २१५ |
| पुन्यविचारः | २१७ |
| देवतायोग्यानि पुन्यदीनि | २१७ |
| पुन्यदीनि | २१८ |
| मन्त्रेणैव विदियता मन्त्राणि विदितानि च | २१९ |
| येनास्तिनाशाधिः | २२० |
| विदितनिविद्यानि | २२१ |
| निविद्यानि | २२१ |
| मन्त्रं कलस्त्रं मुमुग्म् | २२२ |
| अधमम् | २२२ |
| पर्युपितमुमुग्मविचारः | २२२ |
| पर्युपितापवादः | २२२ |
| पर्युपितापवादोऽपि प्राद्व्यम् | २२३ |
| सर्वस्वैतस्यापवादः | २२३ |
| निवन्धाव्ययनमहिमा | २२३ |
| प्रन्धकर्तृप्रसक्तिः | २२४ |
| नित्योत्सयोदाहृतप्रन्धप्रन्धकारसूची | २२५ |

PREFACE TO THE SECOND EDITION

Nityotsava, the present work, was first edited by Pt. A. Mahādeva Sastri, the Curator of the Adyar and the Mysore Government Libraries and was published in the *Gaekwad's Oriental Series*, as No. XXIII in 1923. It then appeared as the second part or supplement to the *Paraśurāmakalpasūtra*, which too was published in the same year under the same editorship as No. XXII in the Series. The ever-growing interest of Sanskrit scholars and lay public in mystic sciences of the Hindus is responsible for the rapid sale of the first edition, and this has been a matter of gratification for both the present editor and the authorities of the Oriental Institute. The first edition of the *Paraśurāmakalpasūtra* also is by now completely exhausted and ere long a second edition is likely to be placed before the public.

The work of preparing a revised edition of the work Nityotsava was very kindly entrusted to me by my learned and esteemed friend Dr. Benoytosh Bhattacharyya, M. A., Ph. D. the Director of the Oriental Institute, to whom I hereby offer my sincere and heartfelt thanks for thus presenting me with an opportunity to be of some service to the devotees of Śrī Vidyā in placing before them this revised edition.

In the present edition, I have made use of a MS of the work, which once belonged to the collection of Śrīvijayananda Nātha of Surat. This was obtained through the kind offices of my friend Kṛṣṇālal Bhagavānji Manrājī of Dwarka to whom also I take this opportunity of offering my grateful thanks for this act of courtesy. The variants found by me according

great luminary amongst the Tāntric Ācāryas, his vast learning, the works attributed to him, with a list of the works referred to or quoted by him in his several works, etc., I hope to give in the ensuing edition of the Sūtra, when an opportunity presents itself.

Rāmeśvara, the commentator on Paraśurāmakalpasūtra, in his commentary, entitled the Saubhāgyodaya mentions about himself (p. 367) that he was living in Śaka 1753 (A.D. 1675). As this Rāmeśvara criticises in many places in his work the views held by Umānandanātha, it may be considered as an established fact that Umānanda must have composed his Nityotsava long before this date and, that the work had come into sufficient prominence and recognition by 1753 Śaka or the time when Rāmeśvara flourished. This is corroborated by the fact that Umānandanātha mentions at the close of Nityotsava the date of the composition of his work as being Śaka 1697 (A.D. 1619) or the Kali year 4876.

Umānandanātha is the name of our author as he was known after his Dikṣā (or the initiation ceremony); while before this event, his name was Jagannātha Pāṇḍita, his father's Bālakṛṣṇa and his mother's Lakṣmī, his gotra being that of Viśvāmitra, and his surname being Śrutapeṭava. He is also said to have been a Mahārāṣṭra Brāhmana who received great honours at the hands of the Maratha Princes of the royal family at Tanjore ; (see Nityotsava p. 224 and Bhāskaravilāsa, verse 111.)

Among the 58 works referred to by our author in the present work, about 32 works are at present available, and the remaining too may be brought to light some day, if the collection of MSS and the publication of rare works are carried on with greater zeal than at present.

to this manuscript have been designated as न and are incorporated in this edition.

The author Umānandanātha refers, in the course of this Paddhati-work, to several Mantras. As the devotees are likely to experience some difficulty in the absence of the full text of these Mantras owing to the original text of Tantras being inaccessible, as also because of the prevailing ignorance in the matter of the theory and practice of this science in modern days, the Mantras have been given in their entirety in the Appendix; and, it is hoped that the enthusiastic devotees will benefit themselves by the same.

The Kulākulacakra likewise was not given in the previous edition. It was obtained through much effort and search, and has been inserted in the Appendix in this edition. The connection existing between the ritualistic portions and the philosophic tenets as taught in the work deserves to be carefully studied according to the traditions of the science and the results arising out of such discussions explained in the Introduction; for reasons more than one this has to be postponed for some later occasion. In case the work of re-editing the Paraśurāmakalpasūtra comes up in the near future, an attempt will be made in its Introduction to do some justice to the subject. It will also be my earnest endeavour to give in the forthcoming Sūtra edition, the diagrams explaining the various Yantras referred to in the present work.

Umānandanātha, the author and compiler of this work, (referred to on p. 74 of Nityotsava) mentions that he was the disciple of the famous Bhāskararāya Makhindra, otherwise known as Bhāsurānandanātha. An account of the ideal life led by this

great luminary amongst the Tāntric Ācāryas, his vast learning, the works attributed to him, with a list of the works referred to or quoted by him in his several works, etc., I hope to give in the ensuing edition of the Sūtra, when an opportunity presents itself.

Rāmeśvara, the commentator on Paraśurāmakalpasūtra, in his commentary, entitled the Saubhāgyodaya mentions about himself (p. 367) that he was living in Śaka 1753 (A.D. 1675). As this Rāmeśvara criticises in many places in his work the views held by Umānandanātha, it may be considered as an established fact that Umānanda must have composed his Nityotsava long before this date and, that the work had come into sufficient prominence and recognition by 1753 Śaka or the time when Rāmeśvara flourished. This is corroborated by the fact that Umānandanātha mentions at the close of Nityotsava the date of the composition of his work as being Śaka 1697 (A.D. 1619) or the Kali year 4876.

Umānandanātha is the name of our author as he was known after his Dikṣā (or the initiation ceremony); while before this event, his name was Jagannātha Pāṇḍita, his father's Bālakṣṇa and his mother's Lakṣmī, his gotra being that of Viśvāmitra, and his surname being Śrūtapeṭava. He is also said to have been a Mahārāṣṭra Brāhmana who received great honours at the hands of the Maratha Princes of the royal family at Tanjore ; (see Nityosava p. 224 and Bhāskaravilāsa, verse 111.)

Among the 58 works referred to by our author in the present work, about 32 works are at present available, and the remaining too may be brought to light some day, if the collection of MSS and the publication of rare works are carried on with greater zeal than at present.

to this manuscript have been designated as न and rated in this edition.

The author Umānandanātha refers, in this Paddhati-work, to several Mantras. As the likely to experience some difficulty in the full text of these Mantras owing to the Tantras being inaccessible, as also because of ignorance in the matter of the theory and science in modern days, the Mantras have their entirety in the Appendix; and, it is enthusiastic devotees will benefit themselves!

The Kulākulacakra likewise was not given in this edition. It was obtained through much search and has been inserted in the Appendix. The connection existing between the ritual and the philosophic tenets as taught in the text has been carefully studied according to the tradition and the results arising out of such study are given in the Introduction; for reasons more fully explained, to be postponed for some later occasion of re-editing the *Paraśurāmakalpasūtra* in the future, an attempt will be made in some degree to do justice to the subject. It will be an endeavour to give in the forthcoming *Sūtra* explaining the various Yantras referred to.

Umānandanātha, the author and (referred to on p. 74 of *Nityotsava*); a disciple of the famous Bhāskararāya Maheśvara as Bhāsurānandanātha. An account of his

नित्योत्सवः

श्री उमानन्दनाथविरचितः

आरम्भोद्घासः प्रथमः—द्रीक्षाक्रमः

भूमिका

नन्या नाथपरम्परां शिष्यमुक्तां विद्वेश्वरं श्रीमहा-
राज्ञी तन्त्रचिन्ता तदीयपृतनानायां तदन्तःपराम् ।
एवामावृत्तिदेवताः परिचितान् रश्मिन्त्रजो निर्जरान्
वीरैश्च प्रणये निबन्धनमिदं नाम्नाऽपि नित्योत्सवम् ॥
अन्तेवसता शम्भोग्यतारेणाच्युतस्य पद्येन ।
प्रकृतपति कल्पसूत्र प्रोक्त रामेण यत्र गदितोऽर्थः ॥
कास्याश्वोऽजान् समागत्य कावेर्यद्विविहारिणा ।
नाथेन भामुरानन्दनाथेनास्मीह योजितः ॥
यस्यादृष्टो नास्ति भूमण्डलांशो
यस्यादासो विद्यते न क्षितीशः ।
यस्याज्ञात नैव शास्त्रं किमन्यैः
यस्याकारः सा परा शक्तिरेव ॥
मृगुरामसूत्रजालकभग्नप्रसरस्य मे द्विजस्येह ।
प्रन्थिविमोकधुरीण गुरुचरणस्मरणमेव मार्गकरम् ॥
आरम्भ-तरुण-यौवन-प्रौढ-तदन्तोन्मनानवस्थाऽऽख्यैः ।
सूत्रोदितैस्तु सत्तमिच्छन्सैराश्रितेह विश्रान्तिः ॥
येषु दीक्षा-गणेश-श्री-श्यामा-क्रोडी-परा-क्रमाः ।
सामान्यश्च क्रमोऽन्येषां क्रमेण प्रतिपादिताः ॥

When the available Tāntric works will be studied by scholars and the deserving among them published, the research scholars studying the science from the historical standpoint, as well as others in India interested in the science itself, will, it is hoped find themselves in a position to benefit themselves immensely for, the revival of Tāntric culture means the revival of the spiritual culture for which India had ever been famous.

Baroda,
13th January 1931

TRIVIKRAMA TIRTHA.

नित्योत्सवः

श्री उमानन्दनाथविरचितः

आरम्भोल्लासः प्रथमः—दीक्षाक्रमः

भूमिका

नत्वा नाथपरम्परां शिवमुखां विज्ञेश्वरं श्रीमहा-

राज्ञीं तत्सचिवा तदीयपृतनानाथा तदन्त.पराम् ।

एषामावृत्तिदेवताः परिचितान् रश्मिस्त्रजो निर्जरां

वीरौध प्रणये निबन्धनमिदं नाम्नाऽपि नित्योत्सवम् ॥

अन्तेवसता शम्भोरवतारेणाच्युतस्य पट्रेन ।

प्रकृतयति कल्पसूत्र प्रोक्त रामेण यत्र गदितोऽर्थः ॥

काश्याश्वोक्तान् समागत्य कावेर्यङ्कविहारिणा ।

नाथेन भामुरानन्दनाथेनास्मीह योजितः ॥

यस्यादृष्टो नास्ति भूमण्डलाशो

यस्यादासो विद्यते न क्षितीशः ।

यस्याज्ञातं नैव शास्त्रं किमन्यैः

यस्याकारः सा परा शक्तिरेव ॥

भृगुरामसूत्रजाटकभद्रप्रसरस्य मे द्विजस्येह ।

प्रन्धिविमोकपुरीणं गुरुचरणस्मरणमेव मार्गकरम् ॥

आरम्भ-तरुण-यौवन-प्रौढ-तदन्तौग्ननानवस्थाऽऽर्त्यैः ।

सूत्रोदितैस्तु सप्तभिरुद्ग्रामैराश्रितेह विश्रान्तिः ॥

येषु दीक्षा-गणेश-श्री-श्यामा-क्रोडी-पद्म-क्रमाः ।

सामान्यध क्रमोऽन्येषां क्रमेण प्रतिपादिताः ॥

प्रतिपाद्येषु मुख्यत्वमङ्गताऽन्यच्च यद्भवेत् ।
 तत्सर्वं श्रीगुरुभोक्ते रत्नालोकेऽधिगम्यताम् ॥
 न्यायोपसंहृतैरङ्गैः प्रयुञ्जानस्य मे क्रमान् ।
 भ्रम^१प्रमादस्खलितं ^२समादधतु तद्विदः ॥
 सूत्रसंसूचितानुक्ताविरुद्धाङ्गेतिकार्यता ।
 तन्तान्तरात् सम्प्रदायादप्युक्तेह क्वचित् क्वचित् ॥
 इह क्रमाणां सर्वेषां श्रीक्रमः प्रकृतिर्मतः
 अतिदिश्य तमन्यत्र विशेषस्तु निरूप्यते ॥
^३क्रमान्तरेषु चाङ्गानां विज्ञेया श्रीक्रमेऽपि च ।
 पौर्वापर्यभिदा तत्तत्खण्डसूत्रक्रमानुगा ॥
 श्रेयोऽर्थिनः साधकस्य साङ्गे श्रीसुन्दरीक्रमे ।
 आवश्यकत्वात् प्रथमं दीक्षाविधिरुदीर्यते ॥

दीक्षाकालनिर्णयः

तस्य च कालनिर्णयो मन्थानभैरवतन्त्रे—

वैशाखे सिद्धिदा दीक्षा श्रावणे वृद्धिदा नृणाम् ।
 आश्विने सर्वसिद्धिः स्यात् कार्तिके ज्ञानवृद्धिदा ॥
 शुभदा मार्गशीर्षे च माघे स्वर्णफलप्रदा ।
 फाल्गुने सर्वसिद्धिः स्यादन्येऽनिष्टफलप्रदाः ॥

इति ।

सारसङ्ग्रहे 'मलमासं विवर्जयेत्' इत्युक्तम् । इदं क्षयमासस्याप्युपलक्ष
 तत्रैव—

१ प्रमादस्व—म.

२ समदन्त्रिह साधवः—अ, म.

३ अयं श्लोकः अ, अ१, दोषयोरेव दृश्यते.

गन्धारे मंत्रेण संभे ज्ञानिर्भवेत् सिद्धिः ।
 बुधे मन्त्रयन्मार्गानि ज्ञानं स्यात् तृतरत्नौ ॥
 शुभे सौभाग्यमानेति ॥ इति ॥
 द्वितीयायां मन्त्रे ज्ञानं तृतीयाया मन्त्रेऽशुचिः ।
 पञ्चम्यां बुद्धिः स्यात् सौम्यं सप्तम्यनमीदिने ॥
 षष्ठ्यां राजसौभाग्यं एकादश्यां शुचिर्भवेत् ।
 द्वादश्यां सर्वसिद्धिः स्यात् पुर्णिमा सर्वसिद्धिदा ॥ इति ॥
 अष्टाध्यायं विवर्त्तयेत् ॥ इति ॥

अस्याध्यायं सन्ध्यागार्जितनिर्गोपमूकस्यादिनिमित्तकानध्यायदिवसानिर्व्यर्थः ।

अश्विन्यां मुग्धमामोनि रोहिण्यां वासुनिर्भवेत् ।
 पुनर्वसु धनादाय स्यात् पुन्ये शत्रुविनाशनम् ॥
 मृगायां दुःखहानिः स्याद्रूपदा पूर्वकल्मुनी ।
 ज्ञान चोत्तरकल्मुन्यां हस्तायां च बडी भवेत् ॥
 चित्रायां ज्ञानसिद्धिः स्यात् स्वान्या शत्रुविनाशनम् ।
 अश्लेषा बुद्धिः स्यात् कीर्त्तयेत् ततः परे ॥
 पूर्वाषाढोत्तराषाढे सर्वसम्पत्तिदायिके ।
 बुद्धिः शतभिषायां स्यात् पूर्वभाद्रे सुखी भवेत् ॥
 सौम्यं चोत्तरभाद्राया रेवत्यां कीर्त्तिवर्धनम् ॥ इति च ॥
 योगाथ प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनः शुभः ।
 सुकर्मा च धृतिर्बुद्धिर्भुवः सिद्धिश्च हर्षणः ॥
 वरीयौथ शिवः सिद्धो ब्रह्मा चन्द्रोऽप्यमी शुभाः ॥ इति च ॥
 वयादिवणिजान्तानि करणानि शुभास्तये ॥ इति च ॥

वैशम्पायनसंहितायां—

मन्ताचारम्भणं मेघे धनधान्यप्रदं भवेत् ।
 कर्कटे सर्वसिद्धिः स्यात् कन्या लक्ष्मीप्रदा वृणाम् ॥

1 मूलं सर्वसिद्धिः—अ. 2 एतदर्थं अ. कोश एव दृश्यते. 3 भवेतां कीर्त्तिदायिके—अ.

प्रतिपाद्येषु मुख्यत्वमङ्गताऽन्यच्च यद्भवेत् ।
 तत्सर्वं श्रीगुरुप्रोक्ते रत्नालोकेऽधिगम्यताम् ॥
 न्यायोपसंहृतैरङ्गैः प्रयुञ्जानस्य मे क्रमान् ।
 भ्रम^१प्रमादस्खलितं ^२समादधतु तद्विदः ॥
 सूत्रसंसूचितानुक्ताविरुद्धाङ्गैतिकार्यता ।
 तन्त्रान्तरात् सम्प्रदायादप्युक्तेह क्वचित् क्वचित् ॥
 इह क्रमाणां सर्वेषां श्रीक्रमः प्रकृतिर्मतः
 अतिदिश्य तमन्यत्र विशेषस्तु निरूप्यते ॥
^३क्रमान्तरेषु चाङ्गानां विज्ञेया श्रीक्रमेऽपि च ।
 पौर्वापर्यभिदा तत्तत्खण्डसूत्रक्रमानुगा ॥
 श्रेयोऽर्थिनः साधकस्य साङ्गे श्रीसुन्दरीक्रमे ।
 आवश्यकत्वात् प्रथमं दीक्षाविधिरुदीर्यते ॥

दीक्षाकालनिर्णयः

तस्य च कालनिर्णयो मन्यानभैरवतन्त्रे—

वैशाखे सिद्धिदा दीक्षा श्रावणे वृद्धिदा वृणाम् ।
 आश्विने सर्वसिद्धिः स्यात् फाल्गुने ज्ञानवृद्धिदा ॥
 शुभदा मार्गशीर्षे च माघे स्वर्णफलप्रदा ।
 फाल्गुने सर्वसिद्धिः स्यादन्येऽनिष्टफलप्रदाः ॥

इति ।

सारसदृश्ये 'मलमामं विवर्जयेत्' इत्युक्तम् ।

तत्रैव—

१ प्रमादस्य—म.

२ मन्त्रनिवह कापयः—भ, म.

३ अदं श्लोः भ, अ१, संस्तवोरेव इत्यदं.

काशुनेश्वरीं कृत्वा चैत्रे मासि ज्योतिषी ।
 वैशाखेऽथचतुर्दशीं ज्येष्ठे दशमं मृता ।
 आश्विं शश्वतीं कृत्वा अमावस्यां च श्रावणी ।
 इमानि देवीपूजाणि कोटिव्रतकृतानि वै ॥

दीक्षाऽर्थाणि शेर । दशमं ज्येष्ठं दशमी । सौभाग्यचन्द्रोदये^१ अस्मन्नाथचरणैः
 बहूनि देवीपूजाणि उक्तानि । यथा—

अमाऽन्वचान्द्रमासेषु चैत्रशुक्लपौर्णमी ।
 चतुर्दश्यापि शुक्लाऽथ वैशाखे शुक्लपक्षगा ॥
 तृतीयैकादशीपौर्णमास्य कृत्वाचतुर्दशी ।
 ज्येष्ठे तु शुक्ले दशमी गता कृत्वाचतुर्दशी ॥
 आश्विने शुक्लपक्षस्थे पञ्चमी च श्रवणदशी ।
 श्रावणे मासि शुक्लैकादशी शुक्लचतुर्दशी ॥
 कृत्वा पञ्चम्यष्टमी च रोहिणीमहिता यदि ।
 नवमी चाथ भाद्रस्य कृत्वापष्टी तथाऽष्टमी ॥
 रोहिणीमहिता चेत् स्यादाश्विने सप्तमी सिता ।
 अष्टमी च मिता कृत्वापक्षस्था च चतुर्दशी ॥
 कार्तिके शुक्लपक्षस्थे नवमीद्वादशी तिर्य्या ।
 मार्गशीर्षे तृतीया च षष्ठी धक्कपक्षगे ॥
 पौषे चतुर्थीनवमीचतुर्दश्याः सिता मताः ।
 दशमी त्वसिता माघे चतुर्थ्यैकादशी सिते ॥
 चतुर्दश्यासिता चाथ फाल्गुने शुक्लपक्षगे ।
 षष्ठीनवम्यौ कृत्वा तु भवेदेकादशीति च ॥
 रत्नावलीकुलोद्दीश्यामब्जाद्यर्थसङ्ग्रहे ॥ इति ॥

अन्योऽपि विस्तरः तत एव ज्ञातव्यः ॥

१ तु दहरा—अ.

२ नवमी—अ.

३ इतः प्रभृत्युदाहृतवचनानि अ१, अ१, अ३ कोशेष्वेवोपलभ्यन्ते.

तुलायां सर्वसिद्धिः स्यात् सर्वलाभश्च वृश्चिके ।
 मकरं पुनरदं प्राहुः ^१कुम्भो धनसमृद्धिदः ॥
 शुक्लपक्षे शुभा दीक्षा कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिनात् ।
 भूतिकामैः सिते पक्षे मुक्तिकामैः सिते तरे ॥ इति ॥

अत्र च गुरुमार्गवमौढ्यं चन्द्रतारानुकूल्यं लग्नस्य ग्रहबलादिकं च विचार्यम्
 ग्रहवलयं तु—

त्रिपडायगताः पापाः शुभाः केन्द्रत्रिकोणगाः ।
 दीक्षायां तु शुभाः सर्वे रन्ध्रस्थाः सर्वनाशकाः ॥

आयः एकादशस्थानम् । पापाः पापग्रहाः रविमौमशनिराहुकेतुक्षीणेन्दुपापयुक्ताः
 सौम्याः शुभाः शुभग्रहाः अक्षीणेन्दुपापयोगरहितबुधगुरुभृगवः । केन्द्राणि
 प्रथमचतुर्थसप्तमदशमस्थानानि । त्रिकोणे पञ्चमनवमस्थाने । सर्वे पापाः शुभाः
 ग्रहाः उक्तस्थानगताः दीक्षायां शुभावहा एव । एत एव रन्ध्रे अष्टमस्थाने स्थित
 यदि सर्वनाशका इति योजना ॥

अथ उक्तकालमन्तरेण दीक्षार्हः कालो यथा तन्त्रान्तरे—

विषुवेऽप्ययनद्वन्द्वे सङ्क्रान्त्यां दमनोत्सवे ।
 दीक्षा कार्या त्वकालेऽपि पवित्रे गुरुपर्वणि ॥

विषुवे—मेऽनुलासङ्क्रमणयोः इत्यर्थः । अयनद्वन्द्वे—कर्कटमकरसङ्क्रान्तयोः ।
 सङ्क्रान्त्यां—तदन्यामु सङ्क्रान्तिषु इत्यर्थः । दमनोत्सवे—चैत्रपूर्णिमाऽऽदिः
 दमनकरणवदेवीपूजादिनेष्वित्यर्थः । पवित्रे—श्रावणपूर्णिमाऽऽदिषु, देव्याः पवित्राणे
 पणदिवसेषु इत्यर्थः । गुरुपर्वणि—गुरोः जन्मव्याप्तिदिनयोः । तथा—

एष्टी भाद्रपदे मासि ^१कृत्त्याधिनचतुर्दशी ।
 कार्तिके नवमी शुक्ल मार्गे कृत्त्या च पञ्चमी ।
 एते च पूर्णिमा देवी माये चैव चतुर्थिका ॥

१ कुम्भ मरुगसिद्धि—२५.

२ कृष्णेऽपि अष्टमस्थानेनोभयद्वन्द्वे—इति शिवनी ४, व २.

३ देवि—२५, ४१, ४२, ४३.

आस्तिको दृढभक्तिश्च गुरौ मन्त्रे 'सदैवते ।

एवंविधो भवेच्छिष्य इतरो दृःखरुद्रोः ॥ इति ॥

चतुर्भिराद्यैरिति मुन्दरत्वादिभिः । अन्यान्यपि तल्लक्षणानि कुळार्णवादितन्त्रेषु
बहुळमुपलभ्यमानानि प्रन्थगौरवभयात् नेह लिखितानि ।

शिष्यपरीक्षाकालेऽपि तत्रैव—

एकद्वित्रिचतुःपञ्चवर्षाण्यालोच्य योग्यताम् ।

भक्तियुक्तान् गुणांश्चाऽपि क्रमाद्वर्णैः ससङ्करे ।

पश्चाद्भुक्तक्रमेणैव वदेद्विद्यामनन्यधीः ॥ इति ॥

ससङ्करे, अनुलोमजातिसहिते । वर्णे, ब्राह्मणादिवर्णेषु इत्यर्थः । एकवर्षं ब्राह्मणस्य
योग्यतापरीक्षा, क्षत्रियादिषु द्व्यष्टादिसवत्सरपरीक्षा इत्यर्थः ॥

एवमुक्तान्यनमे काले उक्तलक्षणो गुरुः उक्तलक्षणं परीक्ष्य शिष्यं दीक्षयेत् ॥

गुरुवरणम्

तत्र निर्वर्तितस्नाननित्यविधिः साधको वायधोऽगुरुरस्सरं ब्राह्मणैः स्वस्ति
वाचयित्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य श्रेयस्कामोऽहं अमुकविद्याग्रहणार्थं
अमुकगुरोः दीक्षां ग्रहीष्यामीति सङ्कल्प्य मोपहागे गुरुमुपसृत्य दण्डवत् प्रणम्य
गुरोरजया पुनर्देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशाखाऽध्यायी अमुकशर्मवर्मादिरहं
चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थं स्वेष्टमनुग्रहणाय अमुकगोत्रं अमुकशाखाऽध्यायिनं
अमुकशर्माणं त्वां गुरुत्वेन वृणे इति क्रमुकादिना गुरु वृणुयात् ॥

क्रमप्रवर्तनपूर्वकं शिष्याह्वानम्

स च वृत्तोऽस्मीत्युक्त्वा मणियः सामयिकः सह गोगयेनोपलितं रत्नवह्नीपुण्य-
मालावितानाघटङ्कृत मण्डप विवित्त दीक्षाप्रदेशं आमाय पादौ प्रक्षाल्य आचम्य
मण्डपान्त प्रविश्य वक्ष्यमाणविधिना आसने उपविश्य हृतभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठाकथ
वक्ष्यमाणेन प्रकारेण गणपति-उद्विता-रयामा-भार्ताऽर्था-परानां पञ्चानामपि देवानां
पदार्थानुसमयेन^१ पाण्डानुसमयेन^२ वा पागमन्दिरप्रवेशादिचतुर्भूजाऽन (१), तरादि-

१ स्वदैवते—२ती.

२ एषैवोपचारदाने सर्वासां देवतानां पूजने ।

३ एषो सर्वावधारिदेवतां संपूज्य ततो द्वितीयां हृत्वा चर्तुः क्रमः ।

सतीर्थेऽर्कविधुग्रासे पुण्यारण्ये वनेषु च ।
मन्त्रदीक्षां प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन् न शोधयेत् ॥

प्रकारान्तरे च—

सर्वे वारा ग्रहाः सर्वे नक्षत्राणि च राशयः ।
यस्मिन्नहनि सन्तुष्टो गुरुः सर्वे शुभावहाः ॥
सन्तुष्टे च गुरौ तस्य सन्तुष्टाः सर्वदेवताः ।
गुरुं सन्तोषयेत् भक्त्या द्वयमेव तदा भवेत् ॥

द्वयं भोगमोक्षौ । एवकारः अप्यर्थः ।

अधिकारिभेदेन कालो यथा—

मुमुक्षुणां सदा कालः स्त्रीणां कालस्तु सर्वदा ॥ इति ॥

गुरुलक्षणम्

तन्त्रराजे—

सुन्दरः सुमुखः स्वस्थः सुलभो बहुतन्त्रवित् ।
असंशयः संशयच्छिन्निरपेक्षो गुरुर्मतः ॥
सौन्दर्यमनत्रयत्वं रूपे सुमुखता पुनः ।
स्मेरपूर्वाभिभाषित्वं स्वच्छताऽजिह्ववृत्तिता ॥
सौलभ्यमप्यगर्वित्वं सन्तोषो बहुतन्त्रता ।
असंशयस्तन्त्रबोधः तच्छिस्तप्यतिपादनात् ॥
नैरपेक्ष्यमवित्तेच्छा गुरुत्वं हितवेदिता ।
एवंविधो गुरुर्ज्ञेयस्वितरः शिष्यदुःखदः ॥

अजिह्ववृत्तितेति छेदः । बहुतन्त्रता—बहुतन्त्रवेदिता इत्यर्थः ॥

शिष्यलक्षणम्

तथा—

चतुर्भिराद्यैः सहितः श्रद्धावान् मुस्थिराशयः ।
अलुब्धः स्थिरगात्रश्च प्रेक्ष्यकारी जितेन्द्रियः ॥

विघ्नोत्सारणान्त (२), तदादिन्यासान्त (३), तदादिपात्रासादनान्त (४), तदादि-
 लयाङ्गपूजान्त (५), तदाद्यावरणार्चनान्त (६), तदादिहवनान्त (७), तदादि-
 सौभाग्यहृदयामर्शनान्त (८), तदादिहविःप्रतिपत्यन्त (९), तदादिदेवतोद्वासनान्त
 (१०), तदादिविशेषार्घ्यविसर्जनान्तेषु (११), पदार्थेषु यागगृहप्रवेशादिहवनान्तं
 पदार्थानुसमयेन काण्डानुसमयेन वा क्रमं प्रवर्त्य तरुणोद्भासवान् शिष्यमाहूय नूतनेन
 वाससा तस्य मुखं बद्ध्वा गणपत्यादिमूलमन्त्रानुच्चारयन् पात्रपञ्चकसामान्यार्घ्योदक-
 बिन्दुभिः तमवोक्ष्य त्रैपुरं तन्त्रसिद्धान्तं श्रावयेत् ॥

त्रैपुरसिद्धान्तः

यथा—पृथिव्यतेजोवायुवियन्ति भूतानि पञ्च । गन्धरसरूपस्पर्शशब्दाः
 तन्मात्राणि पञ्च । उपस्थपायुपादपाणिवाचः कर्मेन्द्रियाणि पञ्च । घ्राणरसनाचक्षुस्त्वक्-
 श्रोत्राणि ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्च । रजःसत्त्वतमोरूपाणि अहङ्कारबुद्धिमनांसि
 अन्तःकरणवृत्तित्रयम् । प्रकृतिर्गुणसाम्यरूपा । चित्तं पुरुषो जीवः । परमशिवगताः
 स्वतन्त्रता-नित्यता-नित्यतृप्तता-सर्वकर्तृता-सर्वज्ञताऽऽख्या धर्मा एव सङ्कुचिताः सन्तो
 जीवे क्रमात् नियति-काल-राग-कला-विद्याशब्दवाच्या भवन्ति । माया
 जगत्परमशिवयोः भेदबुद्धिः । शुद्धविद्या तयोरभेदधीः । जगदिदं तथा पश्यन् परमशिव
 ईश्वरः । तदहन्तया पश्यन् स एव सदाशिवः । शक्तिः परमशिवस्य जगत्सिसृक्षा ।
 तद्वान् स एव तत्त्वेषु प्रथमतत्त्वरूपः शिवः । इति पट्विंशत्तत्त्वान्येव एतद्दर्शनप्रमेय-
 जातम् । एतद्रात्मकं विश्वमेव परमशिवशरीरम् । प्रागुक्तनियत्यादितत्त्वपञ्चकाख्यापर-
 पर्यायेण लीलास्वीकृतेन कञ्चुकेन आवृतस्वरूप ईश्वर एव जीवः । तद्विनिर्मुक्तः
 परमशिवः । स्वस्वरूपावबोधः पुरुषार्थः^१ ॥

मन्त्रोपासनम्

शब्दाः वर्णात्मका नित्याश्च । मन्त्राणाम् अनन्यादृशं सामर्थ्यम् । स्वगुरुपरम्परो-
 पदेशैकगम्यधर्मरूपेण सम्प्रदायेन गुरुरात्प्रदेयतासु विधासेन च सर्वाः सिद्धयः ।

१ स्वप्नत्रादिना सङ्कुच्य स्वीकृतेन आवृतस्वरूपः शिव एव मायया ताप्रातकम्पुनितः स एव
 शिवः इत्यपि कः पाठो दृश्यते (४) कोशे.

एतच्छास्त्रप्रामाण्यं विश्वासैकसमधिगम्यम् । गुरुमन्त्रदेवताऽऽत्मनां श्रीगुरुक्तपथेन
ऐक्यविभावेनात् मनःपवनयोः एकयत्ननिरोद्धव्यत्वज्ञानाच्च प्रत्यगान्मवेदनम् ।
स्वरूपानन्दाभिव्यञ्जकैः पञ्चमकारैः अर्चनमुपहरे । प्राक्कव्याग्निरयः । भावनादाढ्यात्
निग्रहानुग्रहसामर्थ्यलाभः ॥

उपासकधर्माः

दर्शानन्तराणामनिन्दनम् । स्वोपास्यदेवतामन्तरा क्वापि महत्स्वदुस्वभावः ।
सच्छिष्य एव रहस्यप्रकाशनम् । सदा स्वोपास्यमन्त्रानुसन्धानम् । सततं शिवोऽहमिति
भावनम् । कामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्याणां अविहितहिंसायाधैर्यस्य जनविरोधस्य
स्त्रिया विद्वेषस्य विद्विष्टस्य च वर्जनम् । सर्वज्ञस्यैकस्य गुरोः उपासितः । गुह्याक्य-
शास्त्रादीं सर्वत्रासंशयः । स्वैकोपभोगदुस्वया धनायनार्जनम् । फलमनभिसन्धाय
कर्माचरणम् । अलोपः स्ववर्णाश्रमोक्तानां नित्यानां कर्मणाम् । मप्यत्रकस्यालाभेऽपि
नित्यसपर्यानिर्वर्तनम् । वैश्वानुष्ठाने सर्वतो निर्भयता ॥

सर्वसारभूतो धर्मः

वृत्तिभिः वेद्यं सर्वं हविः । इन्द्रियाण्येव सूचः । सद्बोधेन स्वान्मस्थिताः
सर्वज्ञत्वसर्वकर्तृत्वादयः परमशिवशक्तय एव ज्वालाः । स्वान्मशिव एव पावकः । स्वयमेव
होता । निर्गुणप्रकाशपरोक्ष्य फलम् । स्वपारमार्थिकस्वरूपलाभाच्च परं विद्यते ॥

सेवमेतच्छास्त्रमर्यादा ॥

दीक्षाऽऽयदयकृत्यम्

वेद्या इव प्रकटा वेदादयो विद्या । सर्वेषु दर्शनेषु गुभेषु विद्या । तत्र
सर्वथा मतिमान् दीक्षतेति ॥

शास्त्रधरी दीक्षा

अथ शिष्यस्य शिरसि कामधरीरामेश्वरयो रक्तमुद्राण्यचरणान्यामं^१ भावनिः
सद्मृतक्षरणेन तस्य बाह्यान्वन्तर च मन्त्र दूरीकुर्वन् । एता चरणविकल्पान्
शास्त्रधरी दीक्षा ॥

^१ परिशिष्टे १ मे

शाक्ती दीक्षा

अथ शिष्यस्यामूलाधारं आ च ब्रह्मरन्ध्रं प्रज्वलन्तीं अलदलनिभां परचिद्रूपां प्रकाशलहरीं ध्यात्वा^१ तत्किरणैः तस्य पापपाशान् दहेत् । इयं शक्तिप्रवेशनरूपा शाक्ती दीक्षा द्वितीया ॥

मान्त्री दीक्षा

ततः शुण्ठी—मरीचि—पिप्पली—हरीतकी—धात्रीफल—विभीतकत्वोगोला—लवङ्ग—पत्र-नागकेसर—तक्कोल^२—मदयन्ती—सहदेवीसंज्ञानां त्रयोदशानां^३ वस्तूनां चूर्णमिश्रेण दूर्वाभस्मभ्यां गजाश्वशालाचतुष्पथबल्मीकनदीसङ्गमहृदगोष्ठसमानीताभिः सप्तभिः मृत्तिकाभिश्च उपेतेन चन्दनकाश्मीरगोरोचनकर्पूरैः चतुर्भिः सुरभिः सुचिना जलेन पूर्णं नवीनवासोयुगवेष्टितं ईशानतः शालितण्डुलपुञ्जोपरि निहितं नूतनं कलशं आग्नेयादिविदिक्षु मध्ये प्रागादिदिक्षु च बालापङ्कजेन अम्यर्च्य तदन्तर्ललिताश्यामावाराहीणां चक्राणि^४ विनिक्षिप्य तत्र पुनः तास्तिष्ठो देवताः त्रिः तत्तन्मूलेन तत्तदावरणानि च तत्तन्मन्त्रैः समम्यर्च्य कुम्भमन्त्रमन्त्रेण संरक्ष्य प्रदस्य धेनुयोनिमुद्रे चक्राणि यथास्थानमवस्थापयेत् ॥

ततः सक्षरेण सिन्दूरकुङ्कुमादिना चन्दनादिपीठे^५ 'मातृकायन्त्रं विलिख्य' तत्र शिष्यं निवेश्य तेन कुम्भाम्भसा ललिताश्यामावार्ताळीमूलविद्याभिः ऋपयेत् । मातृकायन्त्रं तु

व्योमेन्द्रौरसनार्णकर्णिकमचां द्वन्द्वैः स्फुरत्केसरं

पत्रान्तर्गतपञ्चवर्गयशष्कार्णादित्रिवर्गं क्रमात् ।

आशास्वश्रियु लान्तलाङ्गलियुजा क्षोणीपुरेणावृतं

वर्णाञ्जं शिरसि स्थितं विपगदप्रचंसि मृत्युञ्जयम् ॥ इति ॥

अस्यार्थः—व्योम हकारः । इन्दुः सकारः । औ इति रूपम् । रसनार्णः विसर्गः । एतत्पिण्डः कर्णिकायां यस्य तथोक्तम् । क्रमात् प्राच्यादित इत्यर्थः ।

^१ मूलमंत्रार्थानुसंधानपूर्वं मूलमंत्राभरोत्पन्नरूपां च ध्यात्वैत्यर्थः ।

^२ केंद्रोल इति 'न'

^३ चक्रत्रिदशयो देवाः परिशिष्टे ३ ये

^४ अस्य प्रतिद्विदशपरि परिशिष्टे ३ ये

^५ प्राच्यादिदिक्षुर्वर्णं संसृज्य

अचां अकारादिविसर्गान्तानां षोडशानां स्वराणाम् । द्वन्द्वैः अं आं इत्यादिभिः ।
लिखितैरिति शेषः । स्फुरन्तः केसराः दलद्वयमध्यभागाः अष्टौ यस्य तत्
तथोक्तम् । पत्राणां दलानां अन्तः अभ्यन्तरे गताः लिखिताः पञ्चवर्गाः कचटतपादीनि
पञ्चपञ्चाक्षराणि यशस्वार्णादयः यादिवान्तशादिहान्तलक्ष्मिकाः त्रिवर्गाः यस्य तत्तथोक्तम् ।
आशासु प्राच्यादिषु अश्रिषु आम्रेयादिकोणेषु च क्रमात् लान्तेन^१ वकारेण लाङ्गलिना
ठकारेण युज्यत इति तथोक्तेन क्षोणीपुरेण चतुरश्रेण आवृतम् । वर्णाब्जं मातृकापत्रम् ।
शिरसि स्थितं भावितं सदिति शेषः । विरगदप्रध्वंसि विरोगयोः प्रध्वंसनशीलम् ।
अन्ततो मृत्युञ्जयं च भवतीत्यर्थः ॥

एतद्वेदानप्रकारो यथा—चतुरश्रालङ्कृतं सकेसरमष्टदलकमलं विलिख्य तत्कर्णिकायां
हकारसकारौकारविसर्गान्मकं बीजं, तत्केसरेषु प्राच्यादित अकारादिस्वरद्वन्द्वं,
दलोदरेषु कचटतपयशस्ववर्गाष्टकं, चतुरश्रस्य बाह्यतः प्रागादिदिक्षु वकारं आम्रेयादि-
विदिक्षु ठवर्णं च लिखेत् । सर्वेशमक्षराणां सत्रिन्दुकञ्चं सम्प्रदायादिति ॥

ततः परिहितदुकूलं मुरभिञ्जचन्दनानुलिप्ताङ्गं महिकाऽऽदिमाल्यधारिणं सुप्रसन्नं
शिष्यं पार्श्वे निवेश्य वक्ष्यमाणप्रकारेण तदङ्गेषु अकारादिक्षकारान्तकपञ्चाशन्मातृकान्यासं^२
विधाय विमुक्तमुखबन्धवाससः तस्य हस्ते क्रमान् त्रीन् प्रथमसिक्तान् चन्दनोक्षितान्
द्वितीयवण्डान् पुष्पवण्डान्श्च विनिक्षिप्य वक्ष्यमाणः 'तत्त्वमन्त्रैः प्रासयित्वा गुरुः तस्य
'दक्षिणकर्णे ललिताक्रमे वक्ष्यमाणं श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रमुपदिश्य' बालामुपदिशेत्^३ ।
तत्र अमुकपदस्याने स्वस्य स्वशक्तेश्च दीक्षानाम्नांरूह ॥

श्रीणां तु वाग्दीक्षेव विहिता नान्येति तन्त्रसारे स्थितम् । वाग्दीक्षा
मन्त्रोपदेशः ॥

एषा मान्त्री दीक्षा ॥

^१ न्यासप्रवरणोक्तः

^२ परिशिष्टे १ मे

^३ आदिप्रवरणे पृ. ३७ । प. १

^४ "दक्षिणकर्णे इतमस्योच्यते त्रिंशत्कालान्तर्वाह आत्मनः पादुकामन्त्रमुपदिश्य बालामुपदिशेत्"
इत्यपि पाठान्तरम्—अ१, अ.

^५ परिशिष्टे १ मे

^६ गुरोः चतुर्वापुपदेशविधयाः आत्मनः स्वस्तेत्यस्य गुरोः पादुकेत्येत्यर्थः ।

रक्तायास्यागं, विरक्ताया हठादाक्रमणं, उदासीनाया धनादिना प्रलोभनं च वर्जयेत् । करुणाशङ्काभयलज्जागुप्ताबुलजात्यभिमानशीलानि क्रमेण त्यजेत् । विहितहिंसाऽऽदी करुणाऽऽदीनां प्रातिकूल्येन तत्त्याग उक्त इति भावः । गुरुपरमगुर्वोः समागमने प्रथमं परमगुरं प्रणमेत् । तदप्रे गुर्वनुमत्या तन्नति कलयेत् । पूज्येषु न पराङ्मुखो भवेत् । मुख्यतया स्वप्रकाशमात्मानं अनुसन्दध्यात् । शरीरं अर्थं अमूर्धं गुर्वर्थं धारयेत् । तदुक्तं कुर्यात् । तद्वचसि युक्तयुक्तं न विचारयेत् । सर्वत्र व्यवस्थां तन्यान् । सत्यं वदेत् । परधनं न स्पृहयेत् । आत्मस्तुतिं परनिन्दां मर्मस्पृग्बचनं परिहासं धिक्कारमाक्रोशं प्रासोऽपादनं च न विदध्यात् । सर्वयत्नेन परदेवताऽऽराधनद्वारा पूर्णज्ञानात्मकं ब्रह्मभावमभिलषेत् । एतानन्यांश्च मन्वादिभिरुक्तान् एतदविरुद्धान् आचारान् अङ्गीकुर्यात् ।

कुलधर्मनिष्ठाफलम्

इत्थं विदित्वा विधिवन् अनुनिष्ठन् कुलधर्मनिष्ठः सर्वथा कृतकृत्यो भवति । तस्य शरीरत्यागो श्वपचगृहे वा काश्या वा न विशेषः । स तु जीवमुक्त एवेति ॥

शिष्यस्य परचिद्रूपपादनम्

ततो देहेन्द्रियादिविन्दक्षणमवस्थात्रयसाक्षि सच्चिदानन्दान्मकं प्रत्यगभिन्नं ब्रह्मैव त्वममीति शिष्याय आत्मनस्त्वमुपदिश्य ललिताभ्यामात्रार्तोऽर्द्धविद्याभिः तदङ्ग त्रिः परिष्कृत्य परिरम्य तं मूर्च्युपाघ्राय स्वमिव शिष्यमपि परचिद्रूपं कुर्यात् ॥

सर्वमन्त्राधिकारल्लामः

सोऽपि श्रीगुरुर्पादिप्रकारेण क्षणमात्मानं पूर्णं भावयित्वा कृतार्थः सन् यथाविभव श्रीगुरु षमुवगनाभरणादिभि आराप्य तस्मान् विदित्वादिनन्वग्रहस्यजानोऽ-
क्षेपमन्त्राधिकारी भवेत् ॥

ततो गुरुः हवि प्रतिपत्सादिशिशोर्धर्मविगर्जनान् विदित्वा निर्वर्षेत् ॥

तत्तन्त्रमानुष्ठाने दीक्षाध्ययस्था

अनेनैव—एषस्मिन्नेव घाटे सन्निहितेन वा अन्यतमेनेनेनेन वाऽनेनान्—
दीक्षाविधिना गणपयारीनामुक्ताना पद्याना देवतान्मर्दि क्रमानुष्ठान सम्भवति । न तु

“अनेन एषस्मिन्नेव घाटे सन्निहितेन अन्यतमेनेनेनेन वाऽनेनान् दीक्षाविधिना गणपयारीना” इति (अ) प. ८—“अनेनैव दीक्षाविधिना गणपयारीना” इति (ब) १) प. ८.

दीक्षात्रये मुख्यगौणपक्षौ

इत्यमुक्तं दीक्षात्रयं एकप्रयोगेण एकास्मिन्नेव काले दद्यादिति मुख्यपक्षः, 'सर्वाश्च कुर्यात्' इति सूत्रात् । कतिपयकालव्यवधानेन क्रमादेकामेकामेव वेत्ति तु गौणः, 'एकैकां वेत्येके' इति सूत्रात् ॥

इष्टमन्त्रदानम्

एवं इदं दीक्षात्रयं निर्वर्त्य पश्चात् तस्मा इष्टं मन्त्रं दद्यात् । ततो गुरुः शिष्यशिरसि स्वचरणौ निवेश्य इष्टमन्त्रक्रमोपयुक्तान् सर्वान् वैङ्गमन्त्रान् तस्मिन्नेव काले क्रमेण वा यथाऽधिकारमुपदिश्य स्वाङ्गेषु कियन्ते शिष्यं स्पर्शयित्वा तदङ्गमातृकाक्षरादि द्वयक्षरं त्र्यक्षरं चतुरक्षरं वा आनन्दनाथशब्दान्तं तस्य नाम कृत्वा दशमखण्डोक्तानाचाराननुशिष्यात् ॥

समयाचारानुशासनम्

यथा—व्यवहारं देशं च स्वस्य स्वात्म्यवृत्तसहायवयासि च प्रविचार्यैव पञ्चमाः स्वीकर्तव्याः । सर्वैः प्राणिभिः अविरोद्धव्यम् । उपासनापरिपन्थिनो विनिग्रहीतव्याः । आश्रिता अनुग्रहीतव्याः । स्वगुरुवत् गुरोः पुत्रे कळत्रे ज्येष्ठादिषु च वर्तितव्यम् । मकारव्रित्तये इतिकर्तव्यता गुरुशास्त्रसम्प्रदायतो ज्ञातव्या । सर्वस्मिन् विषये वचनपूर्वकमेव प्रवर्तितव्यम् । दश कुलवृक्षाः न छेत्तव्याः । ते च—

श्लेष्मातककरजाक्षनिम्बाश्वत्थकदम्बकाः ।

विश्वो वटोदुम्बरां च तिलिणीं च दश स्मृताः ॥

स्त्रीदृन्दशारकलशसिद्धलिङ्गिविधिव्रीडाकुलकुमारीकुलसहकाराशांकैकतरुपितृवनमत्तवाराङ्ग-
नारतांशुकामतेभान् दृष्ट्वा वन्दितव्यम् । कृष्णाष्टमीकृष्णचतुर्दशीदर्शपूर्णमासहृन्मणाङ्गेषु
पञ्चपर्वसु विशेषतो नैमित्तिकां वारिवस्या कर्तव्या । साधकस्य आरम्भ-तरण-यौवन-प्रौढ-
तदन्तोन्मत्तानवस्थाऽऽङ्गेषु मनसु ललासेषु प्रौढोद्दामान्तमेव हविःप्रतिपत्तिः । समया-
चारौध प्रवर्तेन् । ततः परां दशां प्रानानां स्वीचरित्वन् । तत्र तादृशो वीर इति
म्यवहिते । वीरव्यवहारेषु अन्यथामग्नावनया अथः पनेन् । अतः तथा नाचरेत् ।

तरुणोद्भासो द्वितीयः—गणपतिक्रमः

उपोद्घातः

नत्वा श्रीभासुरानन्दनाथपादाम्बुजद्वयम् ।
तनोत्सुमाऽऽनन्दनाथस्तरुणोद्भासमादृतः ॥
यत्रोच्यते जगन्मातुः यावज्जीवार्चनाविधौ ।
प्रत्यूहापोहनिपुणा पद्मतिर्गणनायकी ॥
स्वतन्त्रोपास्तिविषया पृथग्दीक्षेह सम्मता ।
न श्रीक्रमाङ्गभावे साऽप्यारम्भोद्भास ईरिता ॥
इह श्रीं हीं कामवीजयोगोऽङ्गमनुषु स्मृतः ।
असूत्रितोऽपि श्रीविद्याऽर्णवादी कथितो हि सः ॥

काल्यरुत्याह्निकयोर्विशेषः

तत्र तावत् काल्यरुत्याह्निकयोः वक्ष्यमाणश्रीक्रमतो विशेषो यथा—श्रीगुरुपादुकायां
आदौ त्रिनार्युत्तरं बाल्यं वाक् ग्लौमिति पञ्चवीजयोजनम् । हृदयकमलकर्णिकायां उद्यदरुण-
किरणकौटिपाटलस्य देवस्य करटिवदनस्य घ्यानेन परिष्कृतनिःशेषदोषत्वं आत्मनः तद्व्यमाऽ-
रुणतनुवभावनं च । रदिमस्त्रगननुस्मरणम् । तत्र तत्र यदाचित् सम्बुद्धपादीनामूहः ।
सत्विनृमण्डले वक्ष्यमाणं देवस्य घ्यानम् ।

तत्पुरुराय विग्रहे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः^१ प्रचोदयान् ॥
इति मन्त्रेण त्रिः अर्घ्यदानम् । ऋष्यादिन्यासत्रयमिह वक्ष्यमाणं चेति ॥

चतुराष्टचित्तर्पणसंकल्पादि

ततः आचम्य प्राणानायम्य देवकालीं मूर्ध्नि मम श्रीमहागणपतिप्रसादमिद्धौ
चतुराष्टचित्तर्पणं करिष्ये इति मङ्गल्यं नपादौ हस्तमात्रं चतुरध्रमण्डलं पङ्क्ति

^१ न्ती इति 'न'.

पृथक् पृथक् दीक्षणम् । सामान्यपद्मलुक्ततत्तन्मन्त्रमात्रोपासकस्य तु पृथक् पृथगेव दीक्षा ।
 बालोपासकस्य तु गन्तदीक्षाऽऽगतया बालाया उपदेशः, एवं इष्टमनुत्वेनाप्युपदेशो ज्ञेयः ।
 उलिताऽङ्गत्वेन श्यामाऽऽदीनां तिसृणामुपास्तैः कृताकृतचञ्जापकात् तदकरणपक्षे गणपतेः
 उलितायाथ क्रमं प्रवर्त्य उभयोरेव पात्राप्यासाद्य चक्रराजमात्रं कलशे निक्षिप्य श्रीविद्यया
 केवलं शिष्यं यपयित्वा तदङ्गं च परिमृज्य शेषमशेषं अनुतिष्ठेत् । गणपतिश्यामाऽऽदीनां
 अन्यासां च देवतानां स्वातन्त्र्येण एककोपास्तौ तु तत्तन्क्रममात्रं प्रवर्त्य तत्तत्पात्रे आसाद्य
 तत्तद्यन्त्रं कुम्भे निक्षिप्य तत्तन्मन्त्रेण खानाङ्गपरिमार्जनं कुर्यात् । अवशिष्टं अवशिष्टमिति
 विवेकः ॥

आधिकारिनिर्णयः

सुन्दरीमहोदये तु—अस्यां च दीक्षायां ईवर्णिकस्यैव अधिकारः,
 “सर्वशास्त्रार्थवेदार्थज्ञानिने सुव्रताय च । दीक्षा देया” इति मूले ज्ञानार्णवतन्त्रे
 अधिकार्युक्तेः—इति स्थितम् । शक्तीनां तु औचक्रयांतर्गुरुमण्डलान्तर्दर्शनज्ञापकवलात्
 अस्त्येवाधिकार इति रहस्यमिति शिवम् ॥

इति श्रीभागुरानन्दनाथचरणारविन्दमिच्छिन्दायमानमानसेन उमानन्दनाथेन निर्मिते अभिनवे
 कल्पसूत्रानुसारिणि नित्योत्सवनिबन्धे दीक्षासमारम्भनिरूपणं
 नामारम्भोद्देशः प्रथमः सम्पूर्णः.

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इति मन्त्रेण सूर्यमम्यर्थ्यं

आवाहयामि त्वां देवि तर्पणायेह सुन्दरि ।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

इति गङ्गां प्रार्थ्यं 'हां हीं हूं ह्रीं हः' इत्युच्चार्य क्रौं इत्यङ्कुशमुद्रया गङ्गाऽऽदि-
न्यावासा वं इत्यमृतवर्जिन समवागमभिमन्त्र्य तत्र चतुरश्राष्टद्व्यष्टकोणत्रिकोण-
महागणपतिपत्तं विचिन्त्य स्वदेहे ऋष्यादिन्यामान् न्यस्य यन्त्रे सावर्णं देवमावासा

- श्रीं ह्रीं श्रीं महागणपतये तं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः । (त्रिवेणी)
३ महागणपतये ह आकाशात्मकं पुण्यं कल्पयामि नमः । (त्रिवेणी)
३ महागणपतये य वाष्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः । (त्रिवेणी)
३ महागणपतये र वद्व्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः । (त्रिवेणी)
३ महागणपतये य अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः । (त्रिवेणी)
३ महागणपतये स सर्वान्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः । (त्रिवेणी)

इति पञ्चोपचारं अर्चयेत् ॥

शत्रुनाशवृत्तिर्पणम्

प्रथमं प्रसाहनि मूत्रान्ते महागणपतिं तर्पयामीति द्वादशवारं तर्पयित्वा
हरिहाशनेन मूत्रमैरेहेन कर्मेण चतुर्धनुर्धं प्रतिशङ्खोन्माहृतेन मूत्रेण च प्र-
चतुर्धनुर्धं देवं, प्रसोदाम्बु निधुनेषु श्रीश्रीश्यादिषु एतैस्तै देवैः। इतिहासेन तत्र
चतुर्धनुर्धं प्रतिशङ्खोन्माहृतेन च मूत्रेण देवं चतुर्धनुर्धं तर्पेत् । कथा -

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं य महापतये यथाह मन्त्रेण मे यथात्मन्य म्हातः
महागणपती तर्पयति ॥ द्वादशवारम् ॥

३ ॐ शशा महागणपती तर्पयति ॥ चतुर्धनुः ॥
एवं महागणपती तर्पयति ॥ चतुर्धनुः ॥

अथ पुनर्मूलेन देवं उक्तया रीत्या पञ्चधा उपचर्य आत्मन्युद्रासयेत् ॥
इति चतुराष्ट्रचित्तर्पणविधिः ॥

पूजाविधिः

यागमन्दिरागमनादि विघ्नोत्सारणान्तम्

ततो यागगृहमागत्य स्थण्डिल गोमयेनोपलिव्य यागमन्दिरं च रङ्गवल्लीपुष्पमालिका-
वितानादिभिः अलङ्कृत्य च द्वारस्य दक्षवामभागयोः ऊर्ध्वभागे च क्रमेण—

श्रीं ह्रीं क्लीं भद्रकाळ्यै नमः ॥ दक्षशाखायाम् ॥

३ भैरवाय नमः ॥ वामशाखायाम् ॥

३ लम्बोदराय नमः ॥ ऊर्ध्वशाखायाम् ॥

इति तिस्रो द्वारि देवताः सम्पूज्य अन्तः प्रविष्टः सपर्यासामग्री दक्षभागे निधाय
दीपानभितः प्रज्वाल्य दीपौ वा गन्धादिभिः कृतात्माङ्कुरणः ताम्बूलेन जातीपत्र-
फलव्यङ्गलाकर्पूराख्यपञ्चतिकेन वा सुरभिच्छन्दनः स्वास्तीर्णै ऊर्णामृदुनि शुचिनि
बालातुनीयबीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते मूढमन्त्रोक्षिते आमने ३ आधारशक्तिकमला-
सनाय नमः इति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पमासनाद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य ३
रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नम इति पुण्याञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्या ३
समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रश्रीपादुकाभ्यो नम इति मूर्धनि बह्वाञ्जलिः स्ववामदक्ष-
पार्श्वयोः क्रमेण श्रीगुरुपादुकाया गुहं मूलेन च देवं प्रणम्य स्वस्य तदस्यं भाषयन्—

श्रीं ह्रीं क्लीं अपमर्षन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विप्रकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इति मन्त्रं मष्टदुर्घार्यं युगपदानशार्थिभूतत्रिरागतकरास्त्रोत्थितयत्नूरदृष्टपञ्चोक्त-
पूर्वकताञ्जत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् धिमानुच्चारयेत् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ फान्तिं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ मुमुक्षुं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ मदनावतीं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ दुर्मुखं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ मदद्रवां स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ अविघ्नं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ द्राविणीं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ विघ्नकर्तारं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ वसुधारां स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ शङ्खनिधिं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ वसुमतीं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

३ पद्मनिधिं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

इत्याहृत्य तर्पणसङ्ख्यापिण्डश्चतुश्चत्वारिंशदुत्तरचतुर्दशती ४४४ भवति ॥

अथ पुनर्मूलेन देवं उक्तया रीत्या पञ्च उपचर्य आत्मन्युद्गमयेत् ॥
इति चतुराष्ट्रचित्तर्पणविधिः ॥

पूजाविधिः

यागमन्दिरगमनादि विघ्नोत्सारणान्तम्

ततो यागगृहमागत्य स्थण्डिलं गोमयेनोपलिप्य यागमन्दिरं च रङ्गवल्लीपुष्पमालिका-
वितानादिभिः अलङ्कृत्य च द्वारस्य दक्षवामभागयोः ऊर्ध्वभागे च क्रमेण—

श्रीं ह्रीं क्लीं भद्रकार्यै नमः ॥ दक्षशाखायाम् ॥

३ भैरवाय नमः ॥ वामशाखायाम् ॥

३ लम्बोदराय नमः ॥ ऊर्ध्वशाखायाम् ॥

इति तिस्रो द्वारि देवताः सम्पूज्य अन्तः प्रविष्टः सपर्यासामप्रीं दक्षभागे निधाय
दीपानमितः प्रञ्चाल्य दीपां वा गन्धादिभिः कृतात्मालङ्करणं ताम्बूलेन जातीपत्र-
फलवृक्षैर्लाकार्युत्सवसितिकेन वा मुरभिच्छवदनः स्वास्तीर्णे ऊर्णाशृदुनि शुचिनि
बालातृतीयवीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रितं मूलमन्त्रोक्षिते आमने ३ आधारशक्तिक्रमटा-
सनाय नमः इति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पद्मासनाद्यन्यतमनासनेनोपविश्य ३
रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनायाय नम इति पुण्याञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्या ३
समस्तगुणसकटासिद्धयोगिनीचक्रश्रीपादुकाभ्यो नम इति मूर्धनि बद्धाञ्जलिः स्ववामदक्ष-
पार्श्वयोः क्रमेण श्रीगुरुपादुकाया गुरुं मूलेन च देवं प्रणम्य स्वस्य तदैक्यं भावयन्—

श्रीं ह्रीं क्लीं अपमर्षन्तु ते भूता ये भूता भुवि मंथिताः ।

ये भूता किप्रकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इति मन्त्रं महद्गुरुचार्यं सुगण्डामशार्थिभूतत्रिगणानरगरास्रोदप्रितपङ्कुरदृष्टयवटोकन-
पूर्वपताञ्जत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासरान् विज्ञानुत्सारयेत् ॥

- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ कान्तिं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ सुमुखं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ मदनावतीं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ दुर्मुखं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ मदद्रव्यं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ अविघ्नं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ द्राविणां स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ विघ्नकर्तारं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ धनुधारां स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ शङ्खनिधिं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ वसुमतीं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
 ३ पद्मनिधिं स्वाहा । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥
- मूलं । महागणपतिं तर्पयामि ॥ चतुर्वारम् ॥

इत्याहृत्य तर्पणसङ्ख्यापिण्डश्चतुश्चत्वारिंशदुत्तरचतुश्शती ४४४ भवति ॥

नित्योत्सवः

ताळत्रयं नाम दक्षतर्जनीमध्यमाभ्यां अधोमुखाभ्यां वामकरतले सशब्दमुपर्युपरि
गतः ॥

शिखाबन्धनादि मातृकान्यासान्तम् ।

ततो नम इत्यङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चार्य 'अंकुरेण' शिखां बद्ध्वा श्रीक्रमे वक्ष्यमाणेन
भूतशुद्धिमात्मनः प्राणप्रतिष्ठां च विधाय विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा
॥ मूलेन प्राणानायम्य तेजोरूपदेवानन्यं भावयन् आत्मानं ऐं हः अत्राय फट्
न्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्गुष्ठादिकरतलान्तं कूर्परयोश्च विन्यस्य देहे च व्यापकं
श्रीक्रमे वक्ष्यमाणं मातृकान्यासं विदध्यात् । तत्र च श्रीं ह्रीं क्लीं इति त्रिवीजं
गोचयेत् इति विशेषः ॥

पङ्क्त्यासः

ततः

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां अङ्गुष्ठहृदयाय नमः ॥

३ श्रीं गीं तर्जनीशिरसे स्वाहा ॥

३ ह्रीं गूं मध्यमाशिखायै वषट् ॥

३ क्लीं गैं अनामिकाकवचाय हुम् ॥

३ ग्लौं गौं कनिष्ठिकानेत्रत्रयाय वौषट् ॥

३ गं गः करतलकरपृष्ठात्रयाय फट् ॥

पङ्क्त्यासं मातृकान्यासं हृदयादिषु च न्यस्य मूलेन त्रिविद्यापकं कुर्यात् ॥

स्त्रवन्मदं च सानन्दं श्रीश्रीपत्न्यादिसंतुतम् ।

अशेषविघ्नविघ्नंसनिघ्नं विघ्नेश्वरं स्मरेत् ॥

अर्घ्यसंस्कारः

अथ तं मानसैः पञ्चोपचारैः अन्यर्घ्यं श्रीक्रमे वक्ष्यमाणेन क्रमेण सामान्यविशेषार्घ्ये
आसादयेत् । तत्र चोभयोरर्घ्ययोरप्युक्तं षडङ्गमाधारस्थापनादियु क्रमेण—

श्रीं ह्रीं श्रीं अं अग्निमण्डलाय दशकलाऽऽम्बने अर्घ्यपात्राधाराय नमः ॥

३ उं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलाऽऽम्बने अर्घ्यपात्राय नमः ॥

३ म सोममण्डलाय षोडशकलाऽऽम्बने अर्घ्यमृताय नमः ॥

इत्येव मन्त्राः, गणपतिगायत्र्योक्तया—

गुणानां त्वा गुणपति हयामहे क्वचि कवीनामुपमथ्रवस्तमम् ।

अ्येष्टराजं ब्रह्मणा ब्रह्मणस्पत् आ नं शृण्वन्नृतिभिः मीढु माईनम् ॥

इत्यनया ऋचा चाभिमन्त्रणम्, चतुर्नवतिमन्त्रायभिमन्त्रणाभासधेति विशेषः । अथ
सामान्यार्घ्यजलत्रिन्दुभिः आत्मानं पूजोपकरणानि च सम्प्राप्त्य शिरोधार्यजलत्रिन्दुभिः
स्वशिरसि गुरुराद्रुक्ता त्रिरिष्टा मर्यामांमयी पावयित्वा ॥

घण्टे प्राणप्रतिष्ठा

पुनो रत्नचन्दनादिभिः निर्मितं घण्टे षट्शतंदिशिभित्त्वा महागणपति-
प्रतिमां वा ध्यानीतरुणां चतुरश्राददत्तपटत्रिकोणाकारं त्रिदशदिशा त्रिभिर्न
लेपितं वा पञ्च, धातुमयं वा निर्देश्य—

१ पदक—अ.

श्रीगणेशयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः श्रीगणेशयन्त्रस्य जीव इह स्थितः
 श्रीगणेशयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि श्रीगणेशयन्त्रस्य वाङ्मनःप्राणा इह ध्यायन्तु स्याह ॥
 इति मन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां विदध्यात् ॥

पीठशक्तिपूजा

तस्य त्रिकोणे स्याद्ब्राह्मिणीदिक्षिण्येन परितो मन्त्रे च क्रमेण—

| | | | |
|---|----------------------------------|---|---------------------------------|
| १ | श्रीं ह्रीं क्लीं तीत्रायै नमः ॥ | ६ | श्रीं ह्रीं क्लीं उग्रायै नमः ॥ |
| २ | ३ ज्वालिनीयै नमः ॥ | ७ | ३ तेजोघ्न्यै नमः ॥ |
| ३ | ३ नन्दायै नमः ॥ | ८ | ३ सन्ध्यायै नमः ॥ |
| ४ | ३ भोगदायै नमः ॥ | ९ | ३ विघ्ननाशिन्यै नमः ॥ |
| ५ | ३ कामरूपिण्यै नमः ॥ | | |

इति भवगणेशपीठशक्तीरम्यर्च्य

धर्माद्यष्टकपूजा

तत्रैव आग्नेय्यादिविदिक्षु प्रागाद्यासु च दिक्षु क्रमेण—

| | | | |
|---|-----------------------------------|---|------------------------------------|
| १ | श्रीं ह्रीं क्लीं ऋं धर्माय नमः ॥ | ५ | श्रीं ह्रीं क्लीं ऋं अधर्माय नमः ॥ |
| २ | ३ ऋं ज्ञानाय नमः ॥ | ६ | ३ ऋं अज्ञानाय नमः ॥ |
| ३ | ३ लृं वैराग्याय नमः ॥ | ७ | ३ लृं अवैराग्याय नमः ॥ |
| ४ | ३ लृं ऐश्वर्याय नमः ॥ | ८ | ३ लृं अनैश्वर्याय नमः ॥ |

इति चार्चयेत् ॥

महागणपतिपूजा

ततो मनसा ध्यातं महागणपतिं भक्तानुग्रहात्तेजोरूपेण परिणतं प्रापय्य
 ब्रह्मरन्ध्रं वहन्नासापुटार्धना निर्गमय्य कुमुमगर्भितेऽञ्जलौ मूर्तं मूळमन्त्रान्तं
 महागणपतिमावाहयामीति त्रिकोणे आवाह्य “ आवाहितो भव ” इत्यादिक्रमेण
 श्रीक्रमे वक्ष्यमाणतत्तन्मुद्राप्रदर्शनपूर्वकं आवाहन-संस्थापन-सन्निधापन-सन्निरोधन-

ततो मूलान्ते श्रीमहागणपतिश्रीपादुकां पूजयामीति धामकरतत्त्वमुद्रया
सन्दष्टद्वितीयशकलगृहीतक्षीरबिन्दुदक्ष^१करोपात्तकुमुमयुगपत्प्रक्षेपेण देवं दशवारं उपतर्पयेत् ।
तत्त्वमुद्रा उत्तरत्रापि साधारणी ।

पङ्क्त्युजा

ततो देवस्य अग्नीशामुरवायुकोणेषु मौञ्जी प्रागादिदिक्षु च क्रमेण—

- श्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ गां हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा शिरसशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ ह्रीं गैं कवचाय हुम् कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ ह्रीं गौं नेत्रत्रयाय धौषट् नेत्रत्रयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ गं गः अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि ॥

इति समन्वयार्च्यं

ओघत्रयपूजा

देवस्य पश्चात् प्रागपर्वारोक्वात्रये दक्षिणमंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रयं यजेत् ॥ यथा—

दिव्योघः

- श्रीं ह्रीं श्रीं विनायकमिहाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ।
३ कवीश्वरमिहाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ विष्णुपाशमिहाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ विश्वसिहाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

^१ कराननमुद्रोपात्त—अ.

नित्योत्सवः

- ३ ब्रह्मण्यसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ निधीशसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

सिद्धौघः

- श्रीं ह्रीं क्लीं गजाधिराजसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ वरप्रदसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

मानचौघः

- श्रीं ह्रीं क्लीं विजयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ दुर्जयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ जयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ दुःखारिसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ सुखावहसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ परमात्मसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ सर्वभूतात्मसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ महानन्दसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ फालचन्द्रसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ सद्योजातसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ बुद्धसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ शूरसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

दिव्यौघपाठान्तरम्

- श्रीं ह्रीं क्लीं विनायकसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ विष्णुपाशसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ बुद्धसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

तरुणोद्वासो द्वितीयः—गणपतिक्रमः

- ३ शूरसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ वरप्रदसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

सिद्धौघपाठान्तरम्

- श्रीं ह्रीं श्रीं विजयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ दुर्जयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ जयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ कथेश्वरसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ ब्रह्मण्यसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ निधीरासिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

मानवौघपाठान्तरम्

- श्रीं ह्रीं श्रीं गजाधिराजसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ दुःखारिन्सिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ सद्योजातसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ सुखायहसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ परमात्मसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ सर्वभूतान्मसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ महानन्दसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ शुभानन्दसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥
३ फाल्गुणसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

(गुर्वौघत्रयसंख्या विंशतिः)

आवरणार्चनम्

प्रथमावरणम्

इयं पङ्क्तयोरन्तराले प्रागादिदिक्षु क्रमेण—

- श्रीं हीं ह्रीं श्रीश्रीपतिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ गिरिजागिरिजापतिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ रतिरतिपतिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ महीमहीपतिश्रीपादुकां पूजयामि ॥

द्वितीयावरणम्

पङ्क्ते देवाप्रकोणमारभ्य प्रादक्षिण्येन तदक्षवामपार्श्वयोश्च क्रमेण यजेत्—

- श्रीं हीं ह्रीं ऋद्धयामोदश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ समृद्धिप्रमोदश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ कान्तिमुमुखश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ मदनावतीदुर्मुखश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ मदद्रवाविग्रश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ द्राविणीविग्रकर्तृश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ वसुधारादाहनिधिश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ वसुमतीवसुनिधिश्रीपादुकां पूजयामि ॥

तृतीयावरणम्

पङ्क्तसन्धिपङ्क्ते प्राग्धन्^१ पङ्क्तदेवताऽर्चनम् ॥

चतुर्थावरणम्

अष्टदशे पश्चिमादिदिक्षु बायव्यादिविदिक्षु च प्रादक्षिण्यक्रमेण—

- श्रीं हीं ह्रीं आं आश्रीश्रीपादुकां पूजयामि ॥
 ३ ईं माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि ॥

तर्पणजपस्तोत्राणि

अथ प्रशाखित्तारागि'पाठ आचान्त आगत्य देवं मूढेन त्रिग मन्त्रं पुनरुचि
दत्वा प्रदक्षिणनुनीरिगाय जपन्—

अस्य श्रीमहागणपतिमहामन्त्रस्य गणकक्रये नम इति निगमि ।
निचृद्रायत्रीरुन्दमे नम इति मुने । महागणपतये देवतायै नम इति हृदये । गं बीजाय
नम इति गुण्ये । स्वाहाशस्त्र्यै नम इति पादयोः । ॐ कीलकाय नम इति नाभा ।
मम अभीष्टमिद्वयं विनियोगाय नम इति करम्पुटे च न्यस्य । उक्तः पङ्क्तमन्त्रैः
अहुष्टादियु हृदयादियु च न्यासं विधाय । पूर्वोक्तमङ्ग्या ध्यात्वा । श्यामाक्रमे
वक्ष्यमाणप्रकारेण सस्कृता' माद्रामादाय श्रीक्रमे वक्ष्यमाणविधिना मूढमष्टोत्तरगत-
वारानावर्च्य' पुनरपि न्यामादि कृत्वा

गुह्यानिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मन्कृतं जपम् ।

सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥

इति सामान्यार्योदकेन जपं देवस्य दक्षकरे समर्पितं विभाव्य स्तुवीत । यथा—

श्रीभगवानुवाच ।

गणेशस्य स्तवं वक्ष्ये कलौ श्रुतिमिद्विदम् ।

न न्यासो न च संस्कारो न होमो न च तर्पणम् ॥

न मार्जनं च 'पञ्चाक्षरं सहस्रजपमात्रतः

सिध्यत्यर्चनतः पञ्चशतब्राह्मणभोजनात् ॥

अस्य श्रीगणपतिस्तोत्रमालामन्त्रस्य भगवान् श्रीसदाशिव ऋषिः । 'उष्णिक् छन्दः ।
श्रीगणपतिर्देवता । श्रीगणपतिप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्—

चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिणेत्रं पाशाङ्कुशौ मोदकपात्रदन्तौ ।

करैर्दधानं मरुमीरुहस्यं गणाधिनाथं शशिशूडभीडे ॥ इति ॥

' पादमाचान्तमागत्य—इति पाठः बहुषु कोटेषु दृश्यते.

* पृ. १६३ पं. २४.

* पृ. १२२ पं. ३.

* पद्यास्य—अ.

* अष्टि—ब१, ब२, ब३, अ.

गणनाथस्य पुनस्तर्पणं षोडशोपचारपूजा च

एवं पञ्चावरणीं इष्टं पुनर्देवं दशधा प्राग्बद्धुपतर्प्य षोडशभिः उपचारैः आराधयेत् । [ते च] पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्पधूपदीपनीराजनहृत्त्रचामरयुग-
दर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूलाख्याः । मन्त्रास्तु—श्रीं ह्रीं क्लीं महागणपतये पाद्यं कल्पयामि
नमः इत्यादयः । नैवेद्ये त्रिकोणवृत्तचतुरश्रमण्डलकरणम्, मूलेन प्रोक्षणम्, वं इति
धेनुमुद्रया अमृतीकरणम्, मूलेन सप्तवाराभिमन्त्रणम्, प्राणादिमुद्राप्रदर्शनं च कुर्यात् ।
इहापरिगणितान्यपि पूर्वोत्तरापोशनहस्तप्रक्षालनगण्डूपपुनराचमनीयानि नैवेद्याङ्गत्वेन
पूर्ववत् कल्पयेत् ॥

अग्निकार्यम्

अथ श्रीक्रमे वक्ष्यमाणेन विधिना स्थण्डिलकल्पनादिप्रधानदेवतापञ्चोपचारान्तं कृत्वा

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रियै स्वाहा । श्रिया इदं न मम ॥

३ श्रीपतये स्वाहा । श्रीपतये इदं न मम ॥

इत्यादिरीत्या^१ पञ्चमामिधुनवर्जं श्यादिविघ्नकर्तृपर्यन्ताः विंशतिदेवता उद्दिश्य चतुर्थ्यन्तैः
वीजत्रयाद्यैः स्वाहाशिरस्कैः तत्तन्नाममन्त्रैः आज्येन एकैकवारं उद्देशत्यागपूर्वकं हुत्वा
अथ प्रधानदेवतायै महागणपतये मूलेन दशवारं हुत्वा वक्ष्यमाणप्रकारेण बलिं प्रदाय
महाव्याहृत्यादिविधिं निर्वर्तयेत् ॥

बलिदानम्

होमाकारणपक्षे बलिमात्रं दद्यात् । यथा—‘पुरतः स्ववामभागे त्रिकोणवृत्त
चतुरश्रात्मकं मण्डलं कृत्वा ऐं व्यापक्रमण्डलाय नमः इति गन्धादिभिरन्यत्र्य
अर्धमक्तुर्गुरितोदकं सक्षीरादिप्रयं पात्रं तत्र विन्यस्य ॐ ह्रीं सर्वविघ्नहृद्भवः सर्वभूतम्यो
हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दक्षकराणि वामकरतस्त्वमुद्रासृष्टं क्षीरं वयुपरि
दत्त्वा बाणमुद्रया बलिं भूतैः प्राहितं विभाज्य प्रणमंति ॥

^१ परमानन्दतन्त्रादिषु च नैवेद्ये । अन्य एव । ते च । पाद्यमर्घ्याचमनस्नानहस्तपुष्पगन्ध-
पुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलनीराजनपुष्पांजलिशिरकमण्यन्तैः ॥ संवादकः

^२ “ ताम्बूलं च ” इत्यधिकः—अ, भ. ^३ तर्पणोक्तकामानुकारेण ।

^४ सप्तदशद्विः वामनाये—अ.

नमोऽर्चनार्थेऽर्चनार्थः

अथ प्रथमं शिवार्चनं— अथ च देवं गुरुं त्रिं नमस्कृत्य पुनरादि
दत्त्वा प्रथमं शिवार्चनं—

अस्य श्रीमहात्मनोऽर्चनं महात्मनोऽस्य गणकन्दारे नम इति शिवमि ।
निचूडापर्यन्तमे नम इति गुरुः । महात्मनोऽर्चनं देवतायै नम इति हृदये । गं व्रीजाय
नम इति गुरुः । स्वाहाकारे नम इति पादयोः । ॐ कौलकाय नम इति नाभौ ।
नम अर्धाष्टनिर्दरं शिवयोगाय नम इति ऋग्मण्डले च न्यस्य । उक्तैः षडङ्गमन्त्रैः
अहुष्टादिषु हृदयार्दिषु च स्वामं विराय । पूर्वोक्तमङ्गला घ्यान्वा । श्यामान्तमे
वक्ष्यमाणप्रयोगेण मन्त्राणां मातामाताय श्रीक्रमे वक्ष्यमाणविधिना मूलमष्टोत्तरशत-
शारानावर्यं पुनरपि न्यासादि कृत्वा

गुणानिगुणगोप्ता त्वं गृहाणामन्कृतं त्रयम् ।

सिद्धिर्भवतु मे देव स्वप्रसादान्मयि स्थिरा ॥

इति सामान्यार्चनार्थेन त्रयं देवस्य दक्षकरे नमर्पितं विभाष्य स्तुवीत । यथा—

श्रीमगवानुवाच ।

गणेशस्य स्तवं वक्ष्ये कल्पी क्षाटिनि सिद्धिदम् ।

न न्यासो न च सम्कारो न होमो न च तर्पणम् ॥

न मार्जनं च पञ्चाक्षरं सहस्रत्रयमावतः

मिथ्यन्यर्चनतः पञ्चशतप्राक्षणभोजनात् ॥

अस्य श्रीगणपतिस्तोत्रमालामन्त्रस्य भगवान् श्रीसदाशिव ऋषिः । उष्णिक् छन्दः ।

श्रीगणपतिर्देवता । श्रीगणपतिप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्—

चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिणेत्रं पाशाङ्कुशौ मोदकपात्रदन्तौ ।

करैर्दधानं सरसीरूहस्थं गणाधिनाथं शशिचूडमीडे ॥ इति ॥

^१ पादमाचान्तमागत्य— इति पाठः बहुषु कोशेषु दृश्यते.

^२ पृ. १६३ पं. २४.

^३ पृ. १२२ पं. ३.

^४ पद्यास्य—अ.

^५ अष्टि—४१, ४२, ४३, म.

गणनाथस्य पुनस्तर्पणं षोडशोपचारपूजा च .

एवं पञ्चावरणीं इष्ट्वा पुनर्देवं दशधा प्राग्बहुपतर्प्य षोडशभिः उपचारैः आराधयेत् । [ते च] पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्पधूपदीपनीराजनच्छत्रचामरयुग-
दर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूलाख्याः । मन्त्रास्तु—श्रीं ह्रीं क्लीं महागणपतये पाद्यं कल्पयामि
नमः इत्यादयः । नैवेद्ये त्रिकोणवृत्तचतुरश्रमण्डलकरणम्, मूलेन प्रोक्षणम्, वं इति
धेनुमुद्रया अमृतीकरणम्, मूलेन सप्तवारामिमन्त्रणम्, प्राणादिमुद्राप्रदर्शनं च कुर्यात् ।
इहापरिगणितान्यपि पूर्वोत्तरापोशनहस्तप्रक्षाळनगण्डूपपुनराचमनीयानि नैवेद्याङ्गत्वेन
पूर्ववत् कल्पयेत् ॥

अग्निकार्यम्

अथ श्रीक्रमे वक्ष्यमाणेन विधिना स्थण्डिलकल्पनादिप्रधानदेवतापञ्चोपचारान्तं कृत्वा

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रिये स्वाहा । श्रिया इदं न मम ॥

३ श्रीपतये स्वाहा । श्रीपतये इदं न मम ॥

इत्यादिरीत्या^१ पञ्चममिथुनवर्जं श्रयादिविघ्नकर्तृपर्यन्ताः विंशतिदेवता उद्दिश्य चतुर्थ्यन्तैः
वीजत्रयाद्यैः स्वाहाशिरस्कैः तत्तन्नाममन्त्रैः आच्येन एकैकवारं उद्देश्यागपूर्वकं हुत्वा
अथ प्रधानदेवतायै महागणपतये मूलेन दशवारं हुत्वा वक्ष्यमाणप्रकारेण बलिं प्रदाय
महान्याह्न्यादिविधिशेषं निर्वर्तयेत् ॥

बलिदानम्

होमाकरणपक्षे बलिमात्रं दद्यात् । यथा—‘पुरतः स्वयामभागे त्रिकोणवृ-
त्तचतुरश्रान्मकं मण्डलं कृत्वा ऐं व्यापकमण्डलाय नमः इति गन्धादिभिर्ग-
र्धमत्तपुरितोदक सक्षीरादित्रयं पात्रं तत्र किन्यस्य ॐ ह्रीं सर्वविघ्नहृद्भयः सर्वगं
हूं फट् स्वाहा इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दशकरार्पितं वामकरत्तमुद्रासृष्टं क्षीरं
दत्त्वा बाणमुद्रया बलिं भूतैः ग्राहितं विभाव्य प्रणमेदिति ॥

^१ परमानन्दवर्तमादिषु च नैवेद्ये । अन्य एव । ते च । पाद्यमर्घ्याचमनस्नानय-
पुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलाख्याराजनपुष्पांबलिपरिमणनत्वेताः ॥ शंभुदृष्टः

^२ “ताम्बूळं च” इत्यधिकः—अ, भ.

^३ तर्पणोत्सवप्रकारेण ।

^४ बाणमुद्राद्वयैः बाणभागे—अ.

मुरामुरौघयोस्सदा जयप्रदं भयप्रदं
 समस्तविघ्नघातिनं स्वभक्तपक्षपातिनम् ॥
 कराम्बुजात्कङ्कणः पदान्जकिङ्किणीगणो
 गणेश्वरो गुणार्णवः ऋणीश्वराङ्गभूषणः ।
 जगत्त्रयान्तरायशान्तिकारकोस्तु तारको
 भवार्णवाद्नेकदुर्घहाच्चिदेकविग्रहः ॥
 यो भक्तिप्रवणः परावरगुरोस्स्तोत्रं गणेशाष्टकं
 शुद्धस्सयतचेनसा यदि पठेन्नित्यं त्रिसन्ध्यं पुमान् ।
 तस्य श्रीरतुला स्वसिद्धिसहिता श्रीशारदा सारदा
 स्यातां तत्परिचारिके किल तदा काः कामनानां कथाः ॥

सुवासिनीपूजा

ततः श्रीक्रमे वक्ष्यमाणेन क्रमेण सुवासिनीपूजनहविःप्रतिपत्तिदेवतोद्गासनदिशोऽं
 समापयेत् । अत्र च सुवासिन्या साकं बटुकार्चनमपि । तत्र मन्त्रः—३ बं बटुकाय
 नमः इति । मम निर्विघ्नं मन्त्रसिद्धिर्भूयादिति तौ प्रति प्रार्थनायां तयाऽस्त्विति
 तत्प्रतिवचनम् । मूलान्ते अमुकतत्त्व शोधयामि नमः स्याहेति तत्त्वत्रयशोधनं
 चेति विशेषः ॥

पुरध्वरणविधिः

एवं नित्यक्रमं प्रवर्तयन् श्यामाक्रमे^१ वक्ष्यमाणेन विधिना अष्टाविंशतिसहस्र-
 सह्यापुरध्वरणजपः । प्रकृते कलियुगत्वात् तच्चतुर्गुणितम् । प्रथमेऽहनि सहस्रं ततः
 प्रत्यहं त्रिसहस्रसहस्रं च कृत्वा जपदशांशहोम—तद्दशांशतर्पण—तद्दशांशब्राह्मणमोजनानि
 विदध्यात् । होमद्रव्याणि च—

मोदकैः पृथुकैर्लाजैः सक्तुभिधेशुपर्वभिः ।

नारिकेलैस्तिळैः शुद्धैः सुपकैः फदळीफलैः ॥

इत्युक्तान्यथै । एतेषां प्रमाणं तु—मोदका अगण्डिता ग्रामनिताः । पृथुकलाजसक्तको
 मुष्टिपरिमिताः । शुकुप्रमाणं श्लोक एवोक्तम् । नारिकेलं अष्टधा खण्डितम् । तिलाः

यकैकभावनासमर्चनासमर्पितं
 दकैः प्रमोदकैः प्रमोदमोदमोदकम् ।
 समर्पितं नवन्यधान्यनिर्मितं
 षेडतं नखण्डितं नखण्डमण्डनं कृतम्
 द्विजातिकृत्स्वनिष्ठभेदवर्जितं
 तनं च निर्गुणं निराकृतिं च निष्क्रिय
 चिदात्मकं सुखात्मकं परं पदं
 मि तं गजाननं स्वमाययाऽऽत्तविग्रहम्
 त्वमष्टमूर्तिरीशसूनुरीश्वरः
 वरं च शम्बरं धनञ्जयः प्रमञ्जनः ।
 क्षितः क्षितिर्निशाकरः प्रभाकरः
 रप्रचारहेतुरन्तरायशान्तिकृत् ॥
 मालनीलमेकदन्तमुन्दरं
 नं नुमो गजाननामृताब्धिमन्दिरम् ।
 नादसत्कलाकलापमन्दिरं
 रायदुस्तमशमार्कमाश्रितोदरम् ॥
 ष्टकानिनादनूपुरस्वनैः
 ताळनादभेदसाधनानुरूपतः ।
 त्ततोऽङ्गतोङ्गथेपिथेपिशब्दतो
 कदशशाङ्कशेखराप्रतः प्रवृत्त्यति ॥
 कनायकैकनायक विनायकं
 लापकल्पनानिदानंमादिपूरुषम् ।
 गेधरं महेश्वरामसम्भवं
 मूलेसेविनामपारैवेमथप्रदम् ॥
 तुन्दिरं सदन्दनूकभूरगं
 तादिवन्दितं ममज्ञानिद्रमेवितम् ।

सुरासुरौघयोस्सदा जयप्रदं भयप्रदं
 समस्तविघ्नघातिनं स्वभक्तपक्षपातिनम् ॥
 कराम्बुजात्तकङ्कणः पदान्जकिङ्किणीगणो
 गणेश्वरो गुणार्णवः फणीश्वराङ्गभूषणः ।
 जगत्त्रयान्तरायशान्तिकारकोस्तु तारको
 भवार्णवादनेकदुर्ग्रहाविदेकविग्रहः ॥
 यो भक्तिप्रवणः परावरगुरोस्स्तोत्रं गणेशाष्टकं
 शुद्धस्संयतचेतसा यदि पठेन्नित्यं त्रिसन्ध्यं पुमान् ।
 तस्य श्रीरतुला स्वसिद्धिसहिता श्रीसारदा सारदा
 स्यातां तत्परिचारिके किल तदा काः कामनानां कथाः ॥

सुवासिनीपूजा

ततः श्रीक्रमे वक्ष्यमाणेन क्रमेण सुवासिनीपूजनहविःप्रतिपत्तिदेवतोद्घासनदिशेषं
 समापयेत् । अत्र च सुवासिन्या साकं बटुकार्चनमपि । तत्र मन्त्रः—३ वं बटुकाय
 नमः इति । मम निर्विघ्नं मन्त्रसिद्धिर्भूयादिति तौ प्रति प्रार्थनायां तथाऽस्त्विति
 तत्प्रतिवचनम् । मूलान्ते अमुकतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहेति तत्त्वत्रयशोधनं
 चेति विशेषः ॥

पुरश्चरणविधिः

एवं नित्यक्रमं प्रवर्तयन् इयामाक्रमे^१ वक्ष्यमाणेन विधिना अष्टाविंशतिसहस्र-
 सहस्राष्टपुरश्चरणजपः । प्रकृते कलियुगत्वात् तद्यतुर्गुणितम् । प्रथमेऽहनि सहस्रं ततः
 प्रत्यहं त्रिसहस्रसहस्रं च कृत्वा जपदशांशहोम—तदशांशतर्पण—तदशांशमाह्वणभोजनानि
 विदध्यात् । होमद्रव्याणि च—

मोदकैः पृथुकैर्दार्जैः सक्तुभिश्चेधुपर्वभिः ।

नारिकैर्द्वैस्त्रिभुजैः शुद्धैः सुपक्वैः कदलीकैः ॥

इत्युक्तञ्चपि । एतेषां प्रमाणं तु—मोदका अष्टाविंशतिः प्राग्मिताः । पृथुकानामक्रमे
 मुष्टिपरिमिताः । इधुप्रमाणं श्लोकः एवेत्यन् । नारिकैः अष्टाशः सन्ति । तिथाः

सुदुष्कप्रमाणाः शतसङ्घपाका वा । फद्वीकृतपत्रं पदगण्डितम्, पृथु चेषपावचि
खण्डितम् । अमीषां द्रव्याणां मधुक्षीरघृतनित्तानां पृथक्पृथग्गृह्यतयो होमसङ्घपा-
विण्डाष्टमभागमिताः ३५० । श्लोकपाठक्रमेण भवन्ति । अष्टद्रव्यहोमात् प्रागावरण-
देयतानां एकैकादृतिः प्रधानदेवतापाथ 'या दशादृतपः ताः आग्नेनैव भवन्ति ।
तर्पणपूर्वाङ्गं तु चतुराश्रितितर्पणवदेव ॥

इत्थं पुरश्चरणेन सिद्धमनुः, स्यात्तन्वेषेणोपास्तौ च धीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्ति-
फार्चनपरः, काम्यापेक्षी चेत् श्यामाक्रमे षड्यमागेन तत्तन्कामानुशुग्णेन द्रव्येण इद्वा
सिद्धसङ्कल्पः सुखी विहरेत् ॥ इति शिवम् ॥

इति धीमाधुरानन्दनाथचरणारविन्दमिडिन्द्यायमानमानसेन उमानन्दनाथेन निर्मिते
कल्पसूत्रानुसारिणि नित्योत्सवनिबन्धे महागणपतिक्रमनिरूपणं नाम
तदर्णोद्घातो द्वितीयः समाप्तः

यौवनोल्लासः तृतीयः—श्रीक्रमः

नत्वा श्रीभासुरानन्दनाथपादाम्बुजद्वयम् ।
युनक्त्युमानन्दनाथो यौवनोल्लासमद्भुतम् ॥
महात्रिपुरसुन्दर्या मतोऽत्र यजनक्रमः ।
शीर्ष्यन्ते गणपत्यादिक्रमा यदुपजीविनः ॥
आदाय श्रीभासुरानन्दनाथाचार्यापास्मद्गुरवे ह्युमानन्दनाथः ।
श्रेयोमूलं साधकानां तनोति यौवनोल्लासं श्रीक्रमोपक्रमेण ॥
इह सप्तप्रकरणान्याह्निकेन सपर्यया ।
होममुद्रान्यासजपनैमित्तिकसमर्चनैः ॥
आह्निके श्रीगुरुष्यानं प्राणसंयमनं ततः ।
चिद्धिमर्शो हृदा मूलावृत्ती रश्मिसरस्मृतिः ॥
ज्ञानं सन्ध्याविधानं च पूजाप्रकरणे पुनः ।
द्वारपूजाऽऽर्चनैपथ्यं आसनावस्थितिक्रमः ॥
दीपनाथसपर्या च श्रीचक्रपरिकल्पनम् ।
मन्दिरार्चा भूतशुद्धिः प्रन्मूहोत्सारणं ततः ॥
न्यासजालविधिः पात्रात्मादनं मातुरर्चनम् ।
मुद्राकृतिः षडङ्गार्चा निन्याश्रीगुरुपूजनम् ॥
नवावृत्तिसपर्या च श्रीदेवीपुनरर्चनम् ।
अथ कामकलाष्यानं सौभाग्यहृदयस्मृतिः ॥
कृताकृतचयं होमस्य बलिदानविधिस्तथा ।
जपस्तोत्रे सुवाग्न्याः पूजनं नत्त्वशोधनम् ॥

चुलुकप्रमाणाः शतसहस्राका वा । कदलीफलमल्पं यद्यखण्डितम्, पृथु चेद्यपारुचि
खण्डितम् । अमीषां द्रव्याणां मधुक्षीरघृतसिक्तानां पृथक्पृथगाहुतयो होमसहस्रा-
पिण्डाष्टमभागमिताः ३५० । श्लोकपाठक्रमेण भवन्ति । अष्टद्रव्यहोमात् प्रागावरण-
देवतानां एकैकाहुतिः प्रधानदेवतायाश्च 'या दशाहुतयः ताः आव्येनैव भवन्ति ।
तर्पणपूर्वाङ्गं तु चतुरावृत्तितर्पणवदेव ॥

इत्थं पुरश्चरणेन सिद्धमनुः, स्वातन्त्र्येणोपास्तौ च श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्ति-
कार्चनपरः, काम्यापेक्षी चेत् श्यामाक्रमे वक्ष्यमाणेन तत्तत्कामानुगुणेन द्रव्येण इष्ट
सिद्धसङ्कल्पः सुखी विहरेत् ॥ इति शिवम् ॥

इति श्रीभाष्युरानन्दनाथचरणारविन्दमिळिन्दायमानमानसेन उमानन्दनाथेन निर्मिते
कल्पसूत्रानुसारिणि नित्योत्सवनिबन्धे महागणपतिक्रमनिरूपणं नाम
तरुणौल्लासो द्वितीयः समाप्तः

यौवनोच्छासः तृतीयः—श्रीक्रमः

नत्वा श्रीभासुरानन्दनाथपादाम्बुजद्वयम् ।
 युनक्त्युमानन्दनाथो यौवनोच्छासमद्भुतम् ॥
 महात्रिपुरसुन्दर्या मतोऽत्र यजनक्रमः ।
 धीर्त्यन्ते गणपत्यादिक्रमा यदुपजीविनः ॥
 आद्याय श्रीभासुरानन्दनाथाचार्यावास्मद्गुरवे ह्युमानन्दनाथः ।
 श्रेयोमूढं साधकानां तनोति यौवनोच्छासं श्रीक्रमोपक्रमेण ॥
 इह सप्तप्रकरणान्याह्निकेन सपर्यया ।
 होममुद्रान्यासजपनैमित्तिकसमर्चनैः ॥
 आह्निके श्रीगुरुष्वानं प्राणसंयमनं ततः ।
 चिद्विमर्शो हृदा मूढावृत्ती रश्मिसरस्मृतिः ॥
 शानं सन्ध्याविधानं च पूजाप्रकरणे पुनः ।
 द्वारपूजाऽऽत्मनैपप्यं आमनावस्थितिक्रमः ॥
 दीपनाथसपर्यां च धीचक्रपरिकल्पनम् ।
 मन्दिरार्चा भूतशुद्धिः प्रयुक्तोन्मार्गं ततः ॥
 न्यासजाटविविधः पात्रामादन मानुस्त्वनम् ।
 मुद्रावृत्तिः षड्द्वार्यां निर्याश्रीगुरुरूपजनम् ॥
 नवावृत्तिसपर्यां च धीर्देवपुनर्त्वनम् ।
 अथ धामकल्पस्थानं सौभाग्यवद्दत्तस्मृतिः ॥
 वृत्तावृत्तचं होमस्य वृत्तिशक्तिरिच्छया ।
 जपस्तोत्रे भुवाग्निः पूजनं तत्त्वरोधनम् ॥

देवतोद्वासनं चाथ विशेषार्थविसर्जनम् ।
 सङ्क्षेपार्चविधिस्तद्वत् क्रत्वर्थनियमास्ततः ॥
 श्रीचक्रलेखनोपायस्तप्रतिष्ठाविधिस्तथा ।
 होमादिप्रक्रियास्तत्तद्विधिज्ञानप्रयोजनाः ॥
 सन्तु पद्धतयो लोके कल्पसूत्रानुगाः पराः ।
 अनन्यसव्यपेक्षेयं प्रायेणेति विभाव्यताम् ॥
 कादिहायोः पञ्चदशोरियं साधारणी मता ।
 श्रीषोडश्या विशेषस्तु तत्र तत्र निरूपितः ॥
 सर्वश्रीक्रममन्त्रेषु त्रितार्या योजनं पुरः ।
 ऐं ह्रीं श्रीमित्यात्मिकायास्ता च तत्पूर्वकेषु न ॥
 श्रीमान् प्रोक्तगुणो लब्ध्वा दीक्षामुक्तगुणाद्गुरोः ।
 इष्टा महागणपतिमारभेत श्रियः क्रमम् ॥

आह्निकप्रकरणम्

गुरुध्यानम्

मुहूर्ते प्राग् उत्थाय निदग्णः शयने निजे ।
 अपलापाय पापानामादोवेनं समाचरेत् ॥
 स्वप्नरुग्भ्रगाम्भोजरुर्गिन्नापीटवासिनम् ।
 शिवस्वप्नं श्वेतवस्त्रनात्यभूषानुलेपनम् ॥
 दयाऽऽर्द्धदृष्टिं स्नेहस्वं वरुणपकण्ठभुजम् ।
 धानाङ्गलना पीतवस्तुताऽरुग्भेदना ॥
 पञ्चवया वामकरे शक्त्या दधुमुजाह्वयम् ।
 गौरं श्रीनामुरं नाथं मानन्दं विन्दयेत् सुधीः ॥

ततः ऐं ह्रीं श्रीं ह्रस्वैर्हसक्षमलवरयूं सहस्रमलवरयीं ^१ह्र्मौं र्हौः अमुकाम्बासहितश्री
अमुकानन्दनाथगुरु^२श्रीपादुकां पूजयामीति मन्त्रान्ते सुमुखसुवृत्तचतुरश्रमुद्गरयोन्याख्याभिः
पञ्चभिः मुद्राभिः तं प्रणमेत् । मुद्राप्रकारस्तु तत्प्रकरणे वक्ष्यते ।

ततः—

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे ।
विद्याऽवतारसंसिद्धयै स्वीकृतानेकविप्रह ॥
नवाय नवरूपाय परमार्थस्वरूपिणे ।
सर्वाज्ञानतमोभेदभानये चिद्घनाय ते ॥
स्वतन्त्राय दयाकृतसुविप्रहाय शिवात्मने ।
परतन्त्राय भक्तानां भग्यानां भव्यरूपिणे ॥
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शानाम् ।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञानरूपिणे ॥
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्वामुपर्यधः ।
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥
^३इत्येवं पञ्चभिः श्लोकैः स्तुवीत यतमानसः ।
प्रातः प्रबोधसमये जपात् सुदिवसं भवेत् ॥

प्राणसंयमनम्

अथ तच्चरणकमलदुग्गळविगळ्दभृतरसविसरपरिप्लुताखिलाङ्गं आत्मानं भावयन्
शिवादिश्रीगुरुभ्यो नम इति मूर्धनि चद्वाञ्जलिः त्रिः प्राणानायच्छेत् । तत्प्रकारस्तु
—एकवारमाहृतया मूलविद्यया पिङ्गळ्यापथेन पूरकं, त्रिराहृतया तथा मूलाधारा-
नादताज्ञासंज्ञेषु कमलेषु क्रमेण शोणपीतधेतकूटत्रयविभावनापूर्वं सुप्रज्ञायां कुम्भकं,
सकृदाहृतया च तथा इटानाडीधर्मना रेचकमिति । इह पूरकरेचकयोः पिङ्गळेऽयोः
व्यत्ययोऽपि दृष्टोऽन्यत्र ॥

१. ह्र्मौः र्हौः—अ १. २. श्रीपरमगुरुरपरमेष्ठिगुरुश्री—अ १. ३. र्थस्वरूपिणे इति पाठः न पुस्तके.

४. स्वप्नसादादहं देव इत्युक्तयोऽस्मि सर्वदा । सादायुक्तमहापातान् विमुक्तोऽस्मि शिबोऽस्मि च ॥
(इत्यधिकः अ पुस्तके) .

चिद्विमर्शः

तेन च नियमितपवनमनःस्पन्दः आम्लाधारं आ च ब्रह्मरन्ध्रमुद्रतां तद्विहृता-
सदृशाकृतिं तरुणारुणपिञ्जरतेजसं ज्वलन्तीं सर्वकारणभूतां परां संविदं विचिन्त्य

हृदा मूलावृत्तिः

तद्दशमनिकरभस्मितसकलकश्मलजाले मूलं मनसा दशवारमावर्त्य

रश्मिमालास्मरणम्

वक्ष्यमाणान् रश्मिमालामन्त्रांश्च एकवारमावर्त्तयेत् । रश्मिलगावर्तनं तु
त्रैवर्णिकविषयम् ॥

यदि प्रबोधसमकालमावश्यकोपाधिस्तदा तन्निरसनपूर्वमुक्तमनुतिष्ठेत् ॥

इति काल्यकृत्यम् ॥

अजपागायत्रीभावनम्

^१ [इति देवी प्रार्थ्यं गुरुरूपदेशेन ज्ञातं सहजसिद्धं अजपाजपं निवेदयेत् ।
मया पूर्वेदुरजपां पट्टच्छताधिक-एकविंशतिसाहस्रिकां निःश्वासोच्छ्वासरूपिणीं मूला-
धारादिब्रह्मरन्ध्रान्तसप्तचक्रनिवासिनीन्व्यो देवतान्यो निवेदयामीति सङ्कल्प्य हंसस्तोऽहं
इति मन्त्रं पञ्चविंशतिवारं जपित्वा तदुपरि निःश्वासोच्छ्वासादिकं गायत्रीरूपं
भावयित्वा ॥

प्रातः प्रभृतिसायान्तं सायादिप्रातरन्तवः ।

यत्करोमि जगदोमं तदस्तु तत्र पूजनम् ॥]

भूषार्पणादि गुरुरक्षालनान्तम्

मनुद्रवमने देवि परितस्तनमण्डिते ।

निन्दुवति नमस्तुभ्य पादचारं^२ धमस्त मे ॥

^१ [] एतद्विद्वान्मन्त्रो भागः (श्री. भ. १) पुस्तकस्यैव स्यन्दे.

^२ •द्वारं ध. इति 'न' पुस्तके कः.

इति भूमिं प्रार्थ्य धरणीतन्व्यस्तवहन्नाडीपार्श्वपादमुत्थाय प्रामात् बहिः स्मार्तेन विधिना निर्वर्तितशौचक्रियः

आयुर्वलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ।

ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

इति मन्त्रेण दन्तधावनकाष्टमभिमन्त्र्य, ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः
इति मन्त्रेण दन्तधावनं, ऐं ह्रीं श्रीं हृष्टेयया जिहोद्वेखनं च विधाय, कफविमोचन-
नासाशोधनदूपिकानिरसनपूर्वकं विहितविशतिगण्डूपः, ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं—ऐं ह्रीं श्रीं ॐ
श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः—
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं—ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं सहकलह्रीं श्रीं—इति मन्त्रचतुष्टयेन मुखं
प्रक्षाल्य यथासृत्याचामेत् ॥

ज्ञानविधिः

ततो नद्यादौ वैदिकज्ञानोत्तरं श्रीललिताप्रोत्थं तान्तिकम्बानं करिष्ये इति
सङ्कल्प्य, जले पुरतो हस्तमात्रं चतुरश्रमण्डलं परिगृह्य, तत्र—

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः सृष्टानि ते रवे ।

तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इति सूर्यमन्मर्थ्यं,

आवाहयामि त्वां देवि ज्ञानार्थमिह मुन्दरि ।

एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

इति गङ्गामर्थयित्वा ऐं ह्रीं श्रीं हां ह्रीं ह्रूं ह्रीं ह्रीं ह्रः क्रौं इत्यङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलं
मित्त्वा, ततो गङ्गाऽऽदिसर्वतीर्थान्वाहनोत्तरं वं इति सलिलबीजेन सप्तवारमभिमन्त्र्य,
मुहूर्तलमावर्तयन् भूर्धनि त्रीमुद्रकाञ्चलीन् दत्त्वा, त्रिरपथ पीत्वा, मूलपूर्वं श्रीललितां
तर्पयामीति त्रिस्तर्पणं, मूलेन त्रिः प्रोक्षणं च आत्मनो योनिमुद्रया विदध्यात् ॥

गृहे तु विना तर्पणम् । अशक्तौ च स्मार्तेन पथा मन्त्रभस्मज्ञानयोरन्यतरं
निर्वर्त्य मूलेन त्रिराचमनप्रोक्षणे केवलं कुर्यात् ॥

सन्ध्याविधिः

अथ दौते वाससी परिधाय विधृतपुण्ड्रः वैदिकी सन्ध्यामभिवन्द्य तान्त्रिकी-
माचरेत् । यथा—मूलेन^१ त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके
श्रोत्रे असे नाभिं हृदयं शिरश्चाभिसृशेत्^२ । ^३एवं त्रिराचम्य, पूर्ववत् प्राणानायम्य,
त्रिरात्मानं च प्रोक्ष्य, अञ्जलिना सलिलमादाय ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः मार्तण्ड-
भैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय स्वाहेति मन्त्रेण उदयते विवस्वते त्रिर्ष्यं दत्त्वा तन्मण्डले
श्रीचक्रमनुचिन्त्य तत्र ध्यायेत्—

ध्यायेत् कामेश्वराङ्गस्थां कुरुविन्दमणिप्रभाम् ।
शोणाम्बरस्रगालेपां सर्वाङ्गीणविभूषणाम् ॥
सौन्दर्यशेवधिं सेषुचापपाशाङ्कुशोज्ज्वलाम् ।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकाम् ॥
सच्चिदानन्दवपुषं सदयापाङ्गविभ्रमाम् ।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां^४ ललिताम्बिकाम् ॥

अत्रायुधानां क्रमः स्वरूपं च सपर्याप्रकरणे वक्ष्यते ॥

ततः—ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विद्महे ऐं ह्रीं श्रीं ह स क
ह ल ह्रीं पीठकामिनि धीमहि । ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं तन्नः त्रिन्ने प्रचोदयात्—इति
मन्त्रेण महेदये त्रिर्ष्यं दत्त्वा मूलेन त्रिः सन्तर्प्य मूलेन पूर्ववदाचम्य^५ जपप्रकरणे
वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्य मूलमष्टोत्तरशतवारं आवर्तयेत् । ततः पुनः

^१ मूलतण्डप्रयेण [कूटप्रयेण] इति ' न ' । ^२ ' परिमृशेत् । इति ' न ' ।

^३ षोडशसुपांसनाथं तु मूलप्रये दशवीजसाम्पुटितेन प्रथमादिषण्डप्रयेण तत्त्वशोधनम् । सर्वेण
मूलेन सर्वतत्त्वशोधनं चेति विशेषः । एवमुत्तरप्रायि षण्डप्रयेण होयम् ।—इत्यधिकः [अ] पुस्तके.

^४ परदेवता—अ, अ१, म.

^५ ह्रां ह्रीं ह्रूं सः मार्ताण्डभैरवं तर्पयामि त्रिः । मूलेन शान्तां सायुषां सशक्तिः सवाहनां
सपरिभारं धीरुल्लिखामहात्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामीति त्रिः सन्तर्प्यं थाचम्य—इत्यधिकः (अ) पुस्तके.

कताङ्गान्यायादिकं श्रुत्या जपे षण्मासमन्तेन श्रीदेव्यै मनस्य आचम्य मण्डलस्य
सौम्यं विमर्जनमुद्रया शूर्पे विगृजेत् ॥

इयमेकैव प्रातःसंघ्नाऽनुष्ठेया सूत्रकारमने नान्या मान्यादिकादयः ॥

अथ सपर्यासायनानि सग्याय ब्रह्मयज्ञादि निर्वर्तयेत् इति भिवम् ॥

आद्विकप्रकरणं प्रथमं समाप्तम्

सपर्यासकरणम्

यागमन्दिरप्रवेशः

अथ मौनवान् यागमन्दिरमागत्य, गोमयेनोपद्विस्तद्धारम्यण्डिलाम्यन्तरस्य रङ्ग-
षल्यायलङ्घनस्य धूपधूपितस्य बद्धवितानकुमुमस्रजो मण्डपस्य पश्चिमद्वारे तिष्ठन्
दक्षवामनगतयोः उर्ध्वभागे च क्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं भद्रकाव्यै नमः, ३ भैरवाय नमः, ३ लम्बोदराय नमः ॥

इति निम्नो द्वादशदेवताः सम्पूज्य, अन्तः प्रविष्टश्चाचम्य दैदाफालौ^१ सङ्कीर्त्य मम
श्रीललिताप्रसादसिद्धयर्थं ययाराक्ति क्रमं निर्वर्तयिष्ये इति सङ्कल्प्य, विधृताखणवसना-
भरणानुलेपनमाल्यः, सङ्कल्पमात्रकल्पिताकल्पो वा, ताम्बूलेन जातीपत्रफलवङ्गैला-
कर्पूराख्यपत्रतितेन वा सुरभिज्वदनः समास्तौर्णे ऊर्णावसनमृदुनि शुचिनि बाला-
तृतीय^२वीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते मूलमन्त्रोक्षिते चित्रकम्बलाद्यन्यतमे आसने ऐं
ह्रीं श्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः इति पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य प्राञ्जुख उदञ्जुखो वा
पद्मासनाद्यन्यतमेन आसनेन उपविशेत् ॥

^१[कुलार्णवे—

यदाशाऽभिमुखो मन्त्री त्रिपुरां परिपूजयेत् ।

देवीपश्चात्तदा प्राचीं प्रतीचीं त्रिपुरापुरः ॥

इति पूज्यपूजकयोः मध्यं प्रतीचीति नियमः ॥]

^१ अत्र देशस्थाने शक्तिसंगमत्रोक्तं देशनाम, कालस्थाने बाष्टांगोक्तेः कार्यं इति अभियुक्ताः ।

^२ बीजहंसमन्त्राभ्यां—अ.

^३ अयं भागः (श्री) कोश एव.

गृहे तु विना तर्पणम् । अशक्तौ च स्मार्तेन पथा मन्त्रभस्मप्राणयोरन्यतरं
निर्वर्त्य मूलेन त्रिराचमनप्रोक्षणे केवलं कुर्यात् ॥

सन्ध्याविधिः

अथ धौते वाससी परिधाय विधृतपुण्ड्रः वैदिकीं सन्ध्यामभिवन्द्य तान्त्रिकी-
माचरेत् । यथा—मूलेन^१ त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके
श्रोत्रे असे नाभिं हृदयं शिरश्चाभिस्पृशेत्^२ । 'एवं त्रिराचम्य, पूर्ववत् प्राणानायम्य,
त्रिरात्मानं च प्रोक्ष्य, अञ्जलिना सलिलमादाय ऐं ह्रीं श्रीं हां ह्रीं ह्रूं सः मार्तण्ड-
भैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय स्वाहेति मन्त्रेण उदयते विवस्यते त्रिरर्घ्यं दत्त्वा तन्मण्डले
श्रीचक्रमनुचिन्त्य तत्र ध्यायेत्—

ध्यायेत् कामेश्वराङ्गस्थां कुरुविन्दमणिप्रभाम् ।
शोणाम्बरस्रगालेपां सर्वाङ्गीणविभूषणाम् ॥
सौन्दर्यशेवधिं सेषुचापपाशाङ्कुशोज्ज्वलाम् ।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकाम् ॥
सच्चिदानन्दवपुषं सदयापाङ्गविभ्रमाम् ।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां^३ ललिताम्बिकाम् ॥

अत्रायुधानां क्रमः स्वरूपं च सपर्याप्रकरणे वक्ष्यते ॥

ततः—ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विग्रहे ऐं ह्रीं श्रीं ह स फ
ह ल ह्रीं पीठकामिनि धीमहि । ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं तनः त्रिने प्रचोदयात्—इति
मन्त्रेण महर्षये त्रिरर्घ्यं दत्त्वा मूलेन त्रिः सन्तर्प्य मूलेन पूर्ववदाचम्य^४ जपप्रकरणे
वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्य मूलमष्टोत्तरशतवारं आवर्तयेत् । ततः पुनः

^१ मूलसण्डत्रयेण [कूटत्रयेण] इति ' न ' । ^२ ' अभिस्पृशेत् । इति ' न ' ।

^३ षोडशसुगणसनायां तु मूलत्रये दशाबीजसाम्पुटितेन प्रथमादिसण्डत्रयेण तत्त्वशोधनम् । सर्वेण
मूलेन सर्वतत्त्वशोधनं चेति विशेषः । एषमुत्तरप्रापि सण्डत्रयेण ज्ञेयम् ।—इत्यधिकः [४] पुस्तके.

^४ परदेवता—अ, अ१, अ.

^५ हां ह्रीं ह्रूं सः माताङ्गभैरवं तर्पयामि त्रिः । मूलेन साक्षां सायुषां सशक्तिकां सवाहनां
सपरिवारां श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामीति त्रिः सन्तर्प्य आचम्य—इत्यधिकः (४) पुस्तके.

मन्दिरार्चा

अथ तत्र चक्रराजे मन्दिरपूजां कुर्यात् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः,—रत्नद्वीपाय, नानावृक्षमहोद्या-
नाय, कल्पवाटिकायै, सन्तानवाटिकायै, हरिचन्दनवाटिकायै, मन्दारवाटिकायै,
पारिजातवाटिकायै, कदम्बवाटिकायै, पुष्परागरत्नप्राकाराय, पद्मरागरत्नप्राका-
राय, गोमेदकरत्नप्राकाराय, वज्ररत्नप्राकाराय, वैडूर्यरत्नप्राकाराय, इन्द्रनीलरत्न-
प्राकाराय, मुक्तारत्नप्राकाराय, मरकतरत्नप्राकाराय, विद्रुमरत्नप्राकाराय,
माणिक्यमण्डपाय, सहस्रस्तम्भमण्डपाय, अमृतवापिकायै, आनन्दवापिकायै,
विमर्शवापिकायै, बालातपोद्वाराय, चन्द्रिकोद्वाराय, महाशृङ्गारपरिघायै,
महापद्माटव्यै, चिन्तामणिमयगृहराजाय, पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय, दक्षिणाम्नाय-
मयदक्षिणद्वाराय, पश्चिमाम्नायमयपश्चिमद्वाराय, उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय,
रत्नप्रदीपवलयाय, मणिमयमहासिंहासनाय, ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय, विष्णुमयैक-
मञ्चपादाय, रुद्रमयैकमञ्चपादाय, ईश्वरमयैकमञ्चपादाय, सदाशिवमयैकमञ्चफल-
काय, हंसतूलतूलिकायै, हंसतूलमहोपधानाय, कौमुभास्तरणाय, महावि-
तानकाय,—ऐं ह्रीं श्रीं महायवनिकायै नमः ॥

इति चतुश्चत्वारिंशन्मन्दिरमन्त्रैः तत्तदग्निल भावयन् कुमुमाक्षतैरभ्यर्चयेत् । एवमेव सर्वत्र
अर्चने तत्तद्भावना श्रेयसी ॥

वर्धनीपात्रनिधानादि दीपप्रज्वालनान्तम्

ततो जलपूर्णं वर्धनीपात्रं स्वयामभागे, गन्धपुण्याक्षनादिकां सपर्यामामप्री
समप्रां स्वदक्षदेशे, क्षीरकण्टशादिकं देव्याः पद्माङ्गणे च निधाय, दीपानभितः
प्रज्वालयेत् । असम्भवे तु दीपां दीप वा । इह च विदोषः—

घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तच्छ्रीपस्तु वामतः ।

सितवर्तियुतो दक्षे वामतो रक्तवर्तिकः ॥

दक्षवामभागे देव्या एव ॥

^१ [शक्तिसङ्गमन्त्रे नित्यनैमित्तिकपुरश्चरणादिव्यतिरिक्तेषु काम्येषु जपेषु गजा-
श्वादीनि चरासनान्युक्तानि । तदलाभे मृत्प्रकृतिकानि कुशप्रकृतिकानि वा
आन्दोलिकादीनि वृक्षविशेषरूपाणि च कथितानि । विस्तरमिमां न तद्वचनलेखः ॥]

ततः ऐं ह्रीं श्रीं रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नम इति भूमौ पुष्पाञ्जलिं
दद्यात् । ततः ऐं ह्रीं श्रीं समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रश्रीपादुकाम्यो नम इति
मूर्धनि वद्वाञ्जलिः स्ववामदक्षपार्श्वयोः क्रमेण पूर्ववत् श्रीगुरुपादुकामनुमुद्यार्थं,
पञ्चमुद्राभिः श्रीगुरुं महागणपतिमन्त्रेण च गणपतिं प्रणम्य ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हः
अस्त्राय फट् इत्यस्त्रमन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अंगुष्ठादिकनिष्ठान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे
च व्यापकं कुर्यात् ॥

श्रीचक्रपरिकल्पनम्

अथ पुरतश्चतुर्विंशत्यङ्गुलिमितां भूमिमपहाय, गोमयेनोपलिप्ते शुचिनि समे
हस्तमात्रस्थण्डिले यथायोग्यपरिमाणे सुवर्णरूप्यताम्रादिपट्टे वा क्षीरमिश्रितेन सिन्दूर-
रजसां बुद्बुमेन वा हेमादिलेखिनीगृहीतेन विन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मचतुर्दशार-
कर्णिकावृत्ताष्टदळपुनःकर्णिकावृत्तपोडशदळमर्यादावृत्तत्रयचतुरश्रत्रितयात्मकं श्रीचक्रं
विलिखेत्, विलेखयेद्वा । स च प्रकारः एतत्प्रकरणावसानं कथयिष्यते ॥

यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा

अथ सूत्रानुक्तामपि साम्प्रदायिकसम्मतां तन्त्रान्तरोदितां यन्त्रप्राणप्रतिष्ठां
कुर्यात् । यथा—ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः
श्रीचक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि श्रीचक्रस्य वाङ्मनःप्राणाः इह आयान्तु स्वाहा इति ।
एवमेव आत्मप्राणप्रतिष्ठाऽदौ सम्प्रदायः शरणीकार्यः ॥

यद्वा—काञ्चनरूप्यपञ्चलोहरत्नस्फटिकगण्डकीशिलायुक्तीर्णं वक्ष्यमाणेन प्रतिष्ठा-
विधिना प्रतिष्ठापितं तत्स्वास्तीर्णपट्टवसने श्रीखण्डचन्द्रनादिनिर्मिते पीठे निवेशयेत् ॥

मन्दिरार्चा

अथ तत्र चक्रराजे मन्दिरपूर्णां कुर्यात् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्बोनिधये नमः,—रत्नद्वीपाय, नानावृक्षमहोदा-
 नाय, कल्पवाटिकायै, सन्तानवाटिकायै, हरिचन्दनवाटिकायै, मन्दारवाटिकायै,
 पारिजातवाटिकायै, कदम्बवाटिकायै, पुष्परागरत्नप्राकाराय, पद्मरागरत्नप्राका-
 राय, गोमेदकरत्नप्राकाराय, वज्ररत्नप्राकाराय, वैदूर्यरत्नप्राकाराय, इन्द्रनीलरत्न-
 प्राकाराय, मुक्तारत्नप्राकाराय, मरकतरत्नप्राकाराय, चिद्रुमरत्नप्राकाराय,
 माणिक्यमण्डपाय, सहस्रस्तम्भमण्डपाय, अमृतवापिकायै, आनन्दवृक्ष-
 विमर्शवापिकायै, बालातपोद्वाराय, चन्द्रिकोद्वाराय, महाशृङ्ग-
 महापद्माट्यै, चिन्तामणिमयगृहराजाय, पूर्वाश्रायमयद्वाराय, दक्षिण-
 मयदक्षिणद्वाराय, पश्चिमाश्रायमयपश्चिमद्वाराय, उत्तर-
 रत्नप्रदीपवल्याय, मणिमयमहासिंहासनाय, ब्रह्ममयैकमवपादाय, ईश्वरमयैकमवपादाय,
 मन्त्रपादाय, रुद्रमयैकमवपादाय, ईश्वरमयैकमवपादाय, हंसनूलतूलिकायै,
 हंसनूलमहोपवान्नाय, तानकाय,—ऐं ह्रीं श्रीं महायविकायै नमः ॥

इति अनुशुभ्वारिशनमन्दिरमन्त्रैः तत्तदङ्गिणं

इति पुण्यैः षडङ्गं विन्यसेत् । अत्र पूर्वादिचतुर्दिगाधिकरणकं सकृदेक-
एवमुत्तरत्रापि । अथ तत्र मण्डले ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फडिति क्षाति
विस्तारोत्सेधं स्वर्णरूप्यताम्रादिमयं त्रिपदं चतुष्पदं षट्पदमष्टपदं वा
अग्निमण्डलाय 'दशकलाऽऽत्मने अर्घ्यपात्राधाराय नम इति निधाय
विभावितस्य तस्य पश्चिमादिप्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं धूम्राक्षिणे नमः, ऊर्मायै, ज्वालिन्यै, ज्वा-
विस्फुलिङ्गिन्यै, सुश्रियै, सुररुपायै, कपिलायै, हव्यवाहायै, कव्यवाहायै
इति दशबह्विकलाः यादिकांतैः सम्पूज्य, आधारोपरि अस्त्रेण क्षाळितं
सूर्यमण्डलाय 'द्वादशकलाऽऽत्मने अर्घ्यपात्राय नम इति प्रतिष्ठाप्य सूर्यम-
ण्डलात्स्य तस्य पूर्वोक्तक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः, खं घं तापिन्यै, गं कं
घं पं मरीच्यै, ङं नं ज्वालिन्यै, चं धं रुच्यै, छं दं सुपुत्रायै, जं थं भं
शं तं विश्वायै, वं णं बोधिन्यै, टं ढं धारिण्यै, ठं डं क्षमायै नमः ॥

इति द्वादशसूर्यकलाः समन्वय्य, तस्मिन् शंते ३ मं सोममण्डलाय 'षोडश-
अर्घ्यामृताय नम इति कर्पूरादिवासितं वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरविन्दुं दाना, सो-
सञ्चिन्तिते तत्र अर्घ्यसलिले पूर्वोक्तक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं अमृतायै नमः, मानशायै, पूषायै, तुष्टायै, पुष्टायै, रत्यै
शानिन्यै, चन्द्रिकायै, कान्यै, ज्योत्स्नायै, श्रियै, प्रीत्यै, अङ्गदायै,
पूर्वामृतायै नमः ॥

इति षोडशसूर्यकलाः अक्षरादिभिर्मर्गान्नैः यजेत् । ततः पूर्ववन् विदित्शु-
च, ३ क ए ई छ ह्रीं हृत्पाय नमः हृत्पदानिर्धारादुष्यं पूजयामि इ-
दिनादिपुत्रादुष्यं दिगन्तं पुण्यैः षट्ज्ञानि समर्चयेत् । श्रीषोडशाक्षर्यं तु
मूढपदं नैव । एवमुत्तरत्रापि ॥

अथ अत्राय फडिनि अत्रमन्त्रेण मंगश्य, ३ कवचाय हृमिनि धवगुण्डनमुद्रया अवगुण्डय, धेनुयोनिसुद्रे प्रदग्ध्य, मूलेन मत्तचारमभिमन्त्र्य, तसल्लिङ्गपृथ्वैः आत्मानं पूजोपरकरणानि चाथोक्ष्य, गङ्गागतजलान् किञ्चिद्वर्धन्यां क्षिपेत् ॥ इति सामान्यार्थविधिः ॥

विशेषार्थविधिः

अथ सामान्यार्थोदकेन तदक्षिणतो विन्दुत्रिकोणरत्कोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं मस्यमुद्रया परिकल्प्य, विन्दौ मानुस्वारं तुरीयस्वरमालिङ्ग्य ^१(विद्यया मध्यमम्यर्च्य) चतुरस्रे प्राग्बन् पटङ्गं विन्यस्य कूटत्रयेण त्रिकोणकोणानम्यर्च्य पुरंभागादिप्रादक्षिण्येन कूटत्रयद्विरावृत्त्या पट्कोणस्य कोणांश्च क्रमेण कुसुमादिभिः अभ्यर्चयेत् । अथ तत्र मण्डले ३ ऐं अग्निमण्डलाय ^२द्वादशकलाऽऽत्मने अर्घ्यपात्राधाराय नम इति उक्तलक्षणमाधारमादाय, प्राग्बत् विचिन्त्य तस्मिन्नुक्तदिग्गामु दशकृगानुकलाः संमृश्य, तदुपरि सुवर्णरूप्यशङ्खमुक्ताद्युक्तिमहाशङ्खनारिकेल्याध्वपलाशादिनिर्मितमुक्तविस्नारोत्सेधं त्रिकोणचतुरस्रकर्वालाद्यन्यतमाकारं पात्रं ३ ह्रीं सूर्यमण्डलाय ^३द्वादशकलाऽऽत्मने अर्घ्यपात्राय नम इति मन्त्रेण निधाय, पूर्ववत् विभाविते तत्र ३ ह्रीं ऐं महालक्ष्मि ईश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्योग्निप्रक्षिणि परमाकाशभामुरं आगच्छ आगच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्य प्रतिगृह्य हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, दार्शितक्रमेण द्वादशदिनेशकला. सम्भाव्य, तत्र पात्रे सौः सोममण्डलाय ^४षोडशकलाऽऽत्मने अर्घ्यामृताय नम इति मन्त्रेण कलशगतं कस्तूरिकाऽऽद्यधिवासितं क्षीरमभिपूर्य प्राग्बत् अवमृष्टे तत्र चन्दनागरकपूरकचोरकुङ्कुमरोचनाजटामांसिशिला-रसाह्याष्टगन्धपङ्कजोलितं यथासम्भव गन्धकर्दमद्विन्नं वा सुरमिळ कुसुमं निक्षिप्य मूलाशकलान्यार्द्रकनागरादिखण्डानि च समिश्र्य प्रागुक्तभङ्गया षोडशसोमकलाः सम्पूज्य, तत्र विशेषार्थामृते स्वाप्रादिप्रादक्षिण्येन अकथादिषोडशवर्णाभमकरोलात्रयं त्रिकोण विलिङ्ग्य, तदन्तः स्वाप्रादिकोणेषु प्रादक्षिण्येन हृत्क्षान् विलिङ्ग्य, यहिश्च मूलाखण्डत्रयं, विन्दौ सविन्दुं तुरीयस्वरं, तद्गामदक्षयोः क्रमेण हं सः इति च

^१ कुण्डलितो भागः (धी) कोश एव वर्तते.

^२ ' अर्घ्यप्रद ' इत्यधिकः—अ.

^३ ' धर्मप्रद ' इत्यधिकः—अ.

^४ ' कामप्रद ' इत्यधिकः—अ.

इति पुण्यैः पडङ्गं विन्यसेत् । अत्र पूर्वादिचतुर्दिगाधिकरणकं सकृदेकमेवास्त्रं ज्ञेयम् । एवमुत्तरत्रापि । अथ तत्र मण्डले ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फडिति क्षाळितं चतुरङ्गुल-विस्तारोत्सेधं स्वर्णरूप्यताम्रादिमयं त्रिपदं चतुष्पदं पट्पदमष्टपदं^१ वा आधारं ३ अं अग्निमण्डलाय 'दशकलाऽऽत्मने अर्घ्यपात्राधाराय नम इति निधाय अग्निमण्डलत्वेन विभावितस्य तस्य पश्चिमादिप्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं धूम्रार्चिणे नमः, ऊष्मायै, ज्वलिन्यै, ज्वालिन्यै,
विस्फुलिङ्गिन्यै, सुश्रियै, सुरूपायै, कपिलायै, हव्यवाहायै, कव्यवाहायै नमः ॥

इति दशवह्निकलाः यादिक्षातैः सम्पूज्य, आधारोपरि अस्त्रेण क्षाळितं शङ्खं ३ उं सूर्यमण्डलाय 'द्वादशकलाऽऽत्मने अर्घ्यपात्राय नम इति प्रतिष्ठाप्य सूर्यमण्डलात्मकतया ध्यातस्य तस्य पूर्वोक्तक्रमेण—

ऐ ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः, खं बं तापिन्यै, गं फं धूम्रायै,
घं पं मरीच्यै, ङं नं ज्वालिन्यै, चं धं रुच्यै, छं दं सुषुम्नायै, जं थं भोगदायै,
झं तं विश्वायै, जं णं बोधिन्यै, टं ढं धारिण्यै, ठं डं क्षमायै नमः ॥

इति द्वादशसूर्यकलाः समभ्यर्च्य, तस्मिन् शंखे ३ मं सोममण्डलाय 'षोडशकलाऽऽत्मने अर्घ्यामृताय नम इति कर्पूरादिवासितं वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरविन्दुं दत्त्वा, सोममण्डलत्वेन सञ्चिन्तिते तत्र अर्घ्यसलिले पूर्वोक्तक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं अमृतायै नमः, मानदायै, पूषायै, तुष्टयै, पुष्टयै, रत्यै, धृत्यै,
शशिन्यै, चन्द्रिकायै, कान्त्यै, ज्योत्स्नायै, श्रियै, प्रीत्यै, अङ्गदायै, पूर्णायै,
पूर्णामृतायै नमः ॥

इति षोडशेन्दुकलाः अकारादिविसर्गान्तैः यजेत् । ततः पूर्ववत् विदिक्षु मध्ये दिक्षु च, ३ क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि इत्यादिरीत्या त्रितारीयुतकूटप्रयं द्विरावर्त्य पुन्यैः पडङ्गानि समर्चयेत् । श्रीषोडशाक्षर्यां तु यथास्थितेन कूटपट्केनैव । एवमुत्तरत्रापि ॥

^१ दं पृष्ठं वा इत्यधिकः—न

^२ 'अर्घ्यप्रद' इत्यधिकः—अ.

^३ 'धर्मप्रद' इत्यधिकः—अ.

^४ 'सामप्रद' इत्यधिकः—अ.

इति सदाशिवपोडशकलाः सम्पूज्य,—अत्र ब्रह्मविष्णुरद्राणां प्रत्येकं दश कलाः, ईश्वरस्य चतस्रः, सदाशिवस्य षोडशेति विवेकः । आहत्य कलाः अष्टाशीतिः ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रस्वशुचिपद्मुरन्तरिक्षसद्भोता वेदिपदतिथिर्दुरोणसत् ।
शुभ्रद्वरसदतसद्वयमसदञ्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं वृहत् ॥ नमः ॥

ऐं ह्रीं श्रीं प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय^१ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योर्यु त्रिषु विक्रमणेषु अधिक्षयंति भुवनानि विश्वा ॥ नमः

ऐं ह्रीं श्रीं ज्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारकमिव बन्ध-
नान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ नमः ॥

ऐं ह्रीं श्रीं तद्विष्णोः परमं पदम् सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवास्सः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ नमः ॥

ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिश्रतु । आसिञ्चतु
प्रजापतिर्वाता गर्भं दधातु ते ॥ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं ते अधिनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥ नमः ॥

एतेषु पञ्चमन्त्रेषु अन्त्यौ द्वौ द्विद्विभ्रगात्मकौ ॥

मूलविद्या च—

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स फ ल ह्रीं म् ॥ नमः ॥^१

आहत्य पट् । पूर्वमुक्ता अष्टत्रिंशत्, ततः पञ्चाशत्, ततः पट्, आहत्य
मन्त्राः चतुर्नवतिः ॥

केयाचिन्मते—

^१अखण्डैकरसानन्द^१करे परमुधा^२त्मनि ।

स्वच्छन्दस्फुर^३णामत्र निधेहि कुलनायिके ॥ नमः ॥

अनुल्लस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे ।

अमृतन्वं निधेतास्मिन् वस्तुनि द्विन्नरहपिणि ॥ नमः ॥

^१ वीर्येण इति माष्यन्दिनशाखायां पाठः . ^२ एषां मंत्रप्रयाणामादौ एकैकस्मिन् एकैकं बाल-
बीजमनुक्रमेण विनिवेशनीयमिति बहुषु संश्लेषः—संपादकः . ^३ परे—अ, ब ३, म.

^४ रिमके—अ.

^५ णं मातः—अ.

'त्वद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा' होतस्वरूपिणि ।

भूत्वा परामृताकारा मयि चित्सुरणं कुरु ॥ नमः ॥

ऐं ष्ं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं
स्त्राय स्त्राय स्वाहा ॥ नमः ॥

ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं ह्रीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं
कुरु कुरु ह्रीं सौः मोक्षं कुरु कुरु हसौं स्रौः ॥ नमः ॥

इत्येतैरपि मन्त्रैः पञ्चमिरभिमन्त्रणम् । आहत्य मन्त्रपिण्डसङ्ख्या एकोनशतम् ॥

एतदर्घ्यसंशोधनम् ॥

एवमभिमन्त्रणेन ज्योतिर्मयीकृतात् विशेषार्घ्यामृतात् पात्रान्तरेण
किञ्चिदुद्धृत्य तद्विन्दुभिः त्रिवारं श्रीगुरुपादुकामन्त्रेण शिरसि श्रीगुरुं यजेत् ।
सन्निहिताय तु निवेदयेत् । स्वयं च—

श्रीं ह्रीं ह्रीं आद्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि
योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदम्रौ होमबुद्ध्या जुहुयात् । विशेषार्घ्यपात्रात्
किञ्चित् क्षीरं कारणकलशे निक्षिपेत् ॥

कलशलक्षणं श्यामारहस्ये—

पञ्चाशदङ्गुलो व्यास उच्छ्रयो द्वादशाङ्गुलः ।

कलशानां प्रमाणं तु मुखमष्टाङ्गुलं स्मृतम् ॥

कलशः कांस्यजोऽपि स्यात् । स च देवतायाः पृष्ठे स्थाप्य इति । आविसर्जनं शङ्कं
विशेषार्घ्यपात्रं च न चालयेत् । इदं पात्रद्वयमेव सूत्ररीत्या श्रीक्रमे नान्यत् ॥ इति
विशेषार्घ्यस्थापनविधिः ॥

१ तद्.

२ 'त्वाग्धे चित्सवरूपिणि' इति परमानन्दतंत्रे पाठः. ३ कारणपदं (अ, धी)

शोचन्तोरेव. ४ पञ्चदशानुलो—अ.

अन्तर्यागः

स च ज्ञानार्णवे दृष्टः । यथा—गूलाधारादाप्रस्रविलं विलसन्तीं विसतन्तु-
तनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिङ्गरां विवस्वदयुतभास्कप्रकाशां परदशतमुधामयूखरीतल्लतेजो-
दण्डरूपां परिचितिं भावयेदिति । अथ हृदि श्रीचक्रं विभाव्य तत्र तामेव स्वीकृत-
प्राग्युक्तरूपां श्रीदेवीं ध्यान्वा वक्ष्यमाणैः गन्धादिताम्बूलान्तं षडुपचारमन्त्रैः उपचर्य
तां पुनस्तेजोरूपेण परिणतां परमशिवश्रोतिरभिन्नप्रकाशात्मिकां वियदादिविश्वकारणां
सर्वाविभासिकां स्यात्सामिन्नां परिचितिं सुपुञ्जापथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्नविधिविच्छि-
च्छिदसदमलदशशतदलकमलाद्ब्रह्मासापुटेन निर्गतां त्रिलण्डामुद्रामण्डितशिखण्डे कुसुम-
गर्भिते अञ्जलीं समानीय ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः श्रीललिताया अमृतचैतन्यमूर्ति
कल्पयामि नमः इति मन्त्रमुच्चारयन् निजलीलाऽङ्गीकृतललितवपुषं विचिन्त्य—ऐं ह्रीं
श्रीं ह्रैं ह्रस्वीं ह्रस्वां ।

महापद्मवन्तःस्ये कारणानन्दविग्रहे ।

सर्वभूतहिते मातरेदोहि परमेश्वरि ॥^१

इति मन्त्रेण विन्दुपीठगतनिर्विरोधब्रह्मात्मकश्रीमत्कामेश्वराङ्गे परदेवतामावाहयेत् ॥

अथ निन्वाऽऽदिकमणिमाऽन्तं श्रीकामेश्वराङ्गोपवेशनं विना श्रीदेवीसमानाकृति-
वेशभूपणायुधशक्तिचक्रं श्लोचत्रयगुरमण्डलं च वक्ष्यमाणेषु आवरणेषु निजस्वामिन्यभि-
मुखोपविष्टमवमूरय मूलेन आवाहनसंस्थापनसन्निधापनसन्निरोपनसम्पुर्णकारणाद्यगुण्डन-
बन्धनधेनुयोनिमुद्राः प्रदर्शयन्स्तदग्निलं भावयेत् ॥

अत्र—

मेरुमन्त्रात्मकं चक्रं श्रीशिवमन्त्र देवताः ।

कामेश्वरः प्रकारात्तमा श्रीविमर्त्तस्तदङ्गाः ॥

^१ एते हि देवदेवेशि त्रिपुरे देवपूजिते ।

पराभूतत्रिये दक्षिणं साक्षिभ्यं कुरु सिद्धिरे ॥

देवेशि भक्तिमुलने सर्वोत्तरणसंभवे ।

वाक्पदां पुत्रदिप्यानि तावत्त्वं दृष्टिषु भव ॥

इति अष्टिकाः 'अ' श्लोके.

‘त्वद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा’ होतस्वरूपिणि ।

भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥ नमः ॥

ऐं ष्डं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं
स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा ॥ नमः ॥

ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं ह्रीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं
कुरु कुरु ह्रीं सौः मोक्षं कुरु कुरु हसौं स्रौः ॥ नमः ॥

इत्येतैरपि मन्त्रैः पञ्चमिरभिमन्त्रणम् । आहत्य मन्त्रपिण्डसङ्ख्या एकोनशतम् ॥

एतदर्घ्यसंसोधनम् ॥

एवमभिमन्त्रणेन ज्योतिर्मयीकृतात् विशेषार्थ्यामृतात् पात्रान्तरेण
किञ्चिदुद्धृत्य तद्विन्दुभिः त्रिवारं श्रीगुरुपादुकामन्त्रेण शिरसि श्रीगुरुं यजेत् ।
सन्निहिताय तु निवेदयेत् । स्वयं च—

श्रीं ह्रीं ह्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि

योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण आननः कुण्डलिनीरूपे चिदसौ होमबुद्धया जुहुयात् । विशेषार्थ्यापात्रात्
किञ्चित् क्षीरं *कारणकण्ठसे निक्षिपेत् ॥

फटशब्दज्ञानं श्यामारहस्ये—

*पञ्चमदद्गुह्यो व्याम उच्छ्रायो द्वादशाङ्गुलः ।

फटशानां प्रमाणं तु मुग्गमयाद्गुह्यं स्मृतम् ॥

फटशः कंस्वत्रोऽपि एतत् । न च देवतायाः पृष्ठे स्थान्य इति । आविर्गर्जनं सर्वं
विशेषार्थ्यज्ञानं च न फटशेत् । इदं पात्रज्ञानेन गृह्यतीत्या श्रीकृते गान्धर्व ॥ इति
शिवेनार्थ्यज्ञानविधिः ॥

* एतत्. * एतदेव विशेषार्थ्यज्ञानं इति चरकचरित्रे फटः. * कारणदं (ध, धी)
 क्लेदयेत्. * एतदुद्धृत्य—य.

आसामरणं, अधरयावकं, प्रथमभूषणं (माङ्गल्यसूत्रं), कनकचिन्ताकं
 आङ्गपुरन्धीजनेन धियमाणः कर्ण [कण्ठ] भूषणविशेषः), पदकं,
 युगळं, = मुक्तावळि, एकावळि, छत्रवीरं (इदं चोभयतो वैकल्प्यदामात्मकं
 (एतच्च ; केयूरयुगळचतुष्टयं, बलयवळि, ऊर्मिकावळि, काशीदाम,
 महापदकं, सौभाग्याभरणं (अधश्च जयनालम्बी भूषणविशेषः), पादकटकं,
 भूषणम्) पादाङ्गुलीयकं, एककरे पागं, अन्यकरे अङ्गुशं, इतरकरे
 कटिसूत्रं, अपरकरे पुष्पबाणान् [तत्रोर्ध्वयोः वामदक्षयोः करयोः
 रत्नपुरं, अधःस्थितयोः चापबाणाः । (पाशो वैद्रुमः अङ्गुशो
 पुण्ड्रेक्षुचापे एते च क्रमेण रागरोगमनस्तन्मात्रात्मकवासनारूपाः इति च
 पाशाङ्गुशौ श्रीमन्माणिक्यपादुके, स्वसमानवेद्याभिः आवरणदेवताभिः सह
 रूप्यमयः रोहणं, कामेश्वराङ्कपर्यङ्कोपवेशनं (अत्र इतरासां निजनिजस्थानाव-
 श्लेषम्), त्मात्रम्), अमृतासवचरकं, आचमनीयं, कर्पूरवीटिकां कल्पयामि
 महाचक्राधि

स्थितिमावर्त्तं तु—

नमः ॥ लालवङ्गकर्पूरकस्तूरीकेसरादिभिः ।

तल्लक्ष्मणीफलदलैः पूमैः लाङ्गल्यूपणनागरैः ।

गैः खादिरसारैश्च युक्ता कर्पूरवीटिका ॥

श्रीदलककोलग्रहणम् ।

लक्ष्मिणां आनन्दोद्धारसंविदासहासं, मङ्गल्यार्तिकं कल्पयामि नमः ॥

आदिपदेन तान्मन्त्रीतादिमाजने कुङ्कुमचन्दनादिलिखितस्याष्टचतुर्दशान्यतमस्य
 ऐं ह्रीं श्रृं चरुगोळकत्रत्या शणकमुद्गशुभि वा कर्णिकायां दलेषु च पयः-
 तत्रवारस्तु—मन्त्रोपधूमादिपिथोपादानकानि त्रिकोणशिरस्कडमर्वाकृतीनि चतुरङ्गुलो-
 फमलस्य चन्द्रा-नानि नवसमपद्यान्यतममहूपानि दीर्घपात्राणि निधाय तेषु गोपृतं प्रत्येकं
 शर्करापिण्डीकृतप-
 स्तेषानि घृतपाचि

* एष्टमुद्गशुभि—म.

इत्येतद्गतानामप्य धर्मैः च परम्परम् ।

साक्षा श्रीगुरुत्तरात्प्राप्ता कृता पूजा महात्मना ॥

भेदमन्त्रश्च चतुरसरादिचक्रनवकविभेदयोगतैः प्रकृतार्तिभिः अथपर्वैः शक्यः ॥

चतुष्पष्टपुपचाराद्यंनम्

अथ श्रीगुरुदेव्यायाः चतुष्पष्टपुपचाराणाञ्चोत् । तेषु अगन्तानां मायनया सामान्याभ्योदकात् विविक्तिनिश्चयाचरणाम्बुजे अर्चयन्नुत्तमा पावान्तरं निश्चिन्ते । पुण्याक्षतान्वा समर्पयेत् । भूयावरोरुगान्यङ्गमपमुननारद्वयमपि मष्टपान्तर एव भावनीयम्, मज्जनादिषु तथा दर्शनात्, औचिन्याद्य । अनयोः मष्टपादिस्तद्वत्त्व मन्त्रावयवयेन प्रवेशो न सम्भवति, अनुक्तत्वात् । मज्जनमष्टपद्मेणादिषु मय्येनागं पीठे च मृदुलदुक्कूलासृतिभ भावयितुमुचितम् । श्रीचक्रादवरोहणमपि, उत्तरारोहण-कथनात् । अम्यङ्गादिषु यवनिकाभाषणं च । उपचारमन्त्रादीरं तु—अत्रादौ त्रितारी, ततश्चतुर्ष्वन्तं ललितेति पदं, अधामुकं कल्पयामि नमः इति । ललिता कामेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी इति देवतानामपर्यायेषु सत्त्वपि सूत्रकारेण ललितापदग्रहणात् ललिता-पदप्रयोगः कार्यः । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ललितायै पाद्यं कल्पयामि नमः, आभरणावरोपणं, सुगन्धतैलाम्यङ्गं, मज्जनशालाप्रवेशनं, मज्जनमष्टपमणिपीठोपवेशनं, दिव्य-स्रानीयोद्धर्तनं, उष्णोदकस्नानं, कनककलशय्युतसफलतीर्थ्याभिषेकं (इह श्रीसक्ता-दी^१नामावृत्तिः), धौतवस्त्रपरिमार्जनं, अरुणदुकूलपरिधानं, अरुणकुचोत्तरीयं, आलेपमष्टपप्रवेशनं, आलेपमष्टपमणिपीठोपवेशनं, चन्दनागरुकुङ्कुममृगमद-कर्पूरकस्तूरीगोरोचनादिदिव्यगन्धसर्वाङ्गीणविलेपनं, केशभारस्य कालागरु-धूपं, मल्लिकामालतीजातीचम्पकाशोकशतपत्रपूगकुण्डलीपुन्नागकल्हारमुख्यसर्वर्तु-कुसुममालाः, भूषणमष्टपप्रवेशनं, भूषणमष्टपमणिपीठोपवेशनं, नवमणिमकुटं, चन्द्रशकलं, सीमन्तसिन्दूरं, तिलकरत्नं, कालाञ्जनं, पाळीयुगळं, मणिकुण्डल-

^१ तत्तन्मन्त्रमात्रं वा जपेत् । तथाच तन्त्रसारे “चतुष्पष्टपुपचाराणां अभावे तु मनुं जपेत् । सतदेव^२ फलं विन्यात् साधकः स्थिरमानसः ॥” इति (भ) कोशे अधिकः.

^२ आदिपदेन देव्यथर्वशीर्षसुवर्णचर्मानुवाकादयः.

युगळं, नासामरणं, अधरयावकं, प्रथमभूषणं (माङ्गल्यसूत्रं), कनकचिन्ताकं (एतच्च आन्ध्रपुरन्धीजनेन धियमाणः कर्ण [कण्ठ] भूषणविशेषः), पदकं, महापदकं, मुक्तावळि, एकावळि, छत्रवीरं (इदं चोभयतो वैकल्पदामाम्भकं भूषणम्), केयूरयुगळचतुष्टयं, कल्यावळि, ऊर्मिकावळि, काशीदाम, काटिसूत्रं, सौभाग्यामरणं (अधश्च जघनालम्बी भूषणविशेषः), पादकटकं, रत्नपुरं, पादाङ्गुलीयकं, एककरे पाशं, अन्यकरे अङ्गुशं, इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं, अपरकरे पुष्पबाणान् [तत्रोर्ध्वयोः वामदक्षयोः करयोः पाशाङ्गुशौ । अधःस्थितयोः चापबाणाः । (पाशो वैद्रुमः अङ्गुशो रूप्यमयः) एते च क्रमेण रागरोपमनस्तन्मात्राम्भकवासनास्पाः इति च ज्ञेयम्], श्रीमन्माणिक्यपादुके, स्वसमानवेद्याभिः आवरणदेवताभिः सह महाचक्राधिरोहणं, कामेश्वराङ्गपर्यङ्कोपवेशनं (अत्र इतरासां निजनिजस्थानावस्थितिमावनामात्रम्), अमृतासवचपकं, आचमनीयं, कर्पूरवीटिकां कल्पयामि नमः ॥

तद्दृक्षणं तु—

एलाळवङ्गकर्पूरकस्तूरीकेसरादिभिः ।

चातीफलदलैः पूगैः लाङ्गल्यूपणनागरेः ।

चूर्णैः स्वादिरसारंश्च युक्ता कर्पूरवीटिका ॥

आदिपदेन ताम्बूलीदळकक्रोडग्रहणम् ।

ऐं ह्रीं श्रीं लळितार्थं आनन्दोद्धारविद्यासहासं, मङ्गल्यारतिकं कल्पयामि नमः ॥

तत्प्रकारस्तु—कलधौतादिभाजने कुङ्कुमचन्दनादिभिः पितृस्वाष्ट्यष्टचतुर्दशान्यतमस्य कमलस्य चन्द्राकारं चरुगोळकवत्या चणकमुद्गरि वा कर्णिकायां दलेषु च पयःशर्करापिण्डीकृतसवगोधूमादिपिष्टोपादानकानि त्रिकोणाशिरस्कडमर्वाकृतानि चतुरङ्गुली-त्सेधानि घृतपाचितानि नवसप्तपद्यान्यतमसह्युगानि दीपपात्राणि निधाय तेषु गोचृतं प्रत्येकं

इत्येतद्वासनारूपं अभेदं च परस्परम् ।
ज्ञात्वा श्रीगुरुवक्त्राब्जात् कृता पूजा ।

मेरुमन्त्रश्च चतुरस्त्रादिचक्रनवकविशेषणगतैः लकारां
चतुष्पष्टशुपचाराः

अथ श्रीपरदेवतायाः चतुष्पष्टशुपचारानां
सामान्यार्थोदकात् किञ्चित्किञ्चिदभ्याचरणाम्बुजे
पुष्पाक्षतान्वा समर्पयेत् । भूपावरोपणाम्बुज
भावनीयम्, मज्जनादिषु तथा दर्शनात्, ६
मन्त्रावयवत्वेन प्रवेशो न सम्भवति, अनुक्त
पीठे च मृदुलदुकूलास्तृतिश्च भावयितुमुचितम्
कथनात् । अभ्यङ्गादिषु यवनिकाभावनं च ।
ततश्चतुर्ध्वन्तं ललितेति पदं, अथामुकं क
त्रिपुरसुन्दरी इति देवतानामपर्पयिषु सत्स्व
पदप्रयोगः कार्यः । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ललितायै पाः

सुगन्धतैलाम्बुजं, मज्जनशालाप्रवेशनं
ज्ञानीयोद्धर्तनं, उष्णोदकस्नानं, कन
दी^१नामावृत्तिः), धौतवस्त्रपरिमार्जः
आलेपमण्डपप्रवेशनं, आलेपमण्ड
कर्पूरकस्तूरीगोरोचनादिदिव्यगन्धः
धूपं, मल्लिकामालतीजातीचम
कुसुममालाः, भूषणमण्डपप्रवेश
चन्द्रशकलं, सीमन्तसिन्दूरं,

^१ तत्तन्मन्त्रमात्रं वा जपेन
तत्तदेव फले विन्यात् साधकः हि-

^२ आदिपदेन देव्यपवन्ती

ऐं ही श्री ललितायै अपोशनं कल्पयामि नमः ॥

इति नैवेद्याङ्गत्वेन अपोशनं दत्त्वा—

ऐं ही श्री ललितायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः ॥

इति निवेदयेत् ॥

गन्धादिनैवेद्यान्तं उपचारवस्तुपञ्चकं तु पृथिव्यादिमहाभूतपञ्चकरूपं क्रमेण भावयेत् । सर्वभूतात्मकत्वं च कर्पूरवीटिकायाः ॥

अथ पानीयोत्तरापोशनहस्तप्रक्षाळनगण्डूपाचमनकर्पूरवीटिकाश्वोपचारमन्त्रैः कल्पयित्वा—ऐं ही श्रीं द्रां द्रीं क्लीं च्छं सः क्रौं ह्स्त्र्यै ह्सौः ऐं सर्वसङ्क्षोभिण्यादिनवमुद्राः प्रदर्श्य, षोडशयुपासनायां तु ऐं इति त्रिलण्डामपि प्रदर्शयेत् ॥

ततो ३ मूलान्ते ललिताश्रीपादुकां पूजयामि इति तत्त्वमुद्रासन्दष्ट^१द्वितीय-शकलगृहीतविशेषार्घ्यविन्दुसहार्पितैः दक्षफरोपात्तज्ञानमुद्राभृतकुसुमाक्षतैः श्रोदेवीं त्रिः सन्तर्पयेत् । अनेनैव प्रकारेण सर्वासामावरणदेवतानां तर्पणं ज्ञेयम् ॥ इति देवीपूजनम् ॥

पङ्क्तार्चनम्

अथ श्रीदेव्यङ्गे अग्नीशासुरवायव्यकोणेषु मध्ये दिक्षु च पूर्वोक्तविधिना मूलेन पङ्क्तयुवतीः पूजयेत् ॥

नित्यादेवीयजनम्

ततो मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्याग्नेयान्तं क्रमेण अं आं इं ईं उं इति, पूर्वरेखायां आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं लृं लृं इति, उत्तररेखायां ईशानादिवारुण्यन्तं एं ऐं ओं औं अं इति, पञ्चपञ्चस्वरान् विभाव्य तेषु धामावर्तेनैव प्रागुक्तस्वरूपाः कामेश्वर्यादिनित्या यजेत् । विन्दौ च षोडशं स्वरं अः इति विचिन्त्य महानित्याम् । यथा—

ऐं ही श्री अं ऐं स फ ल ही नित्यक्रिन्ने मददवे सौः अं कामेश्वरी-
नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

^१ मूलद—४१. ४१. अ.

कर्पप्रमितं आपूर्य कर्पूरगर्भिता वर्तिका हृदयेखया प्रञ्चाल्य ३ श्रीं हीं मूं स्त्रूं मूं
 न्दं हीं श्रीं इति नवाक्षर्या नवरत्नेधरीविद्यया अभिमन्त्र्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाम्य
 ३ जगद्धनिमन्त्रमातः स्वाहा इति मन्त्रपूर्वकं गन्धाक्षतादिना घण्टां सम्पूज्य त
 वादयन् जानुचुम्बितभूतलस्तःपात्रं आमस्तकमुद्धृत्य, ऐं हीं श्रीं ललितायै आराति
 कल्पयामि नम इति कल्पयित्वा,

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके ।

आरातिकामिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये ॥

इति नववारं श्रीदेव्या आचूडं आचरणाब्जं परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत् । ततः—

ऐं हीं श्रीं ललितायै छत्रं कल्पयामि नमः, चारमयुगळं, तालवृन्तं, गन्ध
 पुष्पं, कल्पयामि नमः ॥

विविधानि पुष्पाणि कल्पयेत् । एतत्प्रकारश्च सप्तमे अनवस्थाख्योह्लासे द्रष्टव्यः ॥

अथ धूपपात्रभरितेषु अङ्गरेषु दशाङ्गादि निक्षिप्य—

ऐं हीं श्रीं ललितायै धूपं कल्पयामि नमः ॥

इति श्रीदेवीचरणान्तिके समर्प्य तत्पात्रं श्रीदेव्या वामभागे निदध्यात् । दशाङ्गानि तु—

श्वेतकृष्णागरू लाक्षा गुग्गुलुश्चन्दनं घृतम् ।

मधु बिल्वफलं राळः कर्पूरश्च दशाङ्गकम् ॥

इति वचनोक्तानि । ततो दीपभाजने अर्पितं गोघृततैलाद्यक्तं कर्पूरगर्भितं श्यादिविषम-
 सहृयाकं वर्तिजातं प्रञ्चाल्य,

ऐं हीं श्रीं ललितायै दीपं कल्पयामि नमः ॥

इति देव्या दक्षसमसीमनि प्रदर्श्य तत्पात्रं दक्षिणभागे निवेदय,

देव्यप्रतः स्वदक्षिणे अधिचतुरस्रमण्डलं आधरोपरि निहितकनकरोम्यादि-
 भाजनभरितं फलविशेषखण्डसितालङ्कुफादिनिवेद्यं मूलेन प्रोक्ष्य, वं इति धेनुमुद्रया
 अपृतीकृत्य मूलेन त्रिवारमभिमन्त्र्य,

- ३ आं ऐं भगमुगे भगिनि भगोदरि भगमाळे भगावहे भग-
गुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे
नित्यङ्किन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे
रेते सुरेते भगङ्किन्ने ङ्किन्द्रवे ह्येदय द्रावय अमोघे भग-
विघ्ने क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं व्दं जें व्दं
भें व्दं मों व्दं हें व्दं हें ङ्किन्ने सर्वाणि भगानि मे
वशमानय स्त्री हर व्दें ह्रीं आं भगमाळिनीनित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ इं ओं ह्रीं नित्यङ्किन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यङ्किन्नानित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ ईं ओं क्रों भ्रों क्रौं झ्रों छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ ऊं ह्रीं ङ्किन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ ँं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ँं शिवदूतीनित्याश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ ँं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ँं
त्वरितानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ लं ऐं ह्रीं सौः लं कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥
- ३ लं ह स क ल र डें ह स क ल र डीं ह स क ल र डौः
लं नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ एं ह्रीं फ्रें स्तूं क्रों आं ह्रीं ऐं व्दं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं
एं नीलपताकानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

- ३ ऐं म म र य ऊं ऐं विजयानिन्याथ्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥
- ३ ओं ह्रीं ओं मर्महृदयानिन्याथ्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः ॥
- ३ ओं ओं नमो भगवति ज्वालामादिनि देवदेवि सर्वभूत-
संतापकारिणे जानवेदमि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल
प्रज्वल हां हीं हूं र र र र र र र ज्वालामादिनि हुं
फट् स्वाहा ओं ज्वालामादिनीन्याथ्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥
- ३ अं ष्कां ष चित्रानिन्याथ्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ अः क ए ई ल हीं ह म क ह ल हीं स क ल हीं अः
ललितामहानिन्याथ्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

गुरुमण्डलार्चनम्

१. कादिविद्योपासकानाम्

ततो देव्याः पश्चान् मूत्रिकोणपूर्वरेखायाः तदव्यवहितप्रागप्रतिकोणपश्चिम-
रेखायाश्चान्तरे विमलाजयिन्योर्मध्ये अरुणावाग्देवनामत्रिधौ दक्षिणोत्तरायतं रेखात्रयं
विभाव्य दक्षिणसंस्थाक्रमेण दिव्यसिद्धमानवाण्यमोघप्रयं मुनिवेदवमुसद्धृषं समर्चयेत् ।
यथा—

द्विध्यायः

- ऐं हीं श्री पराक्रानानन्दनाथथ्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ परमिधानन्दनाथथ्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ परासक्यम्बार्थीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

दिव्यौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं व्योमातीताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ व्योमेदयम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ व्योमगाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ व्योमचारिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ व्योमस्थाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

सिद्धौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं उन्मनाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ समनाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ व्यापकाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ शक्त्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ घ्न्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ घ्नितमात्राकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ अनाहताकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ बिन्दाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ इन्दाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

मान्यौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं परमान्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ शम्भवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ चिन्मुद्रानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ धाम्भवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ लीलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सम्भ्रमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ चिदानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ प्रसन्नानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ विधानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

- ३ मनोहरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ स्वात्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ प्रतिभानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

मन्वादिविद्यानां गुरुपरम्परा

अथ सूत्रकृतानुक्तानामपि श्रीविद्यात्मनोपलक्षितानां मन्वादिविद्यानां गुरु-
 पारम्पर्यं यथा—

दिव्यीशः

- ऐं ह्रीं श्रीं परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ परविमर्शानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ कामेश्वर्यम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ मोक्षानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ अमृतानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सिद्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ पुरुषानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ अघोरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

सिद्धीशः

- ऐं ह्रीं श्रीं प्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सदानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सिद्धीशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ उत्तमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

मानपीशः

- ऐं ह्रीं श्रीं उत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ परमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सर्वज्ञानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

^१ अर्थ परांशु वेपुचित्तोरांशु जोपठ्यन्ते.

^२ 'उद्धारानन्द' इति परांशुः अर्थः (अ) शेषे.

३. हादिपित्तोपासकानाम्

हादिपित्तोपासकानां गुरुत्तमो यथा—

द्वितीयः

- ॐ ह्रीं श्रीं परमशिवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ कामेश्वर्यम्भानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ दिव्योद्यानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ मदीयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सार्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ प्रशादेव्यम्भानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ प्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

सिद्धीयः

- ॐ ह्रीं श्रीं दिव्यानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ चिदानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ कैवल्यानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ अनुदेव्यम्भानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ महोदयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ ^१सिद्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

मानथीयः

- ॐ ह्रीं श्रीं चिदानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ ^१विश्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ रामानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ कमलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ परानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

^१ अयं पर्यायः (श्री)कोश एव दृश्यते.

^२ विश्वशक्त्यानन्द—अ, अ३, अ.

- ३ मनोहरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ स्वात्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ प्रतिमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

मन्वादिविद्यानां गुरुपरम्परा

अथ सूत्रकृतानुक्तानामपि श्रीविद्यात्मनोपलक्षितानां मन्वादिविद्यानां गुरु-
 पारम्पर्यं यथा—

दिव्यौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ परविमर्शानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ कामेश्वर्यम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ मोक्षानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ अमृतानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ ^१सिद्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ पुरुषानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ अघोरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

सिद्धौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं प्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सदानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सिद्धौघानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ उत्तमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

मानधौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं उत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ ^१परमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ सर्वज्ञानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

^१ अयं पर्यायः वेपुचित्तोद्येषु नोपलभ्यते.

^२ 'उद्भवानन्द' इति पर्यायः अधिकाः (अ) कोटि.

- ३ सर्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ ^१सिद्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ गोविन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

कल्पसूत्रस्य काळीमतान्तर्गतत्वात् इदं पारम्पर्यत्रयं तदनुगमेव । श्रीविद्यार्णवोक्तश्रीपोड-
 शाक्षरीगुरुपादुकापारम्पर्यस्य कादिकाळ्युभयमतसम्मतत्वं ज्ञेयम् ॥

अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमः

अथ प्रासङ्गिकः अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमो यथा—

दिव्यौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं गुरुभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं गुरुपादुकाम्यो नमः ॥

सिद्धौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं परमगुरुभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं परमगुरुपादुकाम्यो नमः ॥

मानचौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं आचार्येभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं आचार्यपादुकाम्यो नमः ॥
 ३ ऐं पूर्वसिद्धेभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं पूर्वसिद्धपादुकाम्यो नमः ॥

एवं स्वस्योपास्यविचौघत्रयसपर्यां विधाय स्वशिरसि पूर्वोक्तरूपं श्रीगुरुं ध्यात्वा,
 पूर्वोक्तिन श्रीगुरुपादुकामन्त्रेण श्रीगुरुं त्रिर्यजेत् ॥

इति गुरुमण्डलाचनम् ॥ एतान्न्यासपूजनमित्युच्यते ॥

^१ इत्यधिकः पर्यायः अ) कोशे.

आवरणपूजा

प्रथमावरणम्

एतदेवतास्वरूपं तु प्रागुक्तमेव । क्रमेण शुद्धारुणपीतवर्णरेखाप्रयस्य लकारप्रकृतिक-
धृतिव्यात्मकस्य चतुरस्रस्य प्रवेशरीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टयदक्षिणभागेषु
वाय्वादिकोणेषु च पश्चिमनैर्ऋतयोः पूर्वज्ञानयोश्च मध्ये क्रमेण—

ॐ ह्रीं श्रीं अग्निमासिद्धिशीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, लहिमा,
महिमा, ईशित्व, वशित्व, प्राकाम्य, भुक्ति, इच्छा, प्राप्ति, सर्वकामसिद्धिशीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत् । एवं उत्तरत्रापि । अत्र देव्याः पुरतः
पश्चिमादिदिक् । पश्चिमनैर्ऋतयोर्मध्ये अधोदिक् । पूर्वज्ञानयोर्मध्ये चोर्ध्वदिक् इति
विवेकः ॥

अथ चतुरस्रमण्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु कोणेषु च क्रमेण—

ॐ ह्रीं श्रीं ब्राह्मीमातृदेवीशीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, माहेश्वरी,
कौमारी, वैष्णवी, वाराही, माहेन्द्री, चामुण्डा, महालक्ष्मीमातृदेवीशीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ततः चतुरस्रान्त्यरेखायां प्रथमरेखोक्तक्रमेण—

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसङ्क्षोभिणीमुद्राराक्षिणीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सर्वविद्राविणी, सर्वाकारिणी, सर्ववराङ्करी, सर्वोन्मादिनी, सर्वमहाङ्कुरा,
सर्वखेचरी, सर्वबीज, सर्वयोनि, सर्वत्रिगुणमुद्राराक्षिणीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥

इति पूजयित्वा,

एताः प्रवटयोगिन्यः शैलोक्यमोहने चक्रे मनुद्राः मन्दिद्वयः सायुषाः मन्त्रजपः
सधारणाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्जिताः सन्दिदि लामानेव
समएवर्चनं पुष्पाञ्जलिना वृत्वा अग्निमासिद्धेः पुरतो ३ अं अः सौः त्रिगुणचक्रे-

- ३ सर्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ ^१सिद्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ गोविन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

कल्पसूत्रस्य काळीमतान्तर्गतत्वात् इदं पारम्पर्यत्रयं तदनुगमेव । श्रीविद्यार्णवीक्तश्रीपोड-
 शाक्षरीगुरुपादुकापारम्पर्यस्य कादिकाब्जुभयमतसम्मतत्वं ज्ञेयम् ॥

अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमः

अथ प्राप्तङ्गिकः अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमो यथा—

दिव्यौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं गुरुभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं गुरुपादुकाम्यो नमः ॥

सिद्धौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं परमगुरुभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं परमगुरुपादुकाम्यो नमः ॥

मानचौघः

- ऐं ह्रीं श्रीं ऐं आचार्येभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं आचार्यपादुकाम्यो नमः ॥
 ३ ऐं पूर्वसिद्धेभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं पूर्वसिद्धपादुकाम्यो नमः ॥

एवं स्वस्योपास्यविद्यौघत्रयसपर्यां विधाय स्वशिरसि पूर्वोक्तरूपं श्रीगुरुं ध्यात्वा,
 पूर्वोक्तिन श्रीगुरुपादुकामन्त्रेण श्रीगुरुं त्रियजेत् ॥

इति गुरुमण्डलार्चनम् ॥ एतावन्नयात्तपूजनमित्युच्यते ॥

^१ 'स्वच्छानन्द' इत्यधिकः पर्यायः (अ) कोशे.

आवरणपूजा

प्रथमावरणम्

एतदेवतास्वरूपं तु प्रागुक्तमेव । क्रमेण शुद्धारणपीतवर्णरेखात्रयस्य लकारप्रकृतिक-
पृथिव्यात्मकस्य चतुरस्रस्य प्रवेशरीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टयदक्षिणभागेषु
धाव्यादिकोणेषु च पश्चिमनैर्ऋतयोः पूर्वशानयोश्च मध्ये क्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं अग्निमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, उषिमा,
महिमा, ईशित्व, वशित्व, प्राकाम्य, भुक्ति, इच्छा, प्राप्ति, सर्वकामसिद्धिश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत् । एवं उत्तरत्रापि । अत्र देव्याः पुरतः
पश्चिमादिदिक् । पश्चिमनैर्ऋतयोर्मध्ये अधोदिक् । पूर्वशानयोर्मध्ये चोर्ध्वदिक् इति
विवेकः ॥

अथ चतुरस्रमध्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु कोणेषु च क्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्मीमातृदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, माहेधरी,
कौमारी, वैष्णवी, वाराही, माहेन्द्री, चामुण्डा, महालक्ष्मीमातृदेवीश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ततः चतुरस्रान्यरेखायां प्रथमरेखोक्तक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसङ्क्षोभिणीमुद्राराक्षिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्ववराङ्करी, सर्वोन्मादिनी, सर्वमहाङ्कृता,
सर्वखेचरी, सर्वबीज, सर्वसोनि, सर्वत्रिसङ्गमुद्राराक्षिणीश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥

इति पूजयित्वा,

एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सद्युधाः ससकलयः
सबाहनाः सपरिवाराः सर्वोत्तारैः सम्पूजिताः सन्निहिताः सन्निविताः सन्निविताः सन्निविताः
समाप्यर्चनं पुष्पाञ्जलिना हृत्वा अग्निमासिद्धेः पुरतो ३ अं अं मौः त्रिपुरचरे-

- ३ सर्वाणन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ 'सिस्तानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ गोविन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

फलपसूत्रस्य काव्चीमतान्तर्गतत्वात् इदं पारम्पर्यत्रयं तदनुगमेव । श्रीविद्यार्णवोक्तश्रीगोड-
 शाक्षरीगुरुपादुकापारम्पर्यस्य फादिकाव्युभयमतसम्मतत्वं ज्ञेयम् ॥

अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमः

अथ प्रासङ्गिकः अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमो यथा—

दिव्यौघः

- ऐं ही श्री ऐं गुरुभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं गुरुपादुकाभ्यो नमः ॥

सिद्धौघः

- ऐं ही श्री ऐं परमगुरुभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं परमगुरुपादुकाभ्यो नमः ॥

मानवौघः

- ऐं ही श्री ऐं आचार्येभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं आचार्यपादुकाभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं पूर्वसिद्धेभ्यो नमः ॥
 ३ ऐं पूर्वसिद्धपादुकाभ्यो नमः ॥

एवं स्वस्योपास्यविद्यौघत्रयसपर्यां विधाय स्वशिरसि पूर्वोक्तरूपं श्रीगुरुं ध्यात्वा,
 पूर्वोक्तिन श्रीगुरुपादुकामन्त्रेण श्रीगुरुं त्रिर्यजेत् ॥

इति गुरुमण्डलार्चनम् ॥ एतावन्नयाः पूजनमित्युच्यते ॥

१ 'स्वच्छानन्द' इत्यधिकः पर्यायः (अ) कोशे.

आवरणपूजा

प्रथमावरणम्

एतदेवतास्वरूपं तु प्रागुक्तमेव । क्रमेण शुद्धारणपीतवर्णरेखात्रयस्य लकारप्रकृतिक-
पृथिव्यात्मकस्य चतुरस्रस्य प्रवेशरीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टयदक्षिणभागेषु
वाय्वादिकोणेषु च पश्चिमनैर्ऋतयोः पूर्वशानयोश्च मध्ये क्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं अग्निमासिद्धिशीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, उषिमा,
महिमा, ईशित्व, वशित्व, प्राकाम्य, भुक्ति, इच्छा, प्राप्ति, सर्वकामसिद्धिशीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत् । एवं उत्तरत्रापि । अत्र देव्याः पुरतः
पश्चिमादिदिक् । पश्चिमनैर्ऋतयोर्मध्ये अधोदिक् । पूर्वशानयोर्मध्ये चोर्ध्वदिक् इति
विवेकः ॥

अथ चतुरस्रमण्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु कोणेषु च क्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्मीमातृदेवीशीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, माहेश्वरी,
कौमारी, वैष्णवी, वाराही, माहेश्वरी, चामुण्डा, महालक्ष्मीमातृदेवीशीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ततः चतुरस्रान्त्यरेखायां प्रथमरेखोक्तक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसङ्क्षोभिणीमुद्राशक्तिशीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सर्वविद्राविगी, सर्वाकर्षिणी, सर्वयज्ञङ्करी, सर्वोन्मादिनी, सर्वमहाकुशा,
सर्वखेचरी, सर्वबीज, सर्वयोनि, सर्वत्रिलण्डमुद्राशक्तिशीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥

इति पूजयित्वा,

एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्त्यः
सबाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्विति तासामेव
समष्ट्यर्चनं पुण्याञ्जलिना कृत्वा अग्निमासिद्धेः पुरतो ३ अं आं सौः त्रिपुराचक्रे-

- ३ सर्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ 'सिद्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ गोविन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
 ३ शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

कल्पसूत्रस्य काञ्चीमतान्तर्गतत्वात् इदं पारम्पर्यत्रयं तदनुगमेव । श्रीविद्यार्गयोक्तश्रीयोड-
 शाक्षरीगुरुपादुकापारम्पर्यस्य काद्रिकाव्युभयमतसम्मतत्वं ज्ञेयम् ॥

अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमः

अथ प्रासङ्गिकः अज्ञातगुरुपारम्पर्याणां गुरुक्रमो यथा—

दिव्यौघः

- ॐ ह्रीं श्रीं ॐ गुरुभ्यो नमः ॥
 ३ ॐ गुरुपादुकाम्यो नमः ॥

सिद्धौघः

- ॐ ह्रीं श्रीं ॐ परमगुरुभ्यो नमः ॥
 ३ ॐ परमगुरुपादुकाम्यो नमः ॥

मानवौघः

- ॐ ह्रीं श्रीं ॐ आचार्येभ्यो नमः ॥
 ३ ॐ आचार्यपादुकाम्यो नमः ॥
 ३ ॐ पूर्वसिद्धेभ्यो नमः ॥
 ३ ॐ पूर्वसिद्धपादुकाम्यो नमः ॥

एवं स्वस्योपास्यत्रिचौघत्रयसपर्यां विधाय स्वशिरसि पूर्वोक्तरूपं श्रीगुरुं ध्यात्वा,
 पूर्वोक्तेन श्रीगुरुपादुकामन्त्रेण श्रीगुरुं त्रिर्व्रजेत् ॥

इति गुरुमण्डलार्चनम् ॥ एतावन्नयाङ्गपूजनमित्युच्यते ॥

तृतीयावरणम्

हकारप्रकृतिकाष्टमूर्त्यात्मकशिवाभिन्ने जपाकुसु^१ममित्रे ^२अष्टपत्रे श्रीदेव्याः
पृष्ठदळमारम्य पूर्वादिदिक्षु आग्नेयादिविदिक्षु च क्रमात्—

ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुसुमादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, अनङ्ग-
मेखला, अनङ्गमदना, अनङ्गमदनातुरा, अनङ्गरेखादेवी अनङ्गवेगिनी,
अनङ्गाङ्गुशा, अनङ्गमालिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसङ्क्षो^३भणचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः
सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः संतर्पिताः सन्विति तासामेव समष्ट्यर्चनं
विधाय अनङ्गकुसुमाया अमे ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेधरीश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः इति संविभाव्य, ह्रीं इति सर्वाकर्षिणीमुद्रां उन्मुद्रयेत् ॥

अमीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ॥

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

इति तृतीयावरणम्

चतुर्थावरणम्

ईकारप्रकृतिकचतुर्दशभुवनात्मकमहामाधारूपे दाडिमीप्रमूलमहोरे षडुर्दसारे
देव्यप्रकोणमारम्य धामावर्तेन—

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसङ्क्षोभिणी^४धीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सर्वविद्राविगी, सर्वोपार्णिगी, सर्वोहादिनी, सर्वमम्भोदिनी, सर्वस्तम्भिनी,
सर्वजृम्भिणी, सर्ववराङ्करी, सर्वरञ्जिनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वोपतारिणी, सर्वमण्डलि-
पूरणी, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

^१ ममित्रे—अ. माभे—अ.

^२ अष्टपत्रे—अ.

^३ अमे—अ. अ१, अ२, अ३, अ४.

^४ अत्रत्यस्यैव 'अर्चि' 'अर्चि'—अ.

श्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सम्पूज्य, द्वां इति सर्वसङ्क्षोभिणीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इति प्रथमावरणम्

द्वितीयावरणम्

श्वेतवर्णे सकारप्रकृतिकपोडशकलाऽऽत्मके चन्द्रस्वरूपे स्रवदमृतरसे षोडशदण्ड-
कूमले देव्यप्रदळमारम्य वामावर्तेन (अप्रादक्षिण्येन)

ऐं ह्रीं श्रीं कामाकर्षिणीं नित्याकळा देवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः, बुद्धपाकर्षिणी, अहङ्काराकर्षिणी, शब्दाकर्षिणी, स्पर्शाकर्षिणी,
रूपाकर्षिणी, रसाकर्षिणी, गन्धाकर्षिणी, चित्ताकर्षिणी, धैर्याकर्षिणी,
स्मृत्याकर्षिणी, नामाकर्षिणी, बीजाकर्षिणी, आत्माकर्षिणी, अमृताकर्षिणी,
शरीराकर्षिणी नित्याकळा देवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

इत्यम्यर्घ्यं, एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाणापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः
ससक्तयः ससाहनाः सपरिवाहः ससौन्दर्यैः सम्पूजिताः सन्विति तासामेव
समदुर्षणं विगम्य कामाकर्षिण्याः पुरतो ३ ऐं ह्रीं श्रीं मांः त्रिपुरेशीचण्डेश्वरीश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः इत्यम्यर्घ्यं, श्री इति सर्वविद्राभिणीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

इति द्वितीयावरणम्

तृतीयावरणम्

हकारप्रकृतिकाष्टमूर्त्त्यात्मकशिवाभिन्ने जपाकुमु^१भमित्रे ^२अष्टपत्रे श्रीदेव्याः
षष्टदळमारम्य पूर्वादिदिक्षु आम्रेयादिविदिक्षु च क्रमात्—

ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुमुमादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, अनङ्ग-
मेखला, अनङ्गमदना, अनङ्गमदनतुरा, अनङ्गरेखादेवी अनङ्गवेगिनी,
अनङ्गाङ्कुशा, अनङ्गमालिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसङ्क्षो^३भणचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः
सबाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः संतर्पिताः सन्विति तासामेव समष्ट्यर्चनं
विधाय अनङ्गकुमुमाया अत्रे ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः इति संविभाव्य, ह्रीं इति सर्वाकार्णिणीमुद्रां उन्मुद्रयेत् ॥

अमीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवसटे ॥

भक्त्या समर्पये तृप्त्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

इति तृतीयावरणम्

चतुर्थ्यावरणम्

ईकारप्रकृतिकचतुर्दशमुबनात्मकमहामापारूपे दाटिमीप्रभूनासहोदरे चतुर्दशारे
देव्यप्रकोणमारम्य धामावर्तेन—

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसङ्क्षोभिर्गी^४श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सर्वविद्राविगी, सर्वाकार्णिगी, सर्वाहादिनी, सर्वगम्भाहिनी, सर्वस्तम्भिनी,
सर्वजृम्भिणी, सर्ववराङ्करी, सर्वरञ्जिनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वाभेनाभिनी, सर्वगम्भ-
पूरणी, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वन्द्वक्षपङ्करीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

^१ मसिधे—अ. मने—भ.

^२ भये—अ, ४१, ४२, ४३, भ.

^३ अष्टपत्रे—अ.

^४ अत्रत्यरत्नेषु 'दाटि' शरणिह—श्री.

श्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सम्पूज्य, द्वां इति सर्वसङ्क्षोभिर्गीतुनां
प्रदर्शयेत् ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इति प्रथमावरणम्

द्वितीयावरणम्

श्वेतवर्णे सकारप्रहृणिकगोउशाफलाऽऽनके चन्द्रस्वल्पे सप्तदशतारसे षोडशरश्मि-
कृत्ये देव्यप्रद्व्यभारम्य वामासनेन (अत्राशिक्षयेत्)

ऐं ह्रीं श्रीं कामाकर्षिणीभिष्वाक्यादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः, सुखपाकर्षिणी, अद्वैताकर्षिणी, सान्द्राकर्षिणी, स्वर्गाकर्षिणी,
स्वास्वाकर्षिणी, स्वाकर्षिणी, गन्धाकर्षिणी, पिताकर्षिणी, पीयूषकर्षिणी,
स्मृताकर्षिणी, नागाकर्षिणी, धात्राकर्षिणी, धात्राकर्षिणी, अमृताकर्षिणी,
श्रीशक्तिनिष्पादकादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

स्वस्वार्थं, स्वस्वः स्वस्वदेवित्वः सर्वस्वार्थानुभवे चरेत् समुद्रः समिद्धयः समुद्रः
स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः
स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः
स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः
स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः

स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः

स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः

स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः स्वस्वार्थः

अमीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पद्ममावरणार्चनम् ॥

इति पद्ममावरणम्

पद्मावरणम्

रेफप्रकृतिकदशकलाऽऽत्मकवैधानराभिन्ने जपामुमनस्सहचरे अन्तर्दशारे देव्यप्र-
कोणमारम्य वामावर्तेन—

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञां श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, सर्वशक्ति,
सर्वैश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्वव्याधिविनाशिनी, सर्वाधारस्वरूपा, सर्वपापहरा,
सर्वानन्दमयी, सर्वरक्षास्वरूपिणी, सर्वेप्सितफलप्रदाश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥

एताः निर्गर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सरत्तयः
सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः संतर्पिताः सन्विति तासामेव
समष्ट्यर्चनं विधाय, सर्वज्ञायाः पुरतः ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं चैत्रिपुरमाठिनीचक्रेश्वरी-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इत्यर्चयित्वा, क्रौं इति सर्वमहाङ्कुरामुद्रां
अङ्कुरयेत् ॥

अमीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पद्ममावरणार्चनम् ॥

इति पद्ममावरणम्

१ 'देवी' इत्यधिकः—श्री.

२ अङ्कुरयेत्—श्री १.

एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायकेः चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्भूजिताः संतर्पिताः सन्विति तासामेव समष्ट्यर्चनं विधाय, सर्वसङ्क्षोभिण्याः पुरतः ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रस्वीं ह्रस्तीं त्रिपुरासिनीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ॐ इति सर्ववराङ्करीमुद्रां समुन्मीलयेत् ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

इति चतुर्थावरणम्

पञ्चमावरणम्

एकारप्रकृतिकदशावतारात्मकविष्णुस्वरूपे प्रभापराभूतसिन्दूरे बहिर्देशारे देव्यम-
क्रोणाद्यप्रादक्षिण्येन—

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदा^१श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, सर्व-
सम्पत्प्रदा, सर्वप्रियङ्करी, सर्वमङ्गलकारिणी, सर्वकामप्रदा, सर्वदुःखविमोचिनी,
सर्वमृत्युप्रशमनी, सर्वविघ्ननिवारिणी, सर्वाङ्गसुन्दरी, सर्वसौभाग्यदायिनीश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः
सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्भूजिताः संतर्पिताः सन्विति तासामेव
समष्ट्यर्चनं विधाय सर्वसिद्धि^२प्रदाया धुरि ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रस्वीं ह्रस्तीं
त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति समम्यर्च्य, सः इति
उन्मादिनीमुद्रां उद्घाटयेत् ॥

^१ सर्वपर्यायेषु अत्र 'देवी' इत्यधिकः—श्री.

^२ प्रदायिन्याः पुरतः—अ.

अमीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

इति पञ्चमावरणम्

षष्ठावरणम्

रेफप्रकृतिकदशकलाऽऽत्मकवैभानराभिन्ने जपासुमनस्तहचरे अन्तर्दशारे देव्यप्र-
कोणमारम्य वामावर्तेन—

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञा^१श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, सर्वशक्ति,
सर्वैश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्वव्याधिविनाशिनी, सर्वाधारस्वरूपा, सर्वपापहरा,
सर्वानन्दमयी, सर्वरक्षास्वरूपिणी, सर्वेप्सितफलप्रदाश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥

एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः
सबाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः समृजिताः संतर्पिताः सन्त्विति तासामेव
समष्ट्यर्चनं विधाय, सर्वज्ञायाः पुरतः ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमाळिनीचक्रेश्वरी-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इत्यर्चयित्वा, श्रौं इति सर्वमहाङ्कुशमुद्रां
^१अङ्कुरयेत् ॥

अमीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

इति षष्ठावरणम्

^१ 'देवी' इत्यधिकः—श्री.

^२ अङ्कुरयेत्—श्र १.

- ३ ही सर्वेशीकरणाय पाशाय नमः पाशाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥
- ३ क्रौं सर्वस्तम्भनाय अङ्कुराय नमः अङ्कुराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥

इत्यायुधार्चनं विधाय नादप्रकृतिकगुणत्रयप्रधानत्रिशक्तिरूपरेखाज्यात्मके बन्धुकपुष्प-
बन्धुकिरणे त्रिकोणे अप्रदक्षबामकोणेषु बिन्दौ च क्रमेण—

- ऐं ही श्रीं मूलप्रथमखण्डं कामेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ मूलद्वितीयखण्डं वज्रेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ मूलतृतीयखण्डं भगमाडिन्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- ३ मूलं लळिताऽम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

एताः अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्रा इत्यादि स्पष्टम् । कामेश्वर्या
अमे ऐं हीं श्रीं ह्रौं ह्रस्वरीं ह्रस्रौः त्रिपुराऽम्बाचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः इत्यवमृश्य ३ ह्रस्रौः इति सर्वबीजमुद्रां विनिर्दिशेत् ॥

अमीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

इति अष्टमावरणम्

नवमावरणम्

बिन्दुभिन्नपरब्रह्मात्मके बिन्दुचक्रे ऐं हीं श्रीं मूलं लळिताऽम्बाश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः इति श्रीदेवीं पूजयेत् । ततः एसा परापररहस्ययोगिनी सर्वाणन्दमये
षक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सराक्तिः सबाहना सपरिवारा सर्वोपचारः
सम्पूजिता संतर्पिताऽस्तु इत्यम्यर्थ्य, पुनः—ऐं हीं श्रीं मूलं श्रीलळितामहाचक्रेश्वरी-

^१ अत्र आयुधार्चने कामेश्वरकामेश्वर्योद्भवयोःप्यायुधानां एवमं बहुषु ह्यं । तदनुगारेणात्र परि- १ मे.

सप्तमावरणम्

ककारप्रकृतिकाष्टमूर्त्यात्मककामेश्वरस्वरूपे पद्मरागरुचिरे अष्टारे देव्यप्रकोणाद्
दक्षिण्येन—

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः वृद्धं
वशिनीवाग्देवता^१श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, कं खं गं घं ङं क्हीं
कामेश्वरी, चं छं जं झं ञं ण्ळीं मोदिनी, टं ठं डं ढं णं वृद्धं विमला, तं थं दं
धं नं ज्ञीं अरुणा, पं फं बं भं मं ह्रस्व्यूं जयिनी, यं रं लं वं इन्द्र्यूं सर्वेश्वरी,
शं षं सं हं लं क्षं क्षीं कौळिनीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

गः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्रा इत्यादि कथितचरम् । वशिण्याः
तः ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः इति सम्पूज्य ह्रस्वैः इति खेचरीमुद्रां उररीकुर्यात् ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

इति सप्तमावरणम्

अष्टमावरणम्

महाभ्यस्तवाद्यतः पश्चिमादिदिक्षु प्राग्दक्षिण्येन—

ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं ह्रीं वृद्धं सः सर्वजम्भनेभ्यो वाणेभ्यो नमः वाणशक्ति-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ धं सर्वसम्भोहनाय धनुषे नमः धनुःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥

^१ 'देवी' इति पूर्वपर अर्थः—श्री.

ततः—

ऐं हीं श्रीं क ए ई ल हीं नमः आत्मतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

३ ह स क ह ल हीं नमः विद्यातत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

३ स क ल हीं नमः शिवतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

ऐं हीं श्रीं क ए ई ल हीं ह स क ह ल हीं स फ ल हीं नमः

सर्वतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

इति निमीळितनयनः क्षणमवस्थाय, श्रीदेवी भुक्तवती विभाव्य, पूर्ववत् उपचारमन्तैः पानीयोत्तरापोशनकरप्रक्षाळनगण्डूयपाद्यादि कल्पयित्वा, भोजनपात्रं नैर्ऋत्यां निरस्य, अक्षेण स्थलं संशोष्य, ततः पुनः प्राग्बदाचमनीयकर्तुरीटिकादक्षिणाकर्तुरीणीराजनानि दत्त्वा, मुवर्णादिभाजनललितं बुङ्कुमण्डूरेताऽऽत्मकं अष्टद्वयकमठकार्गिकास्थापितमणि-मयचक्रपूरितं प्रथमं प्रज्वाल्य, पुन्याक्षतैरभ्यर्च्य, उपचारमन्त्रपूर्वकं—

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् ।

त्रिधा दीपं परिभ्राम्य बुद्धदीपं निवेदये ॥

इति चतुर्दश्या नवधा त्रिधा वा परिभ्राम्य दशभागे स्थानयेत् ॥

मन्त्रपुष्पम्

अथ अञ्जली पुन्याण्यादाय मन्त्रपुष्पम् । पदा—

शिवे शिवमुगीतञ्जलमृततरङ्गमण्डितम्-

क्षयावरणशैवने नयनदापूतमर्चयिष्ये ।

गुरव्रमपुररहते गुणगरीरुनिन्दोऽन्ते

पदङ्गपरिवारिते कतिन एव पुनश्चिञ्चि ॥

इत्युक्त्या पुन्याञ्जलिं समर्पयेत् । इदं च कश्चिदुक्तञ्चैवमर्चयिष्ये इति उक्त्या पूर्ववत् पूषदीपैतिसूत्रगतैनादिपदेन गृह्यन्ते ॥

कामकलाप्यायम्

अथ विन्दुना गुणं विन्दुहृदेन स्वयं मन्त्रैश्च लेखितैः कामकलाप्यायम्

प्याया, सौः इति देवीनामिकाञ्ज शीरेभ्य हृदयेन मन्त्रेण ।

पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इत्यभिपूज्य ३ ऐं इति योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ।
डश्युपासनायां तु ऐं इति त्रिखण्डामपि ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शंरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

इति नवमावरणम्

इयं नवावरणी पूजा अत्यावश्यकी । चतुराम्ना^१यदेवताऽऽदिचतुस्समयदेवताऽन्तानां
र्याऽपि तन्त्रान्तरोक्ता क्रियमाणा श्रेयस एव ॥

अथ पुनरपि श्रीदेव्यै पूर्ववत् धूपदीपो कल्पयित्वा सङ्क्षोभिष्यादिमुद्राः
गीजाः प्रदर्श्य, मूलेन त्रिवारं सन्तर्प्य महानैवेद्यं समर्पयेत् । यथा—श्रीदेव्यप्रे
तुरस्त्रमण्डलं सामान्योदकेन विधाय तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्णरौप्यकांस्यादि-
लीचपकभरितं भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यपेयात्मकं सद्रव्यशुद्ध्यादिरसवद्द्वयजनमञ्जुळं
भ्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासम्भवं वा नैवेद्यं विधाय, (“स्विन्नं वामे
मं दक्षिणे निदध्यात्” इति श्यामारहस्ये दृष्टम् । सुन्दरीमहोदये तु—
देव्या वामे दीपो दक्षिणे नैवेद्यम्” इत्युक्तम्), ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन त्रिः प्रोक्ष्य,
इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य, सप्तवारं मूलेनाभिमन्त्र्य, पूर्ववत् अपोशनं कल्पयित्वा,

हेमपात्रगतं देवि परमान्नं सुसंस्कृतम् ।

पञ्चधा पद्मोपेतं गृहाण परमेश्वरि ॥

ते प्रार्थ्य, पूर्वोक्तनैवेद्योपचारमन्त्रेण निवेद्य, तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं पञ्चप्राणाहृतीः
सपेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्राणाय स्वाहा, ३ ह्रीं अपानाय स्वाहा, ३ सौः

व्यानाय स्वाहा, ३ सौः उदानाय स्वाहा, ३ ऐं ह्रीं सौः समानाय स्वाहा,

मन्त्रे^२ स्वरा ॥

^१ अत्र मन्त्रे सुविद्या षडुपप्राणायाः परि० १ मे.

^२ मन्त्रे स्वारेत्यनेशितो मायः ।

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इत्यभिपूज्य ३ ऐं इति योनिमुद्रां प्रदर्शयित्वा
पोडशयुपासनायां तु ऐं इति त्रिखण्डामपि ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शंरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

इति नवमावरणम्

इयं नवावरणी पूजा अत्यावश्यकी । चतुराम्ना^१यदेवताऽऽदिचतुस्समयदेवताऽऽदि
सपर्याऽपि तन्त्रान्तरोक्ता क्रियमाणा श्रेयस एव ॥

अथ पुनरपि श्रीदेव्यै पूर्ववत् धूपदीपौ कल्पयित्वा सङ्क्षोभिष्यादि
सवीजाः प्रदर्श्य, मूलेन त्रिवारं सन्तर्प्य महानैवेद्यं समर्पयेत् । यथा—श्री
चतुरस्रमण्डलं सामान्योदकेन विधाय तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्णरीप्यकांठ
स्थालीचपकभरितं भक्ष्यभोग्यचोष्यलेहोपेयात्मकं सद्रव्यशुद्धयादिरसवद्भयञ्जनम्
प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासम्भवं वा नैवेद्यं विधाय, (“स्विन्नं
आमं दक्षिणे निदध्यात्” इति श्वामारहस्ये दृष्टम् । सुन्दरीमहोदये तु
“देव्या वामं दीपो दक्षिणे नैवेद्यम्” इत्युक्तम्), ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन त्रिः प्रो
वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य, सप्तवारं मूलेनाभिमन्त्र्य, पूर्ववत् अपोशनं कल्पयित्वा,

हेमपात्रगतं देवि परमान्नं मुसंस्कृतम् ।

पञ्चधा पद्मसोपेतं गृह्णण परमेष्ठरि ॥

इति प्रार्थ्य, पूर्वोक्तनैवेद्योपचारमन्त्रेण निवेद्य, तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं पञ्चप्राणा
कल्पयेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्राणाय स्वाहा, ३ ह्रीं अपानाय स्वाहा, ३ स्रीः
व्यानाय स्वाहा, ३ स्रीः उदानाय स्वाहा, ३ ऐं ह्रीं स्रीः समानाय स्वाहा,
मन्त्रे^२ स्पष्ट ॥

^१ अथ इति सूत्रेण चतुराम्नाः ११०-१ नं.

^२ मन्त्रेण स्वाहात्पत्तनोत्सवो अथ

ततः—

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं नमः आत्मतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं नमः विद्यातत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

३ स क ल ह्रीं नमः शिवतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं नमः
सर्वतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

इति निमीलितनयनः क्षणमवस्थाय, श्रीदेवीं भुक्तवतीं विभाव्य, पूर्ववत् उपचारमन्त्रैः पानीयोत्तरापोशनकरप्रक्षालनगण्डूपाद्यादि कल्पयित्वा, भोजनपात्रं नैर्ऋत्यां निरस्य, अस्त्रेण स्थलं संशोध्य, ततः पुनः प्राग्वदाचमनीयकर्पूरवीटिकादक्षिणाकर्पूरीराजनानि दत्त्वा, सुवर्णादिभाजनलिखितं कुङ्कुमपङ्कजरेखाऽऽत्मकं अष्टदळकमलकर्णिकास्थापितमणि-मयचपकपूरितं प्रथमं प्रज्वाल्य, पुष्याक्षतैरभ्यर्च्य, उपचारमन्त्रपूर्वकं—

अन्तस्तेजो वहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् ।

त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ॥

इति चतुर्दशधा नवधा त्रिधा वा परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत् ॥

मन्त्रपुष्पम्

अथ अञ्जली पुष्याण्यादाय मन्त्रपुष्पम् । यथा—

शिवे शिवसुशीतलामृततरङ्गगन्धोल्लस-

न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि ।

गुरुक्रमपुरस्त्रते गुणशरीरनित्योज्ज्वले

पङ्कजपरिवारिते कलित एष पुष्याञ्जलिः ॥

इत्युक्त्वा पुष्याञ्जलिं समर्पयेत् । इत्येते कतिचिच्चतुष्टयपुष्पाण्यतिरिक्त्य उपचारास्तु पूर्ववत् घूपदीपैतिसूत्रगतेनादिपदेन गृह्यन्ते ॥

कामकलाप्यानम्

अथ बिन्दुना मुखं बिन्दुद्वयेन स्वनौ सङ्घर्षेन योनिरिति कामकलाप्याऽऽम्बिका-
प्यात्वा, सौः इति देवीराक्तिर्वाजं श्रीदेव्या इदमन्त्रेन भावयेत् ॥

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इत्यभिपूज्य ३ ऐं इति योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ।
पोडश्युपासनायां तु ऐं इति त्रिखण्डामपि ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शंरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

इति नवमावरणम्

इयं नवावरणी पूजा अत्यावश्यकी । चतुराम्ना^१यदेवताऽऽदिचतुस्समयदेवताऽन्तानां
सपर्याऽपि तन्त्रान्तरोक्ता क्रियमाणा श्रेयस एव ॥

अथ पुनरपि श्रीदेव्यै पूर्ववत् घूपदीपौ कल्पयित्वा सङ्क्षोभिण्यादिमुद्राः
सबीजाः प्रदर्श्य, मूलेन त्रिवारं सन्तर्प्य महानैवेद्यं समर्पयेत् । यथा—श्रीदेव्यग्रे
चतुरस्रमण्डलं सामान्योदकेन विधाय तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्णरीप्यकांस्यादि-
स्थालीचपकभरितं भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यपेयात्मकं सद्रव्यशुद्धपादिरसवद्वयञ्जनमञ्जुळं
प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासम्भवं वा नैवेद्यं विधाय, (“स्विन्नं वामे
आमं दक्षिणे निदध्यात्” इति श्यामारहस्ये दृष्टम् । सुन्दरीमहोदये तु—
“देव्या वामे दीपो दक्षिणे नैवेद्यम्” इत्युक्तम्), ऐं हीं श्रीं मूलेन त्रिः प्रोक्ष्य,
वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य, सप्तवारं मूलेनाभिमन्त्र्य, पूर्ववत् अपोशनं कल्पयित्वा,

हेमपात्रगतं देवि परमान्नं सुसंस्कृतम् ।

पञ्चधा षडसोपेतं गृह्णाण परमेश्वरि ॥

इति प्रार्थ्य, पूर्वोक्तनैवेद्योपचारमन्त्रेण निवेद्य, तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं पञ्चप्राणाहुतीः
कल्पयेत् । यथा—

ऐं हीं श्रीं ऐं प्राणाय स्वाहा, ३ क्लीं अपानाय स्वाहा, ३ सौः
व्यानाय स्वाहा, ३ सौः उदानाय स्वाहा, ३ ऐं क्लीं सौः समानाय स्वाहा,
ब्रह्मणे^२ स्वाहा ॥

^१ अत्र मंत्रे सूचिता चतुराम्नायाः परि० १ मे.

^२ ब्रह्मणे स्वाहेत्यनपेक्षितो भाषः ।

ततः—

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं नमः आत्मतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं नमः विद्यातत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

३ स क ल ह्रीं नमः शिवतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं नमः
सर्वतत्त्वव्यापिनी ललिता तृप्यतु ॥

इति निमीळितनयनः क्षणमवस्थाय, श्रीदेवीं भुक्तवतीं विभाव्य, पूर्ववत् उपचारमन्त्रैः पानीयोत्तरापोशनकरप्रक्षाळनगण्डूयपाद्यादि कल्पयित्वा, भोजनपात्रं नैर्ऋत्यां निरस्य, अक्षेण स्थलं संशोध्य, ततः पुनः प्राग्बदाचमनीयकर्पूरवीटिकादक्षिणाकर्पूरनीराजनानि दत्त्वा, सुवर्णादिभाजनलिखितं कुङ्कुमपङ्कजरेखाऽऽत्मकं अष्टदळकमलकर्णिकास्थापितमणि-मयचक्रपूरितं प्रथमं प्रज्वाल्य, पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य, उपचारमन्त्रपूर्वकं—

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् ।

त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ॥

इति चतुर्दशधा नवधा त्रिधा वा परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत् ॥

मन्त्रपुष्पम्

अथ अञ्जली पुष्पाण्यादाय मन्त्रपुष्पम् । यथा—

शिवे शिवसुरीतव्यमृततरङ्गमन्थोल्लस-

न्नवापरणदेवते नयनवामृतस्यन्दिनि ।

गुरुक्रमपुरस्त्रने गुणशरीरनिव्योञ्ज्यते

पङ्कजपरिवारिते कठित एव पुष्पाञ्जलिः ॥

इत्युक्त्या पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् । इत्येते कतिचिदनुष्णतृपुष्पाणतिरिक्त्वा उपचाराष्ट्य पूर्ववत् 'पुष्पादीपतिभूजगतेनादिपदेन गृह्यन्ते ॥

वामद्वयाभ्यानम्

अथ विन्दुना मुखं विन्दुद्वयेन स्तनीं मरुत्तरेण स्तेनिरिति वामद्वयाऽऽभ्यानम् ।
प्याथा, स्तौः इति देवीस्तनिकां धीदेव्या इत्यनेन नावनेत् ॥

होमस्य कृताकृतत्वम्

अथ होमः । स च “यद्यग्निकार्यसम्पत्तिः” इति सूत्रगतेन यदिशब्देन कृताकृतः सूचितः । तस्य च कारणपक्षे तदितिकर्तव्यता होमप्रकरणे ज्ञातव्या । तत्र च महाव्याहृतिहोमादवर्गिव बलिदानम् ।^१ होमाकरणपक्षे तु बलिदानमात्रम् ॥

बलिदानविधिः

यथा—देव्या दक्षभागे सामान्योदकेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य, ३ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादि-त्रयं पात्रं तत्र विन्यस्य, ३ ॐ ह्रीं सर्वविघ्नहृद्भयः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा, इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्त्वमुद्रासृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्त्वा वामपार्श्विवातकरास्फोटी कुर्वाणः समुदञ्चितवक्त्रो वाणमुद्रया बलिं भूतैः प्राप्तितं विभाव्य प्रणमेत् ॥ इति बलिदानविधिः ॥

प्रदक्षिणाः

अजेराशक्तिगणपभास्कराणां क्रमादिमाः ।

वेदार्थचन्द्रबद्धपदिसद्गयाः स्युः सर्वसिद्धये ॥

प्रदक्षिणनस्कारानन्तरं जपप्रकरणे वक्ष्यमाणेन विधिना जपं निर्वर्त्य स्तुथीत—

स्तोत्रम्

ॐ गणेशप्रह्वनध्वजयोगिनी राशिरूपिणीम् ।

देवी मन्त्रमयी नमो मातृतां पीडरूपिणीम् ॥ १ ॥

प्रणमामि महादेवी मातृतां परमेश्वरीम् ।

कायहृदोदरोदरोदकडनागमकारिणीम् ॥ २ ॥

^१ एतत्सिद्धिदं प्रसिद्धिदं होमस्य कृताकृतत्वस्य उपरिचय इत्येव ज्ञानार्थं—

१. इत्येव परमेश्वरिणि विघ्नहर्त्रेण मन्त्रार्थे १ ।

मूत्रेण कायहृदोदरोदकडनागमकारिणीम् २ ॥

३. एतत्सिद्धिदं प्रसिद्धिदं होमस्य कृताकृतत्वस्य उपरिचय इत्येव ज्ञानार्थं—

यदशरूपमात्रेऽपि संनिधे स्तुते नरः ।
 रत्नान्त्येन्दुरन्दरंगङ्गानन्दरिजुभिः ॥ ३ ॥
 यदश्वरुग्निग्नोयगमण्डितं भुवनत्रयम् ।
 वन्दे सर्वेश्वरी देवी महाश्रीमिदमावृत्तान् ॥ ४ ॥
 यदश्वरमहामूत्रप्रोतमेतज्जगत्त्रयम् ।
 प्रत्यागडादिकटाहान्तं तां वन्दे मिदमावृत्तान् ॥ ५ ॥
 यदंकादगनाधारं बीजे कोणप्रयत्नम् ।
 प्रत्यागडादिकटाहान्तं जगदद्यापि दृश्यते ॥ ६ ॥
 अकचादिदत्तान्नक्षयनाश्वरवर्णिणीम् ।
 ज्येष्ठाङ्गबाहुद्वृष्टकृतिपादनिवासिनीम् ॥ ७ ॥
 तार्मीकाराश्वरोद्धारां सारात् मारां परात् पराम् ।
 प्रणमामि महादेवीं परमानन्दरूपिणीम् ॥ ८ ॥
 अद्यापि यस्या जानन्ति न मनागपि देवताः ।
 केयं कस्मात् क केनेति सरूपारूपभावनाम् ॥ ९ ॥
 वन्दे तामहमक्षय्यां क्षकाराक्षररूपिणीम् ।
 देवी कुलकलोद्गासप्रोलुसन्ती परा शिवाम् ॥ १० ॥
 धर्मानुक्रमयोगेन यस्यां मात्रष्टकं स्थितम् ।
 वन्दे तामष्टवर्गोत्थमहासिद्धयष्टकेश्वरीम् ॥ ११ ॥
 कामपूर्णजकां राख्यश्रीपीठान्तनिवासिनीम् ।
 चतुराज्ञाकोशभूता नौमि श्रीत्रिपुरामहम् ॥ १२ ॥
 इति द्वादशभिः श्लोकैः स्तवनं सर्वसिद्धिकृत् ।
 देव्यास्त्वखण्डरूपायाः स्तवनं तव तथ्यतः ॥
 भूमी स्वलितपादानां मूर्तिरेवावलम्बनम् ।
 त्वयि जातापराधाना त्वमेव शरणं शिवे ॥

१ 'ज्येष्ठाङ्गबाहुपादाग्रमध्यस्वान्तनिवासिनीम्' इति पाठान्तरम्.

२ क्षय्यक्ष—इति पाठान्तरम्. ३ मकारा० इति 'न'. ४ श्लोत्रो—इति पाठान्तरम्.

५ राख्य—इति पाठान्तरम्.

६ तथ्यतः—इति च पाठः.

होमस्य कृताकृतत्वम्

अथ होमः । स च “यद्यग्निकार्यसम्पत्तिः” इति सूत्रगतेन यदिशब्देन कृताकृतः सूचितः । तस्य च करणपक्षे तदितिकर्तव्यता होमप्रकरणे ज्ञातव्या । तत्र च महाव्याहृतिहोमादवर्गागेव बलिदानम् । ^१होमाकरणपक्षे तु बलिदानमात्रम् ॥

बलिदानविधिः

यथा—देव्या दक्षभागे सामान्योदकेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य, ३ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादि-त्रयं पात्रं तत्र विन्यस्य, ३ ॐ ह्रीं सर्वविघ्नहृद्भयः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा, इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्त्वमुद्रास्पृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्त्वा वामपार्श्विगघातकरास्फोटौ कुर्वाणः समुद्रञ्चितवक्तो वाणमुद्रया बलिं भूतैः प्राप्तितं विभाव्य प्रणमेत् ॥ इति बलिदानविधिः ॥

प्रदक्षिणाः

अजेशशक्तिगणपभास्कराणां क्रमादिमाः ।

वेदार्धचन्द्रबद्धयद्रिसङ्ख्याः स्युः सर्वसिद्धये ॥

प्रदक्षिणनमस्कारानन्तरं जपप्रकरणे वक्ष्यमाणेन विधिना जपं निर्वर्त्य स्तुवीत—

स्तोत्रम्

ॐ गणेशप्रहनक्षत्रयोगिनी राशिरूपिणीम् ।

देवीं मन्त्रमयीं नमि मातृकां पीठरूपिणीम् ॥ १ ॥

प्रणमामि महादेवीं मातृकां परमेश्वरीम् ।

फालहृदोहलोहोहोहलरुदनानामकारिणीम् ॥ २ ॥

^१ एतदितिकर्तव्यताविशिष्टहोमकरणाद्यस्य लज्जुपक्ष उक्तो ज्ञानार्थे—

सङ्ख्ये परमेशानि नित्यहोमं कृत्वाचरेत् ।

भूदेन प्राणयदिता आहुतीः पञ्च होमयेत् ॥

पञ्चाहुतीभ्यश्चैनं नित्यहोमः प्रदीयते ।

शरद्विषयः (अ १) कोट्यं.

मुन्दर्यम्बान्मभेरमुगिताय नमो नमः ।
 प्रकाशानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ॥
 मिश्रान्त्रानयनोद्दासविश्रान्तमनसे नमः ।
 ध्यानन्दानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने ॥
 यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं ^१स्वम्बन्पोपपञ्चणम् ।
 बाळभायानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम् ।
 मातृवाससन्मदहसं त्वया देवि विधीयताम् ॥

एवमादिभिः अन्याभिश्च यथाऽवकाशं स्तुतिभिः अखिललोकमानरमभिद्रुय, शक्तिं पूजयेत् ॥

सुवासिन्याः पूजनम्

यथा—प्राङ्निमन्त्रितां षोडशाब्दपरत आत्रिशद्वर्षदेशीयां मुवासिनीमम्यक्तां गौरीरूपिणीं लक्ष्म्यां दीक्षितां भक्तां अन्यैरप्युक्तगुणैरलङ्कृतां कुलाष्टकपरिगणितां भलाभे चातुर्वर्ण्यन्तिर्गतां परकीयां शक्तिं स्वीयां वा समानीय प्रक्षाळितपादां आसने समुपवेशयेत् । सा चेददीक्षिता तदैव शोधनविधिः । ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः त्रिपुरायै नमः इमा शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा । इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वं सामान्यसलिलेन त्रिः शक्तिं प्रोक्ष्य, ३ ॐ,

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु प्रणश्यत्वशुभं च यत् ।

यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु ॥

इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृद्देशं जपेत् । अथ ता देवीरूपां विभाव्य ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः शक्यै अमुक कल्पयामि नम इति मन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुमचन्दनपट्टवासःपुष्पधूपदीप-
 नैवेद्यताम्बूलानि दद्यात् । सति विभवे वसनाभरणादीनि च । ततो मूलेन वक्ष्यमाणेन समष्टिमन्त्रेण च क्रमेण श्रीदेव्यै आवरणदेवताभ्यश्च दत्तपुष्पाञ्जल्यास्तस्याः करे सोपादिममप्यममुद्राचुलुकमितक्षीरपात्रं समर्पयेत् । साऽप्युत्थाय तत्कपालमुद्रया

^१ स्वगुरोरप—अ १.

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
 गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
 प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
 सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥
 पिता माता भ्राता गुरुरथ सुहृद्ब्रान्धवजनः
 प्रमुस्तीर्थं कर्माविकलमिह चामुत्र च हितम् ।
 विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे
 त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥
 दृशा द्राघीयस्या दरदळितनीलोत्पलरुचा
 दवीयांसं दीनं स्रपय कृपया मामपि शिवे ।
 अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
 वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥
 हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये
 हे भण्डामुरहन्ति हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसञ्जीविनि ।
 हे विश्वप्रसविति हे सकरणे हे दीनरक्षामणे
 हे श्रीमहृदलिताऽम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम् ॥
 नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते
 नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे ।
 नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमपि नमो विन्दुनिखये
 नमः कामेशाद्गुह्यस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते ॥
 जय जय जगदम्ब भक्त्यरुये जय जय सान्द्रुपावशान्तरङ्गे ।
 जय जय निखिलार्थदानशौण्डे जय जय हे ललिताम्ब चिन्मुखाब्धे ॥
 पद्मदेवता निस्या दिव्याद्योत्रयीगुरुन् ।
 नमाम्यायुधदेवीं शक्तीधारणस्थिताः ॥
 पद्मत्रयम्बिकाऽर्धनरानाद्वाय शिवानने ।
 भानुरानन्दनाथाय नम श्रीगुरवे नमः ॥

सुन्दर्यम्बासमाश्लेषसुखिताय नमो नमः ।
 प्रकाशानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ॥
 मिश्राम्बानयनोद्भासविश्रान्तमनसे नमः ।
 आनन्दानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने ॥
 यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं ^१स्वस्वरूपोपलक्षणम् ।
 बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम् ।
 मातृवासल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम् ॥

एवमादिभिः अन्याभिश्च यथाऽवकाशं स्तुतिभिः अखिललोकमातरमभिष्टूय, शक्तिं पूजयेत् ॥

सुधासिन्याः पूजनम्

यथा—प्राङ्निमन्त्रितां षोडशशब्दपरत आत्रिशद्वर्षदेशीयां मुवासिनीमम्यक्तां गौरीरूपिणीं लक्षण्यां दीक्षितां भक्तां अन्यैरप्युक्तगुणैरलङ्कृतां कुलाष्टकपरिगणितां अलाभे चातुर्वर्ष्यान्तर्गतां परकीयां शक्तिं स्वीयां वा समानीय प्रकाळितपादां आसने समुपवेशयेत् । सा चेददीक्षिता तदैव शोधनविधिः । ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा । इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वं सामान्यसलिलेन त्रिः शक्तिं प्रोक्ष्य, ३ ॐ,

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु प्रणश्यत्वशुभं च यत् ।

यत् एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु ॥

इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृद्देशं जपेत् । अथ ता देवीरूपां विभाव्य ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः शक्यै अमुकं कल्पयामि नम इति मन्त्रेण हरिद्राबुद्धिमचन्दनपट्टयासःपुण्यभूपदीप-
 नैवेद्यताम्बूलानि दद्यात् । सति विभवे वसनाभरणादीनि च । ततो मूलेन वक्ष्यमाणेन समष्टिमन्त्रेण च क्रमेण धीदेव्यै आवरणदेवताव्यध दत्तपुत्र्याञ्जत्यास्तस्याः करे सोपादिममप्यमुद्राचुलुकामितक्षीरपात्रं समर्पयेत् । साऽप्युधाय तत्कपालमुद्रया

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
 गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
 प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
 सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥
 पिता माता भ्राता गुरुरथ सुद्वन्द्वान्धवजनः
 प्रभुस्तीर्थं कर्माविकलमिह चामुत्र च हितम् ।
 विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे
 त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥
 दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
 दयीयांसं दीनं खपय कृपया मामपि शिवे ।
 अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
 वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥
 हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये
 हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसञ्जीविनि ।
 हे विश्वप्रसवित्रि हे सकरुणे हे दीनरक्षामणे
 हे श्रीमल्ललिताऽम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम् ॥
 नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते
 नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे ।
 नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमपि नमो विन्दुनिलये
 नमः कामेशाङ्कस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते ॥
 जय जय जगदम्ब भक्तवन्दये जय जय सान्द्ररूपावशान्तरङ्गे ।
 जय जय निखिलार्थदानशौण्डे जय जय हे ललिताम्ब चित्तसुखाब्धे ॥
 पङ्कजदेवता नित्या दिव्याद्योषत्रयीगुरुन् ।
 नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः ॥
 पद्मपत्रम्बिकाऽधीनयानाद्वाय शिवा नने ।
 भामुरानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः ॥

^१ नमः छन्मनिगृहे—अ.

सुन्दर्यम्बासमाश्लेनमुखिताय नमो नमः ।
 प्रकाशानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ॥
 मिथ्राम्बानयनोद्गासविश्रान्तमनभे नमः ।
 आनन्दानन्दनाथाय गुरवे परमेश्रिने ॥
 यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं स्वस्वम्पोषटक्षणम् ।
 बालभाबानुसारेण ममेदं हि विचिष्टितम् ।
 मानुषास्तल्पसदृशं त्वया देवि विधीयताम् ॥

एवमादिभिः अन्याभिश्च यथाऽवकाशं स्तुतिभिः अखिललोकमातरमभिष्टूय, शक्तिं पूजयेत् ॥

सुवासिन्याः पूजनम्

यथा—प्राङ्निमन्त्रितां योडशाब्दपरत भात्रिसाद्वर्कदेशीयां सुवासिनीमन्मत्तां
 गौरीरूपिणीं लक्ष्म्यां दीक्षितां भक्तां अन्यैरप्युक्तगुणैरलङ्कृतां कुलाष्टकपरिगणितां
 अलाभे चातुर्वर्ण्यन्तर्गतां परकीयां शक्तिं स्वीयां वा समानीय प्रक्षाळितपादां आसने
 समुपवेशयेत् । सा चेददीक्षिता तदेव शोधनविधिः । ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः
 त्रिपुरायै नमः इमा शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा । इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वं
 सामान्यसलिलेन त्रिः शक्तिं प्रोक्ष्य, ३ ॐ,

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु प्रणश्यत्वशुभं च यत् ।

यत् एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु ॥

इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृद्रेऽङ्गं जपेत् । अथ ता देवीरूपां विभाव्य ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं
 सौः शक्त्यै अमुक कल्पयामि नम इति मन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुमचन्दनपट्टवासःपुष्पधूपदीप-
 नैवेद्यताम्बूलानि दद्यात् । सति विभवे वसनाभरणादीनि च । ततो मूलेन वक्ष्यमाणेन
 समष्टिमन्त्रेण च क्रमेण श्रीदेव्यै आवरणदेवतान्यथ दत्तपुष्पाञ्जल्यास्तास्याः करे
 सौपादिमध्यममुद्राबुलुकमितक्षीरपात्रं समर्पयेत् । साऽप्युत्थाय तत्कपालमुद्रया

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥
पिता माता भ्राता गुरुरथ मुद्गान्धवजनः
प्रभुस्तीर्थं कर्माधिकलमिह चामुत्र च हितम् ।
विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे
त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥
दृशा द्राघीयस्या दरदळितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं खपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥
हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये
हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसञ्जीविनि ।
हे विश्वप्रसवित्रि हे सकरणे हे दीनरक्षामणे
हे श्रीमल्ललिताऽम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम् ॥
नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते
नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे ।
नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो विन्दुनिलये
नमः कामेशाङ्गस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते ॥
जय जय जगदम्ब भक्तवश्ये जय जय सान्द्रकृपावशान्तरङ्गे ।
जय जय निखिलार्थदानशौण्डे जय जय हे ललिताम्ब चिःसुखाब्धे ॥
पद्मदेवता नित्या दिव्यायोघत्रयीगुरून् ।
नमाम्यायुधदेवींश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः ॥
पद्मवत्यम्बिकाऽधीनवामाङ्गाय शिवान्मने ।
भामुरानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः ॥

सुन्दर्यम्बासमाश्लेषसुखिताय नमो नमः ।
 प्रकाशानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ॥
 मिथ्राम्बानयनोद्भासविश्रान्तमनसे नमः ।
 आनन्दानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने ॥
 यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं ^१स्वस्वरूपोपलक्षणम् ।
 बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम् ।
 मातृवात्सल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम् ॥

एवमादिभिः अन्याभिश्च यथाऽवकाशं स्तुतिभिः अखिललोकमातरमभिष्टूय, शक्तिं पूजयेत् ॥

सुवासिन्याः पूजनम्

यथा—प्राङ्निमन्त्रितां षोडशान्दपरत आत्रिंशद्वर्षदेशीयां सुवासिनीमभ्यक्तां गौरीरूपिणीं लक्षण्यां दीक्षितां भक्तां अन्यैरप्युक्तगुणैरलङ्कृतां कुलाटकपरिगणितां अलाभे चातुर्वर्ष्यान्तर्गतां परकीयां शक्तिं स्वीयां वा समानीय प्रक्षाळितपादां आसने समुपवेशयेत् । सा चेददीक्षिता तर्दप शोधनविधिः । ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा । इत्यभिषेकमन्तपूर्वं सामान्यसलिलेन त्रिः शक्तिं प्रोक्ष्य, ३ ॐ,

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु प्रणश्यत्वशुभं च यत् ।

यत् एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु ॥

इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृद्देवां जपेत् । अथ तां देवीरूपां विभाव्य ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः शक्त्यै अमुकं कल्पयामि नम इति मन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुमचन्दनपट्ट्यासःपुष्पभूपदीप-
 नैवेद्यताम्बूलानि दद्यात् । सति विभवे वसनाभरणादीनि च । ततो मूलेन वक्ष्यमाणेन समष्टिमन्त्रेण च क्रमेण श्रीदेव्यै आवरणदेवताभ्यश्च दत्तपुण्याञ्चत्यास्ताः करे सोपादिममभ्यममुद्राचुल्लुकमितक्षीरपात्रं समर्पयेत् । साऽप्युत्थाय तत्काराटमुदया

^१ स्वपुरोष—अ १.

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राधिरचना
 गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याद्युक्तिविधिः ।
 प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
 सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥
 पिता माता भ्राता गुरुरथ मुहूर्त्तान्धयजनः
 प्रभुस्तीर्थं कर्माधिकलभिह चामुत्र च हितम् ।
 विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे
 त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥
 दृशा द्राघीयस्या दरदळितनीलोत्पलरुचा
 दवीयांसं दीनं क्षपय कृपया मामपि शिवे ।
 अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
 वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥
 हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये
 हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसजीविनि ।
 हे विश्वप्रसवित्रि हे सकल्पे हे दीनरक्षामणे
 हे श्रीमल्लुळिताऽम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम् ॥
 नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते
 नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे ।
 नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो बिन्दुनिलये
 नमः कामेशाङ्कस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते ॥
 जय जय जगदम्ब भक्तवश्ये जय जय सान्द्रकृपावशान्तरङ्गे ।
 जय जय निखिलार्थदानशौण्डे जय जय हे ललिताम्ब चिःसुखाब्धे ॥
 पङ्कजदेवता नित्या दिव्याद्योषत्रयीगुरुन् ।
 नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः ॥
 पद्मवसन्धिकाऽधीनवामाङ्गाय शिवाग्ने ।
 भासुरानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः ॥

स्योदशवीजपुटितैः प्रत्येकखण्डैः तत्त्वत्रयशोधनं सर्वेण मूलेन
ः ॥

रस्वीकार एवोत्थानम् । यथासम्प्रदायं सर्वपात्रस्वीकारोऽपि ।
त्र च बाह्योपास्तावेकं पात्रं सर्वतत्त्वशोधनम् । पञ्चदश्रुपासनायां
शंङ्कशाक्षर्युपास्तौ तु तच्चतुष्टयम् । निवृत्ते पूर्णाभिपेके तत्पञ्चकं,
ने वा । विश्वस्तायाः कुमार्याः सुवासिन्याश्चैकं पात्रमिति विवेकः ॥
ीगुरोस्तच्छक्तिमुत्तम्येष्टकनिष्ठानां स्वग्येष्टस्य 'सामयिकानां' छाीणां
यम् । तेभ्यस्तु न देयम् । स्वकनिष्ठशिष्योस्तु प्रदेयम् । वीराणां
देयम् ।

—आरम्भतरुणयौवनप्रौढतदन्तोन्मनानवस्थाऽऽख्याः सप्त । तेष्वर्ध्व-
तरुणयौवनप्रौढेषु सपर्याधिधिः । ततो देवताविसर्जनम् ।
स्यं सिद्धानां वीराणां न तु साधकानां इति तत्त्वम् । इति

देवतोद्धारसनम्

ान्योदकात् किञ्चिदादाय—

तु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।

सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम ॥

इस्ते पूजां समर्थ्यं शङ्कमुद्भूय देव्युपरि त्रिः परिभ्राम्य तत्रज्जुं हस्ते
कानाभ्यानं च मूलेन प्रोक्ष्य शङ्कं प्रक्षाल्य निदम्यात् । ततो मूलेन
ज्य,

नतोऽज्ञानतो वाऽपि यन्मयाऽऽचरितं शिवे ।

इह कृत्वमिति ज्ञात्वा धमस्व परमेश्वरि ॥

योसामावरणदेवतानां धीदम्बुङ्गे निडयं विनाय्य, गेचरी बद्धोद्यस्य,
गता धीदंभी पूर्ववत् हृदयं नीत्वा तत्र च मूर्तिं पश्यता उपचये
दूषेण विभावनेत् । इति विसर्जनम् ॥ अतः—

समादाय, द्वितीयतृतीये च 'दक्षकरेणादाय, पात्रं दक्षकरं निधाय, तत्त्वमुद्रागत-
द्वितीयशकलगृहीतैः क्षीरविन्दुभिः शिरसि श्रीगुरुपादुकामनुना त्रिरिष्ट्वा, हृदि च
श्रीदेवीं त्रिः सन्तर्प्य, मूलेन पुनः पात्रं वामकरे कृत्योत्थाय, होष्यामीति श्रीगुरुज्येष्ठान्य-
तारानुज्ञां प्रार्थ्य, जुहुवीति तदनुज्ञया दक्षकरेण व्यवधाय, मूलान्ते सर्वतत्त्वं
शोधयामि नमः स्वाहेति मन्त्रेण सर्वतत्त्वं शोधयेत् । *एतस्या ऐच्छिकानि विना
मन्त्रं पात्रान्तराण्यपि दद्यात् । अथ पुनः कर्ता पूर्ववत् पात्रमादाय, ऐं ह्रीं श्रीं,

अळिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम् ।

स्वीकृत्य सुभगे देवि यशो देहि रिपून् दह ॥

इति मन्त्रेण शक्यै समर्पयेत् । साऽपि तत्साधशेषं स्वीकृत्य, ऐं ह्रीं श्रीं,

वत्स तुभ्यं मया दत्तं पीतशेषं कुलामृतम् ।

* त्वच्छत्रून् संहरिष्यामि तवामीष्टं ददाम्यहम् ॥

इति मन्त्रेण प्रतिदद्यात् । साधकस्तदुररीकृत्य शक्तिं चतुष्टयेन भोजयित्वा समर्पित-
ताम्बूलो यथाविधि तां पञ्चमेनापि सन्तोष्य विसृजेत् ॥ इति सुवासिनीपूजा ॥

तत्त्वशोधनम्

अथ सन्निहिते गुरौ तं पादुकामन्त्रेणाभिपूज्य पात्राणि समर्प्य समाहूतैः शिष्यैः
वृन्दात्मना अवस्थितैः सामयिकैः साकं पाणी प्रक्षाढ्य, श्रीदेव्यै मूलेनोपचारमन्त्रेण च त्रिः
पुष्पाञ्जलिं समर्प्य, ३ समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलकौलनिगर्भरहस्यातिरहस्यपर-
परातिरहस्ययोगिनीश्रीपादुकाम्यो नम इति समष्टिमन्त्रेण आवरणदेवतानां एकं पुष्पाञ्जलिं
दत्त्वा, पूर्ववत् पात्रं पुनः पुनरादायाचमनोक्तैः मन्त्रैः तत्त्वानि शोधयेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं विशातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥

३ स क ल ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥

* 'दक्ष' इत्येतत् 'वाम' इति शोधितम्—अ १.

* श्रीगुरुं पादुका—अ, श्रीगुरुपादुकां तन्मनुना—अ.

* अदीक्षितानाम्बु बाळवैव—इत्यधिकः (अ) कोशे.

पोडशुपासकस्य तु त्रयोदशबीजपुटितैः प्रत्येकखण्डैः तत्त्वत्रयशोधनं सर्वेण मूलेन सर्वतत्त्वशोधनं च विशेषः ॥

अत्र प्रथमपात्रस्वीकार एवोत्थानम् । यथासम्प्रदायं सर्वपात्रस्वीकारोऽपि । स्त्रीणां तूत्यापैव । अत्र च बाळोपास्तावेकं पात्रं सर्वतत्त्वशोधनम् । पञ्चदशुपासनायां तु पात्रत्रयम् । श्रीपोडशाक्षर्युपास्तौ तु तच्चतुष्टयम् । निवृत्ते पूर्णाभिपेके तत्पञ्चकं, यथाऽधिकारमेच्छिकानि वा । विश्वस्तायाः कुमार्याः मुवासिन्याश्चैकं पात्रमिति विवेकः ॥

किं च श्रीगुरोस्तच्छक्तिमुतज्येष्टकनिष्ठानां स्वज्येष्टस्य 'सामयिकानां स्त्रीणां चोच्छिष्टं द्रव्याद्युपादेयम् । तेभ्यस्तु न देयम् । स्वकनिष्ठशिष्ययोस्तु प्रदेयम् । वीराणां तूच्छिष्टं चर्चणमात्रमादेयम् ।

उल्लासास्तु—आरम्भतरुणयौवनप्रौढतदन्तोन्मनानवस्थाऽऽह्वयाः सत । तेभ्यर्च्य-संशोधनमारम्भः । तरुणयौवनप्रौढेषु सपर्याविधिः । ततो देवताविसर्जनम् । अवशिष्टं अवस्थात्रयं सिद्धानां वीराणां न तु साधकानां इति तत्त्वम् । इति हविःप्रतिपत्तिः ॥

देवतोद्धारसनम्

ततः सामान्योदकात् किञ्चिदादाय—

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।

तत् सर्वं कृपया देवि गृह्णाणाराधनं मम ॥

इति देव्या वामहस्ते पूजां समर्थं शङ्खमुद्गत्य देव्युपरि त्रिः परिभ्राम्य तज्जलं हस्ते समादाय सामयिकानात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात् । ततो मूलेन तीर्थनिर्मालये स्वीकृत्य,

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि यन्मयाऽऽचरितं शिवे ।

तव कृप्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥

इति क्षमाप्य सर्वासामावरणदेवतानां धीदेव्यङ्गे धिलयं विभाव्य, खेचरी बद्धोद्धारस्य, तेजोरूपेण परिणता धीदंवी पूर्ववत् हृदयं नीत्वा तत्र च मूर्ति पद्भ्या उपचर्य पुनरात्माभिन्नसंविद्रूपेण विभावयेत् । इति विसर्जनम् ॥ ततः—

पूजनेन फलार्थं स्यादन्यदत्तस्तु साधनैः ।
यथाकथंचिदेव्यर्चा विधेया श्रद्धयाऽन्वितैः ॥

पश्चान्तराणि च—

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद्वाऽर्चनसाधनम् ।
दानाशक्तः सपर्याऽन्तं परयेत्तत्परमानसः ॥

इति कल्पसूत्रप्रकारः परदेवतायाः नित्यक्रमविधिः समाप्तः ।

सङ्क्षेपार्चाविधिः

नित्यक्रमो मुख्यालये प्रतिनिधिनाऽपि निर्वर्त्यः । तत्र प्रथमस्य प्रतिनिधिः
—तत्रं दधि वा गुडमिश्रं, ससैन्धवं पयः, क्षौद्रं गव्यं सर्पिः क्षीरं वा ताम्रपात्रगतं,
तिलाः शर्करा वा सलिलमिश्राः, तैलं आरनाळ कांस्यपात्रस्थं तप्तं वा नारिकेलोदकं
च । अथ द्वितीयस्य मूटकम् । तृतीयस्य तु लवणार्द्रकपिण्याकनागरगोधूमविकार-
मायलशुनानि । चतुर्थं तु मुष्यमेव । पञ्चमस्यापराजितापुष्पं करवीरकुसुमं वेत्ति ।
एतन्मिश्रणं तु सूत्रकारेण अनुपात्तम् । डामरे तु—

मांसानुकल्पोऽपूपः स्यान्मत्स्यस्य च कदव्यपि ।
मैथुनस्य कळत्रे स्वे तदलाभे तु यत्नतः ॥

पाठान्तरम्—

द्वितीयस्य त्वपूपः स्यात्तृतीयस्य कदव्यपि ।
पञ्चमस्य कळत्रे स्वे तदलाभे तु यत्नतः ॥ इति ॥

नित्यक्रमस्य प्रमादादिना अतिक्रमे मूटकतजपः प्रायश्चित्तमाज्ञातम् । नित्यनेमित्तिकी
च क्रमो मुक्तशिष्यादिभिरपि कारयितुं शक्येते ॥

सङ्क्षेपार्चनानि

तानि च विस्तरात्तज्ज्ञानं राजवनिताऽऽदीनां राज्यशोभदृग्भिन्नध्वराशापन्तु च
कर्तव्यानि * । तत्र चतुर्दशाराशावरणपट्कसमर्चनं कुर्यादित्येकः पद्यः । (*कर्मो

* इदं वाक्यं नास्ति केषुचित्स्थानेषु.

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥

नन्दन्तु साधककुलान्यणिमाऽऽदिसिद्धाः

शापाः पतन्तु समयद्विपि योगिनीनाम् ।

सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था ।

यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥

शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रम्हादिस्तम्बसंयुतम् ।

कालान्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

इत्यादिशान्तिश्लोकान् पठित्वा,

विशेषार्घ्यविसर्जनम्

विशेषार्घ्यपात्रं मूलेन आमस्तकमुद्धृत्य तत् क्षीरं पात्रान्तरेणादाय—

आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि ।

योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियशिष्याय दत्त्वा तत्पात्रमन्यानि
च हविशेषप्रतिपत्तिपात्राणि प्रक्षाल्य अग्नौ प्रताप्य अवस्थापयेत् ॥

अथ यथाशक्ति ब्राह्मणान् मुवासिनीश्च भोजयित्वा, स्वयमपि भुञ्जीत ॥
इति नित्यक्रमविधिः ॥

अयं च नित्यक्रमः सूतकेऽपि कर्तव्यः । अत्र वचनानि श्यामाक्रमे
लिखितानि । तत्र च सफामर्मनसा, निष्कामैर्यथोक्तमिति विशेषः । बालवृद्धस्त्रीमूढैः
यथाप्रबुद्धं कृता सपर्यां 'दौर्बोधीभ्युप्यते ।

स्वयं सम्पाद्य सर्वाणि ध्रुवया साधनानि यः ।

पूजयेत् तत्परं देवीं स उभेताखिउं फलन् ॥

पूजनेन फलार्थं स्यादन्यदत्तैस्तु साधनैः ।
यथाकर्षं चिद्देव्यर्चा विधेया श्रद्धयाऽन्वितैः ॥

पधान्तराणि च—

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद्वाऽर्चनसाधनम् ।
दानाशक्तः सपर्याऽन्तं पश्येत्तत्परमानसः ॥

इति कल्पसूत्रप्रकारः परदेवतायाः नित्यक्रमविधिः समाप्तः ।

सङ्क्षेपार्चाविधिः

नित्यक्रमो मुख्यालाम्बे प्रतिनिधिनाऽपि निर्वर्त्यः । तत्र प्रथमस्य प्रतिनिधिः
—तक्रं दधि वा गुडमिश्रं, ससैन्धवं पयः, क्षौद्रं गव्यं सर्पिः क्षीरं वा ताम्रपात्रगतं,
तिलाः शर्करा वा सलिलमिश्राः, तैलं आरनाळ कांस्यपात्रस्थं तप्तं वा नारिकेल्योदकं
च । अथ द्वितीयस्य मूळकम् । तृतीयस्य तु लवणार्द्रकपिण्याकनागरगोशूमविकार-
मापलशुनानि । चतुर्थं तु मुख्यमेव । पञ्चमस्यापराजितापुष्यं करवीरकुसुमं वेति ।
एतन्मिश्रणं तु सूत्रकारेण अनुपात्तम् । डामरे तु—

मांस्तानुकल्पोऽरूपः स्यान्मत्स्यस्य च फदब्ज्यपि ।
मैथुनस्य फळत्रे स्वे तदलाभे तु यत्नतः ॥

पाठान्तरम्—

द्वितीयस्य त्वरूपः स्यात्तृतीयस्य फदब्ज्यपि ।
पञ्चमस्य फळत्रे स्वे तदलाभे तु यत्नतः ॥ इति ॥

नित्यक्रमस्य प्रमादादिना अतिक्रमे मूळशतत्रयः प्रायश्चित्तमाप्नातम् । नित्यनैमित्तिकौ
च प्रती मुतशिष्यादिभिरपि कारयितुं शक्यंते ॥

सङ्क्षेपार्चनानि

तानि च विस्तराशक्तानां राजबनिताऽऽरीनां उष्णशोभदूर्भिधम्बरादारामु च
कर्तव्यानि * । तत्र चतुर्दशाष्टावराण्यष्टकसमर्चनं बुद्ध्यादित्येहः पथः । (*क्रमो

* इदं शाश्वतं नास्ति हेतुचित्त्वेहेतुः ।

शान्तिस्तवः

सम्भूजकानां परिपालकानां यतन्द्रियाणां च तपोधनानाम् ।
 देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥
 नन्दन्तु साधककुलान्यणिमाऽऽदिसिद्धाः

शापाः पतन्तु समयद्विपि योगिनीनाम् ।
 सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था ।
 यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
 शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रम्हादिस्तम्भसंयुतम् ।
 कालान्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

इत्यादिशान्तिश्लोकान् पठित्वा,

विशेषार्घ्यविसर्जनम्

विशेषार्घ्यपात्रं मूलेन आमस्तकमुद्धृत्य तत् क्षीरं पात्रान्तरेणादाय—

आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि ।
 योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण आरामनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियशिष्याय दत्त्वा तत्पात्रमन्याय
 च हविश्शेषप्रतिपत्तिपात्राणि प्रक्षाल्य अग्नौ प्रताप्य अवस्थापयेत् ॥

अथ यथाशक्ति ब्राह्मणान् सुवासिनींश्च भोजयित्वा, स्वयमपि भुञ्जीत ।
 इति नित्यक्रमविधिः ॥

अयं च नित्यक्रमः सूतकेऽपि कर्तव्यः । अत्र वचनानि श्यामाक्रमे
 लिखितानि । तत्र च सकामैर्मनसा, निष्कामैर्यथोक्तमिति विशेषः । बालवृद्धस्त्रीमूढैः
 यथाप्रबुद्धं कृता सपर्यां दौर्बोधित्युच्यते ।

स्वयं सम्पाद्य सर्वाणि श्रद्धया साधनानि यः ।
 पूजयेत् तत्परो देवीं स लभेताखिलं फलम् ॥

पूजनेन फलायं स्यादन्यदत्तंस्तु साधनैः ।

पश्चात्तर्पणं चिदंशुचिर्चा विधेया श्रद्धयाऽन्वितैः ॥

पश्चात्तराणि च—

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद्वाऽर्चनमाधनम् ।

दानाशक्तः मर्ष्याऽन्तं पश्येत्त्परमानसः ॥

इति कल्पसूत्रप्रकारः परदेवतायाः नित्यक्रमविधिः समाप्तः ।

सङ्क्षेपार्चाविधिः

नित्यक्रमो मुख्यालाभे प्रतिनिधिनाऽपि निर्वर्त्यः । तत्र प्रथमस्य प्रतिनिधिः—
—तर्कं दधि वा गुडमिश्रं, ससैन्धवं पयः, क्षौद्रं गव्यं सर्पिः क्षीरं वा ताम्रपात्रगतं;
तिलाः शर्करा वा सलिलमिश्राः, तैलं आरनाळ कांस्यपात्रस्थं तप्तं वा नारिकेलोदकं
च । अथ द्वितीयस्य मूटकम् । तृतीयस्य तु लवणार्द्रकपिप्प्याकनागरगोघूमविकारः
भाण्डशुनानि । चतुर्थं तु मुख्यमेव । पञ्चमस्यापराजितापुष्पं करवीरकुसुमं वेति ।
एवमिध्रणं तु सूत्रकारेण अनुपात्तम् । डामरे तु—

मांसानुकल्पोऽपूपः स्यान्मत्स्यस्य च कदंब्यपि ।

मैथुनस्य कळत्रे स्वे तदलाभे तु यत्नतः ॥

पाटान्तरम्—

द्वितीयस्य त्वपूपः स्यात्तृतीयस्य कदंब्यपि ।

पञ्चमस्य कळत्रे स्वे तदलाभे तु यत्नतः ॥ इति ॥

नित्यक्रमस्य प्रमादादिना अतिक्रमे मूलातजपः प्रायश्चित्तमात्रात् । नित्यनैमित्तिकौ च क्रमो मुतशिष्यादिभिरपि कारयितुं शक्येते ॥

सङ्क्षेपार्चनानि

तानि च विस्तराशक्तानां राजवनिताऽऽदीनां राज्यक्षोभदुर्भिक्षज्वरापापस्तु च कर्तव्यानि * । तत्र चतुर्दशारवावरणपट्कसनर्चनं कुर्यादित्येकः पद्यः । (*क्रमो

* इदं वाक्यं नास्ति कंठुचित्तोद्येपुः ।

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुटेशः ॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमाऽऽदिसिद्धाः

शापाः पतन्तु समयद्विपि योगिनीनाम् ।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था ।
यस्यां गुरोधरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यथनिपर्यन्तं ब्रम्हादिस्तम्बसंयुतम् ।
क्पालाग्न्यादिशिवातं च जगद्यत्नेन तृप्यतु ॥

इत्यादिशान्तिश्लोकान् पठित्वा,

विशेषार्घ्यवितर्जनम्

विशेषार्घ्यपात्रं मूलेन आमस्तकमुद्धृत्य तत् क्षीरं पात्रान्तरेणादाय—

आद्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि ।

योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियशिष्याय दत्त्वा तत्पात्रमन्यानि
च हविश्शेषप्रतिपत्तिपात्राणि प्रक्षाल्य अग्नौ प्रतान्य अवस्थापयेत् ॥

अथ यथाशक्ति ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा, स्वयमपि भुञ्जीत ॥
इति नित्यक्रमविधिः ॥

अयं च नित्यक्रमः सूतकेऽपि कर्तव्यः । अत्र वचनानि श्यामाक्रमे
लिखितानि । तत्र च सकामैर्भगवता, निष्कामैर्यथोक्तमिति विशेषः । बालवृद्धस्त्रीमूढैः
यथाप्रज्ञं कृता सपर्यां दौर्बोधित्युच्यते ।

स्वयं सम्पाद्य सर्वाणि श्रद्धया साधनानि यः ।
पूजयेत् तत्परो देवीं स लभेताखिलं फलम् ॥

पूजनेन फलार्थं स्यादन्यदत्तस्तु साधनैः ।
यथाकथंचिदेव्यर्चा विधेया श्रद्धयाऽन्वितः ॥

पश्चान्तराणि च—

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद्वाऽर्चनसाधनम् ।
दानाशक्तः सपर्याऽन्तं पश्येत्तत्परमानसः ॥

इति कल्पसूत्रप्रकारः परदेवतायाः नित्यक्रमविधिः समाप्तः ।

सङ्क्षेपार्चाविधिः

नित्यक्रमो मुख्यालाभे प्रतिनिधिनाऽपि निर्वर्त्यः । तत्र प्रथमस्य प्रतिनिधिः—
—तक्रं दधि वा गुडमिश्रं, ससैन्धवं पयः, क्षौरं गव्यं सर्पिः क्षौरं वा ताम्रपाश्रगतं,
तिलाः शर्करा वा सलिलमिश्राः, तैलं आरनाळं कांस्यपात्रस्थं तप्तं वा नारिकेलोदकं
च । अथ द्वितीयस्य मूल्कम् । तृतीयस्य तु लवणार्द्रकपिण्याकनागरगोभूमविकार-
मापलशुनानि । चतुर्थं तु मुख्यमेव । पद्मस्यापराजितापुष्पं करवीरकुसुमं वेति ।
एतन्मिश्रणं तु सूत्रकारेण अनुपात्तम् । डामरे तु—

मांसानुकल्पोऽपूपः स्यान्मत्स्यस्य च कदम्ब्यपि ।
मैथुनस्य कळत्रे स्वे तदलाभे तु यत्नतः ॥

पाटान्तरम्—

द्वितीयस्य त्वपूपः स्नात्तृतीयस्य कदम्ब्यपि ।
पद्मस्य कळत्रे स्वे तदलाभे तु यत्नतः ॥ इति ॥

नित्यक्रमस्य प्रमादादिना अतिक्रमे मूल्कशतजपः प्रायश्चित्तमाप्नातम् । नित्यनेमित्तिकौ
च प्रनौ मुतशिष्यादिभिरपि कारयितुं शक्येते ॥

सङ्क्षेपार्चनानि

तानि च विस्तराशक्तानां राजबनिताऽऽदीनां राज्यक्षोभदुर्भिक्षज्वरादापन्मु च
कर्तव्यानि * । तत्र चतुर्दशारायावरणपट्कसनर्चनं कुर्यादित्येकः पद्यः । (* क्रमो

* इदं वाक्यं नास्ति केपुचित्कोशेषु ।

निर्वर्त्यः ।) अष्टाराद्यावृत्तित्रयसपर्येति द्वितीयः । आयुधार्चनसहितकामेश्वर्यादिचतुष्टय
तृतीय इति । पक्षान्तराणि च—

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद्वाऽर्चनसाधनम् ।

दानाशक्तः सपर्याऽन्तं पश्येत्तत्परमानसः ॥ इति ॥

अनापदि तु कृतान्येतान्यनिष्ठापादकानि ॥

ऋत्वर्यनियमः

कृष्णाष्टमीतच्चतुर्दश्यमापूर्णिमासङ्क्रान्तिसंज्ञेषु पर्वसु पञ्चसु सविशेषैः सा
आराधयेत् । तत्प्रकारस्तु नैमित्तिकप्रकरणे वक्ष्यते । नित्यनैमित्तिकक्रमौ च, शि
सुतादिभिरपि कारयितुं शक्येते ॥

श्रीललितोपासको नेत्रुखण्डं भक्षयेत् । न दिवा स्मरेद्द्वार्तालीम् । न जुगुप्सु
सिद्धद्रव्याणि । न कुर्यात् स्त्रीषु निष्ठुरताम् । वीरस्त्रियं न गच्छेत् । न तं हन्यात्
न तद्द्रव्यमपहरेत् । नात्मेच्छया मपञ्चकमुररीकुर्यात् । कुलभ्रष्टैः सह नासीत्
न बहु प्रलपेत् । योषितं सम्भाषमाणामप्रतिसम्भाषमाणो न गच्छेत् । कु
पुस्तकानि गोपायेत् ॥ एते ऋत्वर्यनियमाः अकरणे ऋतुवैगुण्यापादकाः सायके
अवश्यमनुष्ठेयाः । अन्यांश्च दीक्षाक्रमोक्तान् सामयिकानामाचारान् अनुतिष्ठेत्
अनिशामात्मानं कामकव्यऽऽत्मकं श्रीदेवीरूपं भावयेत् । एवं वर्तमानस्य कुलनिष्ठस्य
सर्वतः कृतकृत्यता । शरीरविमोके च श्वपचगृहकारयोर्नान्तरम् । स एव जीवन्मुक्त
मुखी विहरेदिति ॥

श्रीचक्रलेखनोपायः

अथ प्राप्सुचितः श्रीचक्रलेखनप्रकारः सुबोधतमो लिख्यते ॥

अत्रेयं परिभाषा—ईशानाद्याग्नेयन्ता वायव्यादिनैर्ऋत्यन्ता वा रेखा तिर्यगे
रेणुष्यते । तस्या एवाग्रद्वयादाकृष्टे प्रतीच्यां प्राच्यां वा मेखिते च पार्श्वरेणे इत्युष्यते ।
रेणोपरि रेखाऽन्तःस्फारादे तयोर्योगस्थानं सन्धिः । ईदृशः रेखात्रययोगो मर्न ।
संयत्तौ पद्मशाऽभिमुखः सैः प्राची । तदित्यु प्रतीची । प्रत्यग्रं त्रिकोणं शक्तिः ।
प्रागमं तु दिगे वदिधेऽनुष्यते इति ॥

प्रथमं ईशानाद्याग्नेयान्त-तदादिवारूप्यन्त-तदादीशानान्तां रेखामलिङ्ग्य शक्ति निष्पादयेत् । इदं मध्यत्रिकोणं भवति । यन्मध्यं हि बिन्दुस्थानमासन्ति । अथास्य मध्यतः पार्श्वरेखाद्वयनिर्भेदपूर्वकं प्राग्बुद्धकल्पन्तरं कल्पयेत् । अत्र सन्धिद्वयं जायते । ततो द्वितीयशक्तिमध्यतः तत्पार्श्वरेखाद्वयं निर्भिद्य च तां प्रथमशक्त्यप्रसंलग्नां तिर्यग्रेखामालिङ्ग्य तदप्राकृष्टाभ्यां पक्षरेखाभ्यां सन्धिद्वयभेदचरणं शिवत्रिकोणं कुर्यात् । एतावता अष्टकोणं सम्पद्यते । एतदेव मध्यत्रिकोणेन सह नवयोनिचक्रमिति कौर्व्यते । इह सन्धयः षट् मर्मणी द्वे च सिष्यन्ति । अथ प्राचीं तिर्यग्रेखामुभयतोऽप्यभिवर्च्य तदप्राकृष्टाभ्यां प्रथमबद्धिपक्षकोणाप्रसंलग्नाभ्यां पार्श्वरेखाभ्यां शक्तिं जनयेत् । एवं प्रतीचीं तिर्यग्रेखामुभयतोऽप्यभिवर्च्य तदप्राकृष्टाभ्यां प्रथमशक्तिपक्षकोणाप्रसंलग्नाभ्यां पार्श्वरेखाभ्यां शिवं साधयेत् । ततो मध्यत्रिकोणपार्श्वरेखे ऐशान्यामाग्नेयां चाभिवर्च्य तदप्रयोः प्रथमलिखितबद्धयमे च संसक्तं तिर्यग्रेखामालिखेत् । एवं प्रथमलिखितबद्धेरपि पार्श्वरेखे अभिवर्च्य तदप्रयोः द्वितीयशक्त्यमे च संसक्तं तिर्यग्रेखां बिलिखेत् । तदिदमन्तर्दशारं भवति । अत्र मर्माणि षट् सन्धयो द्वादश च निष्पद्यन्ते । अथ विद्यमानासु षडसु तिर्यग्रेखासु प्रथमां चरमां च उभयतोऽप्यभिवर्च्य तत्तदप्राकृष्टाभिः पार्श्वरेखाभिः तृतीयशक्तिपक्षकोणाशिखावर्जं इतरकोणाष्टकाप्रस्पर्शिनौ शक्तिशिवी समुत्पादयेत् । ततः प्रथमवर्धिता मध्यशक्तिप्रथमबद्धिपार्श्वरेखास्तच्चद्विदिक्षु संवर्च्य तत्तदप्राकृष्टे अन्तर्दशारीयप्राक्प्रत्यकोणशिखासमृक्ते रेखे ममालिखेत् । तदेतद्बहिर्दशारं भण्यते । इह मर्माणि दश सन्धयोऽष्टादश चोन्मीलन्ति । अथ सप्तसु तिर्यग्रेखासु षट्द्वितीये पूर्वसंवर्धित एव रेखे उभयतः संवर्च्य तत्तदप्राकृष्टाभिः बहिर्दशारस्य प्राक्प्रत्यक्त्रिकोणशिखरससर्गवर्जमितरकोणाष्टकशिखरसमृक्ताभिः पार्श्वरेखाभिः शक्तिं शिवं च समुन्मीलयेत् । ततश्चतुर्धशक्तिपार्श्वरेखे सर्वप्रार्थानां तिर्यग्रेखां चोभयतोऽप्यभिवर्च्य मेलयेत् । एव तृतीयबद्धिपार्श्वरेखे सत्प्रतीच्यां तिर्यग्रेखां चोभयतस्संवर्च्य मेलयेत् । ततः प्रथमशक्तिप्रथमशिवयोः पार्श्वरेखे द्वे तत्तद्द्विदिक्षु समभिवर्च्य तत्तदप्रतश्चतुर्धशक्तिमूर्त्तौ शिवशिवरश्चुम्बितवर्धनयुगम्नाऽपि उच्येत् । तदिदं चतुर्दशारं भवति । अत्र मर्माणि अष्टादश, सन्धयः चतुर्विंशतिः, शक्तयः षड्, बद्धयधत्वारः, पार्श्वयोः दशरेखाऽष्टौ, त्रिकोणाणि च सहस्रं त्रिच-वर्धितं सम्पद्यन्ते । अथास्य परितः कर्णिसावृत्तं चिडिचनं तन्संज्ञकं चोन्मीलितं दृश्यन्ती

निर्वर्त्यः ।) अष्टाद्याष्टत्रयसपर्येति द्वितीयः । आयुधार्चनसहितकामधर्यादिचतुष्टयार्हणं
तृतीय इति । पक्षान्तराणि च—

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद्वाऽर्चनसाधनम् ।

दानाशक्तः सपर्याऽन्तं पश्येत्तत्परमानसः ॥ इति ॥

अनापदि तु कृतान्येतान्यनिष्ठापादकानि ॥

क्रत्वर्थनियमः

कृष्णाष्टमीतच्चतुर्दश्यमापूर्णिमासङ्क्रान्तिसंज्ञेषु पर्वमु पञ्चमु सविशेषैः साधनैः
आराधयेत् । तत्प्रकारस्तु नैमित्तिकप्रकरणे वक्ष्यते । नित्यनैमित्तिकक्रमौ च, शिष्य-
मुतादिभिरपि कारयितुं शक्येते ॥

श्रीललितोपासको नैशुखण्डं भक्षयेत् । न दिवा स्मरेद्द्वार्तालीम् । न जुगुप्सेत्
सिद्धद्रव्याणि । न कुर्यात् स्त्रीषु निष्ठुरताम् । वीरस्त्रियं न गच्छेत् । न तं हन्यात् ।
न तद्द्रव्यमपहरेत् । नाल्मेच्छया मपञ्चकमुररीकुर्यात् । कुलभ्रष्टैः सह नासीत् ।
न बद्ध प्रलपेत् । योपितं सम्भाषमाणामप्रतिसम्भाषमाणो न गच्छेत् । कुल-
पुस्तकानि गोपायेत् ॥ एते क्रत्वर्थनियमाः अकरणे क्रतुवैगुण्यापादकाः सावकेन
अवश्यमनुष्ठेयाः । अन्यांश्च दीक्षाक्रमोक्तान् सामयिकानामाचारान् अनुतिष्ठेत् ।
अनिशमात्मानं कामकळाऽऽत्मकं श्रीदेवीरूपं भावयेत् । एवं वर्तमानस्य कुलनिष्ठस्य
सर्वतः कृतकृत्यता । शरीरविमोके च श्वपचगृहकारयोर्नान्तरम् । स एव जीवन्मुक्तः
सुखी विहरेदिति ॥

श्रीचक्रलेखनोपायः

अथ प्राक्सूचितः श्रीचक्रलेखनप्रकारः सुबोधतमो लिख्यते ॥

अत्रेयं परिभाषा—ईशानाद्याग्नेय्यन्ता वायव्यादिनैर्ऋत्यन्ता वा रेखा तिर्यग्-
खेल्युच्यते । तस्या एवाप्रद्वयादाङ्गुष्ठे प्रतीच्यां प्राच्यां वा मेळिते च पार्श्वरेखे इत्युच्यते ।
रेखापरि रेखाऽन्तरस्यारोहे तयोर्योगस्थानं सन्धिः । ईदृशः रेखात्रययोगो मर्म ।
साधको यदाशाऽभिमुखः सैव प्राची । तदितरा प्रतीची । प्रत्यगग्रं त्रिकोणं शक्तिः ।
प्रागग्रं तु शिवो बहिधेऽत्युच्यते इति ॥

दुग्धदधिघृतशहन्मूत्रात्मकं पञ्चगव्यमानीय समिश्य ही इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशत-
वारानभिमन्त्र्य तत्र प्रणवेन यन्त्रं निक्षिप्य तत उद्धृत्य पात्रान्तरे निधाय, मिश्रितेन
गोदुग्धदधिघृतमधुशर्कराऽऽत्मकेन पञ्चामृतेन संस्नाप्य धूपयेत् । अथ प्रत्येकं दुग्धादिभिः
क्रमेण अन्तरान्तरा धूपनपूर्वकं स्नपयित्वा पुनर्मिश्रितैश्च तैः स्नपयेत् । ततोऽष्टासु
दिक्षु शालितण्डुलपुञ्जोपरि निहितैः नूतनवसनश्रेष्ठितैः गन्धपुष्पार्चितैः कुङ्कुमरोचना-
चन्दनकस्तूरीमुरभिच्छीतलसलिलपूर्णाः कुशाग्रेण सृष्ट्वा मूलेनाष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्रितैः
सौवर्णादिमार्त्तिकान्तान्यतमैरष्टभिः कलशैरभिशिञ्चेत् । इह सर्वमपि पञ्चगव्यादिकं
स्नानं मूलमन्त्रकरणकमेव । अथ यन्त्रं धीतेन वाससा परिमृज्य पीठे निधाय
कुशाग्रेः सृशन्—ॐ ह्रीं श्रीं ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि । तन्नो यन्त्रः
प्रचोदयात् ॥ इति—यन्त्रगायत्रीं अष्टोत्तरशतवारानाकर्त्य आत्मनो भूतशुद्ध्यादिमातृका-
न्यासान्तं कृत्वा यन्त्रं करेण संसृज्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । यथा—

अस्य श्रीयन्त्रराजप्राणप्रतिष्ठामहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ।
ऋग्यजुस्सामाथर्वीणि छन्दासि । चैतन्यं देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः ।
क्रौं कौलकम् । मम श्रीचक्रप्राणप्रतिष्ठायै जपे विनियोगः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यन्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अंगुष्ठान्यां
नमः ॥

३ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीम्यां
नमः ॥

३ उं टं ठं डं ढं ण श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाप्राणात्मने ऊं मध्यमाभ्यां
नमः ॥

३ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थान्मने ऐं अनामिकाभ्यां
नमः ॥

३ ॐ पं फं बं भं मं वचनाशनविहरणविसर्गानन्दात्मने औं
फनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥

३ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं शं मनोबुद्धयद्ब्रह्मादिचिदान्तः-
करणान्मने धः करतलकरपृष्ठान्यां नमः ॥

एवं हृदयादिन्धातः ॥

कल्पयेत् । तदिदमष्टदळमिति व्यवहियते । असन्धित्वं नाम केसराभावत्वम्, श्रीचक्रराजे केसरनिषेधदर्शनात् । अथ तदमितः पुनःकर्णिकावृत्तं निष्पाद्याऽसन्धीनि पत्राणि षोडश निर्ममीत । तदिदं षोडशदळं सञ्चक्षते । अथ तद्वर्द्धिर्मर्यादावृत्तत्रयं परिकल्प्य तत्परितः चतुरस्ररेखात्रयेण चतुर्द्वारं भूपुरं समुद्रावयेत् ॥ इति श्री^१चक्र-लेखनप्रकारः ॥

श्रीचक्रप्रस्तारभेदाः

एतत्प्रतिष्ठापनमन्त्रः प्रागुक्त एव । सुवर्णादिनिर्मितस्य यन्त्रस्य तु द्वौ प्रस्तारौ— भौमो, भैरवश्चेति । तत्र पलद्वयपरिमाणे चतुरङ्गुलविस्तृतपट्टे उर्ध्वरेखाऽऽत्मको विन्द्वदिभूपुरान्तरचनाक्रमो भूप्रस्तारः । भैरवप्रस्तारस्त्रिविधः । तत्र भूपुरमारभ्य चक्रत्रिकत्रिकं सृष्टिस्थितिसंहारपदैः व्यपदिश्यते । तेषु सृष्टिचक्रात् स्थितिचक्रमुन्नतम् । ततोऽपि संहारचक्रमुच्छ्रितम् । इत्येकः पक्षः । भूपुरात् पद्मद्वयमुन्नतम् । तस्मात् चतुर्दशारादिपट्कं उदप्रमिति द्वितीयः । भूपुरादिविन्द्वन्तानि नवापि चक्राणि पूर्वपूर्वस्मादुत्तरोत्तरं उन्नतानीति तृतीयः । अत्र—

चतुरस्रं समारम्य नवचक्राण्यनुक्रमात् ।

उन्नतोन्नतमामव्याञ्चकं स्यान्निधनेधनम् ॥ इति ॥

चरमपक्षप्रतिपादके तन्त्रराजवचनगते “निधनेधनं” इति पदे “उरसिलोम” इत्यादिवत् व्यधिकरणवद्बुद्धीहिः । चरमे वयसि धनप्राप्तिरित्यर्थः । सम्पदनुभव-दशायामेव निधनमाप्नोति न तु तद्भासकाले इति यावत् । प्राञ्चस्तु धनलाभोत्तरं निधनं भवतीति सप्तमीद्वितीययोः व्यत्ययं विधाय निन्दापरतया व्याचक्षते । तत्र मूळं त एव जानत इति दिक् ॥

श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधिः

. दीक्षाप्रकरणोक्ते शुभे दिवसे कृतादिकः साधको गणपतिभारग्य ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा आचम्य प्राणानापम्य देशकालौ सङ्कीर्त्तय, अमुकगोत्रोऽमुकसमवर्मादि-रहं महारिपुरमुन्दरीमाराधयिष्यन् श्रीचक्रराजप्रतिष्ठापनं करिष्य इति सङ्कल्प्य

^१ अशोपनुच्यः प्रतिष्ठयः परि० २ वे.

श्रीचक्रमहिमा

श्रीचक्राभिषेकोदकेन शिरःप्रोक्षणं पानं च ब्रह्माण्डोदरगतगङ्गाऽऽदितीर्थसहस्र-
ज्ञानकोटिफलदम् । श्रीचक्रदर्शनस्तु—

सम्यक् शतक्रतून् कृत्वा यत्फलं समवाप्नुयात् ।

तत्फलं लभते कृत्वा भक्त्या श्रीचक्रदर्शनम् ॥

इति यचनादुक्तं फलं भवति । इत्यलं विस्तरेणेति शिवम् ॥

सपर्याप्रकरणं द्वितीयं समाप्तम्

होमप्रकरणम्

तत्र पूजामण्डपस्य ईशानभागे चतुरस्रकुण्डं अथवा हस्तायाममङ्गुष्ठोन्नतं
स्थण्डिलं कृत्वा, सामान्याभ्योदकेन प्रोक्ष्य, उदक्संस्थाः प्राचीस्तिस्रो रेखाः तदुपरि
प्राक्संस्था उदीचीथ लिखित्वा तासु रेखासु क्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं स्रीः ब्रह्मणे नमः, यमाय, सोमाय, रुद्राय, विष्णवे,
इन्द्राय नमः ॥

इति गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य

ऐं ह्रीं श्रीं सहस्रार्चिषु हृदयाय नमः, स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा,
उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै यपट्, धूमन्यापिने कवचाय हुम्, सताजिहाय
नेत्रत्रयाय यौपट्, धनुर्धराय अस्त्राय फट् ॥

इति स्वाङ्गेषु षडङ्गं न्यसेत् । तैर्नैव षडङ्गेन अग्नीशामुरवापन्वेषु मध्ये दिभुं च
कुण्डमभ्यर्च्य तत्र अष्टकोणपट्कोणत्रिकोणात्मकमग्निचक्रं प्रवेशरीत्या बिलिख्य त्रिकोणं
दिग्दशक विभान्य तत्र स्वाप्रादिप्रादक्षिण्येन दिभु मध्ये च क्रमात्—

^१ अस्य प्रतिश्रुतिः परि० २ च्.

ध्यानम्—

रक्तान्बोधिस्थपोतोहृत्सदरुणसरोजाधिरूद्रा करान्जैः

पाशं कोदण्डमिश्रद्रवमळिगुणमप्यद्गुशं पद्मवाणान् ।

विभ्राणाऽऽसृक्कपालं त्रिणयनलसिता पीनवक्षोरुहाट्या

देवी वाळार्कवर्णा भवतु मुखकरी प्राणशक्तिः परा न

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं पं सं ह्रीं

प्राणाः इह प्राणाः ॥

३ ॐ . . . सः श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः ॥

३ ॐ . . . सः श्रीचक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि ॥

३ ॐ . . . सः श्रीचक्रस्य वाङ्मनश्चक्षुः

इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ इति ।

यन्त्रान्तरप्राणप्रतिष्ठायां तत्तन्नाम्नः ऊहः कार्यः । अथ त
देवीमावाह्य अभ्यर्च्य यन्त्रं कुशाग्रेः स्पृशन् मूलमष्टोत्तरं सह
होमप्रकरणोक्तेन क्रमेण अष्टोत्तरशतमाज्याहुतीः मूलेन हुत्वा
यन्त्रे अवनीय सव्यञ्जनेन अग्नेन सर्वभूतवलिं प्रदाय
सुवर्णशृङ्गाळङ्कृतां गां वसनाभरणानि च प्रदाय देवीं
ब्राह्मणांश्च भोजयेत् । इमां च यन्त्रप्रतिष्ठां गुर्वादिना वा
तन्त्रीयो यन्त्रप्रतिष्ठापनविधिः ॥

यन्त्रभेदेन अर्चनकालावधिः

सौवर्णे यावज्जीवं, रौप्ये द्वाविंशतिवत्सराः, ताप्रे
पट् । एतेषां उक्तकालातिक्रमे पुनः प्रतिष्ठा । स्फटिकाद्यं
पुरुषपरम्परयाऽभ्यर्चनं चेति । यन्त्रस्य श्वचण्डा
प्रतिष्ठापनम् । प्रमादादिना यन्त्रे दग्धे स्फुटिते नष्टे
अयुतमूलमन्त्रजपं तद्दशांशं होमादिकं च कृत्वा
लुप्तचिह्नस्फुटितार्धदग्धादीस्तु तीर्थोदके निक्षिपेत् ॥ ३

त्रिणयनमरुणासावद्धमौळिं सुशुक्लं-
 शुक्रमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम् ।
 अभिमतवरदाक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं
 नमत कनकमालालङ्कृतासं कृशानुम् ॥

इति प्यायेत् ॥

शारदातिलके—

वैश्वानरं स्थितं प्यायेत् समिद्धोमेषु देशिकः ।
 शयानमाज्यहोमेषु निपण्णं शेषवस्तुषु ॥

इति प्यानविशेष उक्तः । अथाष्टकोणे स्वाम्रादिप्रादक्षिण्येन—

ऐं ह्रीं श्रीं जातवेदसे नमः, सप्तजिह्वाय, ह्यन्वाहनाय, अश्वोदराय,
 वैश्वानराय, कौमारतेजसे, विधमुखाय, देवमुखाय नमः ॥

इति षट्कोणे च पूर्ववत् षडङ्गं अभिपूज्य, त्रिकोणे—ॐ वैश्वानर जातवेद
 इहावह ङोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मन्त्रेण—अग्निमर्चयेत् । अथाज्यं
 मूलेन सप्तवारं अभिमन्त्रणेन संशोष्य पुरतो दर्भेषु निधाय सुवं च मूलेन प्रधाव्य
 तदुत्तरतो निवेद्य अग्निं पुष्पाक्षतैः अलङ्कृत्य सुवेग आज्यमादाय,

ऐं ह्रीं श्रीं हिरण्यार्ये नमः स्वाहा । हिरण्यार्या इदं न मम ॥

फनकार्ये, रक्तार्ये, कृष्णार्ये, मुप्रभार्ये, अतिरक्तार्ये, बहुरूपायै, नमः स्वाहा ।
 बहुरूपाया इदं न मम ।

इति अग्नेः सप्तजिह्वामु एषं कामाभ्यादिति कुर्वान् नमोऽन्तान् । पादुकाऽन्तानिति
 सूत्रं तु प्रथमणा-तरमन्त्रान्तिमनमःपदातोदकं न तु बद्धिजिह्वामन्त्रनमः, अन्यत्र
 विनियोगादर्शनात् । जिह्वास्थानानि तु—

रद्रेन्दबद्धिमांसादबरणानिडदिग्गनाः ।

हिरण्यार्या क्रान्तामभ्ये बहुरूपा बन्धुदिता ॥ इति ॥

बहुरूपाऽऽस्त्यजिह्वात्वं होम सर्वार्थस्तद्वदः ।

इतरानु इनेन् मूर्खान्स्वन्निनेषु च ॥ इति ऋदिने ॥

- ३ हृदयदेव्यै स्वाहा । हृदयदेव्या इदं न मम ॥ इत्यादि ॥
 ३ परप्रकाशानन्दनाथाय स्वाहा । परप्रकाशानन्दनाथाय इदं
 न मम ॥ इत्यादि ॥
 ३ अणिममसिद्धयै स्वाहा । अणिममसिद्धया इदं न मम ॥
 इत्यादिरीत्येति ॥

प्रधानदेवताहोमे तु पद्मदशानित्योत्तरं कामेश्वर्यादित्रितयान्ते त्रिपुराम्बोत्तरं प्रधानहोमदशके तदन्ते तस्या एव महाचक्रेश्वरीत्वेन पुनर्होमे चेत्येवं त्रयोदशसु होमेषु मूलमन्त्रान्ते—उलितायै स्वाहा उलिताया इदं न मम इति विवेकः, “ न तत्र मन्त्रदेवताभेदः कार्यः ” इति सूत्रेण नामान्तरनिषेधात् । सर्वत्र ज्वालाभस्त्रिणादिषु स्वाहाऽन्तेषु मन्त्रेषु तु पुनः स्वाहाशब्दान्तरयोजनं कर्तव्यमेव—

मन्त्रान्ते या वह्निजाया सा तु मन्त्रस्वरूपिणी ।

तदन्तेऽन्यां प्रयुञ्जीत सा होमाङ्गतया मता ॥

इति शक्तिसङ्गमतन्त्रवचनात् ॥*

होमद्रव्याणि तु आज्यान्नपायसतिलतण्डुलतदुभयरक्तपुष्यसुगन्धिकुसुमफलाद्यन्य-
 तमानि । अन्नादिषु त्रिमधुरयोगः केषुञ्चैवयोगो वा । अन्नादितिलतण्डुलान्तं
 निष्कामानाम् । प्रसूनं फलं चैकैकम् । लघु चेत् द्विज्यायपि । संस्कारस्तु आज्याक्त
 एव । एवं क्रमान्तरेष्वपि विपश्चिद्भिः ऊहनीयमिति दिक् । अथ पूर्वोक्तप्रकारेण बलिं
 दत्त्वा—

ऐं हीं श्रीं ॐ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा । अग्नये पृथिव्यै
 महत इदं न मम ॥

३ ॐ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा । वायवे
 अन्तरिक्षाय महत इदं न मम ॥

३ ॐ सुवरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा । आदित्याय
 दिवे महत इदं न मम ॥

* स्वाहाऽन्तमन्त्रे स्वाहाऽन्तरयोजनं नास्तीति प्राचीनानां उक्तः अमूलवान् अनादतंभ्यः—
 इत्यधिकः (भ, अ) पुस्तकयोः ।

अर्घ्यस्थापनमुद्राः

अधोमुखप्रसारितं वामदक्षकरतलयुगमधरोत्तरं विधायाद्बुधद्वयचालने मत्स्यः । लक्ष्यममितः छोटिकां दत्त्वा दक्षमध्यमातर्जनीभ्यां 'अधिवामकरतलं त्रिस्ताडने अहम् । अधोमुखस्य दक्षवाममुष्टिद्वयस्य प्रसारितयोः तर्जन्योः स्वस्वभागमारभ्य क्रमेण लक्ष्यं परितः प्रादक्षिण्यवामावर्ताभ्यां परिभ्रमणे अवगुण्ठनम् । अभिमुखमन्योन्यप्रथितानां दक्षवामकराङ्गुलीनां क्रमेण कनिष्ठानामे तर्जनीमध्यमे च संयोज्य अधोमुखीकरणे धेनुः । योनिर्ऋत्तव । उत्तानस्य वामकरस्य विरळं आकुञ्चितैः अनामामध्यमा-तर्जन्यप्रैः अधोमुखस्य दक्षस्य धक्रीकृतानि तानि संयोज्य कनिष्ठाङ्गुष्ठाप्राणां मिथः सम्बन्धे गालिनी ॥

अर्चने मुद्राः

विततोत्तान ऊर्ध्वाधोन्यापारितोऽञ्जलिः आवाहनी । तथाविधो न्युञ्जाञ्जलिः संस्थापनी । उदङ्गुष्ठयोः मुष्टयोरभिमुखयोगे संनिधापनी । संधाकनिष्ठामूलं अन्तःप्रविष्टाङ्गुष्ठमिथःसृष्टनखा संनिरोधिनी । संनिधापन्वेव तिरः प्रयोजिता सम्मुखी करणी । अवगुण्ठनी उक्तव । उदङ्गुलिनो करतलयोः योजने वन्दनं प्रसिद्धम् । धेनुयोनी उक्ते एव । वामानामाङ्गुष्ठयोगे तत्त्वमुद्रा । दक्षाङ्गुष्ठ-तर्जनीयोगो ज्ञानमुद्रा ।

सङ्क्षोभिण्यादिमुद्राः

उत्तानयोः करतलयोः प्रसारिततर्जनीकं संहतकनिष्ठानामामध्यमाप्राण्य-न्योन्याभिमुख्येन संयोज्य स्वस्वकनिष्ठोपर्यङ्गुष्ठाप्रसम्बन्धे सर्वसङ्क्षोभिणी । सैव प्रसारितमध्यमाऽपि सर्वविधाधिणी । इयमेव मध्यमातर्जन्योरङ्गुष्ठने 'सर्वाकर्षणी । परस्परप्रथिताङ्गुलिस्सृष्टनखाप्राङ्गुष्ठयो मुष्टयो योगे सर्ववशङ्करी । अधरोत्तरं तिर्यक्प्रसारिते वामदक्षिणकनिष्ठे मध्यमाभ्यां श्रृत्वा तयोस्त्रे अंगुष्ठान्यां निगीड्य अनामातर्जन्यप्राणां पार्श्वतो मिथः सस्पर्शे सर्वोन्मादिनी । एतेव अनामयोरङ्गुष्ठने तर्जन्योः किञ्चित् भुज्ज्वे च सर्वमहाङ्कशा । दध्मुज्जमध्यममिथस्यानितयम-

^१ अधोमुखाभ्यां वाम—धा.

^२ सर्वाकर्षिणी—ध, ४१.

^३ वस्थापिनी—ध, ४१.

३ ॐ भूर्भुवः सुवधन्द्रमसे च नक्षत्रेम्यध दिग्म्यध महते च
स्वाहा । चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महत इदं न मम ॥

इति चतुर्भिः मन्त्रैः महान्याहृतिहोमं आज्येन कृत्वा, ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इतः पूर्वं
प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाप्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थामु मनसा वाचा कर्मणा हस्तान्यां
पद्मपामुदरेण शिश्रा यत् स्मृतं यत् कृतं यदुक्तं तत् सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा इति
मन्त्रेण ब्रह्मार्पणाहृतिं विधाय, परब्रह्मण इदं न मम इत्युक्त्वा, परिस्तरणपरिधीनपसार्य,
परिपेचनालङ्करणे कृत्वा, प्रागुक्तेन—

अग्निं प्रज्वलितं बन्दे जातवेदं हुताशनम् ।

सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥

इति मन्त्रेणोपस्थाय चिदग्निं देवतां च आत्मन्युद्गासयामि नमः इत्युद्गास्य तद्भूतितिलकं
धारयेत् श्यायुपमिति मन्त्रेणेति शिवम् ॥

इति होमप्रकरणं तृतीयं समाप्तम्

^१ मुद्रामकरणम्

श्रीगुरुवन्दनमुद्राः

विकसितकल्प उत्तानाञ्जलिः सुमुखम् । इदमेव मुष्टीकृतं सुवृत्तम् । ऊर्वाधः-
स्थितयोः दक्षवामकरतलयोः अंगुलीनां मिथो मणिवन्धसम्बन्धे चतुरस्रम् ।
अधरोत्तरस्य वामदक्षमुष्टियुगस्य स्वामिसुख्येन योजने मुद्गरः । तिर्यङ्मिळिताप्रयोः ।
मध्यमयोः पश्चात् ऊर्वाधःस्थिते वामदक्षानामिके तिरः प्रसारिते तर्जनीभ्यां निपीड्य
वामकनिष्ठां दक्षिणया धृत्वा अङ्गुष्ठाप्रयोः मध्यमापुरोमध्यपर्वद्वयसम्बन्धे योनिः ॥
इति श्रीगुरुवन्दनमुद्राः ॥

^१ एतासां प्रतिकृतयः परिशिष्टे ४ धे.

अर्घ्यस्थापनमुद्राः

अधोमुखप्रसारितं वामदक्षकरतलयुगमधरोत्तरं विधायाद्गुणद्वयचालने मत्स्यः । लक्ष्यममितः छोटिकां दत्त्वा दक्षमध्यमातर्जनीभ्यां 'अधिवामकरतलं त्रिस्ताडने अस्त्रम् । अधोमुखस्य दक्षवाममुष्टिद्वयस्य प्रसारितयोः तर्जन्योः स्वस्वभागमारभ्य क्रमेण लक्ष्यं परितः प्रादक्षिण्यवामावर्ताभ्यां परिभ्रमणे अवगुण्ठनम् । अभिमुखमन्योन्यप्रथितानां दक्षवामकराद्गुलीनां क्रमेण कनिष्ठानामे तर्जनीमध्यमे च संयोज्य अधोमुखीकरणे धेनुः । योनिरुक्तैव । उत्तानस्य वामकरस्य विरळ आकुञ्चितैः अनामामध्यमा-तर्जन्यगैः अधोमुखस्य दक्षस्य यकीकृतानि तानि संयोज्य कनिष्ठाङ्गुष्ठाप्राणां मिथः सम्बन्धे गाळिनी ॥

अर्चने मुद्राः

विततोत्तान ऊर्ध्वाधोव्यापारितोऽञ्जलिः आवाहनी । तथाविधो न्युञ्जाञ्जलिः संस्थापनी । उदङ्गुष्ठयोः मुष्टयोरभिमुखयोगे संनिधापनी । सैवाकनिष्ठामुलं अन्तःप्रविष्टाङ्गुष्ठमिथःस्पृष्टनखा संनिरोधिनी । सनिधापन्येव तिरः प्रयोजिता सम्मुखी करणी । अवगुण्ठनी उक्तैव । उदङ्गुष्ठिनोः करतलयोः योजने वन्दनं प्रसिद्धम् । धेनुयोनी उक्ते एव । वामानामाङ्गुष्ठयोगे तत्त्वमुद्रा । दक्षाङ्गुष्ठ-तर्जनीयोगो ज्ञानमुद्रा ।

सङ्क्षोभिष्यादिमुद्राः

उत्तानयोः करतलयोः प्रसारिततर्जनीकं संहतकनिष्ठानामामध्यमाप्राण्य-न्योन्याभिमुख्येन संयोज्य स्वस्वकनिष्ठोपर्यङ्गुष्ठाप्रसम्बन्धे सर्वसङ्क्षोभिणी । सैव प्रसारितमध्यमाऽपि सर्वविद्राविणी । इयमेव मध्यमातर्जन्योराकुञ्चने 'सर्धो कर्षणी । परस्परप्रथिताङ्गुष्ठिसृष्टनखाप्राङ्गुष्ठयोः मुष्टयोः योगे सर्ववशङ्करी । अधरोत्तरं तिर्यक्प्रसारिते वामदक्षिणकनिष्ठे मध्यमान्यां भृष्टा तयोस्त्रे अंगुष्ठाम्यां निरीक्ष्य अनामातर्जन्यप्राणां पार्श्वतो मिथः सस्पर्से सर्धोन्नादिनी । एतेव अनामयोरङ्गुञ्चने तर्जन्योः किञ्चित् भ्रुमन्त्रे च सर्वमहाङ्गुष्ठा । दक्षमुज्जमध्यसन्धिस्थापितयम-

^१ अधोमुखाभ्यां वाम—धी

^२ सर्वोर्ध्विणी—अ, ४१.

^३ संस्थापनी—अ, ४१.

कूर्परनामणिवन्धं पाणी परिवर्त्य स्वाभिमुखमन्योन्यस्पृष्टाप्रयोः मध्यमयोः पृष्ठतोऽधरोत्तरं
तिरःप्रसारितानि दक्षवामानामाकनिष्ठाप्राणि तर्जनीभ्यां धृत्वा पुरोऽङ्गुष्ठयोरन्योन्य-
सम्बन्धे सर्व खे च री । ऊर्ध्वाधस्तिरःप्रसृते वामदक्षकनिष्ठाप्रे अनामाभ्यां धृत्वा
अर्धचन्द्राकृतियोजितेषु तर्जन्यङ्गुष्ठेषु मिथः श्लिष्टाभ्यामृजुभ्यां मध्यमाभ्यां तर्जन्योः
सम्बन्धे सर्व वी ज म् । यो नि रक्तैव । अस्यामेव ऋजूकृतयोः कनिष्ठयोः मध्यमयो-
रङ्गुष्ठयोश्च पृथङ्मिथः संस्पर्शे सर्वत्रिखण्डा । उदप्राणां विरळानां वामकराङ्गुलीनां
ईपदाकुञ्चने प्रा सः । मध्यमातर्जन्यङ्गुष्ठयोगे प्रा ण मु द्रा । मध्यमानामाऽङ्गुष्ठमेळने
अ पान स्य । कनिष्ठाऽनामाऽङ्गुष्ठसम्बन्धे व्या न स्य । तर्जन्यनामाऽङ्गुष्ठमिश्रणे
उ दा न स्य । सर्वाङ्गुलिसंश्लेषे स मा न स्य । वाममुष्टेरङ्गुष्ठाप्रचुम्बितमूलपर्वणि तर्जन्या-
मीपदधोमुखप्रसृतायां ना रा चः । व्यत्ययेन वामदक्षकरकनिष्ठाङ्गुष्ठाप्रयोः योगे अन्यासां
वैरब्ध्येन प्रसारणे च च क्र म् ॥

न्यासे मुद्राः

संहताभिः चतसृभिः अङ्गुलीभिः मुखस्पर्शे मुखम् । सम्पुटीकृतयोः करयोः
मिथोऽभिमुखप्रक्षेपे करसम्पुटम् । किञ्चिदाकुञ्चिताङ्गुल्यप्रयोः स्वाभिमुखं
करयोरन्योन्यसम्बन्धे अञ्ज लिः । तर्जनीमध्यमानामाऽङ्गुः द्वयस्पर्शे द्वयम् ।
मध्यमाऽनामाऽप्रयोः ब्रह्मरन्ध्रसम्बन्धे शि रः । अङ्गुष्ठाप्रचूळीयोगे शि खा । व्यत्यय-
हस्तयोरधरोत्तरं वामहस्तदक्षकरयोः सर्वाङ्गुलीभिः अंससम्बन्धे क व च म् । तर्जनीमध्य-
माऽनामाऽङ्गुः नेत्रयुगमभ्यस्पर्शे ने त्र म् । अ खं उक्तचरम् । एताः पडङ्गन्यास एष ।
अङ्गुष्ठनिष्ठितया अनामिकया तत्तद्गुणस्पर्शे न्यासमुद्रा । वामहस्तमुष्टिं बद्ध्वा सरळ्या
तर्जन्या 'अंसरुर्गमभितां भ्रामगे सांभा ग्यदण्डिनी । सैव गर्भिताङ्गुष्ठधामपादतलं
न्यस्ता रि पु वि ह्वा प्र ह्य । अन्यमिदं मुद्रायुगळं श्रीगोबन्दाधरीनिनयम् ॥

त्रये मुद्रा

मुख-करसम्पुट-ब्रह्ममुद्राः प्रोक्तव्ये एष । परस्परमन्निमुगप्रथिताकुञ्चिता-
नामानमभ्यासनिष्ठं कर्तुं परिवर्त्य प्रसारिततर्जनीयुगाप्रसम्बन्धे च सम्पुटनापनी ।

सर्वसङ्क्षोभिष्यादयो दश दर्शितचर्यः । अभिमुखाभ्यां दक्षमध्यमातर्जनीभ्यां
पराङ्मुखयोः वाममध्यमातर्जन्योः अवपीड्याकर्षणेऽन्यासामङ्गुलीनां आकुञ्चने च
पाशः । उदग्रायां दक्षमध्यमायां तन्मध्यपर्वस्पर्शिमध्यपर्वणस्तर्जन्याकुञ्चने अनामा-
कनिष्ठाप्रयोश्चाङ्गुष्ठाप्रनिपीडने अंकुशः । उत्तानदक्षमध्यमाऽप्रेण तादृशतर्जन्यप्रपरिमिद्रे
चापः । बाणस्तु नाराचपदेनोक्तचर एव ॥

आहत्य अपुनरुक्ता मुद्राः पञ्चाशत् । एतासां प्रकारभेदोऽपि तन्तान्तरेषु
दृश्यत इति शिवम् ॥

इति मुद्राप्रकरणं चतुर्थं समाप्तम्

न्यासप्रकरणम्

एतन्मुद्राः मुद्राप्रकरणे उक्तपूर्वाः । तत्रादौ मातृकान्यासः—

अस्य श्रीमातृकान्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मणे ऋषये नमः (शिरसि), गायत्र्यै
छन्दसे नमः (मुखे), श्रीमातृकासरस्वत्यै देवतायै नमः (हृदये), हृत्स्यो वीजेभ्यो नमः
(गुह्ये), स्वरेभ्यः शक्त्यो नमः (पादयोः), बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः (नाभौ),
मम श्रीविद्याऽङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः (करसंयुक्ते) । सर्वमातृकया त्रिर्न्यापकं
सर्वान्ने अञ्जलिना ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः अं क खं ग घं ङं आं अंगुष्ठान्यां नमः ।

हृदयाय नमः ॥

६ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः । शिरसे स्थाहा ॥

६ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमान्यां नमः । शिखायै षण् ॥

६ एं वं धं दं धं ने ऐं अनानिकान्या नमः । कवचाय ष् ॥

६ ओं पं फं बं नं मं औं अर्धनिष्ठान्यां नमः । नेत्रत्रयाय
षोण् ॥

६ अं यं रं लं वं शं षं सं हं छं धं अः करतलद्वारगुणान्यां नमः ॥

अध्याय षड् ॥

कूर्परमामणिवन्धं पाणी परिवर्त्य स्वाभिमुखमन्यं ।
 तिरःप्रसारितानि दक्षयामानामाकनिष्ठाप्राणि ।
 सम्बन्धे सर्व खेचरी । ऊर्ध्वाधस्तिरःप्रसृतं
 अर्धचन्द्राकृतियोजितेषु तर्जन्यङ्गुष्ठेषु मिथः वि-
 सम्बन्धे सर्व वीजम् । यो निरुक्तैव । अस्यामि
 रङ्गुष्ठयोश्च पृथङ्मिथः संस्पर्शे सर्वत्रिखण्डा ।
 ईपदाकुञ्चने प्रासः । मध्यमातर्जन्यङ्गुष्ठयोगे
 अपानस्य । कनिष्ठाऽनामाऽङ्गुष्ठसम्बन्धे व्य-
 उदानस्य । सर्वाङ्गुलिसंश्लेषे समानस्य । वा-
 मीपदधोमुखप्रसृतायां नाराचः । व्यत्ययेन वाम
 वैरल्येन प्रसारणे च चक्रम् ॥

न्यासे मुद्राः

संहताभिः चतसृभिः अङ्गुलीभिः मुखस्य
 मिथोऽभिमुखप्रश्लेषे करसम्पुटम् । वि-
 करयोरन्योन्यसम्बन्धे अञ्जलिः । तर्जनीमध्यः
 मध्यमाऽनामाऽप्रयोः ब्रह्मरन्ध्रसम्बन्धे शिरः ।
 हस्तयोरधरोत्तरं वामहस्तदक्षकरयोः सर्वाङ्गुलीभिः
 माऽनामाऽप्रैः नेत्रयुगमध्यस्पर्शे नेत्रम् । अस्त्रं
 अङ्गुष्ठमिळितया अनामिकया तत्तदङ्गस्पर्शे न्यासः
 तर्जन्या ^१असंकर्षणमभितो भ्रामणे सौभाग्यद
 न्यस्ता रिपु जिह्वा प्रहा । अन्यमिदं मुद्रायुगळं ३

जपे मुद्रा

मुख-करसम्पुट-पङ्कजमुद्राः प्रोक्तचर्य एव
 नामामध्यमाकनिष्ठं करौ परिवर्त्य प्रसारितत-

हृदयादिगुह्यान्तं (नित्यापोडशिकार्णवे कव्यादिपादाहुल्यन्तं), क्षं नमः
हृदयादिगूर्धान्तं (नित्यापोडशिकार्णवे कव्यादित्रक्षरन्धान्तम्) ॥

अत्र मातृकाणां बिन्दुमत्त्वं—वाग्देवताऽष्टकन्यासस्थान् सविन्दूनचः सर्वत्र वर्गाणां
बिन्दुयोग इति ज्ञापकात्—सिद्धम् ॥

इति मातृकान्यासः । अयमेक एव सूत्रोक्तः ॥

करशुद्धिन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्यां नमः, आं अनामिकाभ्यां, सौः कनिष्ठि-
काभ्यां, अं अङ्गुष्ठाभ्यां, आं तर्जनीभ्यां, सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

आत्मरक्षान्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः महान्निपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष, इति
हृदये अञ्जलिं दद्यात् ॥

चतुरासनन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं सौः देव्यात्मासनाय नमः । इति स्वस्य मूलाधारे
न्यस्य ॥

३ ह्रँ ह्र्नीं ह्र्त्सौः श्रीचक्रासनाय नमः ।

३ ह्रँ, ह्र्स्त्रीं ह्र्स्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः ।

३ ह्रीं ह्रीं ञ्छे साध्यसिद्धासनाय नमः ।

इति त्रिभिः मन्त्रैः मुहुर्मुहुः पुष्पश्लेषेण चक्रमन्त्रदेवताऽऽसनानि श्रीचक्रे न्यसेत् ॥

वालापङ्कन्यासः

ऐं ह्रीं धीं ऐं हृदयाय नमः, ह्रीं तिरस्ते स्वाहा, सौः शिखायै वरट्,
ऐं कवचाय इम्, ह्रीं नेत्रत्रयाय वीषट्, सौः अघ्राय फट् ॥

ध्यानम्—

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो-

देशां भास्वत्कर्पाकलितशशिकलामिन्दुबु^{न्दावदाताम् ।}

अक्षस्रकुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामञ्ज^{संस्था-}

मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारती त^{॥ नमामि ॥}

दक्षोर्ध्वकरमारम्य दक्षाधःकरपर्यन्तं प्रादक्षिण्येन आयुधसि^{धतिः । चिन्तालिखितं नाम}
पुस्तकम् । इति ध्यात्वा मनसा पुण्याञ्जलिं दत्त्वा, ^{मातृकाः त्रितारीबालापूर्विकाः}
स्वाङ्गेषु न्यसेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः अं नमः शिरसि, आं नमः मुखवृत्ते, ईं नमः
दक्षनेत्रे, ईं नमः वामनेत्रे, उं नमः दक्षकर्णे, ऊं नमः वामकर्णे, ऋं नमः
दक्षनासापुटे, ॠं नमः वामनासापुटे, ॡं नमः दक्षगण्डे, ॢं नमः
वामगण्डे, एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे, ऐं नमः अधरोष्ठे, ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ,
औं नमः अधोदन्तपङ्क्तौ, अं नमः शिरसि मुखान्त^{तः जिह्वाग्रे, अः नमः}
मुखान्ते कण्ठे, कं नमः दक्षबाहुमूले, खं नमः तन्^{व्यसन्धौ दक्षकूर्परे, गं}
नमः तन्मणिबन्धे, घं नमः तदङ्गुलीमूले, ङं नमः तदङ्गुल्यग्रे, चं नमः
वामबाहुमूले, छं नमः तन्मध्यसन्धौ, जं नमः तन्मणिक^{धे, झं नमः तदङ्गुलि-}
मूले, ञं नमः तदङ्गुल्यग्रे, टं नमः दक्षोरुमूले, ठं नमः तज्जानुनि,
डं नमः तज्जङ्घापादसंधौ तद्गुल्फे, ढं नमः तदङ्गुलिमूले, णं
नमः तदङ्गुल्यग्रे, तं नमः वामोरुमूले, थं नमः तज्जानुनि, द नमः
तज्जङ्घापादसंधौ तद्गुल्फे, धं नमः तदङ्गुलिमूले, नं नमः तदङ्गुल्यग्रे,
पं नमः दक्षपार्श्वे, फं नमः वामपार्श्वे, वं नमः पृ^{ष्ठे, भं नमः नाभौ,}
भं नमः जठरे, यं नमः हृदि, र नमः दक्षक^{र्षे, दक्षस्कन्धे, लं}
नमः अपरगण्डे, गण्डपृष्ठे, ककुदि, वं नमः वामक^{र्षे, वामस्कन्धे, शं नमः}
हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं, पं नमः हृदयादिवामकराङ्गु^{ल्यन्तं, सं नमः}
हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं, हं नमः हृदयादिवामपादाङ्गु^{ल्यन्तं, लं नमः}

^१ देह—अ.

हृदयादिगुद्धान्तं (नित्यापोडशिकार्णवे कव्यादिपादाङ्गुल्यन्तं), क्षं नमः
हृदयादिमूर्धान्तं (नित्यापोडशिकार्णवे कव्यादित्रहरन्ध्रान्तम्) ॥

अत्र मातृकाणां विन्दुमत्त्वं—वाग्देवताऽष्टकन्यासस्थान् सविन्दूनचः सर्वत्र वर्गाणां
विन्दुयोग इति ज्ञापकात्—सिद्धम् ॥

इति मातृकान्यासः । अयमेक एव सूत्रोक्तः ॥

करशुद्धिन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्यां नमः, आं अनामिकाभ्यां, सौः कनिष्ठि-
कान्यां, अं अङ्गुष्ठाभ्यां, आं तर्जनीभ्यां, सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

आत्मरक्षान्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः महात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष, इति
हृदये अञ्जलिं दद्यात् ॥

चतुरासनन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं सौः देव्यात्मासनाय नमः । इति स्वस्य मूलाधारे
न्यस्य ॥

३ ह्रै ह्रीं ह्रसौः श्रीचक्रासनाय नमः ।

३ ह्रसै, ह्रस्त्रीं ह्रस्तौः सर्वमन्त्रासनाय नमः ।

३ ह्रौं ह्रीं ङ्खे साध्यसिद्धासनाय नमः ।

इति त्रिभिः मन्त्रैः सुहृर्मुहूः पुष्यश्लेषेण चक्रमन्त्रदेवताऽऽसनानि श्रीचक्रे न्यसेत् ॥

वालापडङ्गन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हृदयाय नमः, ह्रीं शिरसे स्वाहा, सौः शिलायै वरट्,
ऐं कवचाय इम्, ह्रीं नेत्रत्रयाय वीपट्, सौः अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्—

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्क्षिवक्षो-

^१देशां भास्वत्कर्पाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।

अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामञ्जसंस्था-

मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥

दक्षोर्ध्वकरमारम्य दक्षाधःकरपर्यन्तं प्रादक्षिण्येन आयुधस्थितिः । चिन्तालिखितं नाम पुस्तकम् । इति ध्यात्वा मनसा पुण्याञ्जलिं दत्त्वा, मातृकाः त्रितारीवालापूर्विकाः स्वाङ्गेषु न्यसेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः अं नमः शिरसि, आं नमः मुखवृत्ते, इं नमः दक्षनेत्रे, ईं नमः वामनेत्रे, उं नमः दक्षकर्णे, ऊं नमः वामकर्णे, ऋं नमः दक्षनासापुटे, ॠं नमः वामनासापुटे, लं नमः दक्षगण्डे, लूं नमः वामगण्डे, एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे, ऐं नमः अधरोष्ठे, औं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ, औं नमः अधोदन्तपङ्क्तौ, अं नमः शिरसि मुखान्ततः जिह्वाग्रे, अः नमः मुखान्ते कण्ठे, कं नमः दक्षबाहुमूले, खं नमः तन्मध्यसन्धौ दक्षकूर्परे, गं नमः तन्मणिबन्धे, घं नमः तदङ्गुलीमूले, ङं नमः तदङ्गुल्यग्रे, चं नमः वामबाहुमूले, छं नमः तन्मध्यसन्धौ, जं नमः तन्मणिबन्धे, झं नमः तदङ्गुलिमूले, ञं नमः तदङ्गुल्यग्रे, टं नमः दक्षोरुमूले, ठं नमः तज्जानुनि, डं नमः तज्जङ्घापादसंधौ तद्गुल्फे, ढं नमः तदङ्गुलिमूले, णं नमः तदङ्गुल्यग्रे, तं नमः वामोरुमूले, थं नमः तज्जानुनि, दं नमः तज्जङ्घापादसंधौ तद्गुल्फे, धं नमः तदङ्गुलिमूले, नं नमः तदङ्गुल्यग्रे, पं नमः दक्षपार्श्वे, फं नमः वामपार्श्वे, बं नमः पृष्ठे, भं नमः नाभौ, मं नमः जठरे, यं नमः हृदि, रं नमः दक्षकक्षे, दक्षस्कन्धे, लं नमः अपरगण्डे, गण्डपृष्ठे, ककुदि, वं नमः वामकक्षे, वामस्कन्धे, शं नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं, पं नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं, सं नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं, हं नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं, लं नमः

निगृह्णामीति रिपुजिह्वाप्रया मुद्रया वामपादाधो न्यसेत् । पुनस्तथैव तामुच्चार्य
त्रैलोक्यस्याहं कर्तेति त्रिलण्डां फाले न्यसेत् । पुनस्तथैव तां उच्चार्य वदने घेष्टनत्वेन
न्यसेत् । पुनस्तथैव तां उच्चार्य दक्षकर्णादिवामकर्णान्तं मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत् ॥
पुनस्तथैव तामुच्चार्य गळोर्ध्वमाशिरो न्यसेत् । पुनस्तथैव तामाद्यन्तप्रणवमुच्चार्य
मस्तकात् पादपर्यन्तं पादादामस्तकं च न्यसेत् । पुनस्तथैव तामुच्चार्य योनिमुद्रया मुखे
न्यस्य, पुनस्तथैव तामुच्चार्य योनिमुद्रया ललाटे न्यसेत् ॥

सम्मोहनन्यासः

ततः श्रीविद्यां स्मृत्वा तद्यभया जगद्रूपं विभावयन् अनामिकां ऊर्ध्वं
परिभ्राम्य, उच्चार्य मुहुर्मुहुः मूलविद्यां ब्रह्मरन्ध्रे मणिबन्धद्वितये फाले च विन्यसेत् ॥
एव सम्मोहनो नाम न्यासोऽन्वर्थः ॥

संहारन्यासः

अथ चतुस्तारीनमस्तम्पुटितान् मूलविद्यापोडशार्णान् क्रमेण पादयोः जङ्घयोः
जान्घोः कटिभागद्वये पृष्ठे लिङ्गे नामौ पार्श्वयोः स्तनयोः अंसयोः कर्णयोः मूर्ध्नि मुखे
नेत्रयोः कर्णयुगसन्निधौ कर्णवेष्टनयोश्च न्यसेत् । अत्र कूटत्रयस्य वर्णत्रयत्वेन
पोडशार्णत्वव्यपदेशः । पादादिषु प्रथमं दक्षः ततो वाम इति बोध्यम् ॥

सृष्टिन्यासः

पुनस्तथैव विद्याऽर्णान् क्रमेण ब्रह्मरन्ध्रे फाले दशोः कर्णयोः प्राणपुटयोः गण्डयोः
दन्तपङ्क्तयोः ऊर्ध्वाधरोष्ठयोः जिह्वाया चोरकूपे पृष्ठे सर्वाङ्गे हृदि स्तनयोरुदरे लिङ्गे
च न्यस्य मूलेन व्यापकं कुर्यात् ॥

स्थितिन्यासः

अथ पूर्वक्रमेणैव अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तकराङ्गुलिषु मूर्ध्नि मुखे हृदि नाभेः
पादद्रयावधि कण्ठादानाभि मूर्ध्नि आकण्ठं पूर्ववत् पादाङ्गुलिषु च न्यसेत् । अत्र
दक्षवामकरचरणाङ्गुलिषु द्वयोर्द्वयोरेकैकमक्षरम् ॥

एते पक्षेव ज्ञानार्णवमते । तन्त्रान्तरेषु तु अन्येऽपि पत्र उपलभ्यन्ते ॥

वशिन्वादिन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लं लूं एं ऐं ओं औं अं अः ब्रह्मं
वशिनीवाग्देवतायै नमः । शिरसि ॥

- ३ कं खं गं घं ङं कर्ह्णी कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः । ललाटे ॥
३ चं छं जं झं ञं ञ्ळीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः । भ्रूमध्ये ॥
३ टं ठं डं ढं णं ष्ळं विमलावाग्देवतायै नमः । कण्ठे ॥
३ तं थं दं धं नं अश्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः । हृदि ॥
३ पं फं बं भं मं ह्रस्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः । नाभौ ॥
३ यं रं लं वं इन्द्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः । लिङ्गे ॥
३ शं पं सं हं ङं क्षं क्ष्मीं कौळिनीवाग्देवतायै नमः मूलाधारे ॥
इति न्यसेत् ॥

मूलविचावर्णन्यासः

अस्य च ऋष्यादिन्यासस्तु कृताकृतः । करणे तु तत्प्रकारो जपप्रकारं
द्रष्टव्यः ॥

ऐं ह्रीं धीं कं नमः शिरसि, एं नमः मूलाधारे, ईं नमः हृदि, लं नमः
दक्षनेत्रे, हीं नमः वामनेत्रे, हं नमः भ्रूमध्ये, सं नमः दक्षश्रोत्रे, फं नमः
वामश्रोत्रे, हं नमः मुखे, छं नमः दक्षमुखे, ह्रीं नमः वाममुखे, सं नमः पृष्ठे
कं नमः दक्षजानुनि, उं नमः वामजानुनि, ह्रीं नमः नाभौ ॥
इति कादिपद्मदशीवर्णन्यासः । एवमेव ह्यादिपद्मदशयपि ॥

श्रीषोडशाक्षरीन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूर्त्तिना नम इति दक्षमध्यमानामान्यां शिर्षं
अथ तत्र तां दीपाना स्तम्भुधारसां महासौभाग्यदां प्यान्वा, पुनः
महासौभाग्यं मे देहि परसौभाग्यं दण्डयामीति सौभाग्यदण्डिन्याः ।
पेटनसूक्तं नामस्तम्भुधारसां ध्यानाद्रे न्यसेत् । पुनस्तम्भुधारसां

ते तु सिन्दूरवर्णाभाः सर्वालङ्कार^१भूषिताः ।

एकहस्तभृताम्भोजा इतरालिङ्गितप्रियाः ॥

वामोर्ध्वकरमारुह्य वामाधःकरपर्यन्तं गणेशानां पाशादिध्यानम् । शक्तिनां तु वनद्वरं कमलं दक्षिणे च प्रियाञ्छेन इति ध्यात्वा, मातृकास्थानेषु विराट्मन्दिरादिकं गणेशान् न्यसेत् । यथा—

ॐ ह्रीं श्रीं अं श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय नमः । शिरसि ॥

३ आं हीयुक्ताय विघ्नराजाय नमः । मुखद्वारे २

३ इंं तुष्टियुक्ताय विनायकाय नमः । दक्षिणे ॥

३ ईं शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय नमः । उत्तरे ॥

३ उं पुष्टियुक्ताय विघ्नहृते नमः । दक्षिणे ॥

३ ऊं सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्त्रे नमः । उत्तरे ॥

३ ऋ रतियुक्ताय विघ्नराजे नमः । दक्षिणे ॥

३ ऋं मेधायुक्ताय गणनायकान् नमः । उत्तरे ॥

३ लृ कान्तियुक्ताय एकदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ लृ कामिनीयुक्ताय द्विदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ ए मोहिनीयुक्ताय गदकदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ ऐं जटायुक्ताय निरङ्गुलान् नमः । उत्तरे ॥

३ ओं तीत्रायुक्ताय चतुर्दन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ ओं ज्यातिनीयुक्ताय अष्टदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ अ नन्दायुक्ताय दशदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ अः सुरमायुक्ताय द्वादशदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ कं कामरुपियुक्ताय त्रयोदशदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ खं मुकुटायुक्ताय चतुर्दशदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ ग रत्नियुक्ताय पञ्चदशदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

३ घ सन्ध्यायुक्ताय षोडशदन्तान् नमः । उत्तरे ॥

^१ धोनिदा—अ १, ४२, ४३

- ३ ङं विन्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय नमः । दक्षकराङ्गुल्यग्रे ॥
 ३ चं सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः । वामबाहुमूले ॥
 ३ छं कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये नमः । वामकूर्परे ॥
 ३ जं मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय नमः । वाममणिकन्धे ॥
 ३ झं विक्रदायुक्ताय आमोदाय नमः । वामकराङ्गुलिमूले ॥
 ३ ञं पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय नमः । वामकराङ्गुल्यग्रे ॥
 ३ टं भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः । दक्षोरुमूले ॥
 ३ ठं भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः । दक्षजानुनि ॥
 ३ डं शक्तियुक्ताय एकपादाय नमः । दक्षगुल्फे ॥
 ३ ढं रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः । दक्षपादाङ्गुलिमूले ॥
 ३ णं मानुपीयुक्ताय शूराय नमः । दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ॥
 ३ तं मकरध्वजायुक्ताय वीराय नमः । वामोरुमूले ॥
 ३ थं धीरिणीयुक्ताय पण्मुखाय नमः । वामजानुनि ॥
 ३ दं भ्रुकुटीयुक्ताय वरदाय नमः । वामगुल्फे ॥
 ३ धं लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः । वामपादाङ्गुलिमूले ॥
 ३ नं दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः । वामपादाङ्गुल्यग्रे ॥
 ३ पं धनुर्धरायुक्ताय द्विरण्डकाय नमः (नित्यापोडशिकाण्ये
 —द्वितुण्डकाय नमः) । दक्षपार्श्वे ॥
 ३ फं यामिनीयुक्ताय सेनान्ये नमः । वामपार्श्वे ॥
 ३ बं रात्रियुक्ताय प्रामण्ये नमः । पृष्ठे ॥
 ३ भं चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय नमः । नाभौ ॥
 ३ मं शशिप्रभायुक्ताय विनत्ताय नमः । जठरे ॥
 ३ यं लोलायुक्ताय मत्तनाहनाय नमः । हृदये ॥
 ३ रं चपलायुक्ताय जटिने नमः । दक्षस्कन्धे ॥
 ३ लं ऋद्धियुक्ताय मुग्दिने नमः । गळपृष्ठे—कनुदि ॥
 ३ वं दुर्भगायुक्ताय गङ्गिने नमः । वामस्कन्धे ॥
 ३ शं मुनगायुक्ताय वरुन्दाय नमः । हृदयदिग्दर्शकपृष्ठस्कन्धे ॥

- ३ पं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः । हृदयादिवामकराहुल्यन्तं ॥
 ३ सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय नमः । हृदयादिदक्षपादाहुल्यन्तं ॥
 ३ हं^१ कालीयुक्ताय गणेशाय नमः । हृदयादिवामपादाहुल्यन्तं ॥
 ३ लं कालकुम्भिकायुक्ताय मेघनादाय नमः । हृदयादिगुह्यान्तं ॥
 ३ क्षं विन्न^२ द्वारिणीयुक्ताय गणेश्वराय नमः । हृदयादिमूर्धान्तम् ॥

ग्रहन्यासः

ध्यातम्—

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतं च पाण्डुरम् ।
 कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद्रविपूर्वकान् ॥
 कामरूपधरान् देवान् दिव्याभरणभूषितान् ।
 वामोरुन्यस्तहस्तांश्च दक्षहस्तवरप्रदान् ॥
 शक्तयोऽपि तथा प्येषाः वराभयकराम्बुजाः ।
 स्वस्वप्रियाङ्गनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः ॥

इति ध्यात्वा—

- ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः
 ऐयुक्ताय सूर्याय नमः । हृदयाधः, हृद्भ्रतरसन्धी ॥
 ३ यं रं लं वं अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः । भ्रूमध्ये ॥
 ३ क ख गं घं ङं धर्मायुक्ताय भौमाय नमः । नेत्रयोः ॥
 ३ च छं जं झं ञं यशस्विनीयुक्ताय बुधाय नमः । श्रोत्रकूपाधः
 ३ टं ठं डं ढं णं शाङ्करीयुक्ताय बृहस्पतये नमः । कण्ठे ॥
 ३ तं थं दं धं नं ज्ञानरूपायुक्ताय शुक्राय नमः । हृदि ॥
 ३ प फं बं भं मं शक्तियुक्ताय शनैश्वराय नमः । नाभौ ॥
 ३ शं षं सं हं कृष्णायुक्ताय राहवे नमः । मुखे ॥
 ३ लं क्षं भ्रूम्रायुक्ताय केतवे नमः । गुदे ॥

^१ काद्विध—अ १.

^२ द्वारिणी—अ १.

^३ श्रोत्रकूपाधः—अ, ब २, व १, धी, अ.

५॥१॥—

ॐ उक्ताजान उग्रसु त परतनधतानयः ।

नतितान्योऽधिनीतूयोः सतंनस्ननूविता ॥

इति भ्यासा—

ऐं ही धी ज आं बधिन्ये नमः । उग्रटे ॥

३ ईं भरण्ये नमः । दशनेत्रे ॥

३ ईं उं ऊं छदिकायै नमः । वामनेत्रे ॥

३ शं ऋं लृं लृं रोदिव्ये नमः । दक्षकर्णे ॥

३ एं मृगशिरसे नमः । वामकर्णे ॥

३ ऐं आश्रयै नमः । दक्षनासापुटे ॥

३ औं औं पुनर्वसुधे नमः । वामनासापुटे ॥

३ कं पुष्याय नमः । कण्ठे ॥

३ लं गं आश्लेयायै नमः । दक्षस्कन्धे ॥

३ घं ङं मघायै नमः । वामस्कन्धे ॥

३ चं पूर्वफल्गुन्यै नमः । शृष्टे ॥

३ छं जं उत्तरफल्गुन्यै नमः । दक्षकूर्परे ॥

३ झं ञं हस्ताय नमः । वामकूर्परे ॥

३ टं ठं चित्रायै नमः । दक्षमणिवन्धे ॥

३ डं स्वात्यै नमः । वाममणिवन्धे ॥

३ ढं णं विशाखायै नमः । दक्षहस्ते ॥

३ तं थं दं अनूराधायै नमः । वामहस्ते ॥

३ धं ज्येष्ठायै नमः । नाभौ ॥

३ नं पं फं मूलाय नमः । कटिवन्धे ॥

३ बं पूर्वाषाढायै नमः । दक्षोरी ॥

३ भं उत्तराषाढायै नमः । वामोरी ॥

- ३ मं श्रवणाय नमः । दक्षजानुनि ॥
 ३ यं रं धनिष्टायै नमः । वामजानुनि ॥
 ३ लं शततारकायै नमः । दक्षजङ्घायाम् ॥
 ३ धं शं पूर्वभाद्रपदायै नमः । वामजङ्घायाम् ॥
 ३ पं सं हं उत्तरभाद्रपदायै नमः । दक्षपादे ॥
 ३ लं क्षं अं अः रेवत्यै नमः । वामपादे ॥

योगिनीन्यासः

ध्यानम्—

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतवर्णां त्रिणेत्रां
 हस्तीः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्म सन्धारयन्तीम् ॥
 वस्त्रैणैकेन युक्तां पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां
 त्वक्स्थां वन्देऽमृताद्यैः परिचृतवपुषं ङाकिनीं वीरवन्द्याम् ॥

इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं श्रीं डां डीं ड म ल व र यूं ङाकिन्यै नमः । ३ अं आं इं ईं
 उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः मां रक्ष रक्ष स्वगात्मानं नमः ॥
 इति मन्त्रेण कण्ठस्थोद्गतादलविशुद्धिकमलकर्णिकायां ङाकिनीं न्यस्य, तदलेऽपि
 पुरोभागादिप्रादक्षिण्येन तदावरणशक्तीः न्यसेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं अ अमृतायै नमः, आ आकार्णिक्यै, इं इंद्रायै,
 ई ईशान्यै, उ उमायै, ऊ ऊर्ध्वकोट्यै, ऋ ऋद्धिरायै, ॠ ऋकारायै,
 लृ लृकारायै, लृ लृकारायै, ए एकरायै, ऐ ऐश्वर्याभिकायै, ओ
 ओङ्कारायै, औ औपत्यै, अ अम्बिकायै, अः अश्वरायै नमः ॥ इति ॥

ततः ध्यानम्—

दृश्यते भानुरत्रे द्विवदनलसित्या दक्षिणी स्थानवर्णां
 अधः शूल कशाठ इतरन्नि भुजैर्नरपत्नीं विनेश्वरम् ।

* ईशान्यै—अ १, ४ २, ४ ३.

* ऋकार्यै—७१.

* लृकार्यै—७१.

रत्नस्था काञ्चरिप्रवृत्तिरिष्टां त्रिगुणैर्गुरुसक्तं
श्रीमद्भिरिन्द्रवन्दा अभिमतकृत्वां राकिणी भावयामः ॥

इति प्यात्वा—

ॐ ह्रीं श्रीं रं रीं र म उ व र यूं राकिण्यै नमः । ३ कं खं गं घं ङं
चं छं जं झं ञं टं ठं मां रक्ष रक्ष असृगन्मानं नमः ॥

इति हृदयस्थितद्वादशदलानाहतनलिनकार्णिकायां राकिणीं न्यस्य, तद्वलेषु प्राप्तं
तद्गृह्णतिशर्कान्यसेत् । यथा—

ॐ ह्रीं श्रीं कं काञ्चराय्यै नमः, खं खण्डितायै, गं गायत्र्यै, घं
घण्टाकर्षिण्यै, ङं ङार्णायै, च चण्डायै, छं छायायै, जं जयायै, झं झङ्कारिण्यै,
ञं ज्ञानरूपायै, टं टङ्कहस्तायै, ठं ठङ्कारिण्यै नमः ॥ इति ॥

अथ—

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलसितां दंष्ट्रिणीं रक्तवर्णां
शक्तिं दम्भोलिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोपाम् ।
डामर्यायैः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वैकनिष्ठं
गौडान्नासक्तचित्तां सकलमुखकरीं लाकिनीं भावयामः ॥

इति प्यात्वा—

ॐ ह्रीं श्रीं लां लीं ल म ल व र यूं लाकिन्यै नमः । ३ डं ढं णं तं थं
दं धं नं पं फं मां रक्ष रक्ष मांसात्मानं नमः ॥

इति नाभिगतदशदलमणिपूरकसरोजकार्णिकायां लाकिनीं न्यस्य, तद्वलेषु पूर्ववत्
तत्परिवारशक्तीः न्यसेत् । यथा—

ॐ ह्रीं श्रीं डं डामर्यै नमः, ढं ढङ्कारिण्यै, णं णार्णायै, तं तामस्यै,
थं स्थाण्यै, दं दाक्षायण्यै, धं धात्र्यै, नं नार्यै, पं पार्वत्यै, फं फट्कारिण्यै
नमः ॥

यौवनोल्लासः तृतीयः—श्रीक्रमः

तदनु—

स्वाधिष्ठानाह्वयपद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिणेत्रां
हस्तान्जैर्धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालाङ्कुरानास्रगर्वाम् ।
मेदोधातुप्रतिष्ठामलिमदमुदितां बन्धिनीमुष्ययुक्तां
पीतां दध्योदनेष्टामभिमतफलदां काकिनीं भावयामः ॥

इति प्यात्वा—

ऐं ही श्रीं कां कीं क म ल व र यूं काकिन्यै नमः । ३ बं भं मं यं रं
ळं मां रक्ष रक्ष मेदधात्मानं नमः ॥

इति गुह्यस्थानगतपद्दलस्वाधिष्ठानसरसिजकार्णिकायां काकिनीं न्यस्य, तदलेषु
तदावरणशक्तीः प्राग्वत् न्यसेत् । यथा—

ऐं ही श्रीं वं बन्धिन्यै नमः, भं भद्रकाल्यै, मं महामायायै, पं
यदास्विन्यै, रं रक्तायै, ळ लम्बोष्ठ्यै नमः ॥

ततः—

मूलाधारस्थपद्मे श्रुतिदललसिते पद्मवक्त्रां त्रिणेत्रां
धूम्राभामस्थिसंस्थां सृणिमपि कमळं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम् ।
बिभ्राणां बाहुदण्डैः सुललितवरदापूर्वशक्त्यावृतां तां
मुद्रान्नासक्तचित्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयामः ॥

इति प्यात्वा—

ऐं हीं श्रीं सां सीं स म ल व र यूं साकिन्यै नमः । वं शं पं सं मां
रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मानं नमः ॥

इति पागूपस्थमध्यगतचतुर्दलमूलाधारकमलकार्णिकायां साकिनीं न्यस्य, तदलेषु पूर्ववत्
तदावृत्तिशक्तीः न्यसेत् । यथा—

ऐं हीं श्रीं वं वरदायै नमः, शं श्रियै, पं पण्डायै, सं सरस्वत्यै नमः ॥

अथ—

धूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते गुरुवर्गां करान्त्रैः
बिभ्राणां ज्ञानमुद्रां कमरुवृत्तमलमभ्रमालं कपालम् ।

रक्तस्थां कालरात्रिप्रमृतिपरिरृतां त्रिगन्धभक्तैःकसक्तां

श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यां अभिमतफलदां राकिणीं भावयामः ॥

इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं श्रीं रं रीं र म ल व र यूं राकिण्यै नमः । ३ कं खं गं घं ङं
चं छं जं झं ञं टं ठं मां रक्ष रक्ष असृगाल्मानं नमः ॥

इति हृदयस्थितद्वादशदलानाहतनलिनकर्णिकायां राकिणीं न्यस्य, तद्वलेषु प्राग्वत्
तदावृत्तिशक्तीर्न्यसेत् । यथा—

ऐ ह्रीं श्रीं क कालरात्र्यै नमः, खं खण्डितायै, गं गायत्र्यै, घं
घण्टाकर्षिण्यै, ङं ङार्णायै, चं चण्डायै, छं छायायै, जं जयायै, झं झङ्कारिण्यै,
ञं ज्ञानरूपायै, टं टङ्कहस्तायै, ठं ठङ्कारिण्यै नमः ॥ इति ॥

अथ—

दिक्पत्रे नाभिपत्रे त्रिवदनलसितां दंष्ट्रिणीं रक्तवर्णां

शक्तिं दम्भोलिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोपाम् ।

डामर्यादौः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वेकनिष्ठां

गौडान्नासक्तचित्तां सकलसुखकरीं लाकिनीं भावयामः ॥

इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं श्रीं लां लीं ल म ल व र यूं लाकिन्यै नमः । ३ ङं ङं णं तं थं
दं धं नं पं फं मां रक्ष रक्ष मांसात्मानं नमः ॥

इति नाभिगतदशदलमणिप्रूरकसरोजकर्णिकायां लाकिनीं न्यस्य, तद्वलेषु पूर्ववत्
तत्परिवारशक्तीः न्यसेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ङं डामर्यै नमः, ङं ङङ्कारिण्यै, णं णार्णायै, तं तामस्यै,
थं स्थाण्यै, दं दाक्षायण्यै, धं धात्र्यै, नं नार्यै, पं पार्वत्यै, फं फट्कारिण्यै
नमः ॥

- ३ ऋं ऋं लं लं मिथुनाय नमः । दक्षकुक्षौ ॥
 ३ एं ऐं कर्काय नमः । हृदयदक्षभागे ॥
 ३ ओं औं सिंहाय नमः । दक्षबाहुमूले ॥
 ३ अं अः शं पं सं हं लं कन्यायै नमः । दक्षशिरोभागे ॥
 ३ क खं गं घं ङं तुलायै नमः । वामशिरोभागे ॥
 ३ चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः । वामबाहुमूले ॥
 ३ ट ठ डं ढं णं धनुषे नमः । हृदयवामभागे ॥
 ३ त थं दं धं नं मकराय नमः । वामकुक्षौ ॥
 ३ पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः । लिङ्गवामभागे ॥
 ३ यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः । वामपादे ॥

पीठन्यासः

सितासितारुणस्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात् ।

पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्पीठसङ्ख्यः ॥

इति भावयित्वा, मातृकाभिः समं पूर्वोक्तेषु तासां स्थानेषु पीठानि क्रमेण विन्यसेत् ।
 यथा—

- ऐं ह्रीं धीं अं कामरूपाय नमः । शिरसि ॥
 ३ आ वाराणस्यै नमः । मुखदृष्टे ॥
 ३ इं नेपालाय नमः । दक्षनेत्रे ॥
 ३ ईं पीण्डुवर्धनाय नमः । वामनेत्रे ॥
 ३ उ पुरस्थिरकास्मीराय नमः । दक्षकर्णे ॥
 ३ ऊ कान्यकुब्जाय नमः । वामकर्णे ॥
 ३ ऋ पूर्णशिंशुलाय नमः । दक्षनासापुटे ॥
 ३ ॠ अर्धुदाचलाय नमः । वामनासापुटे ॥
 ३ ए आघ्रातरेभ्युय नमः । दक्षगण्डे ॥
 ३ ऐ एकाग्राय नमः । वामगण्डे ॥

पुद्गलता मन्त्रांशुना विगलनप्रतिना ह्यनन्तशुक्रा
 हादिशभैरुक्तता मरुशुक्रादी हाकिनी न्यस्यामः ॥

इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं धीं हां हीं हं म उ व र यू हाकिन्यै नमः । ३ हं शं मां रश् रश्
 मन्त्रान्मान नमः ॥

इति भूमभ्रगतद्विदलाशाकमठकर्णिकायां हाकिनी न्यस्य तदक्षरान्दलयोः क्रमेण—

ऐं ह्रीं धीं हं हंस्यस्यै नमः, शं क्षमावस्यै नमः ॥

इति तण्डकित्तय न्यसेत् । तदनु—

मुण्डज्योमस्थपभे दशशतदलं कर्णिकाचन्द्रसंस्थां
 रेतोनिष्ठां समस्तायुधकण्ठितकरा सर्वतोवक्त्रपद्मान् ।
 आदिक्षान्तार्णशक्तिप्रकरपरिहृतां सर्ववर्णां भवानीं
 सर्वाज्ञासक्तचित्तां परशिपरसिकां याकिनीं भावयामः ॥

इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं धीं यां यीं य म उ व र यूं याकिन्यै नमः । ३ अं . . . क्षं
 (५१) मां रक्ष रक्ष शुक्रात्मानं नमः ॥

इति ब्रह्मरन्ध्रगतसहस्रदलसरसिजकर्णिकायां याकिनीं न्यस्य तद्द्वेषु प्रतिविंशतिदलं
 तदावरणशक्तीः अमृताद्याः क्षमावत्यन्ताः पूर्वोक्ताः प्राग्बत् न्यसेत् ॥

राशिन्यासः

रक्तधेतहरित्पाण्डुचित्रकृष्णापिशङ्गकान् ।
 कपिशबधुकिर्मांरुष्णभूम्नान् क्रमात् स्मरेत् ॥

राशीनिति शेषः । इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं धीं अं आं इं ईं मेपाय नमः । दक्षपादे ॥
 " ॥ ३ उं ऊं वृषभाय नमः । लिङ्गदक्षभागे ॥

- ३ ऋं ऋं लृं लृं मिथुनाय नमः । दक्षकुक्षौ ॥
 ३ एं ऐं कर्काय नमः । हृदयदक्षभागे ॥
 ३ ओं औं सिंहाय नमः । दक्षबाहुमूले ॥
 ३ अं अः शं पं सं हं छं कन्यार्ये नमः । दक्षशिरोभागे ॥
 ३ कं खं गं घं ङं तुलायै नमः । वामशिरोभागे ॥
 ३ चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः । वामबाहुमूले ॥
 ३ टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः । हृदयबानभागे ॥
 ३ तं थं दं धं नं मकराय नमः । वामकुक्षौ ॥
 ३ पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः । उज्ज्वलान्त्रे ॥
 ३ यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः । वामगण्डे ॥

पीठन्यासः

सितासितारुणस्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात् ।

पुनः क्रमेण देवेशि पद्माशशीठसद्यः ॥

इति भावयित्वा, मातृकाभिः समं पूर्वोक्तैः तासु स्थानेषु तैर्देवि ह्येव
 यथा—

- ऐं ह्रीं श्रीं अं कामरूपाय नमः । त्रिजिह्वे ॥
 ३ आं वाराणस्यै नमः । कुक्षुद्वये ॥
 ३ इं नेपालाय नमः । दक्षेत्रे ॥
 ३ ईं पीण्डुवर्धनाय नमः । वामनेत्रे ॥
 ३ उ पुस्तिरकालास्ये नमः । दक्षनेत्रे ॥
 ३ ऊ कान्यकुब्जाय नमः । वामनेत्रे ॥
 ३ ऋं पूर्वोक्तान नमः । दक्षबाहुमूले ॥
 ३ ऋं अनुद्वेषाय नमः । वामबाहुमूले ॥
 ३ लृं आश्रयत्रयत्रय नमः । दक्षगण्डे ॥
 ३ लृं एकाग्राय नमः । वामगण्डे ॥

- ३ एं तिस्रोतसे नमः । ऊर्ध्वोष्ठे ॥
 ३ ऐं कामकोटये नमः । अधरोष्ठे ॥
 ३ औं कैलासाय नमः । ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ॥
 ३ औं भृगुनगराय नमः । अधोदन्तपङ्क्तौ ॥
 ३ अं केदाराय नमः । जिह्वाग्रे ॥
 ३ अः चन्द्रपुष्करिण्यै नमः । कण्ठे ॥
 ३ कं श्रीपुराय नमः । दक्षबाहुमूले ॥
 ३ खं ओङ्काराय नमः । दक्षकूर्परे ॥
 ३ गं जालन्धराय नमः । दक्षमणिबन्धे ॥
 ३ घं मातृवापय नमः । दक्षकराङ्गुलिमूले ॥
 ३ ङं कुलान्तकाय नमः । दक्षकराङ्गुल्यग्रे ॥
 ३ चं देवीकोटाय नमः । वामबाहुमूले ॥
 ३ छं गोकर्णाय नमः । वामकूर्परे ॥
 ३ जं मारुतेश्वराय नमः । वाममणिबन्धे ॥
 ३ झं अट्टहासाय नमः । वामकराङ्गुलिमूले ॥
 ३ ञं विरजायै नमः । वामकराङ्गुल्यग्रे ॥
 ३ टं राजगेहाय नमः । दक्षोरुमूले ॥
 ३ ठं महापथाय नमः । दक्षजानुनि ॥
 ३ डं कोलापुराय नमः । दक्षगुल्फे ॥
 ३ ढं एलापुराय नमः । दक्षपादाङ्गुलिमूले ॥
 ३ णं कालेश्वराय नमः । दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ॥
 ३ तं जयंतिकायै नमः । वामोरुमूले ॥
 ३ थं तज्जयिन्धे नमः । वामजानुनि ॥
 ३ दं चित्रायै नमः । वामगुल्फे ॥
 ३ धं क्षीरिकायै नमः । वामपादाङ्गुलिमूले ॥
 ३ नं हस्तिनापुराय नमः । वामपादाङ्गुल्यग्रे ॥
 ३ पं उर्द्धाशाय नमः । दक्षार्धे ॥

ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलकौलनिगर्भरहस्यातिरहस्य
पररहस्ययोगिनीचक्रदेवताभ्यो नमः—इति सर्वाङ्गे व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः । दक्षोरौ ॥

३ क्षं क्षेत्रपालकाय नमः । दक्षासे ॥

३ यां योगिनीभ्यो नमः । वामासे ॥

३ वं बटुकाय नमः । वामोरौ ॥

३ लं इन्द्राय नमः । पादाङ्गुष्ठद्वयाग्रे ॥

३ रं अग्नये नमः । दक्षजानुनि ॥

३ टं यमाय नमः । दक्षपार्श्वे ॥

३ क्षं निर्ऋतये नमः । दक्षासे ॥

३ वं वरुणाय नमः । मूर्ध्नि ॥

३ यं वायवे नमः । वामासे ॥

३ सं सोमाय नमः । वामपार्श्वे ॥

३ हं ईशानाय नमः । वामजानुनि ॥

३ हं सः ब्रह्मणे नमः । मूर्ध्नि ॥

३ अं अनन्ताय नमः । मूलाधारे ॥

त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य
ततः ३ आयचतुरस्रेखायै नमः—इति दक्षांसपृष्ठादिवक्ष्यमाणेषु स्थानेषु अङ्गलि
व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं अणिमसिद्धयै नमः । दक्षांसपृष्ठे ॥

३ लघिमसिद्धयै नमः । दक्ष^१पाप्यङ्गुल्यग्रेषु ॥

३ महिमसिद्धयै नमः । दक्षोरुसन्धौ ॥

३ ईशित्वसिद्धयै नमः । दक्षपादाङ्गुल्यग्रेषु ॥

- ३ वरित्वसिद्धये नमः । वामपादाङ्गुल्यग्रेषु ॥
 ३ प्राकाम्यसिद्धये नमः । वामोरुसन्धौ ॥
 ३ भुक्तिसिद्धये नमः । वामपाण्यङ्गुल्यग्रेषु ॥
 ३ इच्छासिद्धये नमः । वामांसपृष्ठे ॥
 ३ प्राप्तिरसिद्धये नमः । शिखामूले ॥
 ३ सर्वकामसिद्धये नमः । शिरःपृष्ठे ॥

ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्रमध्यरेखायै नमः—इति वक्ष्यमाणाङ्गेषु व्यापकं न्यस्य,

- ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्म्यै नमः । पादाङ्गुष्ठद्वये ॥
 ३ माहेश्वर्यै नमः । दक्षपार्श्वे ॥
 ३ कौमार्यै नमः । मूर्ध्नि ॥
 ३ वैष्णव्यै नमः । वामपार्श्वे ॥
 ३ वाराह्यै नमः । वामजानुनि ॥
 ३ इन्द्राण्यै नमः । दक्षजानुनि ॥
 ३ चामुण्डायै नमः । दक्षसे ॥
 ३ महालक्ष्म्यै नमः । वामसि ॥

ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्रान्त्यरेखायै नमः—इति वक्ष्यमाणाङ्गेषु व्यापकं न्यस्य,

- ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसङ्क्षोभिण्यै नमः । पादाङ्गुष्ठद्वये ॥
 ३ सर्वविद्राविण्यै नमः । दक्षपार्श्वे ॥
 ३ सर्वाकार्पण्यै नमः । मूर्ध्नि ॥
 ३ सर्ववराङ्कुर्यै नमः । वामपार्श्वे ॥
 ३ सर्वोन्मादिभ्यै नमः । वामजानुनि ॥
 ३ सर्वमहाङ्कुरायै नमः । दक्षजानुनि ॥
 ३ सर्वखेचर्यै नमः । दक्षसे ॥
 ३ सर्वबीजायै नमः । वामसि ॥
 ३ सर्वपोन्यै नमः । दक्षान्ते ॥

नित्योत्सवः

ॐ ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलकौलनिर्गर्भरहस्यातिरहस्यपर
पररहस्ययोगिनीचक्रदेवताभ्यो नमः—इति सर्वाङ्गे व्यापकं न्यस्य,

- ॐ ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः । दक्षोरौ ॥
 ३ क्षं क्षेत्रपालकाय नमः । दक्षांसे ॥
 ३ यां योगिनीभ्यो नमः । वामांसे ॥
 ३ वं बटुकाय नमः । वामोरौ ॥
 ३ लं इन्द्राय नमः । पादाङ्गुष्ठद्वयाग्रे ॥
 ३ रं अग्नये नमः । दक्षजानुनि ॥
 ३ टं यमाय नमः । दक्षपार्श्वे ॥
 ३ क्षं निर्ऋतये नमः । दक्षांसे ॥
 ३ वं वरुणाय नमः । मूर्ध्नि ॥
 ३ यं वायवे नमः । वामांसे ॥
 ३ सं सोमाय नमः । वामपार्श्वे ॥
 ३ हं ईशानाय नमः । वामजानुनि ॥
 ३ हं सः ब्रह्मणे नमः । मूर्ध्नि ॥
 ३ अं अनन्ताय नमः । मूलाधारे ॥

त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः

ॐ ह्रीं श्रीं अं आं सौं त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,
 ३ आद्यचतुरस्ररेखाय नमः—इति दक्षांसिष्टादिवक्ष्यमाणेषु स्थानेषु अञ्जलिना
 न्यस्य,

- ॐ ह्रीं श्रीं अग्निमसिद्धये नमः । दक्षांसिष्टे ॥
 ३ लघिमसिद्धये नमः । दक्षपाप्यकुल्यमेषु ॥
 ३ महिमसिद्धये नमः । दक्षोरुस्थी ॥
 ३ ईशिसिद्धये नमः । दक्षपादाङ्गुल्यमेषु ॥

सर्वसङ्क्षोभणचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं सौः सर्वसङ्क्षोभणचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुमुमायै नमः । दक्षराह्णे ॥ (शङ्खो नाम ललाटास्थि)

३ अनङ्गमेखलायै नमः । दक्षजत्रुणि ॥ (जत्रु नाम बाहुमूलस्थिः)

३ अनङ्गमदनायै नमः । दक्षोरी ॥

३ अनङ्गमदनातुरायै नमः । दक्षगुल्फे ॥

३ अनङ्गरेखायै नमः । वामगुल्फे ॥

३ अनङ्गवेगिन्यै नमः । वामोरी ॥

३ अनङ्गाङ्कुशायै नमः । वामजत्रुणि ॥

३ अनङ्गमालिन्यै नमः । वामशङ्खे ॥

३ ह्रीं ह्रीं सौः सर्वसङ्क्षोभणचक्रेर्ध्वयै नमः । हृदये ॥

एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणचक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्बत् ॥

सर्वसौभाग्यदायकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसङ्क्षोभिण्यै नमः । ललाटमध्ये ॥

३ सर्वविद्राविण्यै नमः । ललाटदक्षभागे ॥

३ सर्वोकार्णव्यै नमः । दक्षगण्डे ॥

३ सर्वाह्लादिन्यै नमः । दक्षांसे ॥

३ सर्वसम्मोहिन्यै नमः । दक्षपार्श्वे ॥

३ सर्वस्रग्भिण्यै नमः । दक्षोरी ॥

३ सर्वत्रृग्भिण्यै नमः । दक्षजहायाम् ॥

३ सर्ववशाङ्कर्यै नमः । वामजहायाम् ॥

३ सर्वघञ्जिन्यै नमः । वामोरी ॥

३ सर्वोन्मादिन्यै नमः । वामपार्श्वे ॥

३ सर्वार्थसाधिन्यै नमः । वामांसे ॥

३ सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः । वामगण्डे ॥

३ सर्वत्रिखण्डायै नमः । पादाङ्गुष्ठद्वये ॥

३ अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः । हृदये ॥

एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्त्यः
सवाहनाः सपरिवारः सर्वाः न्यस्ताः सन्विति हृदि चक्रसमर्पणं न्यस्य ॥

सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं कामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः । दक्षकर्णपृष्ठे ॥

३ बुद्धशाकर्षिण्यै नमः । दक्षासे ॥

३ अहङ्काराकर्षिण्यै नमः । दक्षकूर्परि ॥

३ शब्दाकर्षिण्यै नमः । दक्षकरपृष्ठे, हस्ततलपृष्ठयोः ॥

३ स्पर्शाकर्षिण्यै नमः । दक्षोरौ, दक्षस्किजि ॥

३ रूपाकर्षिण्यै नमः । दक्षजानुनि ॥

३ रसाकर्षिण्यै नमः । दक्षगुल्फे ॥

३ गन्धाकर्षिण्यै नमः । दक्षपादतले, दक्षप्रपदे ॥

३ चित्ताकर्षिण्यै नमः । वामपादतले, वामप्रपदे ॥

३ धैर्याकर्षिण्यै नमः । वामगुल्फे ॥

३ स्मृत्याकर्षिण्यै नमः । वामजानुनि ॥

३ नामाकर्षिण्यै नमः । वामोरौ, वामस्किजि ॥

३ बीजाकर्षिण्यै नमः । वामकरपृष्ठे, वामकरतलपृष्ठयोः ॥

३ आत्माकर्षिण्यै नमः । वामकूर्परि ॥

३ अमृताकर्षिण्यै नमः । वामांसे ॥

३ शरीराकर्षिण्यै नमः । वामकर्णपृष्ठे ॥

३ ऐं ह्रीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै नमः । हृदये ॥

एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्बत् ॥

- ३ सर्वैर्धर्यप्रदायिन्यै नमः । दक्षस्तने ॥
 ३ सर्वज्ञानमय्यै नमः । दक्षमुष्के ॥
 ३ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः । ^१सीविन्याम्, सीविन्या दक्षभागे ॥
 (सीविनी—अण्डद्वयमध्यवर्तिनी सिरा) ॥
 ३ सर्वाधारस्वरूपायै नमः । वाममुष्के (वामवृत्तणे), सीविन्या
 वामभागे ॥
 ३ सर्वपापहरायै नमः । वामस्तने ॥
 ३ सर्वानन्दमय्यै नमः । वामसृक्त्रिणि ॥
 ३ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः । वामनासापुटे ॥
 ३ सर्वैप्सितफलप्रदायै नमः । नासाग्रे ॥
 ३ ह्रीं ह्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रेर्धर्यं त्रिपुरमालिन्यै नमः । हृदि ॥

एताः निर्गर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्बत् ॥

सर्वरोगहरचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं अं . . . अः (१६) ॐ यशिनीवाग्देवतायै नमः ।
 दक्षचिबुके ॥

- ३ कं . . . ङं (५) कल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः । दक्षकण्ठे ॥
 ३ चं . . . जं (५) न्द्रीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः । हृदयदक्षभागे ॥
 ३ टं . . . णं (५) ष्दं विमलावाग्देवतायै नमः । नाभिदक्षभागे ॥
 ३ तं . . . नं (५) ज्त्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः । नाभिवामभागे ॥
 ३ पं . . . मं (५) ह्स्त्र्यं जयिनीवाग्देवतायै नमः । हृदय
 वामभागे ॥
 ३ यं . . . वं (४) इस्त्र्यं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः । वामकण्ठे ॥

^१ एतदादिषु स्थानेषु तत्र तत्र कोशेषु भ्यत्याघो दृश्यते.

नित्योत्सवः

- ३ सर्वमन्त्रमय्यै नमः । ललाटवामभागे
 ३ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः । शिरःपृष्ठे ॥
 ३ हँ ह्नी ह्त्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्रे
 हृदये ॥

एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः इत्यादि

सर्वार्थसाधकचक्रन्यासः

- ऐं ह्रीं श्रीं ह्रँ ह्र्नीं ह्र्त्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः—
 ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदायै नमः । दक्षनेत्रे, दक्षनासापुटे
 ३ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः । नासामूले, दक्षसृक्किणि
 ३ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः । वामनेत्रे, दक्षस्तने ॥
 ३ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः । वामबाहुमूले, दक्षवृषणे
 ३ सर्वकामप्रदायै नमः । वामोरुमूले, सीबिन्या दक्षम
 ३ सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः । वामजानुनि, सीबिन्या
 ३ सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः । दक्षजानुनि, वामस्तने ॥
 ३ सर्वविघ्नविनाशिन्यै नमः । गुदे, वामवृषणे ॥
 ३ सर्वान्घ्रमुन्दर्यै नमः । दक्षोरुमूले, वामसृक्किणि ॥
 ३ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः । दक्षबाहुमूले, वामनासापुटे
 ३ ह्रँ ह्र्नीं ह्र्त्सौः सर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रियै
 हृदये ॥

एताः कुट्योर्दीर्घयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्रा इत्यादि पूर्ववत् ॥

सर्वरक्षाकरचक्रन्यासः

- ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं लं मरं रक्षारचक्राय नमः— इति व्यापकं
 ऐं ह्रीं श्रीं सर्वदायै नमः ।

- ३ सर्वध्वर्यप्रदायिन्यै नमः । दक्षस्तने ॥
 ३ सर्वज्ञानमय्यै नमः । दक्षमुष्के ॥
 ३ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः । ^१सीविन्याम्, सीविन्या दक्षभागे ॥
 (सीविनी—अण्डद्वयमध्यवर्तिनी सिरा) ॥
 ३ सर्वाधारस्वरूपायै नमः । वाममुष्के (वामवृण्णे), सीविन्या
 वामभागे ॥
 ३ सर्वपापहरायै नमः । वामस्तने ॥
 ३ सर्वानन्दमय्यै नमः । वामसृफिणि ॥
 ३ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः । वामनासापुटे ॥
 ३ सर्वेप्सितफलप्रदायै नमः । नासाग्रे ॥
 ३ ह्रीं ह्रीं ङ्छे सर्वरक्षाकरचक्रेध्वर्ये त्रिपुरमालिन्यै नमः । हृदि ॥

एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्बत् ॥

सर्वरोगहरचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं अं . . . अः (१६) ॐ वशिनीवाग्देवतायै नमः ।
 दक्षचिद्युके ॥

- ३ कं . . . कं (५) क्लीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः । दक्षकण्ठे ॥
 ३ चं . . . जं (५) ङ्ळीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः । हृदयदक्षभागे ॥
 ३ टं . . . णं (५) ॠं मिजावाग्देवतायै नमः । नाभिदक्षभागे ॥
 ३ तं . . . नं (५) ङ्रीं अरुणामाग्देवतायै नमः । नाभिवामभागे ॥
 ३ पं . . . मं (५) ह्रस्वूं जयिनीवाग्देवतायै नमः । हृदय
 वामभागे ॥
 ३ यं . . . वं (४) ॠं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः । वामकण्ठे ॥

^१ एतद्वादिषु स्थानेषु उत्र उत्र ऋणेषु भ्यःचक्षे दक्षते.

नित्योत्सवः

- ३ सर्वमन्त्रमय्यै नमः । ललाटवामभागे ॥
 ३ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः । शिरःपृष्ठे ॥
 ३ ह्रीं ह्र्स्वीं ह्र्स्वीः सर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरवासिन्यै
 हृदये ॥

एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः इत्यादि समर्पणं न्यसेत् ॥

सर्वार्थसाधकचक्रन्यासः

- ऐं ह्रीं श्रीं ह्र्स्वीं ह्र्स्वीः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,
 ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदायै नमः । दक्षनेत्रे, दक्षनासापुटे ॥
 ३ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः । नासामूले, दक्षसृक्किणि ॥
 ३ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः । वामनेत्रे, दक्षस्तने ॥
 ३ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः । वामबाहुमूले, दक्षवृषणे ॥
 ३ सर्वकामप्रदायै नमः । वामोरुमूले, सीविन्या दक्षभागे ॥
 ३ सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः । वामजानुनि, सीविन्या वामभागे ॥
 ३ सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः । दक्षजानुनि, वामस्तने ॥
 ३ सर्वविघ्नविनाशिन्यै नमः । गुदे, वामवृषणे ॥
 ३ सर्वान्जमुन्दर्यै नमः । दक्षोरुमूले, वामसृक्किणि ॥
 ३ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः । दक्षबाहुमूले, वामनासापुटे ॥
 ३ ह्र्स्वीं ह्र्स्वीं ह्र्स्वीः सर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रियै नमः ।
 हृदये ॥

एताः पुण्योत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्रा इत्यादि पूर्वम् ॥

सर्वरक्षाकरचक्रन्यासः

- ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः सर्वरक्षाकरचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,
 ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरक्षायै नमः । दक्षनासापुटे ॥
 ३ सर्वरक्षण्यै नमः । दक्षसृक्किणि (नित्योत्सवः) ॥

- ३ सर्वेश्वर्यप्रदायिन्यै नमः । दक्षस्तने ॥
 ३ सर्वज्ञानमय्यै नमः । दक्षमुख्ये ॥
 ३ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः । ^१सीविन्याम्, सीविन्या दक्षभागे ॥
 (सीविनी—अण्डद्वयमव्यवर्तिनी सिरा) ॥
 ३ सर्वाधारस्वरूपायै नमः । वाममुख्ये (वामवृत्तणे), सीविन्या
 वामभागे ॥
 ३ सर्वपापहरायै नमः । वामस्तने ॥
 ३ सर्वानन्दमय्यै नमः । वामसृक्किणि ॥
 ३ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः । वामनासापुटे ॥
 ३ सर्वेषितफलप्रदायै नमः । नासाग्रे ॥
 ३ ह्रीं ह्रीं व्हें सर्वरक्षाकरचक्रेभ्यो त्रिपुरमालिन्यै नमः । हृदि ॥

एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्बन्त् ॥

सर्वरोगहरचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सीः सर्वरोगहरचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं अं . . . अः (१६) ईं वशिनीवाग्देवतायै नमः ।
 दक्षचिबुके ॥

- ३ कं . . . कं (५) कल्ही कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः । दक्षकण्ठे ॥
 ३ चं . . . जं (५) च्छ्ठी मोदिनीवाग्देवतायै नमः । हृदयदक्षभागे ॥
 ३ टं . . . णं (५) ट्ठ्ठी विमलावाग्देवतायै नमः । नाभिदक्षभागे ॥
 ३ तं . . . नं (५) त्ठ्ठी अश्वत्थामाग्देवतायै नमः । नाभिवामभागे ॥
 ३ पं . . . मं (५) प्ठ्ठी जयिनीवाग्देवतायै नमः । हृदय
 वामभागे ॥
 ३ यं . . . वं (४) य्ठ्ठी कर्माश्वीवाग्देवतायै नमः । वामकण्ठे ॥

^१ एतदादिषु स्थानेषु तत्र तत्र कोशेषु व्यत्ययो दृश्यते.

३ शं . . . क्षं (३) क्ष्मी कौटिलीवाग्देवतायै नमः । वामचिदुक्ते ॥

३ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्धायै नमः । हृदि ॥

एताः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्रा इत्यादि पूर्ववत् ॥

आयुधन्यासः

अथ हृदि त्रिकोणं विभाज्य तत्र प्रागादिदिक्षु क्रमेण आयुधानां चतुष्टयं न्यसेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं ह्रीं ङ्ं सः सर्वजम्भनेभ्यो बाणेभ्यो नमः ।
त्रिकोणपृष्ठे ॥

३ धं सर्वसम्मोहनाय धनुषे नमः । त्रिकोणदक्षे, वामे ॥

३ ह्रीं सर्ववशीकरणाय पाशाय नमः । त्रिकोणाग्रे, ऊर्ध्वभागे ॥

३ क्रौं सर्वस्तम्भनाय अङ्कुशाय नमः । त्रिकोणवामे, दक्षभागे ॥

सर्वसिद्धिप्रदचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्र्स्त्रैं ह्र्स्त्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं मूलप्रथमकूटं कामरूपपीठस्थायै महाकामेश्वर्यै नमः
त्रिकोणाग्रकोणे ॥

३ मूलद्वितीयकूटं पूर्णगिरिपीठस्थायै महावज्रेश्वर्यै नमः ।
तदग्रकोणे ॥

३ मूलतृतीयकूटं जालन्धरपीठस्थायै महाभगनाश्रित्यै नमः ।
तदग्रकोणे ॥

३ मूळं ओम्नाणपीठस्थायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । तन्मध्ये ॥

अथ तदन्तस्मपर्याप्रवरणौत्तप्रकारेण षोडशस्तरान् विभाज्य षोडशानित्या न्यसेत् ।
यथा—कानेश्वरीनिन्नामन्तमुद्यार्य कानेश्वरीनिन्नायै नमः । एतदकारेण अवशिष्टाधनुर्दत्त
नित्या नित्यस्य नम्ये मूळमुद्यार्य षोडशी न्यसेत् ॥

नित्योत्सवः

काम्यकर्मप्रसक्तानां तापनाशं भवेत् फलम् ।
 • निव्यामं भजता देवमण्डिताभीष्टसिद्धयः ॥ ३ ॥
 देवैस्तुपुत्रशरणं देव्या अपि । काम्यकर्मविधिश्च दृष्ट्वाभधेत्
 तेन तदा श्यामान्कमोक्तं पुरश्चरणादिकं काम्यहोमद्रव्यं च अ-
 कर्तव्ये तु सामान्यक्रमोक्तं मन्तारित्वादिकं च ॥

जपविधिः

श्रीविद्याजपपूर्वाङ्गमन्त्राः^१ । जपोपयुक्ता मुद्रास्त उक्त-
 श्रीदेव्यै उपचारमन्त्रेण पुण्याञ्जलिं दत्त्वा पूर्ववत् प्राणानायम्य
 यथा—

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपञ्चदशाक्षरीमहामन्त्रस्य ३ अ-
 क्षरपदे नमः—शिरसि । ३ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः—मुखे । ३
 त्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः—हृदि । ३ ऐं बीजाय नमः—
 ३ सौः शक्तये नमः—पादयोः । ३ ह्रीं कीलकाय नमः—नाभौ ।
 बीजशक्तिकीलकानि नाभिगुह्यपादेषु प्रायशो न्यस्तव्यानीति, मू-
 लखण्डत्रयेणापि न्यस्तव्यानीति च केपाचिदभिमतम्) । ३ श्रीललितामहा-
 सुन्दरीप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः—करसम्पुटे ॥

ऐं ह्रीं श्रीं मूलविद्यया सर्वाङ्गे त्रिः व्यापकम् ॥

३ क ए ई ल ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥

३ स क ल ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट् ॥

३ क ए ई ल ह्रीं अनामिकाभ्यां हुं ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥

३ स क ल ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥

एवं हृदयादिन्यासः, यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥

- ३ स क ल ही शिखायै वषट् ॥
 ३ क ए ई ल ही कवचाय हुम् ॥
 ३ ह स क ह ल ही नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
 ३ स क ल ही अस्त्राय फट् ॥
 भूर्भुवस्सुवरो इति दिग्बन्धः ॥

अथ ध्यानम् । तत्र पूर्वोक्तमेव ॥

श्रीषोडशाक्षर्यास्तु—दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । करपङ्कन्यासयोः ताकूटपट्टकमिति विशेषः ॥

ततः शक्त्युत्थापनमुद्रया स्वदेहे शून्यतां विभाव्य बिन्दुत्रयसपरार्धरूपां कामकलां विचिन्त्य तस्याः स्वात्मतया परिणामं श्रीगुरुमुखावगतं विभाव्य श्रीगुरु-
 देवतामन्त्रात्मनामैक्यं भावयेत् । अथ मूर्ध्नि शिरोमुद्रां न्यस्य ३ ऐं ह्रीं हीं त्रिपुरे
 भगवति स्वाहा इति द्वादशाक्षरीं कुल्लुकावियां, ततो हृदयमुद्रया (हृदि हस्तं दत्वा)
 ३ ॐ इत्येकाक्षरं सेतुं, अथ कण्ठे न्यासमुद्रया ३ ह्रीं इत्येकाक्षरं महासेतुं, तदनु
 नामो पूर्वमुद्रयैव ३ ॐ अं० क्षं (५१) ऐं मूळं ऐं अं . . . क्षं (५१) ॐ इति
 सप्तत्यक्षरं निर्वाणमन्त्रं च त्रिचिः जपेत् ॥

^१ ऐं हीं श्रीं ह्रीं इति कामेश्वरीमन्त्रं स्वाधिष्ठाने त्रिः जपेत् ॥

^२ ३ ईं इति कामकलामन्त्रं मूलाधारे त्रिः जपेत् ॥

^३ ३ समस्ताप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरा-
 पररहस्ययोगिनीन्यो नमः । इति समष्टिमन्त्रम् ॥

३ ईं एं फं लं हीं हं सं कं हं लं हीं सं फं लं हीं ॥ इति पञ्चदशाक्षर-
 मुक्तीजनं भगवतं जपेत् ॥

३ विगुदक्षीं परां वियां काठिषां देवाभाषिणीम् ॥

उड्गमुण्डविचारारूपां व्याप्रचर्नविभूषिताम् ॥

रक्तमात्राम्बरधरां घोररूपां चतुर्भुजाम् ।

उड्गं शूळं धरातं च दधती तीक्ष्णानिनाम् ॥

सिद्धपथं चिन्तयेदसौ सर्वविद्यासुर्विदिनीम् ॥

^१ एते अंशः (भी, अ १) सोपकोशे दृश्यन्ते.

^२ इति—व ३, व १, ध.

^३ अथ निर्वाणमन्त्रे एकविंशतिक्षरमक्षरः । व सप्तदशः । संतरः ६.

नित्योत्सवः

काम्यकर्मप्रसक्तानां तावन्मात्रं भवेत् फलम् ।
 निष्कामं भजतां देवमखिलाभीष्टसिद्धयः ॥ इति ॥
 देवेत्युपलक्षणं देव्या अपि । काम्यकर्मविधिश्च दुस्साधयेत् कस्यचित्काम्य
 तेन तदा श्यामाक्रमोक्तं पुरध्वरणादिकं काम्यहोमद्रव्यं च अनुसन्धेयम् । अ
 कर्तव्ये तु सामान्यक्रमोक्तं मन्तारित्वादिकं च ॥

जपविधिः

श्रीविद्याजपपूर्वाङ्गमन्त्राः^१ । जपोपयुक्ता मुद्रास्तु उक्तपूर्वा एव । त
 उपचारमन्त्रेण पुष्याञ्जलिं दत्त्वा पूर्ववत् प्राणानायम्य ऋष्यादि न्यसेत्
 यथा—

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपञ्चदशाक्षरीमहामन्त्रस्य ३ आनन्दभैरवाय
 ऋषये नमः—शिरसि । ३ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः—मुखे । ३ श्रीमहा-
 त्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः—हृदि । ३ ऐं बीजाय नमः—गुह्ये ।
 ३ सौः शक्तये नमः—पादयोः । ३ ह्रीं कीलकाय नमः—नाभौ । (उक्त-
 बीजशक्तिकीलकानि नाभिगुह्यपादेषु प्रायशो न्यस्तव्यानीति, मूलविद्या-
 खण्डत्रयेणापि न्यस्तव्यानीति च केषांचिदभिमतम्) । ३ श्रीललितामहात्रिपुर-
 सुन्दरीप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः—करसम्पुटे ॥

ऐं ह्रीं श्रीं मूलविद्यया सर्वाङ्गे त्रिः व्यापकम् ॥

३ क ए ई ल ह्रीं अङ्गुष्ठान्यां नमः ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥

३ स क ल ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट् ॥

३ क ए ई ल ह्रीं अनामिकाभ्यां हुं ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वीषट् ॥

३ स क ल ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥

एवं हृदयादिन्यासः, यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः ॥

३ ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥

- ३ स क ल ही शिखायै वषट् ॥
 ३ क ए ई ल ही कवचाय हुम् ॥
 ३ ह स क ह ल ही नेत्रत्रयाय वीषट् ॥
 ३ स क ल ही अस्त्राय फट् ॥
 भूर्भुवस्सुवरो इति दिग्बन्धः ॥

अथ ध्यानम् । तत्र पूर्वोक्तमेव ॥

श्रीपोद्धारशर्यास्तु—दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । करपङ्क्त्यासयोः तत्कूटपट्कमिति विशेषः ॥

ततः शक्त्युत्थापनमुद्रया स्वदेहे शून्यतां विभाव्य बिन्दुत्रयसपरार्धरूपां कामकलां विचिन्त्य तस्याः स्वात्मतया परिणामं श्रीगुरुमुखावगतं विभाव्य श्रीगुरु-
 देवतामन्त्रात्मनामैक्यं भावयेत् । अथ मूर्ध्नि शिरोमुद्रां न्यस्य ३ ऐं ह्रीं हीं त्रिपुरे
 भगवति स्वाहा इति द्वादशाक्षरीं कुलुकाविद्यां, ततो हृदयमुद्रया (हृदि हस्तं दत्वा)
 ३ ॐ इत्येकाक्षरं सेतुं, अथ कण्ठे न्यासमुद्रया ३ ह्रीं इत्येकाक्षरं महासेतुं, तदनु
 नामौ पूर्वमुद्रयैव ३ ॐ अं० क्षं (५१) ऐं मूळं ऐं अं . . . क्षं (५१) ॐ इति
 सप्तत्यक्षरं निर्वाणमन्त्रं च त्रिस्त्रिः जपेत् ॥

१ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं इति कामेश्वरीमन्त्रं स्वाधिष्ठाने त्रिः जपेत् ॥

२ ३ ईं इति कामकलामन्त्रं मूलाधारे त्रिः जपेत् ॥

३ ३ समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरा-
 पररहस्ययोगिनीन्यो नमः । इति समष्टिमन्त्रम् ॥

३ ईं एं क ल हीं ह स क ह ल हीं स क ल हीं ॥ इति पञ्चदशाक्षर-
 मुक्तीलनं सप्तवारं जपेत् ॥

३ विमुदक्षी परां विद्यां काटिष्यं देशभाषिणीम् ॥

गङ्गामुण्डविद्यायाः व्याघ्रचर्मविभूषिताम् ॥

रत्नमाल्याम्बरपरां पोरस्तां चतुर्भुजां ।

खड्गं शूलं धराणं च दधती तीक्ष्णामिन्द्रम् ॥

सिद्धपथं चिन्तयेदेषो सर्वविद्यामुनीमिनीम् ॥

१ एते अंशाः (धी, अ १) शेषोत्तरव द्दन्ते.

२ ३—४ १, ४ १, ५.

३ अथ निर्वाणमन्त्रे एकविंशतिर्दशमक्षराः । ४ अक्षराः । ५ अक्षराः.

नित्योत्सवः

शति सजीविनीं प्यात्वा पयधोपचर्य, ३ श्री ह्रीं ह्रीं ह्रीं क उ ह्रीं सौः उ स
ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्री इति सप्तदशाक्षरं सजीविनीमन्त्रं सप्तवारं जपेत् ॥
१ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं सः क ए ई उ ह्रीं ह स क ह उ ह्रीं स क उ ह्रीं

हं सः ह्रीं श्रीं इति त्रयोविंशत्यक्षरं प्राणमन्त्रं सप्तवारं जपेत् ॥
२ ॐ श्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं क ए ई उ ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं ऐं ह स क

ह उ ह्रीं ॐ ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह क उ ए ह्रीं ह क ह उ ह्रीं
ह ए क उ ह्रीं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क ह उ ए ह्रीं क ह ए
उ ह्रीं क ह ह उ ह्रीं हं सः ॐ ह्रीं श्रीं हं सः सोईं स क
उ ह्रीं इति त्रिसप्तत्यक्षरं, शीविनीमन्त्रं च प्रत्येकं सात्वारं
जपेत् ॥

इमे मन्त्राः पञ्चदशविंशतीनां साम्प्रदायाः ॥

शंभुकाथनी भक्त्यासायाः पञ्च मन्त्राः । पञ्च—
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह म थ म उ व र मूं म ह थ म

उ व र यो उ र उ व थ म उ व र मूं ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं
श्रीं ऐं ह्रीं मङ्गलनिपाक । समाप्तं जपेत् ॥

३ (पञ्चमः) क ए ई उ ह्रीं ह म क ह उ ह्रीं म क उ ह्रीं—
सात्वारं जपेत् ॥ २ ॥

४ (षष्ठः) श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई उ ह्रीं
म क ह उ ह्रीं म क उ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं—
सात्वारं जपेत् ॥ ३ ॥

५ (सप्तमः) श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई उ ह्रीं
म क ह उ ह्रीं म क उ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं—
सात्वारं जपेत् ॥ ४ ॥

६ (अष्टमः) श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई उ ह्रीं
म क ह उ ह्रीं म क उ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं—
सात्वारं जपेत् ॥ ५ ॥

३ ॐ ह्रीं स्त्रीं ह्रूं क्रीं श्रीं उग्रतारे सौः क्रीं ह्रीं श्रीं स्वाहा—
त्रिवारं जपेत् ॥ ५ ॥

एते पञ्च मन्त्राः पद्मरत्नपदेन उच्यन्ते ॥

ततः सूक्तनिवारणाय प्रणवसम्पुटितां मूलविद्यां (पद्मदशीं) दशवारमावर्त्य
अनन्तरं विघ्नहरान् षण्मन्त्रान् त्रिचिर्जपेत् ॥ यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं इ रि मि लि कि रि कि लि प रि मि रोम् ॥

३ ॐ ह्रीं नमो भगवति महात्रिपुरभैरवि मम त्रैपुररक्षां कुरु कुरु ॥

३ संहर संहर विघ्नरक्षोविभीषकान् काल्य हुं फट् स्वाहा ॥

३ व्द्रं रक्ताम्यो योगिनीभ्यो नमः ॥

३ सां सारसाय बह्मशानाय नमः ॥

३ दु मु ल पु मु ल पु ही चामुण्डायै नमः ॥

एते कुल्लुकाद्या विघ्नहरान्ता जपस्य पूर्वाङ्गमन्त्राः । त्रितारीपूर्वकत्वं तु सर्वेषां सिद्धमेव ॥

ततः पेशीउक्षां मुक्पर्णरत्नस्फटिकमणिपुत्रजीवरुद्राक्षायन्यतमनिर्मितां माळां
श्यामाक्रमे वक्ष्यमाणेन संस्कारविधिना संस्कृतामादाय, कचित्प्राप्ते वामपाणौ वा
निधाय, सामान्यार्थोदकेन शुद्धोदकेन वा मूलेनान्युक्ष्य,

ॐ मां माळे महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।

चतुर्वर्गस्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे निदिदा भव ॥

इति प्रार्थ्य, ह्रीं सिद्धये नमः इति मन्त्रेण पुनः पुनः आहृतं गन्धादिभिः पद्मभिः
गन्धपुष्पान्यामेव वा समूह्य, ऐं ह्रीं श्रीं ग

अकिं कुरु माळे त्वं करं गृहामि दक्षिणे ।

जपकाळे तु सतत प्रसीद मम सिद्धये ॥

इति दक्षिणहस्तेन माळा गृहीत्वा, मध्यमाङ्गुलीयुक्ताम्बुनी ता तर्जनीया वामहस्तेन
चासृशान् एकमणिमहणे अन्यमनुसाददान. क्त्वाद्दुःखेन भर्गान् परिश्रयन्
जृम्भाधुतायकुर्वन् अनिद्राणः, एतेन सम्भवे प्राच्य देवताऽऽचरन् भावयन्, माया

मपातयन् प्रमादपतितायामुक्तसंस्कारं कृत्वा खटखटाशब्दमकुर्वाणः अक्षिष्टमनुच्चारयन्
 असम्भाषमाणो मालामप्रदर्शयन् अन्यदप्युक्तमाचरन् श्रीगुरुमुखादवगतं पठार्थाद्यन्तममर्थं
 चतुर्विधैक्यशून्यपट्टकावस्थापञ्चकविपुवत्सप्तकमन्त्रचैतन्यादिरहस्यजातं चानुसन्दधानो
 यथाऽधिकारं मनसोपांशुना वा सहस्रं त्रिशतं शतं वा मूलविद्यामारम्भे प्रोक्तसङ्ख्याऽवधौ
 च प्रणयपुटितां सङ्कल्पित्वा उत्तराङ्गमन्त्रान् जपदशमांशमावर्तयेत् ॥

जपोत्तराङ्गमन्त्राः

ते तु त्रिपुराद्यष्टचक्रेश्वरीमन्त्रा अष्टौ—

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः, ३ ऐं ह्रीं सौः, ३ ह्रीं ह्रीं सौः, ३ ह्रीं ह्रीं
 ह्रसौः, ३ ह्रसौं ह्रस्त्री ह्रसौः, ३ ह्रीं ह्रीं व्हे, ३ ह्रीं श्रीं सौः, ३ ह्रसौं ह्रस्त्री
 ह्रसौः ॥

मूलमेकं—ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॥

तत्तत्तिथिनित्याविद्या—ताश्च शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादिचित्राऽन्ताः । कृष्णपक्षे तु
 चित्राऽऽदिकामेश्वर्यन्ताः । तिथिवृद्धावेकां नित्यां दिनद्वये, तिथिक्षये एकस्मिन् दिवसे
 नित्याद्वयं, इति क्रमेण जप्याः । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं अं ऐं स क ल ह्रीं नित्यङ्किने मद्रद्वये सौः ॥

३ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुणे
 भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशाङ्करि भगरूपे नित्यङ्किने
 भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रते सुरते
 भगङ्किने किन्नद्वये केन्द्रय द्रावय जमोघे भगविघ्ने क्षुभ
 क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं व्हे जै व्हे मे व्हे मीं
 व्हे हे व्हे हे ङ्किने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्री
 हरन्ते हीन् ॥

३ इं ॐ ह्रीं नित्यङ्किने मद्रद्वये स्वाहा ॥

३ इं ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ॥

- ३ उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः
 ३ ऊं ह्रीं त्रिने ऐ क्रौं नित्यमदद्रवे ह्रीं ॥
 ३ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ॥
 ३ ऋं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः खीं हुं क्षे ह्रीं फट् ॥
 ३ लृं ऐं श्रीं सौः ॥
 ३ लृं ह स क ल र डै ह स क ल र डीं ह स क ल र डीः ॥
 ३ एं ह्रीं फ्रें स्त्रूं क्रौं आं श्रीं ऐं ब्रूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें हीम् ॥
 ३ ऐं भूर्भ्रूज्जौ ॥
 ३ ओं स्वीं ॥
 ३ ओं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहार-
 कारिके जातवेदसि अलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
 हां ह्रीं ह्रूं र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् ॥
 ३ अं च्चौम् ॥

अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गीभूता बाला अन्नरूपा अश्वारूढा मन्त्रास्त्रयो वस्त्रमाणा इति च प्रयोदश ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं सौः सौः श्रीं ऐं ऐं श्रीं सौः । इति त्रियोऽङ्गबाला ॥

३ ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति अन्नरूपेश्वरि ममाभिहितमन्नं देहि स्वाहा । इति त्रिय उपाङ्गमन्नरूपा ॥

३ ॐ आ ह्रीं प्रो एहि परमेश्वरि स्वाहा । इति धीप्रत्यङ्गमश्वारूढा ॥

फालनित्या तु सूत्रकृताऽनुपात्ता ॥

अथ पुनः ऋष्यादिमानसतृजाऽन्तं मिथाय, सर्वाङ्गाः सर्वमङ्गुलिभ्यादिमुद्राः आयुधमुद्राश्च प्रदर्शय,

गुह्यातिगुह्यगोपनीं त्वं गृह्यानास्मभ्यं व्रजम् ।

सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वग्रसाक्षन्ममि स्थिरा ॥

इति धीदेव्या वामकरे सान्नाभ्यार्पसङ्कितशुभेण व्रतं निवेद—

वयस्सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋणयो नाथमानाः^१ ॥

अपव्यान्तमूर्ध्निहि शूर्ध्निचक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव वद्वान् ॥

पुण्डरीकाक्षाय नमः । पुत्रैरक्षणाय नमः । अमलेक्षणाय नमः । कमलेक्षणाय नमः । विधेरूपाय नमः । श्रीमहाविज्ये नमः । इति षोडशमन्त्रसमष्टिरूपिणी चक्षुष्मतीविद्या दूरदृष्टिसिद्धिप्रदा ॥ मूलाधारे ॥ ६ ॥

ॐ गन्धर्वराज विधावसो ममाभिलषिता कन्या प्रयच्छ स्वाहा ॥
इत्युत्तमकन्याविवाहदायिनी ॥ हृदये ॥ ७ ॥

ॐ नमो रुद्राय पथिपदे स्वस्ति मा संपारय ॥ इति मार्गसङ्कट-
हारिणी ॥ फाले ॥ ८ ॥

ॐ तारे तुतारे तुरे स्वाहा । इति जलापच्छमनी ॥ ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ९ ॥

अच्युताय नमः । अनन्ताय नमः । गोविन्दाय नमः ॥ इति
महाव्याधिशमनी नामत्रयीविद्या ॥ द्वादशान्ते ॥ १० ॥

एतद्रश्मिपद्मकं मूलाधारादिपरिकरतया ज्ञेयम् ॥

ॐ श्री ह्रीं ह्रीं ह्रीं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वरमानय
स्वाहा ॥ इति महागणपतिविद्या प्रत्यूहशमनी ॥ मूलाधारे ॥ ११ ॥

ॐ नमः शिवायै । ॐ नमः शिवाय ॥ इति द्वादशार्णा
शिवतन्त्रविमर्शिनी ॥ हृदये ॥ १२ ॥

ॐ जुं सः मां पाळय पाळय ॥ इति दशार्णा मृत्यारेपि मृत्युरेया
विद्या ॥ फाले ॥ १३ ॥

ॐ नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्वनिराकरणं धारयिता भूयासं कर्णयोः
श्रुतं मा च्योद्वं ममामुष्य ॐ ॥ इति श्रुतिधारिणी विद्या ॥ ब्रह्मरन्ध्रे ॥ १४ ॥

अं . . . क्षं (५१) ॥ इति सविन्दुरकारादिक्षकारान्तवर्णात्मिका
मातृका सर्वज्ञताकरी द्वादशान्ते ॥ १५ ॥

पञ्चमा रश्मयो मूलादिरक्षात्मकतया द्रष्टव्याः ॥

ह स क ल ही ह स क ह ल ही स क ल ही ॥ इति छेपामुद्राविद्या
स्वस्वरूपविमर्शिनी ॥ मूलाधारे ॥ १६ ॥

^१ धमा इति ' न '

कीं हँ हसौः स्होः हँ कीं ॥ इति पट्कूटा सम्पत्करी विद्या ॥
हृदये ॥ १७ ॥

सं सृष्टिनित्ये स्वाहा हं स्थितिपूर्णे नमः रं महासंहारिणि कुरो
चण्डकाळि फट् रं ह्रस्व्के महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकाळि फट् रं
महासंहारिणि कुरो चण्डकाळि फट् हं स्थितिपूर्णे नमः सं सृष्टिनित्ये स्वाहा
ह्रस्व्के महाचण्डयोगेश्वरि ॥ इति विद्यापञ्चकल्पिणी काळसङ्कर्षिणी
परमायुःप्रदा ॥ फाळे ॥ १८ ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रस्व्के हसौः अहमहं अहमहं हसौः ह्रस्व्के श्रीं ह्रीं ऐं ॥
इति शुद्धज्ञानदा शाम्भवी विद्या ॥ ब्रह्मरन्ध्रे ॥ १९ ॥

सौः ॥ इयं पराविद्या । द्वादशान्ते ॥ २० ॥

एताः पञ्च रश्मयो मूलाद्यधिष्ठानतया कलनीयाः ॥

ऐं कीं सौः सौः कीं ऐं ऐं कीं सौः ॥ इति नवाक्षरी श्रीदेव्यङ्गभूता
बाला ॥ २१ ॥

श्रीं ह्रीं कीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णे ममाभिलषितं अन्नं देहि
स्वाहा ॥ इति श्रीदेव्या उपाङ्गभूता अन्नपूर्णा ॥ २२ ॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं एहि परमेश्वरि स्वाहा ॥ इयं श्रीदेवीप्रत्यङ्गभूता
अश्वारूढा ॥ २३ ॥

श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्तु आदिकप्रकरणे एवोक्त इह पठित्तन्यः ।
तद्यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रस्व्के ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र
यी हसौः स्होः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः ॥ २४ ॥

अथ मूलविद्या । सा च गुरुमुखादगवता कादिनाम्नी—क ए ई ल ह्रीं
ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॥ २५ ॥

याया अन्नपूर्णा अश्वारूढा श्रीपादुका चन्पेताभिधतसुभिः सुता
मूलविद्या सात्राक्षी मूलाधारे विद्योचनीया ॥

* परमार्थपदा—अ १, न, व २, व १.

* चतुरेष्टानां सु—अ, व २, व १.

ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डाळि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा ॥ इति
श्यामान्नभूता लघुश्यामा ॥ २६ ॥

ऐं ह्रीं सौः वदवद वाग्वादिनि स्वाहा ॥ इयं श्यामोपाङ्गभूता
वाग्वादिनी ॥ २७ ॥

ॐ ओष्टापिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः ॥

सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत् ॥ २८ ॥

इयं श्यामाप्रत्यङ्गभूता नकुलीविद्या ॥

श्रीविद्यागुरुपादुकेव प्रथमबीजत्रयस्थाने बालासहिता श्यामागुरुपादुका
भवति । यथा—

ऐं ह्रीं सौः ह्रस्वैर्ह स क्ष म ल ष र यूँ स ह क्ष म ल व
र यी ह्रसौ स्तौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुश्रीपादुकां पूजयामि
नमः ॥ २९ ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजन-
मनोहारि सर्वमुखरजिनि ह्रीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि
सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि अमुकं मे वशमानय स्वाहा
सौः ह्रीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॥ ३० ॥

इत्यष्टनवतिवर्णा राजश्यामला पूर्वोक्ताभिः अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गपादुकेत्येताभि-
धतसृभिः विद्याभिः सहिता द्व्यङ्के यष्ट्या ॥

लं वाराहि-लं उन्मत्तभैरविपादुकान्यां नमः ॥ इयं वार्ताल्यङ्गभूता
लघुवार्ताली ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा ॥ इयं स्वप्ने शुभाशुभवन्त्री
वार्ताल्या उपाङ्गभूता स्वप्नवाराही ॥ ३२ ॥

ऐं नमो भगवति महामाये पद्मजनमनश्चक्षुस्तिरस्कारणं कुरु कुरु हं
फट् स्वाहा । इयं वार्तालीप्रत्यङ्गभूता तिरस्करिणी ॥ ३३ ॥

ऐं ह्रीं ह्रस्वैर्ह स क्ष म ल ष र यूँ स ह क्ष म ल व र यी
ह्रसौ स्तौः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥ इयं वार्ताली-
गुरुपादुका ॥ ३४ ॥

श्रीं हँ ह्रसौः स्तौः हँ श्रीं ॥ इति पट्कूटा सम्पत्करी विद्या ॥
द्वये ॥ १७ ॥

सं सृष्टिनित्ये स्वाहा हं स्थितिपूर्णे नमः रं महासंहारिणि कृशे
चण्डकालि फट् रं ह्रस्वैर् महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकालि फट् रं
महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट् हं स्थितिपूर्णे नमः सं सृष्टिनित्ये स्वाहा
ह्रस्वैर् महाचण्डयोगेश्वरि ॥ इति विद्यापञ्चकरूपिणी कालसङ्कर्षिणी
परमायुःप्रदा ॥ फाले ॥ १८ ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रस्वैर् ह्रसौः अहमहं अहमहं ह्रसौः ह्रस्वैर् श्रीं ह्रीं ऐं ॥
इति शुद्धज्ञानदा शाम्भवी विद्या ॥ ब्रह्मरन्ध्रे ॥ १९ ॥

सौः ॥ इयं पराविद्या । द्वादशान्ते ॥ २० ॥

एताः पञ्च रश्मयो मूलाद्यधिष्ठानतया कलनीयाः ॥

ऐं श्रीं सौः सौः श्रीं ऐं ऐं श्रीं सौः ॥ इति नवाक्षरी श्रीदेव्यङ्गभूता
वाला ॥ २१ ॥

श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णे ममाभिलषितं अन्नं देहि
स्वाहा ॥ इति श्रीदेव्या त्रिपाङ्गभूता अन्नपूर्णा ॥ २२ ॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं एहि परमेश्वरि स्वाहा ॥ इयं श्रीदेवीप्रत्यङ्गभूता
अश्वरूढा ॥ २३ ॥

श्रीविद्यारूपपादुकामन्तस्तु आदिकप्रकरणे एवोक्त इह पठितव्यः ।
तद्यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रस्वैर् ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र
यी ह्रसौं स्तौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः ॥ २४ ॥

अथ मूलविद्या । सा च गुरुमुखादगवता कादिनाम्नी—क ए ई ल ह्रीं
ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॥ २५ ॥

घटा अन्नपूर्णा अश्वरूढा श्रीपादुका चेत्येताभिश्चतसृभिः युक्ता
मूलविद्या साम्राज्ञी मूलाधारे विद्योचनीया ॥

^१रश्मिमालामन्त्राणां ऋष्यादयः

अथ रश्मिमालायाः ऋष्यादयो लिख्यन्ते—

तत्र प्रथमं गायत्र्याः ऋष्यादयस्तु आगतपूर्वा एव ॥ १ ॥

अभयंकरमन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः । त्रिष्टुप् छन्दः । अभयंकरो देवता ।
तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

आरूढो वारणेन्द्रं दशशतनयनः श्यामलः कोमलाङ्गः

वर्मा वीरः प्रतापी प्रतिभटदहनप्रज्वलच्चक्रपाणिः ।

दोर्भिर्दिव्यायुधाद्यैर्मणिगणलुचितैर्देवमन्त्रीसनाथो

दत्त्वाऽभीष्टानि शश्वत् परिहृतदुरितः पातु विश्वं महेन्द्रः ॥ २ ॥

सौरमन्त्रस्य देवभाग ऋषिः । गायत्री छन्दः । सूर्यो देवता । तत्प्रसाद-
सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमव्यगम् ।

सर्वाधिभ्याधिशनं छायाश्लिष्टतनुं भजे ॥ ३ ॥

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । परमात्मा देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे
जपे विनियोगः । ध्यानम्—

ओंकारवाच्यमुच्चण्डचण्डांशुसदृशप्रभम् ।

वासुदेवाभिधं ब्रह्म विश्वगर्ममुपास्महे ॥ ४ ॥

तुरीयागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः । गायत्री छन्दः । सविता देवता ।
तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

देवी तुरीयगायत्री तुर्यातीतपदाश्रयान् ।

परोरजःप्रकाशात्मचितिरूपामहं भजे ॥ ५ ॥

^१ सर्वोऽयं सर्वं षण्डः एवमिन्द्र (अ) द्येय एवोपटञ्च । तत्र तत्र अपसाटमन्थनादादिदोष-
घटितोऽपि प्रमेयातिशयवत्त्वात् अत्र सर्वोऽसिद्ध इत्यादिदोषे.

ध्येयो बृहमया सपन्नकरया शिष्टोऽञ्जु पया
विधोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विभ्रेधरोऽभीष्टदः ॥ ११ ॥

शिवशक्त्यात्मकपद्माश्वरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः । पङ्क्तिः छन्दः । उमामहेश्वरो
देवता । तद्यीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

वामांसन्यस्तवामेतरकरकमलायास्तथा वामहस्त-
न्यस्तारक्तोत्पलायाः स्तनभरविडसद्गामहस्तः प्रियायाः ।
सर्पाकल्पाभिरामः श्रितपरशुमृगोष्ठः करैः काञ्चनामः
ध्येयः पद्मासनस्थः स्मरललितवपुः संपदे पार्वतीशः ॥ १२ ॥

अमृतमृत्युञ्जयमन्त्रस्य कहोळ ऋषिः । विराट् छन्दः । अमृतमृत्युञ्जय-
सदाशिवो देवता । तद्यीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

स्फुटितनळिनसंस्थं मौळियद्धेन्दुरेखा-
स्त्रवदमृतरसाद्रं चन्द्रवह्यर्कनेत्रम् ।
स्वकारकलितमुद्रापाशवेदाक्षमालं
स्फुटिकरजतमुक्तागौरमीशं नमामि ॥ १३ ॥

श्रुतभारिणीमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । ब्रह्मा देवता ।
तद्यसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

चतुराननमम्भोजनिपण्णं भारतीसखम् ।
अक्षमालावराभीतिकमण्डलुधरं भजे ॥ १४ ॥

मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । मातृकासरस्वती देवता ।
तद्यसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

पद्माशता मातृकया द्वारव्याखिलेन्दहया ।
समस्तविद्यारूपिण्या धन्योऽह मातृकाम्बया ॥ १५ ॥

श्रीहादिलोपामुद्रामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । पङ्क्तिः छन्दः । श्रीमहा-
त्रिपुरसुन्दरी देवता । ह ५ बीजं, ह ६ शक्तिः, स ४ बीजकम् । तद्यसादसिद्धयर्थे
जपे विनियोगः । वाच्या पङ्क्तम् । ध्यानम्—

श्रीदेवीभूपितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिपम् ।
हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम् ॥ १६ ॥

संपत्करीमन्त्रस्य ऋषिः । गायत्री छन्दः । संपत्सरस्वती
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अनेककोटिमातङ्गतुरङ्गरथपत्तिभिः ।
सेवितामरुणाकारां वन्दे सम्पत्सरस्वतीम् ॥ १७ ॥

चण्डयोगेश्वरीमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः । नाना छन्दांसि । चण्डयोगेश्वरी
देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

सृष्टिस्थितिभ्यां संहत्या नाह्यया भासया श्रिताम् ।
कूलकन्था (?) कपालाब्जां चण्डयोगेश्वरीं भजे ॥ १८ ॥

परशंभुनाथमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः । पङ्क्तिरुच्छन्दः । परशंभुनाथो देवता ।
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

पूर्णाहन्तास्वरूपाय तस्मै परमशंभवे ।
आनन्दताण्डवोद्दण्डपण्डिताय नमो नमः ॥ १९ ॥

परामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । परा सरस्वती देवता । तत्प्रसाद-
सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अकलङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती ।
मुद्रापुस्तलसद्बाहा पातु मां परमा कला ॥ २० ॥

वाजामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । गायत्री छन्दः । बाळा त्रिपुरसुन्दरी
देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अरुणकिरणजालं रजिताशावकाशा
विभूतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता ।
इतरकरवराब्जा पुलकहृत्हारसंस्था

निवसतु इति बाळा नित्यकल्याणशीला ॥ २१ ॥

अन्नपूर्णेधरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । अन्नपूर्णेधरी देवता ।
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

आदाय दक्षिणकरेण सुवर्णदवीं
दुग्धान्नपूर्णेमितरेण च रत्नपात्रम् ।
अन्नप्रदाननिरतां नवहोमवर्णां
अम्बां भजे कनकभूषणमात्यशोभाम् ॥ २२ ॥

अम्भारूढामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । अम्भारूढा देवता ।
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

बहुं पाशेनाकुशेन कृष्यमाणास्वसाध्यकम् ।
घ्नन्ती वेत्रेण फालस्त्रक्पाणिमन्थासनां भजे ॥

ध्यानान्तरम्—

अम्भारूढा कराम्बे नवकनकमयीं वेत्रयष्टिं दधाना
दक्षेऽन्ये धारयन्ती स्फुरति धनुर्लतापाशहस्ता मुसाध्या ।
देवी नित्यप्रसन्ना शशिशकललसत्केशपाशा त्रिणेत्रा
दयादायानवद्यां श्रियमखिलसुखप्राप्तिदद्यां श्रिये नः ॥ २३ ॥

श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । पङ्क्तिरछन्दः । श्रीविद्या-
गुरुपादुका देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

तेजोमयमहाविद्यां शोखराश्रितमस्तकाम् ।
रक्तां चतुर्भुजां वन्दे श्रीविद्यागुरुपादुकाम् ॥ २४ ॥
श्रीललिताया ॥ २५ ॥

लघुस्यामामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः । विराट् छन्दः । श्रीलघुस्यामाम्ना देवता ।
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

स्मरेत् प्रथमपुष्पिणीं रुधिरकिन्दुराणाम्बरां
गृहीतमधुपात्रिकां मदविर्गूणनेत्राञ्जलाम् ।

नित्योत्सवः

श्रीदेवीभूपितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिपम् ।
हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम् ॥ १६ ॥

संपत्करीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः । गायत्री छन्दः । संपत्सरस्वती देवता ।
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अनेककोटिमातङ्गपुरङ्गरथपत्तिभिः ।
सेवितामरुणाकारां वन्दे सम्पत्सरस्वतीम् ॥ १७ ॥

चण्डयोगेश्वरीमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः । नाना छन्दांसि । चण्डयोगेश्वरी
देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

सृष्टिस्थितिभ्यां संहत्या नाख्यया भासया श्रिताम् ।
कूलकन्था (?) कपालाब्जां चण्डयोगेश्वरीं भजे ॥ १८ ॥

परशंभुनाथमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः । पङ्क्तिश्छन्दः । परशंभुनाथो देवता ।
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

पूर्णाहन्तास्वरूपाय तस्मै परमशंभवे ।
आनन्दताण्डवोदण्डपण्डिताय नमो नमः ॥ १९ ॥

परामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । परा सरस्वती देवता । तत्प्रसाद-
सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अकलङ्कशङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती ।
मुद्रापुस्तलसद्भाहा पालु मां परमा कला ॥ २० ॥

वालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । गायत्री छन्दः । बाळा त्रिपुरसुन्दरी
। तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अरुणकिरणजाडै रञ्जिताशावकाशा
बिभृतजपक्टीका पुस्तकामीतिहस्ता ।

इतरकरवराब्धा फुट्टकल्हारसंस्था
नियसतु हृदि बाळा नित्यकल्याणशीला ॥ २१ ॥

स्वप्नवारामहीमन्त्रस्य अग्निः ऋषिः । गायत्री छन्दः । स्वप्नवाराही देवता ।
तद्यसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

स्वप्ने शुभाशुभं भावि शासन्ती भक्तकार्ययोः ।

दुःस्वप्नहारिणी वन्दे वाराही स्वप्ननायिकाम् ॥ ३२ ॥

तिरस्करिणीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । तिरस्करिणी देवता ।
तद्यसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

मुक्तकैशी विवसनां सर्वाभरणभूषिताम् ।

स्वयोनदर्शनान्मुह्यत्यशुवर्गां नमाम्यहम् ॥ ३३ ॥

वाराहीगुरुपादुकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । वाराहीगुरुपादुका
देवता । तद्यसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

देशिकाङ्घ्रिलसन्मौलिं खड्गिनीं च कपालिनीम् ।

भावयामि घनच्छायां पद्ममीगुरुपादुकाम् ॥ ३४ ॥

श्रीमहावाराहीमन्त्रस्य स्पष्टम् ॥ ३५ ॥

श्रीशूर्तिविद्यामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । पङ्क्तिछन्दः । श्रीशूर्तिविद्या
देवता । तद्यसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥ ३६ ॥

महापादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः । पङ्क्तिछन्दः । श्रीमहापादुकाम्ना
देवता । तद्यसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

सर्वविशामयी सर्वशक्तिपीठस्वरुपिनीम् ।

कराग्रे हृदये मूले देशिष्यङ्गिनिगमत्रयम् ॥

दपती दीप्तनूपाम्नां श्रीमहापादुस्य तुम् ॥ ३७ ॥

इति रत्निमालाया ऋष्यादयः ॥

इति अष्टमस्कन्धे पष्ठे समाप्तम्

नित्योत्सवा

पनस्तानभराउसा गच्छिन्नुच्छिता श्यामला

करस्युसिपत्तनीमउसत्तुताउच्छिन्नीम् ॥

माणिमयीणानुपटाउफती मराउसा मन्नुच्छिताश्याम ॥ इति
माहेन्द्रनीउसुतिफोमलात्री मातङ्गवत्स्या मनसा स्मरामि ॥ इति

वागीशरीमन्तस्य कथ्य ऋषिः । विराट् छन्दः । वागीशरी
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अमटकमलसंस्था डेटिनीपुस्तफोषत्-

करस्युगळसरोजा बुन्दमन्दारगौरा ।

शृतशाशधरखण्डोच्छासिफोटीरपीठा

भवतु भवभयानां भङ्गिनी भारती नः ॥ २७ ॥

नकुलीवागीशरीमन्तस्य कहोळ ऋषिः । गायत्री छन्दः । नकुलीवागीश
देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

नकुली वज्रदन्ताळी साध्यजिह्वाऽहिदंशिनी ।

भक्तवक्त्रवृज्जननी भावनीया सरस्वती ॥ २८ ॥

श्यामागुरुपादुकामन्तस्य मतङ्ग ऋषिः । पङ्क्तिश्छन्दः । श्यामागुरुपादुका
देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

वन्दे गुर्वङ्घ्रिमुकुटां श्यामलां शुक्रपाणिनीम् ।

समस्तसिद्धिजननीं श्यामलागुरुपादुकाम् ॥ २९ ॥

श्रीराजश्यामलामन्तस्य स्पष्टम् ॥ ३० ॥

। लघुवाराहीमन्तस्य. नारद ऋषिः । पङ्क्तिश्छन्दः । लघुवाराही देवता ।
तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

महार्णवे निपतितामुद्धरन्तीं वसुंधराम् ।

महादंष्ट्रां महाकायां नमाम्युन्नतभैरवीम् ॥ ३१ ॥

नित्यक्रमात् नैमित्तिके विशेषः

तत्र परिगणितेषु पर्वसु प्रातः नित्यक्रमं निर्वर्त्य रात्रौ अमुकपर्वप्रयुक्तं नैमित्तिकमर्चनं करिष्ये इति सङ्कल्प्य यथाविभवं समारम्भविशेषेण मपञ्चककरणक एव क्रमो निर्वर्तनीयः । न तु “मपञ्चकालभेऽपि नित्यक्रमप्रत्यवमृष्टिः” इति सूत्रेण नित्यक्रम इव प्रतिनिधिनाऽपि वा । चैत्राद्यासु पौर्णमासीषु तु वक्ष्यमाणेन विधिना तन्त्रान्तरोक्तेन दमनकादिसमर्पणमपि । सति सम्भवे आश्वयुज्यां तत्प्रतिपदादिपर्वान्तप्रयोगोऽप्यनुष्ठेयः, “पञ्चपर्वसु विशेषार्चा” इति सूत्रस्य नानाविद्याऽङ्गशाल्यर्चाबोधकत्वात्, विविधाः शेषाः कालद्रव्यक्रियाऽऽदिरूपाप्यङ्गानि यस्यां तादृश्यर्चेति विप्रहात् ॥

निवेदने पक्षभेदाः

तत्र द्रवद्रव्यनिवेदने त्रयः पक्षा भवन्ति । पृथक् पृथक् पात्रस्थं हिमोदकादिकं ऐं ह्रीं श्रीं अमुकदेवताया अमुकं कल्पयामि नम इति तत्तन्नामघटितेनोपचारमन्त्रेण प्रधानदेव्यादिभ्यो नवमचक्रेश्वर्यन्ताभ्यस्त्रिपञ्चाशदुत्तरशतसङ्ख्याकाम्यो देवताभ्यः प्रत्येकं निवेदयेत् । इह प्रधानदेव्या सह नित्याः षोडश, महाकामेश्वर्यादयश्चतस्रः, त्रिपुरादयः चक्रेश्वर्यो नव, कामेश्वरायुधदेव्यः चतस्र इति विवेकः । यदि वा प्रधानदेवतानि वेदनोत्तरं ३ अङ्गदेवीभ्यो नित्याभ्यो अमुकौघायीघत्रयाय अणिमाऽऽदिभ्यो मातृभ्यो मुद्रादेवीभ्यो अणिमाऽऽदिभ्यो वा कामेश्वर्यादिनित्याकलाम्यः अनङ्गकुसुमादिभ्यः सर्वसङ्क्षोभिण्यादिभ्यः सर्वसिद्धिप्रदाभ्यः सर्वज्ञादिभ्यो वशिण्यादिभ्यः आयुधदेवीभ्यो महाकामेश्वर्यादिभ्यः त्रिपुरादिचक्रेश्वरीभ्योऽमुकं कल्पयामीति तत्समर्थं निवेदयेत् । अथवा प्रधानदेवतायै पृथङ् निवेद्य ऐं ह्रीं श्रीं हृदयदेव्यादिभ्यो नवचक्रेश्वर्यन्ताभ्योऽमुकं कल्पयामीति सर्वसमर्थं निवेदयेदित्येकः ॥

अनेकपात्रासम्भवे अष्टादश चतुर्दश वा पात्राणि तत्तद्द्रव्यगम्यतानि उपहन्य पूर्वोक्तान्यतमेन प्रकारेण निवेदयेदिति द्वितीयः । अत्रौघत्रयसिद्धिमातृमुद्राणां पार्थक्यतदन्वयाभ्यां पात्राणामष्टादशत्वं चतुर्दशत्वं च ज्ञेयम् ॥

तत्रान्यसम्भवे प्रथमद्वितीययोः प्रकारयोः महति पात्रे सम्युक्तं हिमोदकादिकमुपपात्रेण आदायादाय निवेद्य निवेद्य पात्रान्तरे निवेदेत् । अन्ये तु प्रकारे महापात्रस्थं सर्वान्यो देवताभ्यो युगपन्निवेदयेदिति तृतीयः ॥

नैमित्तिकप्रकरणम्

पर्वसु नैमित्तिकार्चनविधिः

उक्तेन क्रमेण नित्यक्रमनिरतः साधकः प्रतिमासं पञ्चपर्वसु नैमित्तिकमर्च
माचरेत्—

नित्यार्चनरतैः सिद्धैः कार्यं नैमित्तिकार्चनम् ॥

इति तन्त्रराजवचनात् । तच्च नित्यार्चनाधिकसाधनविशेषकरणकम् । पर्वीणि
कृष्णाष्टमी कृष्णचतुर्दशी दर्शः पूर्णिमा सङ्क्रान्तिश्चेति कुलार्णवोक्तानि । तत्र क
कर्तव्यतामाक्ष निर्णयः । सङ्क्रान्तिव्यतिरिक्तपर्वार्चनं सूर्यास्तमयोत्तरं दशघटिकाऽ
रात्रिपूर्वभागे कार्यम् । सङ्क्रमणसपर्यां तु तत्तत्सङ्क्रान्तिपुण्यकालोपल
घटिकासु । तदुक्तम्—

प्रागूर्ध्वं च दशैव मेघतुलयोः सिंहे वृषे वृश्चिके

कुम्भे षोडशपूर्वतोऽथ मिथुने मीने धनुःकन्ययोः ।

ऊर्ध्वाः षोडश कीर्तिताः प्रथमतस्त्रिंशत्तु कर्काटके

चत्वारिंशदथो परास्तु मकरे पुण्यप्रदा नाडिकाः ॥ इति ॥

नाडिकाः घटिकाः । अष्टमीचतुर्दशीदर्शपूर्णिमानां स्वस्वदिने पूजाकाल
विवादः । दिनद्वये एकदेशव्याप्तौ यत्राधिका सा तिथिर्ग्राह्या । समव्याप्त
तिथिवृद्धिहासवशेन चतुर्दशीदर्शयोः एकास्मिन्नेव दिने पूजाकालव्याप्तौ नैमि
तन्त्रेणानुष्ठानम् । तदा सङ्क्रान्तियोगे तु तत्र तस्यापि दिवासङ्क्रमणे सति णि
प्रासङ्गिकी सिद्धिः । यत्र चतुर्णां नैमित्तिकार्चनानां एकास्मिन्नेव काले
सम्भाव्यते तत्र तेनाप्येकतन्त्रतैव । यथा दमनसमर्पणस्य मुख्यकाले चैत्र्या
मसम्भवे तत्कृष्णचतुर्दशीदर्शादिभ्येष्टकृष्णचतुर्दशीदर्शान्ते गौणकाले । यथा
रोपणस्य श्रावण्यामलाभे वा मिथुनसङ्क्रमणं वा च तुलासङ्क्रान्तिप्रोक्त
आधिनशुक्राष्टमीनवमीचतुर्दशीपूर्णासु च तत्कृष्णचतुर्दशीदर्शयोश्च तादृशि वि
प्रयं चतुष्टयं वा चरिष्य इति सङ्कल्पयेदिति दिक् ॥

चैत्रपूर्णिमाकृत्यम्

अस्यामेव पूर्णिमायां वसन्तोत्सवोऽपि विहितः । तत्र दमनार्पणवसन्तोत्सवौ तन्त्रेण करिष्ये इति सङ्कल्प्य तत्कालसम्भवानि सकलहाराणि कर्पूरचन्दनोक्षितानि कुसुमानि पूर्ववत् अधिवास्य तैर्दमनकैश्च युगपदर्चयेत् ॥ इति चैत्रपूर्णिमाकृत्यम् ॥

वैशाखीकृत्यम्

अथ वैशाख्यां पूर्णिमायां नैवेद्यावसरे प्राग्वदधिवासितं हेमन्तकाले सङ्गृहीतं तुषारोदकं तदलाभे कर्पूरमृगनाभिसुरभिञ्जं गीतञ्जं सलिलं वा पूर्वोक्तान्यतमेन पक्षेण सावरणार्थं देवतायै निवेदयेत् । अबशिष्टं प्राम्बत् ॥ इति वैशाखकृत्यम् ॥

ज्येष्ठकृत्यम्

अथ ज्येष्ठायां प्राग्वदधिवासितानि कदलीपनमाभ्रादीनि फलानि उक्त्या रीत्या कयाचित् उक्तमन्त्रैः प्रधानदेव्यादिभ्यो निवेदयेत् । तैः अर्चयेदिति केचित् । अन्यत् समानम् ॥ इति ज्येष्ठकृत्यम् ॥

आषाढकृत्यम्

अथाषाढ्यां प्राग्वदधिवासनपूर्वकं श्रीदेव्यै कुङ्कुममिश्रं चन्दनं समर्प्य जाती-कुसुमैः सावरणामभ्यर्च्य ताम्बूलावसरे एतद्गैलाकण्डोद्यानि उक्तं प्रकारेण केनापि निवेदयेत् । शेषं पूर्ववत् ॥ इत्याषाढकृत्यम् ॥

पवित्रारोपणविधिः

तदनु श्रावण्यां पूर्णिमायां पवित्रारोपणम् । तानि च मुखनिर्गम्यताम्रान्यतम-तन्तुपट्टं मुखनिर्गम्यतममुञ्जशाण्डकालकार्पासान्यतममूरविनिर्मितानि । कार्पाशमूत्रं तु मुवासिनीकर्तृकम् । उत्तान्यतमेन नवमुनिनेन मूत्रेण निर्मिते पादगात्रुद्याधारेः सावस्तुमार्गैः सर्वैः सम्पन्नं ताम्बूलावसरेण परिनिवेदकं पठ । नवमु-द्याधामसमन्धिकं पतिं दिशोः । तदुदात्तमन्त्रैः कर्म-द्वारात्कृत्यं यथावसर-

१ मूत्रावसरी—अ १. मूत्रवसरी—ब १, ब २, ब.

चैत्रपूर्णिमाकृत्यम्

अस्यामेव पूर्णिमायां वसन्तोऽसंवाऽपि विहितः । तत्र दमनार्पणवसन्तोऽन्ये
तन्त्रेण करिष्ये इति सङ्कल्प्य तन्काळसम्भवानि सकल्हाराणि कर्पूरचन्दनोक्षितानि
कुसुमानि पूर्ववन् अधिवास्य तैर्दमनकैश्च युगपदर्चयेत् ॥ इति चैत्रपूर्णिमाकृत्यम् ॥

वैशाखीकृत्यम्

अथ वैशाख्यां पूर्णिमायां नैवेद्यावसरे प्राग्वदधिवासितं हेमन्तकाळे सङ्गृहीतं
तृपासोदकं तदलाभे कर्पूरमृगनाभिमुग्मिळं शीतळ सळिळं वा पूर्वोक्तान्यतमेन
पक्षेण सावरणायै देवतायै निवेदयेत् । अवशिष्टं प्राग्वत् ॥ इति वैशाखकृत्यम् ॥

ज्येष्ठकृत्यम्

अथ ज्येष्ठायां प्राग्वदधिवासितानि कदलीपनसाम्रादीनि फलानि उक्त्या
रीत्या कयाचित् उक्तमन्त्रैः प्रधानदेव्यादिभ्यो निवेदयेत् । तैः अर्चयेदिति केचित् ।
अन्यत् समानम् ॥ इति ज्येष्ठकृत्यम् ॥

आषाढकृत्यम्

अथाषाढ्यां प्राग्वदधिवासनपूर्वकं श्रीदेव्यै कुङ्कुममिश्रं चन्दनं समर्प्य जाळी-
कुसुमैः सावरणामन्यर्ष्यं ताम्बूलावसरे हवद्गैलाकङ्कोलानि उक्तेन प्रकारेण केनापि
निवेदयेत् । शेषं पूर्ववत् ॥ इत्याषाढकृत्यम् ॥

पवित्रारोपणविधिः

तदनु ध्रावण्यां पूर्णिमायां पवित्रारोपणम् । तानि च सुवर्णरोप्यताम्रान्यतम-
तन्नुपट्^१सूत्रसरीपद्मदर्भमुञ्जशाणवल्कलकार्पासान्वतमसूत्रविनिर्मितानि । कार्पाससूत्रं तु
मुवासिनीकर्तृकम् । उक्तान्यतमेन नवगुणितेन सूत्रेण निर्मितैः षोडशाङ्गुलायामैः
तावत्सङ्गुशाकैः संरैः सम्पन्नं तावत्सङ्गुषाम्प्रिधिमदेकं पवित्रमिन्येकः पक्षः । नवाङ्गु-
लायामसरप्रन्धिकं वेति द्वितीयः । तत्तदावरणगतशक्तिसमसङ्ख्याकाङ्गुलायामसर-

^१ सूत्रत्रिसरी—अ १. सूत्रत्रिसरी—ब १, ४ १, न.

नित्योत्सवः

कठिनद्रव्यनिवेदने पक्षद्वयम् । तत्र कटादिकमुक्तदेवतासमसङ्गशकमुक्ता-
 प्रकारेण तत्तद्देवतायै निवेदयेदित्येकः । तदशक्तौ यथासम्भवमुपपद्येति द्वितीयः ॥
 पवित्रारोपणे दीपदाने च प्रथमपक्षीयः प्रथमप्रकार एव नान्यो हिमोदक-
 सङ्कोचपक्षाश्रयणे वीजमशक्तिवत्सराभावो वा । तन्त्रान्तरोक्तानां 'चतुराम्नायप-
 सिंहासनपञ्चपञ्चिकापद्दर्शनाङ्गदेवीभूतशक्तिसमयदेवतानामप्यर्चने
 एतेनि दिक् ॥

दमनविधिः

अथाग्नी दमनार्चनम् । चैत्रशुक्लचतुर्दश्यां सायं स्वयं दमनाशनं गवा—
 ॐ शिवप्रसादसम्भूत अत्र सन्निहितो भर ।

देवीपर्यं समुत्सव्य नेताम्योऽसि सिंहाय ॥

इति दमननामन्त्र अत्रमन्त्रेण समूह दमनलता. सप्तर्षिपर्विता उज्जाय, सरयवे

तद्रूपान्ता मन्त्रेण जित्वा स्वकन्याभागे 'किंतु'रनुमत्या कनकीया वा आनीयाण्य

वा सर्वेरे परादिताये निवार नृउविषया मुन्नामिर्दि नन्मुःप ऐ ही श्री इमना

अमुक कन्यपति नम इर्षादीना उपकारणी ए-मुय्यदृशीनेवापदन्

एतेनपान्त् नारवे, मुत्तनवन्त्रेण नोऽय, यमनदिर एव कथन मुषिनी

एते निवार मन्त्रेण इत्यथा मन्त्रेण । इतिनामन् । इव च मन्त्रेण

वा कर्त्तव्य । मन्त्रेणपुष्पानि इत्युक्तम् । इत्युक्तमितिपदव ॥ ३७

इतिदमनविधिः ॥ ३८ ॥ इत्युक्तम् । इत्युक्तमितिपदव ॥ ३७

आश्वयुजकृत्यम्

अथाश्वयुज्यां पुष्पविशेषं निवेद्य विशेषकरणकः क्रमः प्रवर्तनीयः । अथवा—

आश्वयुज्यां विशेषस्तु दर्शान्तप्रतिपत्तिधिम् ।

आरम्य पूजयेत् देवीं गन्धपुष्पोपहारकैः ॥

इति तन्त्रराजवचनात् तच्छुद्धप्रतिपदादिपूर्णावधिकः प्रयोगोऽनुष्ठेयः । तत्र प्रतिपदात्रौ विशेषतः पुष्पं नैवेद्याद्युपचारैः क्रमं प्रवर्त्य प्रधानदेवतायै शतमाज्याहुतीः आवरण-
देवताभ्यः तद्दशांशं हुत्वा जपं होमसमसङ्ख्याकं विधाय अविवाहिताक्षतां प्राङ्निमन्त्रितां
कन्यामेकां अन्यतस्मात्तां आसने उपवेश्य तस्यां देवीं आवाह्य वाळया पद्मधा
उपचर्य यथाविभवं वसनाभरणानि दद्यात् । एवं द्वितीयादिचतुर्दश्यन्तं द्विशतादि-
होमजपकन्याद्वयादिपूजनानि कृत्वा पूर्णिमायां वृद्धया शतेन सह षोडशशतहोम-
जपषोडशकन्यापूजनानि कुर्यादिति एकः पक्षः । प्रतिपदि प्रकृतिहोमः शतमाहुतयो
शुद्धिहोमश्च शतं एवं जपः कन्यके द्वे । द्वितीयादिषु त्रिशतादिहोमजपौ ज्यादिकन्यका
इत्यपरः । एनयोरैकमाश्रयेत् । तिथिवृद्धौ प्रतिपदादिक्रमेण शतादिहोमादिकम् ।
तिथिहोमस्य तु तस्मिन्नेव दिने तद्द्वितीयकृत्यं, एकस्मिन्नेव काले होमादिकं च कुर्यात् ।
अवशिष्टमविशिष्टम् । एवं कृतै विद्या सिद्धा भवति । राजा च साधकस्य अर्चको
भवति । अथवा—कुलाणवोक्तनवरात्रपक्षोऽपि एकोत्तरवृद्धया वा तदसम्भवे यथोक्त-
क्रमेणैव वा कर्तव्यः । अयं स्वतन्त्रो न तु पूर्णिमाऽङ्गम् । तत्पक्षे पूर्णिमापूजाऽपि
प्रत्येकमुक्तरीत्या कर्तव्येति दिक् ॥ इत्याश्वयुजकृत्यम् ॥

कार्तिककृत्यम्

अथ कार्तिक्यां प्राग्बद्धिवासितं कुङ्कुमं सावरणार्थं देव्यं समर्प्य गोधूमादि-
पिष्टप्रकृतिकैः घृतपूरितैः प्रज्वालितकर्पूरवर्तिभिः प्रदीपैः नित्यहोमत्रयेण तत्तदेवतान्यो
हुत्वा देव्याः पुरः शुचिनि भूतले षोडश दीपान् दत्त्वा अङ्गदेवीभ्यो नित्याभ्यः
ओषत्रयगुह्यैः तत्तत्प्रधानं निवेद्य तदभितस्त्रिकोणादिचतुरस्रान्ताहृत्या च निधाय
प्रतिदेवतमेकैकं दीपं निवेदयेत् । एतावदसम्भवे एकस्मिन्नेव भाजने मध्ये एकं
तस्मिन्ने नव वा नवयोर्निचत्राष्टदशकमद्यान्पतमाडङ्गुते वा तत्र मध्ये एकं कोणेषु

नित्यात्सयः

प्रथिकं वेति तृतीयः । आदिमपक्षद्वये पवित्राणि सर्वेषां साधारणानि । अन्तिमे तु पक्षे गूढदेव्याः षोडशानवान्यतरानुष्ठायामसरप्रथिकम्, महाकामेधर्यादीनां तिसृणां त्र्यनुष्ठायामादिकम्, अद्भदेवीनां पण्णां तत्सद्गवाकानुष्ठायामादिकम्, नित्यानां पञ्चदशानां पञ्चदशानुष्ठायामादिकम्, गुरुपञ्क्तित्रयस्य तत्तदोषसमसङ्ख्यानुष्ठायामादिकम्, श्रीगुरोः आयुधदेवीनां चतुरनुष्ठायामादिकमिति विशेषः । पक्षत्रयेऽपि व्यातस्य श्रीगुरोः प्रधानदेवीवत् । जीवतस्तस्य स्वस्य च क्रमागमज्ञशिष्यशक्तिसामयिकानां च कण्ठादिनाभ्यन्तायाममन्त्रीकृतपक्षान्यतमसङ्क्षयसरप्रथिकं एकप्रथिकं वा । क्रमः कालनित्याक्षरक्रमः । आगमः कादिकाष्टीमतादिः । अन्येषां शक्तिसामयिकानां कण्ठादिनाभ्यन्तमानं नवसरमेकप्रथिकं च । वितानाद्देवताविष्टरायाममष्टोत्तरशतसरप्रथिकं शक्यवतारकं नाम । मण्डपस्य तत्परिधिसमप्रमाणमेकसरप्रथिकम् । होमाग्नेः षोडशानवान्यतरानुष्ठायाममेकसरमेकप्रथिकं च पवित्रं कुर्यात् । ग्रन्थिः सूत्रवेष्टनरूपः । वेष्टनसङ्ख्या तूत्तमादिभेदेन पट्टीशच्चतुर्विंशतिद्वादशात्मिका ऐच्छिकी वा । तन्मन्त्रस्तु बाला वा कवचं वा । उक्तपक्षत्रये एकतमस्वैवाश्रयणीयत्वं, मानसांकर्यं अनिष्टापादकं सर्वथा नाचरोदिति स्थितिः । इत्यमुपकल्पितानि गौरोचनकुङ्कुम-रक्तचन्दनमृगामदपङ्काष्ठितानि लाक्षागौरिकान्यतरचित्रितप्रथिकानि पवित्राणि प्राग्बद-धियास्य श्रावण्यां रात्रौ शक्यवतारकं पवित्रं वितानालुम्बयित्वा मण्डपं तत्सूत्रेणावेष्टय प्रधानदेवीपूजान्ते ज्ञानमुद्रोपात्तैः पुष्पैः समं श्रीदेव्याद्यावरणान्तदेवताभ्यः तत्तत्पादुकया पृथक् पृथक् समर्प्य अग्रये च पुरो निधाय श्रीगुरुशक्तिसामयिकेभ्यः प्रदाय स्वयं श्रुत्वा शिष्येभ्यो दद्यात् । एतावत्कर्तुमसम्भवे पण्णवत्यङ्गुष्ठायामसरप्रथिकानि त्रीणि पवित्राणि कृत्वा श्रीदेव्यै समर्पयेत् । शेषं पूर्ववत् । एतन्मुख्यफालातिक्रमे मिथुनादितुलान्तसङ्क्रान्तिगतासु कृष्णाष्टमीकृष्णचतुर्दशीपूर्णिमासु वा कार्यम् ॥ इति पवित्रारोपणविधिः ॥

भाद्रपदकृत्यम्

ततो भाद्रपद्यां पूर्ववदधिवासितेनैकैकेन केतकीपुष्पेणालाभे पत्रेण वा ज्ञानमुद्रया सर्वाः देवता अर्चयेत् । पुष्पं तु निष्कासितकेसरमिति श्रीगुरुमुखागमः । शेषं समानम् । इति भाद्रपदकृत्यम् ॥

र्चनं अभ्युदयायैव ।
॥ इति यौवनोद्घासे

इति यौवनोद्घासे
विद्यन्तः पुनः संशयान्तरं
देवतान्यः यद्यपि देव
कल्पान्तरं यद्यपि
उत्तमं कल्पान्तरं
होमवद्व्यवहारादिभिः
जगत्संसारव्यवहारादिभिः
वृद्धिद्योतयति इति
इत्यपरः । अथ
तिथिहासे तु
अवशिष्टमर्थवद्व्यवहारः ।
भवति । अथ
क्रमेण वा
प्रत्येकमुक्तौ

न उमानन्दनाथेन
वन्धे
ः

अथ यौवनोद्घासे
वृद्धिद्योतयति इति
इत्यपरः । अथ
तिथिहासे तु
अवशिष्टमर्थवद्व्यवहारः ।
भवति । अथ
क्रमेण वा
प्रत्येकमुक्तौ

नित्योत्सवः

दलेषु वाऽष्टौ दीपान् प्रज्वाल्य देव्यै मूलेन सप्रसूनं निवेदयेत् । शेषमभिहितवत् ॥
इति कार्तिककृत्यम् ॥

मार्गशीर्षकृत्यम्

अथ मार्गशीर्षपूर्णिमायां सावरणां श्रीदेवीं सुगन्धिभिः कुसुमैरभ्यर्च्य
मापविष्टांपूपान् कर्पूरसुरभिलं नारिकेलोदकं च प्रागुक्तान्यतमया भङ्गया सर्वाभ्यो
देवताभ्यो निवेदयेत् । अन्यदविशेषम् ॥ इति मार्गशीर्षकृत्यम् ॥

पौषकृत्यम्

ततः पौष्यां प्राग्वदधिवासपूर्वकं शर्करया गुडेन वा साकं गव्यं दुग्धं उक्तेन
केनचित्प्रकारेण निवेदयेत् । अन्यदविशेषम् ॥ इति पौषकृत्यम् ॥

माघकृत्यम्

तदनु माघ्यां प्राग्वदधिवासितैः शुद्धैस्त्रिलैः अलाभे रक्तकृष्णैर्वा शुद्धैस्सुकुसुमै-
रभ्यर्च्य शर्करादुग्धांपूपान् निवेदयेत् । अत्रापूपः गोधूमादिपिष्टप्रकृतिका इति
सम्प्रदायः । इतरत् समानम् ॥ इति माघकृत्यम् ॥

फाल्गुनकृत्यम्

अथ फाल्गुन्यां सौवर्णराजतपुष्पैः पङ्कजैः कल्हारैः आम्रकुसुमैः मयूकैश्च
यथासम्भवं मिळितैः प्राग्वदधिवासितैः सावरणां श्रीदेवीं वरिवस्येत् ॥ इति
फाल्गुनकृत्यम् ॥

अयमेव नैमित्तिकार्चनाविधिः गणपतिरयानावातार्त्तलीनां सामान्यक्रमोक्तानां
देवतानाम् । सर्वत्रामुकपौर्णिमायां अमुकेन द्रव्यविशेषेण अमुकदेवतां पूजयिष्ये
इति सङ्कल्पः ॥

अत्राधिकमासापाते एकमासकृत्यस्य मासद्वये आवृत्तिः । क्षयमासप्रसक्तौ
शुक्लस्निग्धं मासे मासद्वयकृत्यमपि कार्यं भवति । नैमित्तिकार्चनमुद्रयगोप्यप्यद्यातिरन्ते
एभिर्वासासहस्रत्रयः प्रायश्चित्तनाम्नातं तन्तराजे—

नैमित्तिकातिक्रमणे सहस्रं प्रजपेत्तथेति ॥ इति ॥

इति पञ्चपर्वार्चनविधिः ॥

तन्त्रान्तरोक्तेषु युगमन्वादिषु विशेषदिवसेष्वपि श्रीदेव्यर्चनं अभ्युदयायैव ।
सूत्रकारेण काम्यहोमस्यैवोक्तत्वात् तत्पूजाऽनुक्तिरिति शिवम् ॥ इति यौवनोल्लासे
नैमित्तिकप्रकरणम् ॥

यथामति मयाऽकारि स्वयं श्रीक्रमपद्धतिः ।

भ्रमं प्रमादस्खलितं क्षमयन्त्विह साधवः ॥

इति श्रीमद्भासुरानन्दनाथचरणारविन्दमिलिन्दायमानमानसेन उमानन्दनाथेन
विरचिते कल्पसूत्रानुसारिणि नित्योत्सवनिबन्धे
अभिनवे यौवनोल्लासः तृतीयः सम्पूर्णः

मौढोल्लासः चतुर्थः—श्यामाक्रमः

उपोद्गतः

नत्वा श्रीभासुरानन्दनाथपादाम्बुजद्वयम् ।
प्रधीरुमानन्दनाथः प्रौढोल्लासं तनोत्यमुम् ॥
यत्र श्रीमन्महाराज्ञीमन्त्रिण्याः क्रम ईरितः ।
प्रधानानुसृतिद्वारा न्याय्यं हि नृपसेवनम् ॥
त्रितार्या वालया चेह वालया वाऽऽदितोऽन्विताः ।
मन्त्राः क्रमजुषो दीक्षा त्वारम्भोल्लास ईरिता ॥

काल्यकृत्यं आह्निकं च

श्रीमान् साधकः श्यामलां देवीं आरिराधयिषुः श्रीक्रमोक्तक्रमेण काल्यकृत्या-
ह्निके निर्वर्तयेत् । अत्र विशेषः—श्रीगुरुपादुकायामादौ त्रितारीस्थाने बालयोगः ।
सर्वकारणभूतायाः संविदधिन्तनं मूलाधारादिद्वादशान्ताख्यललाटोर्ध्वभागावधिकमेव । आदित्यमण्डले
रश्मिलगननुस्मरणम् । तत्र तत्र यथोचितं सम्बुद्धयादीनामूहः । आदित्यमण्डले
वस्यमाणया भङ्गया सङ्गीतयोगिन्या भावनम् । मूलेन अर्घ्यदानम् । वस्यमाणमृष्यादि-
न्यासत्रयं चेति । इदं चाह्निकं स्वतन्त्रोपास्तौ पुरधरणकाले च, न तु श्रीक्रमाङ्गत्वेन
सहानुष्ठाने ॥

यागमन्दिरप्रवेशः

अथापठहे यागमन्दिरमागत्य द्वारस्थण्डिलं गोमयेनोपकृष्य यागगृहं च
एतद्विपुणमाटापितानकादिभिधाड्ड्ठय्य द्वारस्य दक्षवामभागयोः ऊर्ध्वभागे च
क्रमेण —

ऐं ह्रीं सौः भद्रकाल्यै नमः, ३ भैरवाय, ३ लम्बोदराय नमः ॥

इति तिस्रो द्वारदेवताः सम्पूज्य अन्तः प्रविष्टः ३ रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः इति पुष्पाञ्जलिना भूर्मा दीपनाथमिष्ट्वा सपर्यासात्प्रार्थित्वा स्वस्य दक्षभागे निधाय दीपानभितः प्रज्वाल्य गन्धमाल्यादिभिः अलङ्कृतात्मा ताम्बूलेन जातीपत्रफलवद्वैद्य-कर्पूराख्यपद्मतिकेन वा सुरभिलवदनः सुप्रसन्नमनाः स्वास्तीर्णं ऊर्णामृदुनि शुचिनि बालातृतीयबीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते मूलमन्त्रोक्षिते आसने ३ आधारशक्ति-कमलासनाय नम इति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पश्चासनाद्यन्यतमेन आसनेनोपविश्य ३ समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रदेवताश्रीपादुकाम्यो नमः इति मूर्ध्नि वद्व्यञ्जलिः स्ववामदक्षपार्श्वयोः क्रमेण गुरुपादुकया श्रीगुरुं महागणपतिमन्त्रेण च गणपतिं प्रगम्य ३ ऐं हः अन्नाय फट् इति मन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्गुष्ठादिकरतलान्तं कूर्परयोश्च विन्यस्य देहे च व्यापकं कृत्वा स्वस्य देवतैक्यं भावयन्—

ऐं ह्रीं सौः अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विप्रकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इति मन्त्रं सकृदुच्चार्य युगपद्दामपार्श्विभूतलत्रिरावातकरास्फोटत्रयकूरट्टयबलोकनपूर्वकं तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विश्रानुत्सारयेत् । तालत्रयं नाम दक्षतर्जनीमध्यमाभ्यामधोमुखाभ्यां धामकरतले सशब्दमुपर्युपरि त्रिरभिघातः ॥

प्राणायामः

अथ ३ नम इत्यङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चार्य अङ्कुरेण शिखां वद्धा श्रीकमोक्तप्रकारेण भूतशुद्धिं आत्मप्राणप्रतिष्ठा च विधाय मूलेन विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा त्रिधा वा प्राणानायम्य ॥

पङ्गादिन्यासपञ्चकम्

तेजोरूपदेवीमयं भावयन्नात्मानं निजदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचं आमुषेत् ।

यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः ऐं सर्वजनमनोहरिं हृदयाय नमः ॥

७ सर्वमुग्रजिनि शिरसे स्वाहा ॥

- ७ ह्रीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि शिखायै वन्दे ॥
 ७ सर्वद्वीपुख्यवशङ्करि कवचाय नमः ॥
 ७ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नेत्रत्रयाय वीण्डे ॥
 ७ सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि अमुकं मे वशमानय स्वाहा
 अत्राय फट् ॥

इति मन्त्रान् हृदयादिषु न्यसेत् इति पढङ्गन्यासः ॥ १ ॥

अथ श्रीकमोक्तमातृकान्यासं कृत्वा ॥ २ ॥

ऐं ह्रीं सौः रत्यै नमः इति मूलाधारे, ३ प्रीत्यै नमः इति हृदये,
 ३ मनोभवाय नमः इति मुखे न्यसेत् ॥ इति रत्यादिन्यासः ॥ ३ ॥

ऐं ह्रीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः नमः । ब्रह्मरन्ध्रे ॥

- ३ ॐ नमो नमः । ललाटे ॥
 ३ भगवति नमः । भ्रूमध्ये ॥
 ३ श्रीमातङ्गीश्वरि नमः । दक्षनेत्रे ॥
 ३ सर्वजनमनोहरि नमः । वामनेत्रे ॥
 ३ सर्वमुखरञ्जिनि नमः । मुखे ॥
 ३ ह्रीं नमः । दक्षश्रोत्रे ॥
 ३ ह्रीं नमः । वामश्रोत्रे ॥
 ३ श्रीं नमः । कण्ठे ॥
 ३ सर्वराजवशङ्करि नमः । दक्षांसे ॥
 ३ सर्वद्वीपुख्यवशङ्करि नमः । वामांसे ॥
 ३ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नमः । हृदये ॥
 ३ सर्वसत्त्ववशङ्करि नमः । दक्षस्तने ॥
 ३ सर्वलोकवशङ्करि नमः । वामस्तने ॥
 ३ अमुकं मे वशमानय नमः । नाभौ ॥
 ३ स्वाहा नमः । स्वाधिष्ठाने ॥
 ३ सौः ह्रीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं नमः । मूलाधारे च न्यसेत् ॥

इति मूलखण्डसप्तदशकन्यासः ॥ ४ ॥

एतानेव प्रतिजोममूलमन्त्रखण्डान् मूलाधारस्वाविष्टाननाभिवामस्तनदक्षस्तन-
हृदयवामदक्षांसकण्ठवामदक्षश्रोत्रमुखावामदक्षनेत्रभ्रूमस्यललाटब्रह्मरन्ध्रेषु क्रमात् न्यसेत् ।

यथा—

ऐं ह्रीं सौः सौः श्रीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं नमः । मूलाधारे ॥

- ३ स्वाहा नमः । स्वाविष्टाने ॥
 ३ अमुकं मे वक्षमानय नमः । नाभौ ॥
 ३ सर्वलोकवशङ्करि नमः । वामस्तने ॥
 ३ सर्वसत्त्ववशङ्करि नमः । दक्षस्तने ॥
 ३ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नमः । हृदये ॥
 ३ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नमः । वामांसे ॥
 ३ सर्वराजवशङ्करि नमः । दक्षांसे ॥
 ३ श्रीं नमः । कण्ठे ॥
 ३ ह्रीं नमः । वामश्रोत्रे ॥
 ३ ह्रीं नमः । दक्षश्रोत्रे ॥
 ३ सर्वमुखरञ्जिनि नमः । मुखे ॥
 ३ सर्वजनमनोहरि नमः । वामनेत्रे ॥
 ३ श्रीमातङ्गीश्वरि नमः । दक्षनेत्रे ॥
 ३ भगवति नमः । भ्रूमध्ये ॥
 ३ ॐ नमो नमः । ललाटे ॥
 ३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः नमः । ब्रह्मरन्ध्रे ॥

इति प्रतिजोममूलमन्त्रखण्डन्यासः ॥

मन्दिरार्चनम्

अथामृताम्भोनिधिमव्यस्थमणिद्वीपमप्यगते कदम्बोद्याने मुक्ताकुसुममालिकाहरित-
पद्मवितानास्तरणकन्दनमालिकाचलङ्कृतं धूपधूपितं प्रञ्चलत्प्रदीपपरंपर चतुर्द्वारं मरकतमण्डपं
विचिन्त्य तस्य प्रागादिषु द्वारेषु—

ऐं श्रीं सौं: सां सरस्वत्यै नमः, उं उद्भ्यं, न शङ्खनिधये, पं पम
इति सम्बुध्य—

ऐं श्रीं सौं: उं इन्द्राय वज्रहस्ताय मुराधिपतये
ऐरावतवाहनाय सपरिवाराय नमः । पूर्वे ॥

३ रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये
अजवाहनाय सपरिवाराय नमः । आग्नेये ॥

३ 'टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये
महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः । दक्षिणे ॥

३ क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये
नरवाहनाय सपरिवाराय नमः । नैर्ऋते ॥

३ वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये
मकरवाहनाय सपरिवाराय नमः । पश्चिमे ॥

३ यां वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये
रुरुवाहनाय सपरिवाराय नमः । वायव्ये ॥

३ सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये
अश्ववाहनाय सपरिवाराय नमः । उत्तरे ॥

३ हां ईशानाय त्रिशूळहस्ताय विद्याधिपतये
वृषभवाहनाय सपरिवाराय नमः । ऐशान्ये ॥

इति प्रागादिषु अष्टासु दिक्षु शक्रादीनभ्यर्च्य,
ऐं ह्रीं सौं: ॐ ब्रह्मणे पद्महस्ताय लोकाधिपतये हंसवाहनाय सपरिवाराय
नमः । इति इन्द्रेशानयोः मध्ये ॥

३ श्रीं विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय सपरिवाराय
नमः । इति निर्ऋतिवरुणयोः दिगन्तरे ॥

३ ॐ वास्तुपतये ब्रह्मणे नमः । इति वास्तुनि चार्चयेत् ॥

यन्त्रोद्धारः

अथ चन्दनपङ्कप्रकृतिके मण्डले क्षीरमिश्रितेन सिन्दूरादिना बिन्दुत्रिकोण-
पञ्चकोणाष्टद्वलपोडशदलाष्टपत्रचतुष्पत्रचतुरस्रात्मकं चक्रं विदिल्य विलेह्य वा
सुवर्णरजतताम्रस्फटिकमरकतरत्नायुक्तीर्णं वा तत्समास्तीर्णपट्टवसनं श्रीखण्डरक्तचन्दनादि-
निर्मिते पीठे निवेश्य यन्त्रप्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । यथा—

ऐं ह्रीं सौः श्यामायन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः,

३ श्यामायन्त्रस्य जीव इह स्थितः,

३ श्यामायन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि,

३ श्यामायन्त्रस्य वाङ्मनःप्राणाः इहायान्तु स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण लिखितयन्त्रप्राणप्रतिष्ठां विद्विष्यात् । सुवर्णादिकृतस्य यन्त्रस्य तु
प्राणप्रतिष्ठा श्रीक्रमोक्ता अत्राप्यनुसन्धेया । अत्र देवतानामासूहस्त्वावश्यक एव ।
एवं देवतान्तरक्रमेष्वपि । ततो मूलेन चक्रे पुण्याञ्जलिं विकीर्य ॥

अर्च्यशोधनम्

श्रीक्रमोक्तक्रमेण सामान्यविशेषार्थे आसादयेत् । अत्र चोभयोरप्यर्च्ययोः
प्रवेशरीत्या अन्तर्गतश्चतुरस्रादिविन्द्वन्तमण्डलकरणम् ॥

ऐं ह्रीं सौः अं आत्मतत्त्वाय आधारदाक्तये वीपट् इत्याधारस्थापनम् ॥

३ उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वीपट् इति पात्रनिधानम् ॥

३ मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नम इति शुद्धजलापूरणमेकत्र ॥

ब्रह्माण्डरज्जुसम्भूतमशेषरससम्भृतम् ॥

आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह ॥

इति क्षीरपूरणमन्त्रः । उक्तं पङ्क्तं, मूलेन दशधा अभिमन्त्रणम्, चतुर्ण्यभिमन्त्रा-
भिमन्त्रणाभाबध्द विशेषः । ततो विशेषार्थे बिन्दुनि सम्प्राप्त्य यदियस्यावस्तुनि ॥

१ अथ यदि कल्पपूजनम् सूत्रेदृश्यम् ।

२ " सूर्य " " " " " ।

३ " धोम " " " " " ।

चक्रदेवीपूजा

ऐं ह्रीं सौः आधारशक्तिकमलासनाय नमः इति पीठं पुष्पैरभ्यर्च्य, विन्दुमध्ये
 ३ श्रीमातङ्गीश्वरीमूर्तये नमः इति देव्या मूर्तेि भावयित्वा, इदि वक्ष्यमाणरूपां देवीं
 सञ्चिन्य ३ श्रीमातङ्गीश्वर्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नम इत्यादिताम्बूलान्तं
 मानसोपचारैरभ्यर्च्य, तां तेजोरूपेण परिणतां ब्रह्मरन्ध्रं प्राप्य वहन्नासापुटद्वारा
 कृतविनिर्गमां कुसुमगर्भिते अञ्जलौ सन्निहितां देवीं ३ श्रीमातङ्गीश्वरि अमृत-
 चैतन्यमावाहयामीति चक्रे भावितायां मूर्त्यां आवाह्य मूलान्ते श्रीमातङ्गीश्वरि आवाहिता
 भव इत्यादिरीत्या आवाहन-संस्थापन-संनिधापन-संनिरोधन-संमुखीकरणवसुगुणानि
 तत्तन्मुद्राप्रदर्शनपूर्वकं विधाय, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् । तत्प्रकारश्च श्रीकमतो
 ज्ञातव्यः । ततः ऐं ह्रीं सौः श्रीमातङ्गीश्वर्यै पाद्यं कल्पयामि नम इत्यादिमङ्गला
 पाद्यार्प्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्पधूपदीपनीराजनलत्रचामरयुगलदर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूला-
 न्तान् षोडशोपचारान् परिकल्पयेत् । नैवेद्याङ्गत्वेन पूर्वोत्तरापोशनकरप्रक्षालनगण्डूपाच-
 मनीयानि च दत्त्वा ताम्बूलं समर्पयेत् । नैवेद्ये त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलकरणम् ।
 मूलमन्त्रेण प्रोक्षणम् । वमित्यमृतबीजेनाभिमन्त्रणपूर्वं धेनुमुद्रया अमृतीकरणम् । मूलेन
 सप्तवारमभिमन्त्रणं प्राणादिमुद्राप्रदर्शनं च कार्यम् । अथ मूलमन्त्रान्ते श्रीमातङ्गीश्वरी-
 श्रीपादुकां पूजयामीति वामकरतत्त्वमुद्रासन्दष्टद्वितीयशकलगृहीतक्षीरविन्दुसहस्रसर्पितैः
 दक्षकरोपात्तैः कुसुमैः देवीं त्रिस्तन्तर्प्य देव्या अग्नीशामुरवापव्यभागेषु मौलीं
 प्रागादिदिक्षु च प्रागुक्तपङ्क्तमन्त्रान्ते क्रमेण—

ऐं ह्रीं सौः हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ शिरस्ते स्वाहा शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ शिखायै वषट् शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ कवचाय हुं कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ नेत्रत्रयाय धीमट् नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

इति ध्यात्वात्वेन अङ्गेश्वरता आराध्य ॥

गुर्वोघत्रयपूजा

देव्याः पश्चात् प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रयं वरिवस्येत् ।
यथा—

दिव्यौघः

ऐं ह्रीं सौः परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परमे-
शानन्द, परशिवानन्द, कामेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां, मोक्षानन्द, कामानन्द, अमृता-
नन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति दिव्यौघः ॥

ऐं ह्रीं सौः ईशानानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
तत्पुरुषानन्द, अघोरानन्द, वामदेवानन्द, सद्योजातानन्दनाथश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सिद्धौघः ॥

ऐं ह्रीं सौः पद्मोत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
परमानन्द, सर्वज्ञानन्द, सर्वानन्द, सिद्धानन्द, गोविन्दानन्द, शङ्करानन्दनाथ-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति मानवौघः ॥

आचरणार्चनम्

व्यस्त्रे देव्यप्रकोणादिप्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ह्रीं सौः रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, प्रीति, मनोभव-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति प्रथमावरणम् ॥

पद्मारस्याराणा मूलेषु प्राग्वत्—

ऐं ह्रीं सौः द्रा द्रावण^१चाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ^२श्री
शोषणवाण, श्री बन्धनवाण, च्छं मोहनवाण, सः उन्मादनवाणश्रीपादुका
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

^१ क्षणाय धी इत्यत्र सर्वपर्यायेषु—अ, ब २, ब ३, भ.

^२ ह्रीं—न. धी—अ.

पद्मारस्याराणामग्रेषु च—

ऐं ह्रीं सौः ह्रीं कामराजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
मन्मथ, ऐं कन्दर्प, व्हं मकरकेतन, ह्रीं मनोभवश्रीपादुकां पूजयामि
नमः ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥

अष्टदलस्य दलानां मूलेषु पूर्ववत्—

ऐं ह्रीं सौः आं ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ईं मा
ऊं कौमारी, ऋं वैष्णवी, लृं वाराही, ऐं माहेन्द्री, औं चामुण्डा,
चण्डिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

अष्टदलस्य दलानां अग्रेषु च—

ऐं ह्रीं सौः लक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, सरस्वती, रति
प्रीति, कीर्ति, शान्ति, पुष्टि, तुष्टिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
इति तृतीयावरणम् ॥

षोडशदले प्राग्वत्—

ऐं ह्रीं सौः वामाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ज्येष्ठा, रौद्री,
शान्ति, श्रद्धा, सरस्वती, क्रियाशक्ति, लक्ष्मी, सृष्टि, मोहिनी, प्रमथिनी,
आम्बासिनी, वीचि, विद्युन्मालिनी, सुरानन्दा, नागबुद्धिकाश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥

द्वितीयाष्टदले प्राग्वत्—

ऐं ह्रीं सौः अं असिताम्भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ईं
रु, उं चण्ड, ऋ क्रोध, लृ उन्मत्त, एं कपाडि, औ भीषण, अं
संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति पञ्चमावरणम् ॥

चतुर्दले प्राग्वत्—

ऐं ह्रीं सौः मातङ्गीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, सिद्धलक्ष्मी,
महामातङ्गी, महामिद्धलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति
षष्ठावरणम् ॥

चतुरस्रस्यान्तराग्नेयादिकोणेषु क्रमेण—

ऐं ह्रीं सौः गं गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इन्द्रं
वं बटुक, क्षं क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

देव्यप्रादिद्वारेषु प्रागाद्यास्वेकादशसु दिक्षु च—

ऐं ह्रीं सौः सां सरस्वत्यै नमः इत्यादि ऐं वास्तुपतये ब्रह्मणे नमः, इन्द्रं
मन्त्रैः प्रागुक्तैः वास्तुपतिपर्यन्तदेवताः समभ्यर्च्य, पूर्वरेखायां च—

ऐं ह्रीं सौः हंसमूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इन्द्रं,
पूर्णा, नित्य, करुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सम्प्रदायानुसारेण
पूजयेत् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥

सर्वा अप्यावरणदेवताः देव्या अभिमुखासीनाः स्वयं तत्तदभिमुखः पूजयामीति
भावयेत् ॥

गुरुपादुकापूजा

अथ स्वशिरसि ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः ऐं ग्लौ ह्स्क्लें ह स क्ष म ल व
स ह क्ष म ल व र यी ह्सौं स्हौः श्रीशिवादिगुरुश्रीपादुकाः पूजयामीति स
पादुकया शिवादिगुरुन्, ऐं ह्रीं सौः ह्स्क्लें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म
यी ह्सौं स्हौः अमुकाम्बासहितामुकानन्दनाथश्रीगुरुश्रीपादुकां पूजयामीति च स्वगुरुमन्त्रेण

देव्याः पुनःपूजा

पुनर्देवी त्रिः सन्तर्प्य प्राग्वात् बालया षोडशधा चोपचरेत् ॥

बलिदानम्

ततः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण होमं कृत्वा कारयित्वा वा (अकृत्वा च
पादान्तरम्) शुद्धजटेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलत्रयं विधाय ऐं व्यापकमण्डला
इति पुष्पैः समभ्यर्च्य अर्घान्नसलिलपूर्णं सक्षीरोपादिममय्यमं सगन्धकुसुमं
पात्रं निधाय ऐं ह्रीं सौः श्रीमातङ्गीश्वरि इमं बलिं गृह्य गृह्यं हुं फट् स्वाहा,

नित्योत्सवः

सौः श्रीमातङ्गीश्वरि शरणागतं मां त्राहि त्राहि हुं फट् स्वाहा, ऐं ह्रीं सौः
क्षेत्रपालनाथ इमं वलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा;—इति मन्त्रान् क्रमेण पठन् देव्या
दक्षिणभागे वलित्रयं प्रदाय तत्त्वमुद्रास्पृष्टं क्षीरं बल्युपरि निःपिच्य, वामपार्श्वेषात्-
करास्फोटान् कुर्वाणः समुदञ्चितवक्तो नाराचमुद्रया वलिं भूतैः ग्राहयित्वा, पाणी
प्रक्षाल्य देव्यै प्रदक्षिणनतीः विधाय पुष्पाञ्जलिं समर्प्य जपेत् ॥

मातङ्गीश्वरीमन्त्रजपः

यथा—अस्य श्रीमातङ्गीश्वरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्त्युपये नमः—शिरसि ।
गायत्रीछन्दसे नमः—मुखे । श्रीमातङ्गीश्वरीदेवतायै नमः—हृदये । ऐं बीजाय नमः
—गुह्ये । सौः शक्तये नमः—पादयोः । ह्रीं कीलकाय नमः—नाभौ । मम
अभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः—इति करसम्पुटे न्यस्य मूलेन त्रिवर्षापकं कृत्वा
न्यासोक्तैरङ्गमन्त्रैः कराङ्गन्यासौ कृत्वा ध्यानम्—

मातङ्गीं भूपिताङ्गीं मधुमदमुदितां नीपमालाढ्यवेणीं

सद्गिणां शोणचेलं मृगमदतिलकामिन्दुरेखाऽवतंसाम् ।

कर्णोच्चच्छृण्वन्नां स्मितमधुरदृशा साधकस्येष्टदात्रीं

ध्यायेद्देवीं शुकाभां शुक्रमखिलकलारूपमस्याध्व पार्श्वे ॥

इति ध्यात्वा मनसा पञ्चधोपचर्य पुरधरणे कश्यमाणपूर्वोत्तराङ्गमन्त्रसहितं मूढं

श्रीक्रमोक्तेन विधिना यथाशक्ति जप्त्वा पुनः न्यासादि विधाय

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मल्लतं जपम् ।

सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥

इति देव्या वामहस्ते सामान्यार्च्यसालिलेन जपं समर्प्य स्तुधीत ॥

यथा—

मातङ्गीस्तुतिः

मातङ्गि मातरीशे मधुमदमथनाराधिते महामाये ।

मोहिनि मोहप्रनयिनि मन्मथमथनप्रिये नमस्तेऽस्तु ॥

स्तुतिषु तव देवि विधिरपि पिहितमतिर्भवति विहितमतिः ।
 तदपि तु भक्तिर्नामपि भवतीं स्तोतुं विभोभयति ॥
 यतिजनहृदयनिवासे वासववरदे वराङ्गि मातङ्गि ।
 वीणावाद्यविनोदिनि नारदगीते नमो देवि ॥
 देवि प्रसीद सुन्दरि पीनस्तनि कम्बुकण्ठि घनकेशि ।
 मातङ्गि विद्रुमोष्टि स्मितमुग्धाश्चम्ब मौक्तिकाभरणे ॥
 भरणे त्रिविष्टपस्य प्रभवसि तत एव भैरवी त्वमसि ।
 त्वद्भक्तिलभ्यविभवो भवति क्षुद्रोऽपि भुवनपतिः ॥
 पतितः कृपणो मूकोऽप्यम्ब भवत्याः प्रसादलेशेन ।
 पूज्यः सुभगो वाग्मी भवति जडधापि सर्वज्ञः ॥
 ज्ञानाम्बिके जगन्मयि निरञ्जने निलयशुद्धपदे ।
 निर्वाणरूपिणि शिवे त्रिपुरे शरणं प्रपन्नस्त्वाम् ॥
 त्वां मनसि क्षणमपि यो प्यायति मुक्तामणीवृतां श्यामाम् ।
 तस्य जगत्त्रितयेऽस्मिन् कास्ता ननु याः स्त्रियोऽसाध्याः ॥
 साध्याक्षरेण गर्भितपद्मनवन्यक्षराखिले मातः ।
 भगवति मातङ्गीश्वरि नमोऽस्तु तुभ्यं महादेवि ॥
 विद्याभरमुराकैज्रगुणकगन्धर्वयक्षसिद्धरैः ।
 आराधने नमस्ते प्रसीद कृपयैव मातङ्गि ॥
 वीणावादनपेडानर्तदलायुस्त्रगितशामकुचम् ।
 श्यामलकोमलगात्र पाटलनयन स्मरामि महः ॥
 अबतृत्पटितचूडीताडितआडीदलाशतशुद्धाम् ।
 वीणावादनपेडावम्पितनिरम नन्नामि मातङ्गिन् ॥
 मान्ना मरुतदशामा मातङ्गी मदराडिनी ।
 फटाक्षयु कल्याणी कदम्बनरतिनी ॥
 धामे बिस्तृतिशाडिनि स्तनतटे निम्पस्त्रनीम्बनुत्त
 तनी तारभिराभिर्गोमसकटैरुस्त्राटनन्ती नर्तुः ।

अर्धोन्मीलदपाङ्गमंसवलितप्रीवं मुखं विभ्रती
 माया काचन मोहिनी विजयते मातङ्गकन्यामयी ॥
 वीणावाद्यविनोद'गीतनिरतां लीलाशुकोल्लासिनीं
 विम्बोष्ठीं नवयावकार्द्रचरणामाकीर्णकेशा'लिकाम् ।
 ह्यार्ङ्गीं सितशङ्खकुण्डलधरां शृङ्गारवेनोज्ज्वलां
 मातङ्गीं प्रणतोऽस्मि सुस्मितमुखीं देवीं शुकस्यामलाम् ॥
 स्वस्तं केसरदामभिः वलयितं धम्मिल्लमाविभ्रती
 ताडीपत्रपुटान्तरेषु घटितैस्ताटङ्किनी मौक्तिकैः ।
 मूढे कल्पतरोर्महामणिमये सिंहासने मोहिनी
 काचित् गायनदेवता विजयते वीणावती वासना ॥
 वेणीमूलविराजितेन्दुशकलां वीणानिनादप्रियां
 क्षोणीपाळमुरेन्द्रपन्नगवरैराराधिताब्जप्रिद्वयाम् ।
 एणीचद्रललोचनां मुवसनां वाणीं पुराणोज्ज्वलां
 श्रोणीभारमण्डलसामनिमियां [पः] पश्यामि विश्वेश्वरीम् ॥
 मातङ्गीस्तुतिरियमन्वहं प्रजप्ता
 जन्तूनां धितरति कौशळं क्रियामु ।
 याम्निचं श्रियमधिकं च गानशक्ति
 सौभाग्यं नृपतिभिरर्चनीयतां च ॥
 इति मन्त्रज्ञोरो वृत्तीयपट्टलीयो मातङ्गीस्तवः सङ्पूर्णः ॥

सुपासितोपूजाऽऽदि श्रेष्ठत्वम्

अथ स्वामयं शक्तिनाट्य श्रीकनोक्तनेन पञ्चमधरं धानुस्वर्गं
 उपेन्द्रपुरीष्टव ह्रीःप्रतिपत्कारिकमनेनं समारपेत् । ह्रीःप्रतिपत्ती मूत्रेण धरैण
 तत्पञ्चलोत्सवं विद्वेषः ॥

श्यामोपासकनियमाः

एतदुपासकस्यावश्यानुष्ठेयाः नियमाः यथा—

कदम्बतहं न छिन्यात् । वाचा 'काळीति पत्र नोच्चारयेत् । वीणावेणुवादन-
नर्तनगाथागोष्ठीषु प्रवर्तमानामु पराङ्मुखो न भवेत् । गायकान् न निन्यात् इति ॥

पुरश्चरणसंकल्पः

एवं नित्यसपर्यां निर्वर्तयन् पुरश्चरणमाचरेत् । तत्र जपहोमतर्पणब्राह्मणभोजना-
ख्याङ्गचतुष्टयसमष्टिरूपम् । तत्प्रकारस्तु—दीक्षाप्रकरणोक्तकाले श्रीगुरुर्वनुज्ञातो ब्राह्मणेः
स्वस्ति वाचयित्वा आचम्य प्राणानायम्य अमुकशर्मवर्मादिरहं श्यामामन्त्रसिद्धिकामो
लक्षसङ्ख्याकं जपं, प्रकृते कठियुगत्वात् तच्चतुर्गुणितं, तद्दशांशहवन-तद्दशांशतर्पण-
तद्दशांशब्राह्मणभोजनानि च करिष्ये इति सङ्कल्पयेत् । एवं तत्तन्मन्त्रेषु तत्र तत्र
प्रोक्तजपसङ्ख्याऽऽदिसङ्कल्पो ज्ञेयः ॥

मन्त्रजपः

अथ सति सम्भवे तन्तान्तरदृष्टेन विधिना ग्रामात् बहिः कोशे नगराथ
क्रोशद्वये क्षेत्रं परिगृहीयात् । अथवा समुद्रमहानदीतीरयोः पश्चिमाभिमुखदृष्ट-
शून्यशिवायतनयोः विष्णुगृहपुण्यक्षेत्रतीर्थारण्यपर्वतशिखराथपश्चिम्यमूळविक्रान्तिज-
गृहगोष्ठानां श्रीगुरुस्थेष्टदेवतासन्निभ्योधान्यतम देशमासाद्य दीपस्थानस्थिते
न्याप्रचर्ममृगाजिनचित्रकम्बलकुराकटरक्तपटपटवमनोर्गावग्रायन्यतमे आराने उपविश्य
विप्रानुस्वार्य प्राणानायम्य सङ्कल्प्य वक्ष्यमाणलक्षणया अशमात्रया वक्ष्यमाणसंस्कारेण
रक्षाक्षायन्यतमया वा मातृया पूर्वाङ्गन्तरूर्ध्वक प्रत्यह सद्व्रतमद्भ्याक मूत्रमन्त्रं
तद्दशांशान् उत्तराङ्गमन्त्राथ जप्त्वा पुनर्न्यासादिकं कुर्यात् । पूर्वाङ्गम् ॥ यथा—

* कमळिनीपदं—न.

* भोजनतर्पणसंख्यादि च करिष्ये इति संकल्पेन । ५१५५५ १००००,
तद्दशांशहोमसंख्या १००००, तद्दशांशतर्पणसंख्या १०००, तद्दशांशजपसंख्या १००,
तद्दशांशमांसवधसंख्या १० ॥ एवं—ब १.

* संख्याऽऽदिसंख्या—५१.

इदं च द्रव्यं इह इन्द्रियकामाग्निहोत्राङ्गदधिवन्नित्यं काम्यं च, ~~होत्र-
प्रवृत्त्यात्~~ । तिष्ठेः शान्त्या इत्यादिविधीनामन्यतः सिद्धहोमाग्रयणं, ~~होत्र-
प्रवृत्त्यात्~~ । तादृशप्रणयनाश्रयेणेव, फलायगुणविधिरूपत्वात्, सत्यां कामनायां अन्ते ~~होत्र-
प्रवृत्त्यात्~~ । इत्यन्तरेरपि वक्ष्यमाणैः कार्यैः, काम्यस्य नित्यबाधकत्वात् ॥

पुरश्चरणांगं तर्पणम्

ततो नद्यादौ चतुरस्रमण्डलं विधाय तत्र चिन्तिते श्यामाग्रयणे देवं नन्द्यन्न
पञ्चधा उपचर्य मुरभिलेन मुवर्णरजतताम्रादिपात्रगृहीतेन सलिलेन मूलान्ते श्रान्ताङ्ग-
श्वरीं तर्पयामीति होमदशांशं तर्पयेत् । सत्यानुकूल्ये जपस्थान एव वा पूजाचन्द्र-
तर्पयेत् । “तर्पणेऽपि तथैव श्यामसोऽन्ते पुनर्नमः” इति शक्तिसङ्गमतन्त्रोक्तं-
नमोन्तेष्वपि मन्त्रेषु पुनः नमस्तर्पयामीति प्रयोगः । तन्त्रान्तरानुसारिणो मार्जनपञ्चदश-
नमोयोजनं तत्रैवोक्तम् ॥

पुरश्चरणांगं भोजनम्

ततः तर्पणदशांशसङ्ख्याकानेतद्विद्यादीक्षितानलाभे यथासम्भवं तत्तन्मन्त्रदीक्षि-
तान्वा सदाचारान् प्रातः निमन्त्रिताभ्यञ्जितान् ब्राह्मणान् मुवासिनीः कुमारीषु
यथाविभव यस्त्रगन्धादिभिः देवताधियाऽभ्यर्च्य मृष्टान्नेन भोजितान् ताम्बूलदक्षिणा-
परितोषितान् प्रदक्षिणीकृतनमस्कृतानाशिषो भृष्टीत्या विसृजेत् ॥

तर्पणदशांशब्राह्मणभोजनाशक्तौ तु तर्पणोक्तवज्रले देवतामावाप्त उपचर्य च
मूयन्ते आमानमभिरिद्यामि नमः इति कुम्भमुद्रया तर्पणदशांशवारं मूर्धन्यभिषेकं वा
कुशैः मार्जेन वा विधाय तदशांशं ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥

इत्येकः पञ्च । प्रतिउद्धान्ते सर्वान्ते वा होनादि कुर्यादित्यर्थः ॥

होमप्रत्यास्रायो जपः

होमाशक्तौ ब्राह्मणानां पुरश्चरणाङ्गसङ्ख्यादिगुणो जप इति मुख्यः पञ्चः ।
होमसङ्ख्यादिगुणो जप इति शौचः । दक्षिणादीन् यजमानां दिगुणादित्यर्थः । एवं

नित्योत्सवः

तर्पणेऽपि । द्विजभक्तस्य शूद्रस्य द्विजस्त्रीणामपि होमप्रतिनिधिः जप एव । ते
होने तु नाधिकारः । ब्राह्मणभोजनस्य तु न कापि प्रतिनिधिः ॥

आरब्धस्य पुरधरणवादेः आदौचेऽपि कार्यत्वम्

इदं च पुरधरणमारब्धं सत् आशौचमाप्तावपि कार्यम् । नित्यार्चनादि च ।
तदुक्तम्—

जपो देवार्चनविधिः कार्यो दीक्षान्धितर्नरेः ।

नास्ति प्रापं नतस्त्रेयां सूतकं वा यताःनगान् ॥

इति देवीयामते ।

भूतके सूतकं च । नित्यं विष्णुमपस्य च ।

कामुद्राभस्य विद्वेन्द्र सगः शुद्धिः प्रजापते ॥

इति भारद्वाजग्रंथे ।

किञ्चित्पर्यन्ते शीघ्रं यस्य चाग्निनिवृद्धः

इति ताम्पेयी वेद ।

नक्त्यदिनैश्च च सति नोक्ति शूद्रकम् ॥

इति विष्णुग्रन्थे ।

न कर्तव्यं शूद्रैर्देवं पुस्तकमुपेयात् ।

इति शूद्रविष्णुग्रन्थे ।

न कर्तव्यं शूद्रैर्देवं पुस्तकमुपेयात् ।

इति शूद्रविष्णुग्रन्थे ।

न कर्तव्यं शूद्रैर्देवं पुस्तकमुपेयात् ।

इति शूद्रविष्णुग्रन्थे ।

न कर्तव्यं शूद्रैर्देवं पुस्तकमुपेयात् ।

नचैवापूज्य भुञ्जीत शिवलिङ्गं महेश्वरि ।

सूतके मृतके चापि न त्याज्यं शिवपूजनम् ॥

इति लिङ्गपुराणे । परारारोऽपि—

उपासने तु विप्राणामङ्गशुद्धिः प्रजायते ॥

इति च । एवमन्यान्यपि वचनापि तन्त्रान्तरेषु बहुलं उपलभ्यमानानि विस्तरभयान्नेह लिखितानि । सूतकादौ नैमित्तिककाम्ययोः अनधिकार एव, साधकस्य प्रतिबन्धक-
बाहुल्यात् ॥

सिद्धिपर्यन्तं पुरश्चरणस्य अभ्यासः

एकेन पुरश्चरणेन यदि न मन्त्रः सिध्यति तदा तस्य द्वयं त्रयं वा कुर्यात् ।
तथाऽपि तदसिद्धौ सिद्धिकारकाः प्रयोगाः ग्रन्थान्तरोक्ताः प्राक्षाः । सिद्धिसूचकानि
चान्यतो ज्ञेयानि, इह तु विस्तरभयान्न लिखितानि ॥

सम्यक्सिद्धैकमन्त्रस्य पञ्चाङ्गोपासनेन हि ।

सर्वे मन्त्राश्च सिध्यन्ति तद्यभावात् कुलेश्वरि ॥

सम्यक्सिद्धैकमन्त्रस्य नासाध्यं विद्यते क्वचित् ।

बहुमन्त्रवतः पुंसः का कथा शिव एव सः ॥

अतः पुरश्चरणभावश्यकमिति ॥

पुरश्चरणप्रत्याज्ञायाः

अथ सङ्गत्या पुरश्चरणप्रत्याज्ञायाः कतिचित् लिख्यन्ते । शशिसूर्योपरागे
त्रिरात्रमेकरात्रं वा पूर्वमुपोष्य एकभुक्तं वा विधाय ग्रहणारम्भे घटिकाधार्त् प्रागेव
श्रातः समुद्रगाया नद्यास्तटाकादेर्यो नाभिमात्रजटे तिष्ठन्, अशक्तौ तु तट
एवोपविष्टः, आचम्य, प्राणानाचम्य, देशराज्यं सर्व्वः, ॐ अमुकराशिगते सवितरि
सोमस्य सूर्यस्य वा प्ररणे अनुकृगोत्रोऽमुक.शर्मन्नादिरहं अमुकविद्यासिद्धिकामः
स्पर्शमारम्य विमुक्तिपर्यन्तं जपं करिष्ये इति सङ्कल्प्य जपेत् । ततोऽपरेषुः

^१ भक्तं—४२, ४३.

कूर्मचक्रलक्षणम्

समीकृते भूतले प्राक्प्रत्यगायताः दक्षिणोत्तरायताश्चतस्रश्चतस्रो रेखा विलिख्य नवकोष्ठानि विधाय तत्र पूर्वादिप्रादक्षिण्यक्रमेण अष्टसु कोष्ठेषु क च ट त प य श ङा-
ख्यान् अष्टवर्गान् अकारादिस्वरद्वयं च विलिख्य मध्यकोष्ठे श्रीकारं विलिखेत् । इदं
च कूर्मचक्रं क्षेत्रग्रामगृहभेदात् त्रिविधम् । तत्र क्षेत्रग्रामयोः तत्तन्नामायक्षरयुक्तं कोष्ठं
मुखं कूर्मस्य । एतदेवास्य दीपस्थानमुच्यते । गृहे तु गृहपतेः नामायक्षरयुक् कोष्ठं
मुखम् । तत्पार्श्वद्वयगतकोष्ठद्वयं हस्ती । तदधःस्थितं कुक्षिः । तदधःस्थिता तु
चरणौ । कुक्षिमध्यगतं कोष्ठं पृष्ठम् । चरणमध्यगतं कोष्ठं च पुच्छं इति विवेकः ।
एवमुक्तप्रकारस्य क्षेत्रादौ विभावितस्य कूर्मस्य मुखे पृष्ठे वा जपे होमे च
सर्वार्थसिद्धिः । करयोः तनौ कोष्ठान्तराणि अनुपयुक्तानीति । कूर्मचक्रानावश्यकतोक्ता
कतिपयेषु स्थलेषु । यथा—

कुरुक्षेत्रे प्रयागे च गङ्गासागरसङ्गमे ।

महाकाले च काश्यां च दीपस्थानं न चिन्तयेत् ॥

इति । दीपस्थानोपलक्षितत्वात् कूर्मचक्रमपि दीपस्थानमित्युक्तम् । इह चक्रे
चोक्तेषु कोष्ठेषु रिपुस्थानं विचिन्त्य तस्यागपूर्वक्रमवशिष्टं मित्रस्थानमुपादेयम् ।
अरिमित्रविचारो यथा—

अद्वयस्य टकारेण टकारस्यापि तेन च ।

लृद्वयस्य पकारेण पकारस्यापि तेन च ॥

आद्वयस्य पकारेण षकारस्यायुगेन च ।

जकारस्य टकारेण क्षकारस्य खकारतः ॥

उकारस्य लकारेण णकारस्य धकारतः ।

भकारस्य तु रेफेण यकारस्य सकारतः ॥

अरित्वमेवा वर्णानां अन्येषां मित्रभावना ॥ इति ॥

मालासंस्कारः

ताध अकारादिअकारान्तानातृषावर्गैरद्राशुभुभृजकृत्तमागित्यस्तटि कप्रवाद्यस्वर्ग-
रजतराद्धरक्तचन्दनोपादानकर्नाणिपुत्रजीवपद्मबीजकुसुमन्यादिमध्यः ॥

स्वाहा ॥—इति मन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, उपास्यदेवतां तत्रावाह्य, मूलेन पञ्चधा उपचर्य, तेन मातृकावर्णेश्वाभिमन्त्र्य, होमप्रकरणोक्तरीत्या अग्निमुखं विधाय, मूलेन अष्टोत्तरशताभ्याहुतीः हुत्वा, सम्पाताज्यं मालायां निक्षिपेत् । अशक्तौ तु होमसङ्ख्याद्विगुणं मूलमन्त्राभिमन्त्रणं इति ॥

मालाऽन्तरसंस्कारः

अथान्यासां मालानां संस्कारः—उक्तरीत्या प्रथितां मालां प्रासादमन्त्रेण पञ्चगव्ये क्षणं निक्षिप्य, तस्माद्गृह्य, कुरोदकेन प्रक्षाल्य, चन्दनादिरूपलिप्य, पात्रे निधाय, पञ्चायतनदेवताः तत्तन्मन्त्रेणावाह्य, पञ्चधोपचर्य, प्रासादेन शतवारानभिमन्त्र्य, सूर्यादीन् प्रहानिन्द्रादीन् दिक्पालांश्च तत्तन्मन्त्रेण सम्पूज्य, सघृतैः तिष्ठे. यथाशक्तिवारं मूलेनाग्री जुहुयात् । अशक्तौ अभिमन्त्रयेत् । ततो यथाविभवं काञ्चनं गुरवे दक्षिणां दत्त्वा, ब्राह्मणांश्च भोजयेत् । इति ॥

संस्कारान्तरं यथा—सूत्रं मणींश्च पञ्चगव्ये दिनत्रयं संस्थाप्य, चतुर्थदिने उद्धृत्य, अस्त्रेण प्रक्षाल्य, हृन्मन्त्रेण स्वेष्टमन्त्रेण वा प्रत्येकं आवृत्तेन मणीनन्वोन्यासि-
मुखं प्रथयित्वा, स्थण्डिले स्वेष्टदेवतासपर्यामण्डलं विधाय, तत्र तामन्वयं, मूलमष्टोत्तरशतसङ्ख्यां जप्त्वा, तत्तत्कल्पोक्तपुरश्चरणहोमद्रव्येण घृतेन वा यथाराक्तिं हुत्वा, मण्डले मालां निधाय, तस्यामष्टमन्त्र-मूलमन्त्र-षडङ्गमन्त्रांश्च विन्यस्य, तां स्वेष्टदेवतारूपां विभाव्य, सम्पूज्य, सर्वभूतवलिं दत्त्वा, आचार्यं दक्षिणाऽऽदिभिः परितोष्य ब्राह्मणान् भोजयेदिति ॥

उक्तसंस्कारविधिः त्रैवर्णिकविषयः । स्त्रीशूद्राणां तु उपास्यमूलमन्त्रेणैव सर्वं कार्यम् ॥

यन्मन्त्रजपार्थं या माला संस्कृता तथा तस्यैव जपः कार्यो नान्यस्य । अत्र च विशेषः—

शिवमन्त्रेण संप्रप्य शक्तिमन्त्रं जपेदपि ।

शक्तिमन्त्रेण संप्रप्य शिवमन्त्रं जपेच्छिवे ॥

ध्रुवेण मातृकानिर्वा प्रप्यन्ते मणयो यदि ।

तदा सर्वेऽपि जप्तव्या मनवो मालया तथा ॥ इति ॥

ध्रुवः प्रणवः ॥

नित्योत्सवः

देवताभेदेन सूत्रभेदः

देवताभेदेन सूत्रभेद उक्तः । यथा—देव्या रक्तपट्टसूत्रम् । शिवस्योर्णां
श्वेतं वा वल्कलं वा । सूर्यगणेशयोः कार्पासजम् । तच्च मुवासिन्या ब्राह्मण्य
कर्तितम् । स्वसमानजातीययोपिःकर्तितं वा । त्रिगुणं त्रिगुर्णाकृतम् । यत्र
ब्राह्मणीकर्तितं न मिलति तत्र वर्णान्तरीयकेवलमुवासिनीकर्तितं ग्राह्यम् । अन्येषु सूत्रेषु
लैच्छिकं गुणस्यौल्यं मानं च ॥

मालासंस्कारकालः

मालासंस्कारकालस्तु—विष्णोः द्वादश्यां पूर्वाह्नः । शक्तेः अष्टमीनवमी-
चतुर्दशीनां रात्रिः । शिवस्य त्रयोदशीदिवा । सूर्यस्य सप्तमीदिवा इति ॥

मालाभेदेन फलभेदः

मालाभेदेन फलभेदो यथा—मारुकाऽक्षमाला क्षिप्रं मन्त्रसिद्धयै । रुद्राक्ष-
माला मोक्षाय । मौक्तिकमाणिक्यमय्यौ साम्राज्याय । स्फाटिकी सर्वेभ्यः कामेभ्यः ।
पुत्रजीवमयी सम्पत्तारस्वतावास्त्यै । पद्मबीजमयी श्रीयशोभ्याम् । रक्तचन्दनमयी
वश्यभोगाभ्याम् । इत्यन्यासामपि फलानि ग्रन्थान्तरेषु द्रष्टव्यानि ॥

सूत्रजर्णतादौ प्रायश्चित्तम्

सूत्रे जीर्णे नवेन ग्रथयित्वा मूलेनाष्टोत्तरशतवारानमिमन्त्रयेत् । जपसमये
प्रमादात् करगलितायां छिन्नायां वा मालायां निषिद्धस्पर्शे वा अष्टोत्तरशतमूलमन्त्रजपः
प्रायश्चित्तम् ॥

जपभेदाः

अथ जपभेदाः । ज्ञानार्णवे—

निगदेनोर्पांशुना वा मानसेनाथवा जपेत् ।
निगदः परमेष्ठानि स्पष्टं वाचा निगद्यते ॥
अन्यकथं सुन्दरकत्र उर्पांशुः परिकीर्तितः ।
मानसस्तु यद्यतोदे चित्तेनान्तररूपवान् ॥

निगदेन तु यज्जप्तं लक्षमात्रं वरानने ।
 उपांशुस्मरणेनैव तुल्यं भवति शैलजे ॥
 उपांशुलक्षमात्रं तु यज्जप्तं कमलक्षणे ।
 मानसस्मरणेनैव तुल्यमेकेन मुन्दरि ॥ इति ॥

स्वच्छन्दतन्त्रसारे तु—

जपस्तु पङ्क्तिः प्रोक्तस्तत्प्रकारोऽयमुच्यते ।
 वाचिकं मानसं चैव योगिकं योगवाचिकम् ॥
 योगमानसिकं चैव वाङ्मानसिकयौगिकम् ।
 वाचा केवलयोग्यं मन्त्रं 'देवी विभाव्य च ॥
 जपेद्यत् परमेशानि वाचिकं तत्प्रकीर्तितम् ।
 देव्या रूपं च सद्बिन्द्य सावधानेन चेतसा ॥
 मन्त्रस्याप्यनुसन्धानं मानसं परिकीर्तितम् ।
 त्रिस्थानेन त्रिवीजानि क्रमात् सद्बिन्द्य मार्गतः ॥
 आरोहो यौगिकं प्रोक्तमुच्यते योगवाचिकम् ।
 लक्ष्ये मनः समायोज्य वाचा मन्त्रं जपेच्छिवे ॥
 योगवाचिकमेतत् स्याद्योगमानसिकं शृणु ।
 लक्ष्येण मानसं पूर्वं सयोज्य मनसा जपम् ॥
 योगमानसिकं विद्यादधान्यदपि चोच्यते ।
 मनसाऽपि जपेन्मन्त्रं वीजानारोहणक्रमात् ॥
 वाङ्मानसिकयोगाख्यं जपमेतदनुत्तमम् ।
 वाचिकेन जपेनैव केवला वाक् प्रवर्तते ॥
 मानसाच्छिष्यमाप्नोति यौगिकाद्योगसिद्धयः ।
 वाङ्मानसजपेनैव वाङ्ज्ञानैश्वर्यसिद्धयः ॥
 भवन्ति परमेशानि योगमानसिकेन तु ।
 अणिमादीनि चान्यानि सर्वाणि उभते ध्रुवम् ॥

देवताभेदेन सूत्रभेदः

देवताभेदेन सूत्रभेद उक्तः । यथा—देव्या रक्तपट्टसूत्रम् । शिवस्योर्णामं
श्वेतं वा क्लृप्तं वा । सूर्यगणेशयोः कापीसजम् । तच्च मुवासिन्या ब्राह्मण्या
कार्तितम् । स्वसमानजातीययोधिकर्तितं वा । त्रिगुणं त्रिगुणीकृतम् । यत्र
ब्राह्मणीकर्तितं न मिलति तत्र वर्णान्तरीयकेवलमुवासिनीकर्तितं ब्राह्मम् । अन्येषु सूत्रेषु
त्वष्टिकं गुणस्थौल्यं मानं च ॥

मालासंस्कारकालः

मालासंस्कारकालस्तु—विष्णोः द्वादश्यां पूर्वाह्णः । शक्तेः अष्टमीनवमी-
चतुर्दशीनां रात्रिः । शिवस्य त्रयोदशीदिवा । सूर्यस्य सप्तमीदिवा इति ॥

मालाभेदेन फलभेदः

मालाभेदेन फलभेदो यथा—मातृकाऽक्षमाला क्षिप्रं मन्त्रसिद्धये । रुद्राक्ष-
माला मोक्षाय । मौक्तिकमाणिक्यमय्यां साम्राज्याय । स्फाटिकी सर्वेभ्यः कामेभ्यः ।
पुत्रजीवमयी सम्पत्सारस्वतावात्यै । पद्मबीजमयी श्रीयशोन्याम् । रक्तचन्दनमयी
वश्यभोगाम्याम् । इत्यन्यासामपि फलानि ग्रन्थान्तरेषु द्रष्टव्यानि ॥

सूत्रजीर्णतादौ प्रायश्चित्तम्

सूत्रे जीर्णे नवेन प्रथयित्वा मूलेनाद्योत्तरशतवारानभिमन्त्रयेत् । जपसमये
प्रमादात् करगळितायां छिन्नायां वा मालायां निषिद्धस्पर्शे वा अद्योत्तरशतमूळमन्त्रजपः
प्रायश्चित्तम् ॥

जपभेदाः

अथ जपभेदाः । ज्ञानार्णवे—

निगदेनोपांशुना वा मानसेनाथवा जपेत् ।

निगदः परमेशानि स्पष्टं वाचा निगद्यते ॥

अव्यक्तञ्च स्फुरद्भक्त उपांशुः परिकीर्तितः ।

मानसस्तु वरारोहे चित्तेनान्तररूपवान् ॥

आदित्ये तु भवेच्छोको बुधे चैव धनागमः ।
 शुके लाभं विजानीयाच्छनी पीडा न संशयः ॥
 चन्द्रे लाभो महान् देवि भौमे चैव तु बन्धनम् ।
 गुरुणा च धनप्राप्तिः राहो हानिस्तथैव च ॥
 केतुना जायते मृत्युः फलमेवं महेश्वरि ।
 क्रूरहोमस्तथा देवि क्रूरग्रहमुखो भवेत् ॥ इति ॥

सूर्यं सूर्याक्रान्तं नक्षत्रं, चन्द्रं तद्विवसनक्षत्रम् । दापयेत् सूर्यादिभ्यः इति शेषः ।
 सूर्यनक्षत्रादिचन्द्रनक्षत्रपर्यन्तं नक्षत्राणां त्रयं त्रयं सूर्यादिस्वामिकमित्यर्थः । क्रूरहोमो
 मारणोच्चाटनादिकलकः । शेषे सुगमम् । एवं बहिर्स्थितिं प्रहांध विचार्य, सौम्यहोमः
 सौम्यग्रहेषु क्रूरश्च क्रूरग्रहेषु कार्यः ॥

कुण्डस्थण्डिलयोःपरिमाणम्

तत्र एकोनपञ्चाशत्सङ्ख्याकाहुतिपर्यन्तं स्थण्डिलमेव । तच्च अष्टादशङ्गुल-
 प्रमाणं परितः अङ्गुलैः ततम् । अग्रे कुण्डेन सह विकल्पोऽशक्तिशक्तिभ्यां
 व्यवस्थितिः । पञ्चाशदादिनवनवतिसङ्ख्याकाहुतिपर्यन्तं मुष्टिमात्रम् । मुष्टिः अरन्निः ।
 शतादिनवनवस्यधिकनवशालाहुतिपर्यन्तं अरन्निमित्तम् । निष्कनिष्टमुष्टिर्हस्तोऽरन्निः ।
 सहस्रादिहोमे हस्तमात्रम् । अयुतादौ द्विहस्तम् । लक्षादौ चतुर्हस्तम् । दशलक्षादौ
 षड्दस्तम् । कोटिहोमादौ अष्टहस्तं दशहस्तं वा । चतुर्विंशत्यङ्गुलैः हस्तः । अङ्गुलं तु
 त्रिंशद्भिर्होमाद्यव्ययप्रमाणं स्वमध्यमामप्यपर्यमितं वा ज्ञेयम् । मुष्ट्या वा चतुरङ्गुलानि ।
 अर्धयवोनचतुस्त्रिंशत्तङ्गुलैः द्विहस्तम् । सार्धयवत्वारिंशत्तङ्गुलैः अष्टहस्तम् । अष्टयवत्वारिंशत्तङ्गुलैः
 चतुर्हस्तम् । पादोनचतुःपञ्चाशत्तङ्गुलैः षड्दस्तम् । पादोनकोनपञ्चाशत्तङ्गुलैः षड्दस्तम् ।
 सार्धत्रिंशत्तङ्गुलैः अष्टहस्तम् । अष्टयवत्वारिंशत्तङ्गुलैः अष्टहस्तम् । द्विसप्तत्या नवहस्तम् ।
 षट्सप्तत्या दशहस्तं कुण्डं स्थण्डिलं वा भवति । कुण्डाङ्गुलानां व्यासजातनाभि-
 कण्ठमेखलायोर्नाना सम्पद्धान एव कुण्डं युक्तम् । अन्यथा असन्तमनिष्टम् ।
 स्थण्डिलं चतुरस्रमद्गुणैः चतुरङ्गुलैः चतुरङ्गुलैः च । स्थण्डिलग्रहोमे तत्परिमाण-
 स्थापयामीत्येतेषु परिमाणमपि प्राप्नु ॥

वाङ्मानसिकयोगाख्यजपेन परमेश्वरि ।
 वागाद्यकुलपर्यन्तमचिराल्लभते नरः ॥
 येन केन जपेनैव ह्रस्वदीर्घप्लुतक्रमात् ।
 जप्ता विद्याश्च मन्त्राश्च सर्वे सर्वार्थदायिनः ॥
 भवन्ति गुरुवक्त्रेण लब्धाः सर्वाङ्गसुन्दरि ।
 स्वयं निरीक्ष्य ये कोशं मन्त्रं विद्यामथापि वा ॥
 गृह्णीयुर्ये व्रजेयुस्ते सैरवं नरकं शिवे ।
 तस्मादास्तिक्यसंयुक्तः साधको देशिकाज्ञया ॥
 शिवागमान्निरीक्षेत नान्यथा वीरवन्दिते ॥ इति ॥

होमे बहिःस्थितिविचारः

तत्र मुहुर्तचिन्तामणौ—

सैका तिथिर्वारयुता कृताता शेषे गुणेऽप्ये भुवि बहिवासः ।
 सौख्याप होमः शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

अस्वार्थः—शुद्धप्रतिपदादिहोमदिनतद्ग्रह्यथैकमधिकमद्गमादित्यादिवारसङ्ख्यां च मेलयित्वा
 चतुर्भिर्हरणेन त्रये शिष्टे शून्ये वा बहिर्भुवि वसति । तदा होमः सुखाय
 भवति । एकस्मिन् द्वये वा शेषे क्रमादिवि पाताले च बहिवासः । तदानीं होमेन
 प्राणार्थनाशौ भवतः इति ॥

तत्रैव ग्रहविचारं रक्षयामहे—

तेषां स्थितिरुत्तं वक्ष्ये नशुक्लैश्च यथा स्थिताः ।
 सूर्यो युगो न्युक्तेषु शनिभङ्गो महानुतः ॥
 जीमे गृध्रं केतुध नरेने देवि मेघराः ।
 मूर्धन्यवन्दनं जान्ते गगनेषु महेश्वरि ॥
 क्रान्ति र्दक्षिण च ऋक्षानि यमिनादीनि 'शुक्लैश्च ।
 मूर्धन्येनैव तत्र देवि शून्ये परेषु यथास्मत् ॥

साम्राज्याय । मुष्टिमितैः लाजैः कन्यायै । नन्द्यावर्तैः कवित्वाय । ^१वञ्जुञ्जमल्लिङ्गा-
जातीपुत्रागैः भाग्याय । बन्धूकजपाकिञ्चुकमभूकैः ऐश्वर्याय । कदम्बैः वक्ष्याय । उवर्गैः
शुक्तिप्रमाणैः आकर्षणाय । शालितण्डुलैः अर्धमुष्टिमितैः धान्याय । कुङ्कुमगोरोचना-
दिभिः गुञ्जामितैः सौभाग्याय । पलारापुत्रैः तेजसे कपिलाघृतेन चोक्तमानेन । पुष्-
कुमुमैरुन्मादाय । ^२विपवृक्षनिम्बदलेष्मातकविभीतकसमिद्धिः दशाङ्गुलप्रमाणामिः
शत्रुनाशाय । निम्बतैलाक्तैः ^३उवर्णैः उक्तमानैः मारणाय । फाकोद्दकपक्षेणैकेकेन विद्वे-
णाय । तिलतैलाक्तैः मरीचैः विरात्या कासश्वासप्रशमनाय इति । पुष्पेषु स्यूलेकैकं,
अल्पानि द्वित्राणि इति वा विवेकः । एतानि द्रव्याणि काम्यजपाङ्गेषु होमेषु तत्तत्र-
दशांशसङ्ख्याकानि । प्राधान्येन होमे तु सङ्ख्याऽनुक्तौ सहस्रसङ्ख्याकानि । इह च
प्रथमं अभीष्टदेवतायै विज्ञाप्य अमुककर्मसिद्धयर्थं एतावदाहुतीः करिष्यामीति सङ्ख्य-
येत् । कर्पस्तु दशगुञ्जामितमापरोडशकप्रमाण । शुक्तिः कर्पद्वयम् । मुष्टिस्तु पञ्च ॥

पुरश्चरणाकाले विहितानि

मनःस्थैर्यसौचमौनमन्तार्थचिन्तननिर्वेदश्रद्धोत्साहक्रोधभावसन्तोषेन्द्रियनिष्कलङ्क-
गुरुप्रणतिमुगन्धामलकजानमुवसनमुरभिञ्जानुलेपनमप्यत्रवर्जपलाशपत्रावलिमितैः कर्ण-
जनप्रक्षाञ्चितदर्भास्तार्णधीनवस्त्रशयनत्रिवणयानादीनि । अक्षती तु २२.
ज्ञानमात्रम् ॥

निषिद्धानि

अप्रियानृतभाषणकाव्यविर्भावसार्थस्तुद्विजापाकननप्रतिमहादीशिनस्त्रीशूद्रपतितन्य-
स्तितवत्संभाषणबहुकर्मठिनवस्त्रधारणसाम्प्रकर्माविहितकर्मशस्त्रभाजनससङ्गोष्णत्रयज्ञान .
पाञ्चुबोष्णीपधारणप्राणिहिंसापादुकासानशय्याऽऽग्नेहननप्रत्युशरदिनकरणादीनि कनि-
भोजनं च ॥

भोग्यानि

शुद्धैर्विधानं हेमन्तनीचरसङ्गुर्तुष्यं पशुः गृहानवदताः शुद्धवर्जितमेषुं
कृष्णतिग्मुद्रवत्पापकन्दविशेषनारिषेत् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
रगन्धविपरीतीवीर्यनाशदांनि ॥

नित्यांस्तस्यः

अभोज्यानि

गुडकृत्रिमलवणपर्युषितनिस्रंहर्काटादिदूषितकाजिकगृजनविल्यकरजलमुनमृणाञ्ज-
कोद्रवर्तलपकमायमसूरचणकगोधूमदंवन्यादीनि ॥

भोजनपर्यायः

स्वेषदेवतायै निवेदितं सव्यजनमन्नं मूलेन प्रोक्ष्य सप्तवारं प्रतिद्रव्यमभिमन्त्र्य
अश्रीयात् । उदकं द्वात्रिंशद्द्वारं मूलाभिमन्त्रितं पिबेत् ॥

जपादिसमय आवश्यकोपाधां शुचां देशे तं निवर्त्य ज्ञात्वा शेषं समापयेत् ।
अशक्तौ तु मन्त्रभस्मान्यतरस्नानवस्त्रपरिवर्तने केवञ्चं कुर्यादिति ॥

इत्थं कृतपुरश्चरणः सिद्धमनुः देवताप्रसादसम्पन्नः स्वातन्त्र्येणोपास्तौ
श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनपरः सति कामे काम्यमनुतिष्ठन् पूर्णमनोरथः सुखी
विहरेदिति शिवम् ॥

इति श्रीभाषुरानन्दनाथचरणारविन्दमिडिन्दायमानमानधेनोमानन्दनाथेन निर्मिते
अभिनवे कल्पसूत्रानुसारिणि नित्योत्सवनिबन्धे श्यामाक्रमनिरूपणं
नाम प्रौढोल्लासधतुर्यः समाप्तः ॥

विधि वि-
कीर्तयं दं
अनाहतास

तदन्तोद्धासः पञ्चमः—दण्डनीक्रमः

उपोद्घातः

नत्वा श्रीभामुरानन्दनाथपादान्मुजद्वयम् ।
तनोत्युमानन्दनाथः तदन्तोद्धासमद्भुतम् ॥
अत्र सचिन्महाराज्ञीदण्डनाथाक्रमः स्मृतः ।
दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहो यस्या वशवदो ॥
प्रसाय सचिन्वेशानी पञ्चमीक्रममाचरेत् ।
वाग्लोमुपक्रमा यत्र सर्वाङ्गमनवो मताः ॥
दीक्षाविधिपरिहापेक्ष्यः आरम्भोद्धास ईक्ष्यताम् ।
सन्ध्या तु तान्त्रिकी न स्यात् सूत्रकाररसूत्रणात् ॥
निशीथे किं तु कुर्वीत बालया प्रातराह्निकम् ।
तस्याः खल्विष्टमन्त्रात् प्रागुपदेष्टव्यता यतः ॥

काल्यकृत्यं आह्निकं च

साधकस्तावन्निशीथे प्रबुद्धः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण श्रीगुरुध्यानादिप्राणायामान्तं
विधिं विदध्यात् । तत्र च श्रीगुरुपादुकायां 'आदौ त्रितारीस्थाने वाक् ग्लौं इति
बीजद्वयं योज्यम् । ततो हृदयपरमाकाशे स्फुरतः अखण्डानन्ददायिनः परसंवित्परिणतेः
अनाहतस्य नादस्य अनुसन्धानेन भस्मितनिखिलकश्मलो मूलं मनसा दशवारमावर्त्य
उत्थाय निर्धर्तित्वावश्यको गृह एव वारुण-मानव-भास्मनस्त्रानेध्वन्यतमं कुर्यात् ।
वारुणे मूलेन त्रिरुदकाञ्जलिदानं शिरसि, त्रिराचमनं, त्रिः प्रोक्षणं च विदध्यात् ।

^१इह ललिताङ्गत्वेन चाराद्या निशीथोपास्तावाह्निकं दिवा सपर्यां चागुष्ठैरेव । इत्यधिकः—
धी, अ १.

मान्तभासनगाने स्मृत्युक्तं एव । अथ जाम्बी पीते परिधाय विभूतपुङ्गुः मूलेन
त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सट्टदृगसृज्य चक्षुषी नासिके ध्रौत्रं अंसं नासिं हृदयं
शिरसावमृशेत् ॥

यागमन्दिच्छपेयः

एवं त्रिराचम्य यागमन्दिनात्ताप गोनयनोपलितद्वारस्थण्डिलं द्वारस्य दक्ष-
यामोर्ध्वभागेषु क्रमेण—

ऐं ग्लौं भद्रकाल्ये नमः, भैरवाय, उम्बोदराय नमः ॥

इति तिष्ठो द्वारदेवताः समर्च्य अन्तःप्रविष्टो रत्नचर्द्वीपुत्र्यमावावितानकादि-
भिरलङ्कृत्य यागमन्दिरं, ऐं ग्लौं रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः इति
पुण्याञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्या, सर्पासामग्रीं दक्षभागे निधाय, दीपानभितः
प्रज्वाल्य, गन्धमाल्यादिभिरामानमलङ्कृत्य, ताम्बूलसुरभिलवदनो जातीपत्रकल-
उवङ्गैलार्कपूरारूपपत्रतिकाभोदितवदनो वा प्रसन्नमनाः स्वास्तीर्णं ऊर्णांमृदुनि शुचिनि
वाठान्पवीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते मूलमन्त्रोक्षिते आसने ऐं ग्लौं आधारसक्ति-
कमलासनाय नमः इति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पद्मासनावन्यतमेनासनेनोपविश्य,
ऐं ग्लौं शिवादिश्रीगुरुभ्यो नमः ऐं ग्लौं समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रश्रीपादुकाभ्यो
नमः इति मूर्धनि बद्धाञ्जलिः स्ववामदक्षपार्श्वयोः क्रमेण गुरुपादुकाया श्रीगुरुं
महागणपतिमन्त्रेण च गणपतिं प्रणम्य ऐं ग्लौं ऐं ह्रः अस्त्राय फट् इति मन्त्रेणावृत्तेन
अङ्गुष्ठादिकरतलान्तं कूर्परयोः देहे च क्रमेण न्यासव्यापके कृत्वा स्वस्य
देवतैक्यं भावयन्,

ऐं ग्लौं अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥

इति मन्त्रं सकृदुच्चार्य युगपद्दामपाष्णिभूतलत्रिराघातकरास्फोटत्रितयकूरदृष्टयबलोकनपूर्वकं
तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत् । तालत्रयं नाम
दक्षमध्यमातर्जनीभ्यामधोमुखाभ्यां वामकरतले सशब्दमुपयुपरि त्रिरभिघातः ॥

^१ च व्यापकं कृत्वा—धी, अ.

^२ नश्यन्तु इति पाठः 'न'

प्राणायामः

अथ नमः इति अङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चार्य अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वा श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण भूतशुद्धिं आत्मप्राणप्रतिष्ठां च विधाय मूलेन प्राग्वत् विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा त्रिधा वा प्राणानायम्य ॥

द्वितारीन्यासः

तेजोरूपदेवीमयं भावयन्नात्मानं स्वदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचमामुञ्चेत् । तत्रादौ अं ऐं ग्लौं अं नमः शिरसि । आं ऐं ग्लौं आं नमः मुखवृत्ते । इत्यादिरीत्या क्षान्तमातृकासम्पुटितमुक्तबीजद्वयं मातृकास्थानेषु न्यसेत् ॥ इति द्वितारीन्यासः ॥

करपङ्गन्यासौ

ऐं ग्लौं अन्धे अन्धिनि नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥

२ रुन्धे रुन्धिनि नमः तर्जनीभ्यां नमः ॥

२ जम्भे जम्भिनि नमो मध्यमाभ्यां नमः ॥

२ मोहे मोहिनि नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥

२ स्तम्भे स्तम्भिनि नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥

इति पद्मभिः मन्त्रैः अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तं न्यस्य,

ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति यार्ताळि यार्ताळि हृदयाय नमः ॥

२ वाराहि वाराहि शिरसे स्वाहा ॥

२ बराहमुखि बराहमुखि शिखायै वरट् ॥

२ अन्धे अन्धिनि नमः कवचाय हुम् ॥

२ रुन्धे रुन्धिनि नमः नेत्रत्रयाय वीरट् ॥

२ जम्भे जम्भिनि नमः अष्टाय ऋट् ॥

इति मन्त्रैः हृदयादिषु न्यसेत् ॥ इति करपङ्गन्यासौ ॥

नेह करन्यासे अक्षमन्त्रः, तेन अक्षयजन्तुनामो न भवति ॥

अर्घ्यशोधनम्

ततः श्रीकर्मोक्तेन क्रमेण सामान्यविशेषार्घ्यं आसादयेत् । अत्र चोभयोरर्घ्ययोः प्रवेशरीत्या अन्तरन्तश्चतुरस्रादिमण्डलकरणम्, २ अं आत्मतत्त्वाय आधारशक्तये वौपट् इत्याधारस्थापनम्, २ उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वौपट् इति पात्रनिधानम्, २ मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नम इति शुद्धजलापूरणम्,

ऐं ग्लौ ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषसम्भृतम् ।

आपूरितं महापात्रं पीयूषसमावह ॥

इति क्षीरपूरणे मन्त्रान्तरं चोक्तम्, पडङ्गं, चतुर्नवतिमन्त्राभिमन्त्रणाम्भावः, मूलेन दशधा अभिमन्त्रणं च विशेषः । अथ विशेषार्घ्यविन्दुभिः सपर्यासामग्रीं पावयित्वा ॥

सप्तार्णमन्त्रपञ्चकन्यासः

अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादीन् पञ्चमन्त्रान् उक्तबीजद्वयादिकान् शिरोवदनहृदयगुह्यपादेषु न्यस्य,

अष्टखण्डन्यासः

मूलस्य खण्डैरष्टभिः वक्ष्यमाणेषु स्थानेषु न्यसेत् । तथा—

ऐं ग्लौ ऐं नमो भगवति वार्ताळि वार्ताळि वाराहि वाराहि वराहमुखि

२ अन्धे अन्धिनि नमः इत्याजानुकटि ॥

२ रुन्धे रुन्धिनि नमः इत्याकटिनामि ॥

२ जम्भे जम्भिनि नमः इत्यानाभिहृदयम् ॥

२ मोहे मोहिनि नमः इत्याहृदयकण्ठम् ॥

२ स्तम्भे स्तम्भिनि नमः इत्याकण्ठभ्रूमध्यम् ॥

२ सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्वबाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं

कुरु कुरु शीघ्रं वदयं नमः इत्याभ्रूमव्यललाटम् ॥

२ ऐं ग्लौ ठः ठः ठः ठः हुं अत्राय फट् इत्याललाटप्रक्षरन्ध्रं चेति ॥

मातृकास्थानेषु मूलपदन्यासः

ततो मूलमन्त्रस्य द्विचत्वारिंशत्पदानि 'मातृकास्थानेषु न्यसेत् । यथा—

ऐं ग्लौं ऐं नमः शिरसि, ग्लौं मुखवृत्ते, ऐं नेत्रयोः, नमो कर्णयोः, भगवति नासापुटयोः, वार्ताळि कपोलयोः, वार्ताळि ओष्ठयोः, वाराहि दन्तपङ्क्तयोः वाराहि 'ब्रह्मरन्ध्रे, वराहमुखि 'मुखान्तः, वराहमुखि दक्षदोर्मूले, अन्धे तन्मथ्यसन्धौ, अन्धिनि तन्मणिबन्धे, नमो तदङ्गुलिमूले, रुन्धे तदङ्गुल्यग्रे, रुन्धिनि वामदोर्मूले, नमो तन्मथ्यसन्धौ, जम्भे तन्मणिबन्धे, जम्भिनि तदङ्गुलिमूले, नमो तदङ्गुल्यग्रे, मोहे दक्षोरुमूले, मोहिनि तज्जानुनि, नमो तत्पादसन्धौ, स्तम्भे तदङ्गुलिमूले, स्ताम्भिनि तदङ्गुल्यग्रे, नमो वामोरुमूले, सर्वदुष्टप्रदुष्टानां वामजानुनि, सर्वेश तत्पादसन्धौ, सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं तदङ्गुलिमूले, कुरु तदङ्गुल्यग्रे, कुरु पार्श्वयोः, शीघ्रं पृष्ठे, वयं नाभौ, ऐं जठरे, ग्लौं हृदि, ठः दक्षकक्षे, ठः अपरगळे, ठः वामकक्षे, ठः हृदादिहस्तयोः, हु हृदादिपादयोः, अस्त्राय हृदादिपाद्यन्तम्, ऐं ग्लौं कट् नमः—हृदादिमूर्धान्तम् ॥ इति ॥

तत्त्वाष्टकन्यासः

तत ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्ताळि वार्ताळि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि इत्यादिरीत्या प्रागुक्तानां अष्टानां तण्डानां प्रत्येकमन्त्रे क्रमेण हा शक्यं क्षितितत्त्वाधिपतये नम, ह्रीं भवाय अभ्युतत्त्वाधिपतये नमः, ह्रू रूद्राय बहिनत्त्वाधिपतये नम, ह्रं उग्राय वायुतत्त्वाधिपतये नमः, ह्रौ ईशानाय भानुतत्त्वाधिपतये नम, ह्रौ महादेवाय भोमतत्त्वाधिपतये नमः, ह्रं पशुपतये यजमानतत्त्वाधिपतये नम, नीं भीमाय आकाशतत्त्वाधिपतये नमः, इति उक्तेषु पाशादिजन्त्रिच्युःदिषु ऋतुषु स्थानेषु तत्त्वाष्टक न्यसेत् ॥

*प्रागुक्तेषु मन्त्रेषु—४१, ४२, अ.

*यद्वाच्ये—धी.

*४-८—धी.

अर्घ्यशोधनम्

ततः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण सामान्यविशेषार्थे आसादयेत् । अत्र चोभयोरप्यर्घ्ययोः प्रवेशरीत्या अन्तरन्तश्चतुरस्रादिमण्डलकरणम्, २ अं आत्मतत्त्वाय आधारशक्तये वौषट् इत्याधारस्थापनम्, २ उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वौषट् इति पात्रनिधानम्, २ मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नम इति शुद्धजलापूरणम्,

ऐं ग्लौं ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भृतम् ।

आधुरितं महापात्रं पीयूषरसमावह ॥

इति क्षीरपूरणे मन्त्रान्तरं चोक्तम्, पङ्कजं, चतुर्नवतिमन्त्राभिमन्त्रणाभावः, मूलेन दशधा अभिमन्त्रणं च विशेषः । अथ विशेषार्घ्यविन्दुभिः सपर्यासान्ग्री पावयित्वा ॥

सप्तार्णमन्त्रपञ्चकन्यासः

अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादीन् पञ्चमन्त्रान् उक्तबीजद्वयादिकान् शिरोवदनहृदयगुह्यपादेषु न्यस्य,

अष्टखण्डन्यासः

मूढस्य खण्डैरष्टभिः वक्ष्यमाणेषु स्थानेषु न्यसेत् । तथा—

ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्ताळि वार्ताळि वाराहि वाराहि वराहमुखि

२ अन्धे अन्धिनि नमः इत्याजानुकाटि ॥

२ रुन्धे रुन्धिनि नमः इत्याकाटिनाभि ॥

२ जम्भे जम्भिनि नमः इत्यानामिहृदयम् ॥

२ मोहे मोहिनि नमः इत्याहृदयकण्ठम् ॥

२ स्तम्भे स्तम्भिनि नमः इत्याकण्ठभ्रूमध्यम् ॥

२ सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्वधाक्वित्तत्रुमुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं

कुरु कुरु शीघ्रं वरयं नमः इत्याभ्रूमध्यकण्ठम् ॥

२ ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः ठः अष्टाय फट् इत्याकण्ठाप्रहरणं चेति ॥

मातृकास्थानेषु मूलपदव्यासः

ततो मूलमन्त्रस्य द्विचत्वारिंशलपदानि 'मातृकास्थानेषु न्यसेत् । यथा—

ऐं ग्लौं ऐ नमः शिरसि, ग्लौं मुखवृत्ते, ऐ नेत्रयोः, नमो कर्णयोः, भगवति नासापुटयोः, वार्ताळि कपोलयोः, वार्ताळि ओष्ठयोः, वाराहि दन्तपङ्क्तयोः वाराहि 'ब्रह्मरन्ध्रे, वराहमुखि 'मुखान्तः, वराहमुखि दक्षदोर्मूले, अन्धे तन्मध्यसन्धी, अन्धिनि तन्मणिवन्धे, नमो तदङ्गुलिमूले, रुन्धे तदङ्गुल्यग्रे, रुन्धिनि वामदोर्मूले, नमो तन्मध्यसन्धी, जम्भे तन्मणिवन्धे, जम्भिनि तदङ्गुलिमूले, नमो तदङ्गुल्यग्रे, मोहे दक्षोरुमूले, मोहिनि तज्जानुनि, नमो तत्पादसन्धी, स्तम्भे तदङ्गुलिमूले, स्तम्भिनि तदङ्गुल्यग्रे, नमो वामोरुमूले, सर्वदुष्टप्रद्रुष्टानां वामजानुनि, सर्वेण तत्पादसन्धी, सर्ववाक्चित्त-चक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं तदङ्गुलिमूले, कुरु तदङ्गुल्यग्रे, कुरु पार्श्वयोः, शीघ्रं पृष्ठे, वर्यं नामौ, ऐं जठरे, ग्लौं हृदि, ठः दक्षकक्षे, ठः अपरगळे, ठः वामकक्षे, ठः हृदादिहस्तयोः, हु हृदादिपादयोः, अस्त्राय हृदादिपाद्यन्तम्, ऐं ग्लौं कट्टं नम — हृदादिमूर्धान्तम् ॥ इति ॥

तत्त्वाष्टकव्यासः

तत ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्ताळि वार्ताळि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि इत्यादिरीत्या प्रागुक्तानां अष्टानां राण्डानां प्रत्येकमन्त्रे क्रमेण ह्रा शर्वाय क्षितितत्त्वाधिपतये नम, ह्रीं भवाय अभ्युत्त्वाधिपतये नमः, ह्रूँ रुद्राय बह्मितत्त्वाधिपतये नम, ह्रँ उग्राय वायुतत्त्वाधिपतये नमः, ह्रौं ईशानाय भानुतत्त्वाधिपतये नम, ग्लौं महादेवाय सोमतत्त्वाधिपतये नमः, ह्रँ पशुपतये यजमानतत्त्वाधिपतये नम, नौ भीमाय आकाशतत्त्वाधिपतये नमः, इति उक्तेषु पादादिजान्विद्यादिषु अष्टसु स्थानेषु तत्त्वाष्टकं न्यसेत् ॥

*स्वर्गेषु २५ तेषु—४१, ४२, ४३.

*विष्णवे—धी.

*४२—धी.

यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा

अथ यन्त्रप्राणमूत्रेण कृत्वा स्वपुरतः श्वेतपटपादुख्यान्यतमे िसिद्धे
 उनिने वा मुग्धनेत्रजतजायचन्द्रनीलाश्री उगिते उन्कीर्णे वा रथिमनोहरे भूप्रप-
 सत्सङ्गततत्राद्यनसदस्यभारन्मन्त्रिकदृमये चते कुमुताप्रति विकीर्षे

ऐं श्रीं वार्ताद्विप-स्य प्राणा इह प्राणा , ऐं श्रीं वार्ताद्विप-स्य
 यंत्र इह भिन्न , ऐं श्रीं वार्ताद्विप-स्य संवेद्रियाणि, ऐं श्रीं वार्ताद्वि-
 प-स्य यश्मन-प्राणा इहापानु सगता ॥

इति यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा विरच्यते ॥

पौंड्रपूजा

ऐं श्रीं स्वर्गप्राणायाम नमः, सुराभ्यो, वसुदेवाय, वासुदेवाय,
 भा वरायुधाय, हृ हृत्स्यै, फे केशाय, न जलजनायाम नमः ॥ इति
 पौंड्रस्य मन्त्रे ॥

ऐं श्रीं नमः पञ्चम नमः, नमः जनाय, नमः वीर्याय, नमः ऐश्वर्याय
 नमः ॥ इति पञ्चम मन्त्रेऽर्चिस्तु ॥

ऐं श्रीं नमः जलजनाय नमः, नमः जलजनाय, नमः वीर्याय, नमः
 ऐश्वर्याय नमः ॥ इति जलजनायु स्तुति मन्त्रे ॥

ऐं श्रीं स्वर्गप्राणायाम नमः, सुराभ्यो, वसुदेवाय, वासुदेवाय,
 भा वरायुधाय, हृ हृत्स्यै, फे केशाय, नमः ॥ इति

मूर्तिकल्पनम्

तत्र २ लृ पा ई वराहमूर्तये ठः ठः ठः ठः हुं फट् ग्ळी ऐ इति
मूर्तिकरण्या विद्यया चक्रे देव्या मूर्तिं सङ्कल्प्य,

देवीध्यानम्

हृदि देवीं ध्यायेत् । यथा—

पाथोरुहपीठगतां पाथोधरमेचकां कुटिलदंष्ट्राम् ।

कपिलाक्षित्रितयां धनकुचकुम्भां प्रणतवाञ्छितवदान्याम् ॥

दक्षोर्ध्वतोरिखड्गौ मुसलमभीतिं तदन्यतस्तद्वत् ॥

शङ्खं खेटहलवरान् करैर्दधानां स्मरामि वार्ताळीम् ॥

अरिः सुदर्शनम् ॥

देव्याः षोडशोपचारपूजा

अथ वक्ष्यमाणेन प्रकारेण देव्यै मनसा षडोपचारानर्पयित्वा भक्तानुप्रहात्तेजोरूपेण परिणतां ब्रह्मरन्ध्रं प्राप्य बह्नासापुटद्वारा निर्गतां कुमुमगर्भिते निजाञ्जली सन्निहितां तां मूर्तीं मूलविशया आवाह्य आवाहिता भवेत्त्यादिरीत्या तत्तन्मुद्राप्रदर्शनपूर्वकं आवाहन-सस्थापन-सन्निधापन-सन्निरोधन-सम्मुखीकरण-अवगुण्ठानानि विधाय षन्दन-धेनुषोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् । मुद्राप्रकारस्तु श्रीप्रकरणे उक्तोऽनुसन्धेयः । ततः—ऐ ग्ळी ऐ नमो भगवति वार्ताळि वार्ताळि हृदपाय नमः इत्यादिकान् प्रागुक्तान् षडंगमन्त्रान् २ अन्धे अन्धिनि नम इत्यादिकान् पंचागमन्त्राश्च न्यासोक्तभङ्गया देव्याः तत्तदङ्गे कुमुमेन विन्द्यत्य, ऐ ग्ळी वाराद्यै पाद्यं कल्पयामि नमः इत्यादिरीत्या देव्यै पाचार्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्पहृषीर्दनीरात्रनउत्रचामरयुगलदर्शननेत्रेणानी-पताम्बूलाख्यान् षोडशोपचारान् कृत्वा, नेत्रेणार्धनेन पूर्वोक्तपातोत्तनकरप्रशास्त्र-गणहृषाचमनीयानि च प्रदद्यात् । नेत्रेण विद्येण हृत्तचतुरस्रमन्त्रउत्तरणम्, मूत्रेण प्रोक्षणम्, व इति धेनुमुद्रया धनुर्नीचरणम्, मूत्रेण मन्त्रवारमनिमन्त्रणम्, प्राणादिमुद्राप्रदर्शनं च विधेयम् ॥

देवीतर्पणम्

अथ मूळान्ते वार्ताळीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामीति वामफरतत्त्वमुद्रासन्दष्ट-
द्वितीयशकलगृहीतक्षीरविन्दुसहपतितः दक्षफरोपात्तकुमुभक्षेपैः देवी दशवारं सन्तर्प्य
पूर्वोक्तानां पडङ्गमन्त्राणां अन्ते—द्वयशक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि
नमः, शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, शिखाशक्तिश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः, फवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, अङ्गशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः, इति क्रमेण देव्यङ्गे अग्नीशामुरवायुकोणेषु मौळी प्रागादिदिक्षु च पडङ्गानि
सम्पूज्य ॥

ओघत्रययजनम्

पृष्ठतः प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रयं यजेत् । यथा—

ऐं ग्लौं परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
परमेशानन्द, परशिवानन्द (परसिद्धानन्द इति पाठान्तरं), कामेश्वर्यम्बानन्द,
मोक्षानन्द, कामानन्द, अमृतानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः ॥ इति दिव्यौघः ॥

ऐं ग्लौं ईशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः तत्पुरुषानन्द,
अघोरानन्द, वामदेवानन्द, सद्योजातानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः ॥ इति सिद्धौघः ॥

ऐं ग्लौं पञ्चोत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परमानन्द,
सर्वज्ञानन्द, सर्वानन्द, सिद्धानन्द, गोविन्दानन्द, शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति मानवौघः ॥

आहत्य एकोनविंशतिगुरवः ॥

आचरणार्चनम्

अङ्गायावरणान्तानां अर्चनप्रकारस्तु देव्यर्चनोक्त एव ॥

व्यत्ने देव्यप्रकोणमारम्य प्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ग्लौ जम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, मोहिनी,
स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति प्रथमावरणम् ॥

पद्भारे प्राग्बत्—

ऐं ग्लौ अन्धिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, रुन्धिनी,
जम्भिनी, मोहिनी, स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
इति द्वितीयावरणम् ॥

पट्कोणस्य कोणमूलेषु प्राग्बत्—

ऐं ग्लौ आ क्षा ई ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ईं ल्वा ईं
माहेधरी, ऊ हा ईं कौमारी, ऋ सा ईं वैष्णवी, ऐ शा ईं इन्द्राणी, औं वा
ईं चामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सम्पूज्य,

तस्यैव कोणाग्रेषु मध्ये च प्राग्बत्—

ऐं ग्लौ य म र यं या यी यू धै यी यः याकिनि जम्भय जम्भय मम
सर्वशत्रूणां त्यक्त्वातुं गृह्ण गृह्ण अग्निमाऽऽदि वसं कुरु कुरु
स्वाहा याकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

२ र म र यू रां री रू रै री रः राकिनि जम्भय जम्भय मम
सर्वशत्रूणां रक्तधातुं पिय पिय अग्निमाऽऽदि वसं कुरु कुरु
स्वाहा राकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

२ छ म र यू लं ली लृ लै ली लः लाकिनि जम्भय जम्भय मम
सर्वशत्रूणां नासधातुं भक्षय भक्षय अग्निमाऽऽदि वसं कुरु कुरु
स्वाहा लाकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

२ ड म र यू डां डी डृ डै डी डः डाकिनि जम्भय जम्भय मम
सर्वशत्रूणां नेत्रेधातुं प्रस प्रम अग्निमाऽऽदि वसं कुरु कुरु
स्वाहा डाकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

देवीतर्पणम्

अथ मूलान्ते वार्ताळीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामीति वामकरतत्त्वमुद्रासन्दष्ट-
द्वितीयशकलगृहीतक्षीरबिन्दुसहपतितैः दक्षकरोपात्तकुसुमक्षेपैः देवीं दशवारं सन्तर्प्य
पूर्वोक्तानां पडङ्गमन्त्राणां अन्ते—हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः, शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, शिखाशक्तिश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः, इति क्रमेण देव्यङ्गे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मौळौ प्रागादिदिक्षु च पडङ्गानि
सम्पूज्य ॥

ओघत्रययजनम्

पृष्ठतः प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रयं यजेत् । यथा—

ऐं ग्लौ परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
परमेशानन्द, परशिवानन्द (परसिद्धानन्द इति पाठान्तरं), कामेश्वर्यम्बानन्द,
मोक्षानन्द, कामानन्द, अमृतानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः ॥ इति दिव्यौघः ॥

ऐं ग्लौ ईशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः तत्पुरुषानन्द,
अधोरानन्द, धामदेवानन्द, सद्योजातानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः ॥ इति सिद्धौघः ॥

ऐं ग्लौ पद्मोत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परमानन्द,
सर्वज्ञानन्द, सर्वानन्द, सिद्धानन्द, गोविन्दानन्द, शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति मान्यौघः ॥

आहूय एकोनविंशतिगुरवः ॥

आवरणार्चनम्

अङ्गादावरणान्तानां अर्चनप्रकारस्तु देव्यर्चनोक्त एव ॥

शतपत्रे देवीपुरतोऽष्टत्रिंशद्वसन्धियु—

ऐं ग्लौं जम्भिन्यै नमः, इन्द्राय, अप्सरोभ्यः, सिद्धेभ्यः, द्वादशादित्येभ्यः,
अग्नये, साध्येभ्यः, विधेभ्यो देवेभ्यः, विश्वकर्मणे, यमाय, मातृभ्यः,
रुद्रपरिचारकेभ्यः, रुद्रेभ्यः, मोहिन्यै, निर्ऋतये, राक्षसेभ्यः, मित्रेभ्यः,
गन्धर्वेभ्यः, भूतगणेभ्यः, वरुणाय, वसुभ्यः, विशाधरेभ्यः, किन्नरेभ्यः, वायवे,
स्तम्भिन्यै, चित्रस्थाय, तुम्बुरुवे, नारदाय, यक्षेभ्यः, सोमाय, कुबेराय, देवेभ्यः,
विष्णवे, ईशानाय, ब्रह्मणे, अश्विभ्यां धन्वन्तरये, विनायकेभ्यो नमः ॥

तद्वहिः—

ऐं ग्लौं रौं क्षौ क्षेत्रपालाय नमः ॥

२ सिंहवराय देवीवाहनाय नमः ॥

तद्वहिः—

ऐं ग्लौं महाकृष्णाय मृगराजाय देवीवाहनाय नमः ॥ इति पद्ममावरणम्
सहस्रारे अष्टधा विभक्ते प्रतिपञ्चविंशत्युत्तरशतद्वयं प्राग्वत् क्रमेण—

ऐं ग्लौं ऐरावताय नमः, सुण्डरीकाय, वामनाय, कुमुदाय, अजनाय,

पुष्पदन्ताय, सार्वभौमाय, मुप्रतीकाय नमः ॥

एते दिग्गजाः मुराब्धेर्बहिर्वा प्रागाद्यास्तु यद्व्याः । बाह्यप्राकारस्थाद्यास्तु प्रागाद्यास्तु
दिक्षु अथ ऊर्ध्वं च क्रमेण प्राग्वत्—

ऐं ग्लौं क्षौ हेतुकभैरवक्षेत्रपालाय नमः । हेतुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥

३ त्रिपुरान्तकभैरवक्षेत्रपालाय नमः । त्रिपुरान्तकभैरवश्री०

३ अग्निभैरवक्षेत्रपालाय नमः । अग्निभैरवश्री०

३ यमजिह्नुभैरवक्षेत्रपालाय नमः । यमजिह्नुभैरवश्री०

३ एकपादभैरवक्षेत्रपालाय नमः । एकपादभैरवश्री०

३ काठभैरवक्षेत्रपालाय नमः । काठभैरवश्री०

३ कराटभैरवक्षेत्रपालाय नमः । कराटभैरवश्री०

- २ क म र यूं कां कीं कुं कै कौं कः काकिनि जम्भय जम्भय मम
सर्वशत्रूणां अस्थिधातुं भञ्जय भञ्जय अणिमाऽऽदि वशं कुरु
कुरु स्वाहा काकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- २ स म र यूं सां सीं सूं सै सौं सः साकिनि जम्भय जम्भय मम
सर्वशत्रूणां मजाधातुं गृह्ण गृह्ण अणिमाऽऽदि वशं कुरु कुरु
स्वाहा साकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
- २ ह म र यूं हां हीं हूं हँ हौं हः हाकिनि जम्भय जम्भय मम
सर्वशत्रूणां शुक्रधातुं पिब पिब अणिमाऽऽदि वशं कुरु कुरु
स्वाहा हाकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

इति धातुनाथानिष्ठा,

पदरस्य दक्षवामपार्श्वयोः क्रमेण—

ऐं ग्लौं क्रोधिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

२ स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

तत्रैव—

२ स्तम्भनमुत्तलयुधाय नमः ॥

२ आकर्षणहृत्तलयुधाय नमः ॥

पदरात् बहिः देव्याः पुरतः—

ऐं ग्लौं क्षौं श्रीं चण्डोद्यम्भाय नमः ॥ इति तृतीयाऽऽरण्यम् ॥

अष्टदशे प्राग्वत्—

ऐं ग्लौं वार्ताय्यैश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, वारुही,
पटहमुखा, अग्निनी, रग्निनी, जग्निनी, मोहिनी, स्तम्भिनीश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

पदरिः पुरतो देव्याः—

ऐं ग्लौं नटनरिदत्त देवदेव्यय नमः ॥ इति चतुर्थोऽऽरण्यम् ॥

नमः इति गुह्ये, फट् राक्तये नमः इति पादयोः, ठः ठः ठः ठः क्रीडकाय
 नमः इति नामौ, मम सर्वाभीष्टसिद्धयर्थं विनियोगाय नमः इति करसम्पुटे
 च न्यस्य, मूढेन त्रिः व्यापकं कृत्वा, अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादिभिः
 पद्यभिः मन्त्रैः पूर्वोक्तं अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तं, २ ऐं नमो भगवति वार्ताळि
 वार्ताळि हृदयाय नमः इत्यादिभिश्च हृदयादिषु न्यासं विधाय, उक्तप्रकारेण
 प्यात्वा, मनसा २ श्रीवाराह्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः, २
 श्रीवाराह्यै ह आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै यं वाय्वात्मकं
 धूपं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै रं अग्न्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः,
 २ श्रीवाराह्यै वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः, नैवेद्याङ्गत्वेन च २
 श्रीवाराह्यै सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः, इति पञ्चोपचारानाचर्य,
 विघ्नदेव्यङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गसहितं मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतवारान् यथाशक्ति वा
 श्रीक्रमोक्तेन विधिना जपेत् ॥

स्तं स्तम्भिन्यै नमः इति वाराह्या विघ्नदेवीमन्त्रः । एतं जपारम्भे
 त्रिवारं जपेत् । मूलमन्त्रश्च न्यासोक्ताष्टखण्डसमष्टिरूपः । लं वाराह्यै लृ
 लन्मत्तभैरवीपादुकाभ्या नम इति वाराह्यङ्गं लघुवाराह्यै । ॐ ह्रीं नमो वाराहि
 घोरे स्वमं ठः ठः स्वाहा इति तदुपाङ्गं स्वप्नवाराह्यै । ऐं नमो भगवति
 महामाये पञ्चजनमनश्चक्षुस्तिरस्करणं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा इति तत्प्रत्यङ्गं
 तिरस्करिणी । एतान् त्रीन् मन्त्रान् मूलजपान्ते तद्दशांशं जपेत् । पुनः
 न्यासध्यानादि कृत्वा जपं निवेद्य स्तुवीत ॥

वाराह्यैस्तोत्रम्

यथा—

कुवलयनिभा कौशेयार्धोरुका मुकुटोज्ज्वला

हृलमुसलिनी सद्भक्त्येभ्यो वराभयदायिनी ।

कपिलनयना मध्ये क्षामा कठोरघनस्तनी

जयति जगता मातः सा ते वराहमुखी तनुः ॥ १ ॥

- ३ भीमरूपभैरवक्षेत्रपालाय नमः । भीमरूपभैरवश्री०
 ३ हाटकेशभैरवक्षेत्रपालाय नमः । हाटकेशभैरवश्री०
 ३ अचलभैरवक्षेत्रपालाय नमः । अचलभैरवश्रीपादुकां पूजयामि
 तर्पयामि नमः ॥ इति षष्ठावरणम् ॥

सर्वा अप्यावरणद्वयताः देव्यनिमुत्तासीनाः, स्वयं च तत्तदभिमुत्ताः पूजयामि
 इति भावयेत् ॥

देवोपुनःपूजाऽऽदि यत्किञ्चान्तम्

इत्थं षष्ठावरणीमन्यर्ष्यं पुनर्देवीं त्रिवारं सन्तर्ष्य पुनः पौउत्ताभिः उपचारैः
 उपचर्य श्रीकमोक्तैः विधिना क्षेमं तदन्ते यत्किञ्चन च कुर्यात् ॥

होमावरणपथे—देव्या पुरतो वामभागे हस्तमात्र सामान्योदयेनोपलिय,
 त्रिभेदावृत्तचतुस्त्रयामकं मण्डलं परिकल्प्य, रथिराजहृदिद्राजमाहिषद्वितीयसत्कुशकृशा-
 देपुत्रयवमाधिकमुद्रवन्मातृभूर्गोवधिश्रीरघुवीः सुवीर्यं ममर्ष्य, कुन्दशय्यप्रमाणान्
 दद्यत्किञ्चन पर्यभक्तमानं च एकं पिण्डं त्रिधाप तत्र त्रिधाप, तत्रमीये
 म्पदिनर्गदीवृत्तियं चरकं च लिङ्गं, ऐं मीं ह्रीं देवुकुम्भेयतेयस्य नमः
 इत्यर्चिनः पूर्वोक्ते दत्तानि मन्त्री हेतुर्हेरिभ्योऽनमोऽन्यो इत्यन्यं क्रमेण
 दद्यत्किञ्चन इत्यर्चु इत्यतः, कपो मूर्ध्नि तत्र चरकं च ऐं मीं ह्रीं क्रौं
 श्चतुर्दशाय नम इति कर्त्तव्यं तन्मे दत्तम् ॥

अथ उपचरन्—त्रिवारं मुद्रं च चर्य देव्यां पूजयामि ॥

अथ उपचरन्—देवीं पुनः पौउत्ताभिः उपचरन् देव्यां पूजयामि ॥

यावदात्मनःशक्तिः

॥३॥—

अथ उपचरन्—देवीं पुनः पौउत्ताभिः उपचरन् देव्यां पूजयामि ॥

अथ उपचरन्—

अथ उपचरन्—देवीं पुनः पौउत्ताभिः उपचरन् देव्यां पूजयामि ॥

अथ उपचरन्—

तदन्तोह्यासः पञ्चमः—दण्डनीकमः

क्षुभितमनसः क्षुद्रस्थैकाकिनोऽपि कुतो भयं
सकृदपि मुखे मातस्त्वन्नाम सन्निहितं यदि ॥ ८

विदितविभवं हृद्यैः परैर्वराहमुखीस्तवं
सकलफलदं पूर्णं मन्तार्क्षरैरिममेव यः ।

पठति स पटुः प्रामोल्यायुश्चिरं कवितां प्रियां
सुतसुखधनारोग्यं कीर्तिं श्रियं जयमुर्वराम् ॥ ९ ॥ इत्यनुग्रहप्रकरणम् ॥

देवि क्रोडमुग्धि त्वदङ्घ्रिकमलद्वन्द्वानुपक्तात्मने
मह्यं द्रुह्यति यो महेशि मनसा कायेन वाचा नरः ।

^१तस्याद्य त्वदयोऽप्रनिष्टुरहलाघातप्रभूतव्यथा-
पर्यस्यन्मनसो भवन्तु वपुषः प्राणाः प्रयाणोन्मुखाः ॥ १ ॥

देवि त्वत्पदपद्मभक्तिविभवप्रक्षीणदुष्कर्मणि
प्रादुर्भूतनृशंसभावमलिना वृत्तिं विधत्ते मयि ।

यो देही भुवने तदीयहृदयान्निर्गत्वरैर्लोहितैः
सद्यः पूरयसे कराब्जचपक वाञ्छाफलैर्मामपि ॥ २ ॥

चण्डोच्चण्डमखण्डदुष्टहृदयप्रोक्षितरक्तच्छटा-
हालापानमदाहृहासजनिताटोप^१प्रतापोत्कटम् ।

मातर्मत्सरिपन्थिनामपहृतै प्राणैस्त्वदङ्घ्रिद्वय-
प्यानो^२हामरवेर्भयोदयवशात् सन्तर्पयामि क्षणात् ॥ ३ ॥

बाराहि न्यथमानमानसगळ्त्संज्ञ त्वदाज्ञाबलात्
सीदद्द्वैर्यमपाकृताद्वचवसितं प्राप्ताखिलार्थाहतिम् ।

क्रन्दद्वन्द्वयुजनं कळङ्कितकुल कण्ठे व्रणोद्यत्कृमिं
पश्यामि प्रतिपक्षमाश्रु सततं श्रान्तं लुठन्तं पुनः ॥ ४ ॥

बाराहि त्वमशेषजन्तुषु पुनः प्राणामिकां स्पन्दसे
शक्तिभ्यासचराचरानिह खलु त्वामेतदन्वर्षये ।

त्वत्पादाम्बुजसङ्गिनो मम सठत् पाप चिकीर्षन्त ये
तेषां मा कुरु शङ्करप्रियतमे देहान्तरावस्थितिम् ॥ ५ ॥

^१ तस्याद्य—धी, अ १.

^२ शुरद्वयम्—४१, ४२, अ, न.

^३ शमरवेभ—४१, ४२, अ

सृष्टि विग्रहो गोमा दूरात्परिद्विष्यते भय-
 स्पाटितनतिभिर्नृत्तप्रैरे १ एव नियते प्रिया ।
 क्षपयति स्थिनीष्टे पात्रां स्वं नमते त्रयं
 यशयति जगन्मयं गारादि यस्यापि भक्तिमान् ॥ ३ ॥
 स्तिमितगतयस्सीदद्वाचः परिच्युतहंतय-
 क्षुभितद्वदयास्सशो नश्यद्गो गच्छिनीजसः ।
 भयपरवशा भक्तोन्साहाः पराहन्तौशयाः
 भगवति पुस्त्वद्रक्तानां भवन्ति रिरोधिनः ॥ ३ ॥
 किसलयमृदुहस्तः त्रिश्येन वन्दुफडीलया
 भगवति महाभारः श्रीडासरोरुहमेव ते ।
 तदपि मुसलं धत्ते ^१हस्ते हलं समपदुहां
 हरसि च तदाघातः प्राणानहो तव नाहसम् ॥ ४ ॥
 जननि नियतस्थाने त्वद्गामदक्षिणपार्श्वयोः
 मृदुभुजलतामन्दाक्षेपप्रणार्तितचामरे ।
 सततमुदिते गुह्याचारद्रुहां रुधिरासंब-
 रुपशामयतां शत्रून् सर्वानुभे मम दैवते ॥ ५ ॥
 हरतु दुरितं क्षेत्राधीशः स्वशासनविद्विषा
 रुधिरमदिरामत्तः प्राणोपहारवलिप्रियः ।
 अविरतचटकुर्वद्दंष्ट्रास्थिकोटिरटन्मुखो
 भगवति स ते चण्डोच्चण्डः सदा पुरतः स्थितः ॥ ६ ॥
 क्षुभितमकरैर्वाचीहस्तोपरुद्धपरस्परै-
 श्वतुरुदाधिभिः क्रान्ता कल्पान्तदुर्ललितोदकैः ॥
 जननि कथमुत्तिष्ठेत् पाताळसर्पविलादिला
 तव तु कुटिले दंष्ट्राकोटी न चेदवलम्बनम् ॥ ७ ॥
 तमसि बह्वले शून्याटव्यां पिशाचनिशाचर-
 प्रमथकलहे चोरव्याघोरगद्विपसङ्कटे ।

मन्त्रसाधनम्

एवं नित्यकमनाचरन् श्वानाक्रमोक्तेन पुरधरणप्रकारेण प्रत्यहं सहस्रसङ्ख्याया
 लक्षसङ्ख्याकं प्रकृते कल्पियुगत्वाच्चतुर्गुणितं जपं पुरधरणं कृत्वा तद्दशांशं नारिकेल्येदकेः
 सन्तर्प्य, तद्दशांशं तापिच्छकुमुभैः तिष्ठैः चुटुकमितैः शतसङ्ख्याकैर्वा हरिद्राखण्डैर्वा
 तन्त्रान्तरोक्तैः त्रिमन्त्रैः हेतुनिश्रेष्ठं जुहुयात् । इह पञ्चधोपचारात् प्राक्
 महान्याहत्यादिषु च भाग्येनैव होमः । इतरेषु तापिच्छादिना । एवं सिद्धमन्त्रः
 स्वयम्बोपाप्तौ श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण ^१नैमित्तिकार्चनरतः मन्त्रां कामनायां पूर्वोक्तेनैव
 क्रमेण तत्तन्त्राम्पादुगुणं होमं कृत्वा सप्तमनोरथ आह्लासिद्. मुनी विश्वेत् ।
 इति शिवन् ॥

इति श्रीभाग्यराजन्दनायचरणारविन्दकिञ्चिन्वाचमानमानमेव उमानन्दनाथेन
 विरचिते कल्पसूत्रादुपनिषि शिष्योत्सवे अग्निने
 शिवन्वे दण्डे शस पदमः सप्तदशे ५

नित्योत्सवः

विश्वार्धाश्वरवह्नुभे विजयसे या त्वं नियत्यात्मिके
 भूतानां पुरुषायुपावधिकरी पाकप्रदा कर्मणाम् ।
 तां याचं भवतीं किमप्यवितथं योऽस्मद्विरोधी जन-
 स्तस्यायुर्मम वाञ्छितावाधि भवेन्मातस्तवैवाज्ञया ॥ ६ ॥
 मातस्तम्यगुपासितुं जडमतिस्त्वां नाद्य शक्तोम्यहं
 यद्यप्यञ्चितदेशिकाङ्घ्रिकमलानुक्रोशपात्रस्य मे ।
 जन्तुः कदन चिन्तयत्यकुशलं यस्तस्य तद्वैशसं
 भूयादेवि विरोधिनी मम 'च ते श्रेयःपदासङ्घिनः ॥ ७ ॥
 श्यामां तामरसारुणात्रिणयना सोमार्धचूडां जग-
 त्त्राणव्यग्रहलामुदग्रमुसलामत्रस्तमुद्रावतीम् ।
 ये त्वां रक्तपादिनीं शिववरारोहे वराहाननां
 भावे सन्दधते कथ क्षणमपि प्राणन्ति तेषां द्वियः ॥ ८ ॥
 इति निग्रहाष्टकम् ॥

धृन्दाराधनं, गुरुसंतोषणं, शक्तिचट्टकपूजा च

अथ योगिनीवीर्युग्नसमुदायात्मकं वृन्दं गन्धादिभिः आराप्य, यथाकिमं
 गुरुं सन्तोष्य, समप्रपौवना लक्षणवतीः मदनविधवाः तिस्रः शर्करावटुकं चाद्रूयान्यस्य
 मपिचा, मये वाताञ्जिबुद्धरंकां क्रोधिनीस्तम्भिनीबुद्धया च द्वे पार्थयोरुपदेश्य,
 शंभुण्डधिया वटुकं चामे समुपदेश्य द्वितारीनमःसम्पुटितः तत्तन्नाममन्त्रैः
 दिभिः क्षीरादिभिश्च सर्वैः द्रव्यैः सन्तोष्य, मम धीधार्ताञ्ज्यमन्त्रसिद्धिः
 इति शर्कराः प्रार्थयेत् । ताव प्रमोद-अधिदेवता इति प्रतिश्रुत्युः ॥

हविःप्रतिपत्तिः

अथ धृन्क्रमोत्सवनेन हविःप्रतिपत्तिरुत्सवितोत्सवार्थविमर्शनात् श्रेयं
 (१) हविःप्रतिपत्तौ मूत्रेण तद्वत्प्रदग्निमनेरेति विदितः ॥

उन्मनोद्धासः षष्ठः—परापद्धतिः

उपोद्धातः

नत्वा श्रीभामुरानन्दनाथपादाम्बुजद्वयम् ।
गृणान्मुमानन्दनाथ उन्मनोद्धासर्वभवम् ॥
आराधनपदं यत्र परा श्रीद्वयपामिका ।
पदे पदे मुक्तानि स्युः प्रमुचित्तविरो न किम् ॥
दीक्षाविधिरिहावेश्य आरम्भोद्धास ईक्ष्यताम् ।
न तु सन्धोपास्तिरुक्ता सूत्रकारिसूत्रणात् ॥
पञ्चमीनभिरुप्याथ पराक्रमपते भवेन् ।
एतस्मिन् मनसः सर्वे शक्तिर्वीजादिनाः सृताः ॥

कान्यदृश्यं आदिकं च

श्रीमान् मारकः कल्पे प्रमुक्तः सपत्न एव स्थितः श्रीराजचमनभरनधारणे विभाप,
नोकेन क्रमेण श्रीमुक्तोर्ध्वान् वक्ष्यमाणया मुत्तूर्ध्विका माना-पतादुक्तया
मुत्तूर्ध्विकाप्रसर्तनपूर्वकं चदन च विभाप, वक्ष्यमाणया हीया प्राणातादम्ब
मम्बन्धनि मद्दशदशकते मुत्तूर्ध्विकाया वक्ष्यमाणयाजी-मत्तूर्ध्विकाः कति-
कतः प्रादम्बन्धनाः धरनमुत्तूर्ध्विका-प्रसर्तनपूर्वकं चदन च विभाप, धरन-
नय-पत्न-क-रे, वक्ष्यमाणया-म-मुत्तूर्ध्विकाया, निर्देहिना-वक्ष्यमाणः उक्तया मद्दश
मद्दश-दशकते चदनः विभाप-मुत्तूर्ध्विकाः मन्त्रेण मुत्तूर्ध्विका
दि-मन्त्रेण मद्दश-दशकते चदनः विभाप-मुत्तूर्ध्विकाः मन्त्रेण मुत्तूर्ध्विका

तस्यकदम्बस्य हृत्पद्मस्थापनम्

पूर्वं नामौ मुद्रयित्वा तत्तायोद्रवमिव चिदमौ विलापितं षट्त्रिंशत्तत्त्वकदम्बरूपं
वेद्यं हस्तरोज्जमानीय स्थापयेत् ॥

पराचक्रनिर्माणम्

अथ सकुसुमक्षेपैः मूलपूर्वकैः वक्ष्यमाणैः मन्त्रैः पराम्बायाश्चक्ररूपं आसनं
निर्मिमीत । यथा—

सौः पृथ्वीयोगपीठाय नमः, अप्, तेजः, वायु, आकाश, गन्ध, रस,
रूप, स्पर्श, शब्द, उपस्थ, पायु, पाद, पाणि, वाक्, प्राण, जिह्वा, चक्षुः,
त्वक्, श्रोत्र, अहङ्कार, बुद्धि, मनः, प्रकृति, पुरुष, नियति, काल, विद्या,
कला, राग, माया, शुद्धविद्या, ईश्वर, सदाशिव, शक्ति, शिवयोगपीठाय,
नमः ॥

इत्येवं पराचक्रं निर्माय ॥

चक्रे देव्याः पूजा

ब्रह्मरन्ध्रे—

अकळङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती ।

मुद्रापुस्तलसद्वाहा पातु मा परमा कला ॥

इति ध्यातां सादाख्यचन्द्रकलारूपां श्रीपराम्बा मूलेन हृदयगते पराचक्रे आवाह्य,
मूल्यान्ते श्रीपराम्बाऽऽवाहिता भव इत्यादिरीत्या तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं आवाहनाद्य-
बगुणानन्तं कृत्वा, बन्दनधेनुषोनिमुद्राः प्रदर्श्य, मूलेन पुनः पुनरावृत्तेन श्रीपरादेव्ये
पादं कल्पयामि नमः इत्यादिरीत्या पाशार्घ्याचमनीयघ्नानवासोगन्धपुष्पभूपदीप-
नीराजनछत्रचामरप्युगदर्शनैवेद्यपानीयताम्बूयाख्यान् पोडसोपचारान् विधाय, नैवेद्याङ्ग-
त्वेन पूर्वोत्तरापोराने हस्तप्रक्षाब्जगण्डूराचमनीपानि च दद्यात् । नैवेद्यं त्रिकोणवृत्त-
चतुरस्रमण्डलकरणम्, मूलेन प्रोधुगन्, वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकरणम्,
मूलेन सप्तवाराभिमन्त्रणम्, प्राणादिमुद्राप्रदर्शनं चानुष्ठेयम् । ततो कामकरतत्तन्मुद्रा-
सन्दर्ष्ट्रितीयकालगृहीतधीर्यदिन्दुसहस्रतितैः दध्मरुयेनाचैः कुमुदैः, मीः म्

तेजोस्वरूपदेवीमयं भावपञ्चाङ्गानं मुद्राराष्ट्रेण सीः नमः इति नमोऽन्तेन मूलेन शिरोमुखलङ्घनमूलाभागेषु न्यासे विभाय, सर्वाङ्गे च ध्यायकं कृत्वा, सीः स् द्वयाय नमः, सीः ओ शिरसे स्वाहा, सीः : शिपाये परद्, सीः स् कवचाय हृन्, सीः ओ नेत्रत्रयाय धौपद्, सीः : अत्राय ऋद्, इति मूळमन्त्रावपर्वेऽस्तिः वर्णपङ्क्तं, सर्वेण मूलेन पद्धारमाहृत्तेन मन्त्रपङ्क्तं च कुर्यात् । इह मूळमन्त्रस्य तृतीयोऽवयवः वेवले विसर्गो न धकारविशिष्ट इति च ज्ञेयम् ॥

चिदाशौ सघंतत्त्वयिछापनम्

अथ काफचञ्चुपुत्राहृतिना मुखेन वादामनिलमन्तराहृष्य संस्तम्य, मूळं सप्तविंशतिवारमावर्त्य, पश्यमाणक्षित्वादिशिवान्तपट्टत्रिंशत्तत्त्वात्मकं वेद्यं नाभौ मुद्रितं विमान्य, पुनः प्रोक्तवारं मूळं जप्त्वा, नम इति शिखाबन्धोत्तरं पुनः पूर्ववत् अनिलमापूर्य, तेन सर्वकारणचिद्रूपमग्निमुदीप्य, तत्र प्राङ्मुद्रितस्य वेद्यस्य विलयनं भावयित्वा ॥

अर्च्यशोधनम्

श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण सामान्यविशेषार्थ्ये आसादयेत् । अत्र चोभयोरर्च्ययोः प्रवेशरीत्या अन्तरन्तश्चतुरस्रादिबिन्द्वन्तमण्डलकरणम्, अं आत्मतत्त्वाय आधारशक्त्यै बौपडित्याधारस्थापनम्, उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय बौपडिति पात्रनिधानम्, मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नम इति शुद्धसखिलपूरणम् ।

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससंभृतम् ।

आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह ॥

इति क्षीरपूरणम्, हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामीत्याद्यङ्गान्तं प्रागुक्तपङ्क्तद्वयम्, मूलेन दशधा अभिमन्त्रणम्, चतुर्नवतिमन्त्राभिमन्त्रणाभावश्च विशेषः । ततो विशेषार्थ्यबिन्दुभिः सम्प्रोक्ष्य वरिवस्यावस्तूनि ॥

बलिदानम्

ततः त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलं कृत्वा ऐ व्यापकमण्डलाय नमः इति पुष्पेणाम्यर्घ्यं, अर्धान्नं सलिलपूर्णं सक्षीरोपादिममध्यमं च पात्रं निधाय, ॐ ह्रीं सर्वविघ्नहृद्भयः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहेति त्रिः पठित्वा बलिं दत्त्वा, तत्त्वमुद्रासृष्टं क्षीरं बल्युपरि निविध्य, वामपार्श्विघातकरास्फोटौ कुर्वाणः समुदक्षितवक्तो नाराचमुद्रया बलिं भूतैः प्राहयित्वा, पाणी प्रक्षाल्य, मानसिकीः प्रदक्षिणनतीः विधाय, देव्यै पुण्याङ्गलिं दद्यात् ॥

परामनुजपः

अथ अस्य श्रीपराभट्टारिकामहामन्त्रस्य भैरवाय ऋषये नमः इति शिरसि, गायत्र्यै छन्दसे नमः इति मुखे, पराऽम्बायै देवतायै नमः इति हृदये, सं बीजाय नमः इति गुह्ये, 'औः' शक्तये नमः इति पादयोः * (कीलकाय नमः इति नाभौ), मम सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः इति करसम्पुटे च न्यस्य, मूलेन त्रिवर्षापकं कृत्वा,

सां अङ्गुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नमः, सीं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा), सूं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वयट्), से अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुं), सीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्), सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अत्राय फट्) इति मन्त्रैः कराङ्गन्यासौ कृत्वा,

अकट्टङ्केति प्यात्वा,

सां परादेव्यै लृ गृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि, सीः परादेव्यै हं आकृशान्मकं पुष्पाणि पूजयामि, सीः परादेव्यै यं वाय्वात्मकं धूपमानापयामि, सीः परादेव्यै र अग्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि, सीः परादेव्यै व अमृतात्मकं भेषजं निवेदयामि, सीः परादेव्यै सं सर्वात्मकं ताम्बूलादिसर्वोपचारान् समर्पयामि इति षडुपचारैः मनसा अभ्यर्ष्य,

मूळं सहस्रं त्रिंशत् सत वा श्रीऋनोक्तेन बिभ्रिना जत्स्य म्नुवीत ॥

* सीः—अ, ५१.

१ सां इति 'ब'

२ सीं = इति 'न'

* अयं कुण्डलिको भाव. (धी) कोष ९६.

परास्तुति

यथा—

याऽघोरादिभिरेतैः पारम्पर्यक्रमगतैर्नार्थैः ।
 प्रथते तां विश्वमयीं विश्वातीतां स्वसंविदं नौमि ॥ १ ॥
 आनन्दचरणकमलामकळङ्कशशाङ्कमण्डलच्छायाम् ।
 तन्मण्डलाधिरूढां तत्कलयया कलितचिक्कलां नौमि ॥ २ ॥
 इच्छादिशक्तिशूलांबुजमूलां मूलकुण्डलीरूपाम् ।
 नित्यामप्यणुरूपामणोश्च महतो महीयसीं नौमि ॥ ३ ॥
 मौक्तिकमणिगणरुचिरां शशाङ्कनिर्मोक्तनिर्मलं क्षौमम् ।
 निधसानां परमेशीं नमामि सौवर्णसम्पुटान्तःस्थाम् ॥ ४ ॥
 भक्तजनभेदभञ्जनचिन्मुद्राकलितदक्षपाणितलाम् ।
 पूर्णाहन्ताकारणपुस्तकवर्षेण रुचिरवामकराम् ॥ ५ ॥
 सृष्टिस्थितिलयकृद्भिर्नयनाम्भोजैश्शशीनदहनाख्यैः ।
 मौक्तिकताटङ्काम्यां मण्डितमुखमण्डलां परां नौमि ॥ ६ ॥
 पङ्गतिपङ्कमिषडरीन् धिक्कृत्याशु स्वभक्तवर्गस्य ।
 कञ्चुकपञ्चकनोदनसञ्चितसंवित्रकाशिनीं नौमि ॥ ७ ॥
 अध्यातीतं बुद्धा बुधाः प्रबुद्धाः परं पदं यस्याः ।
 कैवल्यं यान्ति हठात् फटाक्षपातेन तां परां नौमि ॥ ८ ॥
 यः पठतीदं स्तोत्रं पात्रं स भवेच्च पञ्चवर्गस्य ।
 गुरुचरणकमलभाजा सहजानन्देन योगिनाऽभिहितम् ॥ ९ ॥

इति परास्तुतिः सम्पूर्णा ॥

हृदिःशेषस्वीकरणम्

अथ—

सौः आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥
 सौः विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥
 सौः शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥

इति मन्त्रैः तत्त्वत्रयभोधनपूर्वकं हविःशेषं स्वीकृत्य, मूलेन देवीं विसृज्य, तेनैव
 प्रसरन्मं नीत्वा विशेषार्घ्यपात्रमामस्तकमुद्धृत्य, “आर्द्रं ज्वलति” इति मन्त्रेण
 तदर्घ्यमात्मनः कुण्डलिन्यग्रीं द्रुत्वा कामकलाऽऽत्मकं देवीरूपं भावयन्नात्मानं
 कृतकृत्यो भवेत् ॥

मन्त्रसाधनम्

एवं नित्यक्रमं निर्वर्तयन् श्यामाक्रमोक्तक्रमेण लक्षजपं पुरश्चरणं कलौ
 त्रचतुर्गुणितं प्रसहमयुत्तसङ्घयया ग्रहणादिजपप्रत्याम्नायान्वा कृत्वा, होमतर्पण-
 साक्ष्यभोजनानि क्रमेण दशांशतः कुर्यात् । होमद्रव्यस्य तन्त्रान्तरेष्वदर्शनात्,
 साध्यमेव । ततः सिद्धमनुः काम्यलिभ्भुर्यदि श्यामाक्रमोक्तेरेव द्रव्यैः द्रुत्वा
 र्णमनोरथः सुखी विहरेत् । एतदेकविध्रान्तिमभिलषतोऽपि अयमेवोपास्तिक्रमः
 ति शिवम् ॥

इति भायुरानन्दनाथचरणारविन्दमिळिन्दायमानमानसेन उमानन्दनाथेन
 विहिते अभिनवे कल्पसूत्रानुसारिणि नित्योत्सवनिबन्धे
 पराक्रमनिरूपणो नाम उन्मनोद्वासः षष्ठः सम्पूर्णः ॥

अनवस्थोद्धासः सप्तमः—साधारणक्रमः

उपोद्धातः

नत्वा श्रीभासुरानन्दनाथपादाम्बुजद्वयम् ।
नन्दत्युमानन्दनाथोऽनवस्थोद्धासकल्पनात् ॥
साधारणो यत्र सर्वोपास्यानां क्रम ईरितः ।
आरम्भोद्धासगीता स्यादिह दीक्षा पृथक् पृथक् ॥
सत्रितार्या बालया च सर्वेऽङ्गमनवो मताः ।
मन्त्रेऽनुक्तपङ्क्ते तु मायापङ्क्तेर्दीर्घजातियुक् ॥

तत्र तावद्दुक्तगुणः साधकः उक्ते काले सद्गुरोः अवाप्तदीक्षाविधिः एतत्क्रमान्ते
क्ष्यमाणेन प्रकारेण शोधितसिद्धसाध्यादिभावं अवष्टुष्टक्रणधनादिकं च स्वेष्टमन्त्रमासाद्य
त्प्रतिपाद्यदेवताक्रमं यावज्जीवं निर्वर्तयेत् ॥

काल्यकृत्यं आह्निकं च

इह प्रकृतिभूतात् श्रीक्रमतः काल्यकृत्याह्निकयोः विशेषो यथा—
ीगुरुपादुकापामादौ त्रितार्युत्तरं बाला वाक् ग्लौमिति पञ्चबीजयोजनम्, द्वदि
बिबिन्वे च तत्तद्देवताध्यानम्, रश्मिस्त्रगननुस्मरणम्, यथोचितं तत्र तत्र सम्युद्धया-
नेनाम्हः, मूलेनार्घ्यदानम्, तन्तान्तरोक्तं तत्तदध्यादिन्यासत्रयं पङ्क्तं च, अनुक्तौ तु
क्ष्यमाणं चेति ॥

यागमन्दिरप्रवेशः

अथ यागमन्दिरभागस्य, द्वारस्थण्डिलं गोमयेनोपलिप्य, देवताऽऽयतनं च
इवह्रीपुत्रमालावितानादिमिथालङ्कृत्य, द्वारस्य दक्षवामशाखयोरूर्ध्वभागे च
मेण—

गुण्ठनानि तत्तन्मुद्रया कृत्वा, वन्दनधेनुयोनिमुद्राः प्रदर्श्य, सामान्यार्घ्योदकेन ६ अमुकायै पाद्यं कल्पयामि नमः इत्यादिरीत्या पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्प-धूपदीपनीराजनलत्रचामरयुगदर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूलख्यान् षोडशोपचारान्, नैवेद्याङ्ग-त्वेन पूर्वोत्तरापोशने हस्तप्रक्षालनगण्डूपकरणाचमनीयानि च दद्यात् । नैवेद्ये त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलकरणम्, मूलेन प्रोक्षणम्, वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकरणम्, मूलेन सप्तबाराभिमन्त्रणम्, प्राणादिमुद्राप्रदर्शनं चानुष्ठेयम् । ततो मूलान्ते अमुकदेवताश्रीपादुकां पूजयामि इति मन्त्रेण धामकरतत्त्वमुद्रासन्दष्टद्वितीयशकलगृहीत-क्षीरबिन्दुसहपतितैः दक्षकरोपाचकुसुमैः प्रधानदेवतां त्रिः सन्तर्प्य, तस्याग्रीशासुर-वायुषु मौळी प्रागादिदिक्षु च क्रमेण तत्तदेवतापङ्कमन्त्रैः ६ हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि इति क्रमेण पङ्कमन्त्रैः अङ्गदेवताः समन्वर्च्य ॥

गुर्वोघप्रयजनम्

प्रधानदेवतायाः पश्चात् प्रागपवर्गं दक्षिणसंस्थाक्रमेण तत्तन्तोक्तं गुर्वोघत्रयं पजेत् । तदज्ञाने तु—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः ऐं गुरुभ्यो नमः, ६ ऐं गुरुपादुकाम्यो नमः ।
इति दिव्योघः ॥

६ ऐं परमगुरुभ्यो नमः, ६ ऐं परमगुरुपादुकाम्यो नमः । इति
सिद्धीघः ॥

६ ऐं आचार्येभ्यो नमः, ६ ऐं आचार्यपादुकाम्यो नमः, ६ ऐं
पूर्वसिद्धेभ्यो नमः, ६ ऐं पूर्वसिद्धपादुकाम्यो नमः । इति मानवोघः ॥

इति गुर्वोघत्रयम् ॥

आपरपाचनम्

अस्यै देवताऽप्रकोणमारभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः इष्टाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
ज्ञानशक्तिश्री०, क्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति
प्रथमावरणम् ॥

पडस्त्रे प्राग्बत् तन्त्रान्तरोक्तोपलब्धतत्तद्देवतापडङ्गमन्त्रोत्तरं हृदयशक्ति-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । तदज्ञाने ६ ह्रां हृदयाय नमः
हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इत्यादिरीत्या अङ्गदेवतापूजनं
वा ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥

अष्टदले पारिभाषिकपश्चिमादिदिक्षु वाय्वादिविदिक्षु च प्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः आं ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
ईं माहेश्वरी, ऊं कौमारी, ऋं वैष्णवी, ॠं वाराही, ऐं माहेन्द्री, औं
चामुण्डा, अः महालक्ष्मीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति
तृतीयावरणम् ॥

चतुर्दले देव्यप्रदब्दादिप्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
दुर्गा, वटुक, क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति
चतुर्थावरणम् ॥

चतुरस्रेखायां यथास्थितप्रागादिप्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः लां इन्द्राय वज्रहस्ताय मुराधिपतये ऐरावतवाहनाय
सपरिवाराय नमः ॥

६ रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सपरिवाराय
नमः ॥

६ टो यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाराय
नमः ॥

६ क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नरवाहनाय
सपरिवाराय नमः ॥

६ वां वरुणाय पादाहस्ताय सट्टिटाधिपतये मकरवाहनाय
सपरिवाराय नमः ॥

६ वां वायवे पञ्चहस्ताय प्राणाधिपतये रथवाहनाय सपरिवाराय
नमः ॥

६ सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहन
सपरिवाराय नमः ॥

६ हां ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याऽधिपतये वृषभवाहन
सपरिवाराय नमः ॥

इत्यम्यर्च्य ॥ इति पञ्चमावरणम् ॥

देवतायाः पुनःपूजा

अथ पुनर्मूलेन देवतां त्रिः सन्तर्प्य, पुनः धूपदीपनैवेद्यताम्बूडानि दत्त्वा ॥

होमः

सति सम्भवे श्रीक्रमे होमप्रकरणोक्तेन क्रमेण स्थण्डिलकल्पनादिप्रधानदेवता-
पञ्चोपचारान्ते— ६ इच्छायै स्वाहा इच्छाया इदं न मम इत्यादिरीत्या—आवरणदेवता-
क्रमेण इच्छाऽऽदिम्यः ईशानान्ताभ्यो देवताभ्यः एकैकामान्याहुति मूलेन
प्रधानदेवतायै दशवारं च हुत्वा विधिशेषं निर्वर्तयेत् ॥

होमाकरणपक्षे बलिमात्रं दद्यात् । यथा—देवताया दक्षिणतः त्रिकोणवृत्त-
चतुरस्रात्मकं मण्डलं कृत्वा, ६ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः इति पुष्यैरन्यर्च्य,
अर्धभक्त्यूरितोदकं सक्षीरादिद्रव्यं पात्रं तत्र विन्यस्य, ६ ॐ ह्रीं सर्वविघ्नहृद्भवः
सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा, बलिं प्रदाय, दक्षकरार्पितं
वामकरतत्त्वमुद्रासृष्टं क्षीरं बल्युपरि निषिच्य समुदाशितवक्त्रतः ताञ्जयं कुर्वन्
बाणमुद्रया बलिं भूतैः प्राहयित्वा, योनिमुद्रया प्रणमेत् इति ॥

प्रदक्षिणनतिमूलमन्त्रजपाः

अथ प्रशाळितापाणिः प्रदक्षिणनतीर्विधाय, तत्तत्तन्तोक्तार्थादिन्यासत्रय-
फराङ्गन्यासप्यानान्ते देवतायै पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, मूलमण्डलोत्तरशतवारं जप्त्वा,
पुनर्यासादि कृत्वा, गुह्यातिगुह्येति मन्त्रेण देवतावामहस्ते सामान्यजलेन जपं
समर्पयेत् । देवतापुंसत्वे तु गोप्ता त्वं देवेति वाच्यम् । देव्या वामहस्तो देवस्य
दक्षकरश्च जपसमर्पणाधिकरणम् ॥

ऋष्यादीनामज्ञाने—अस्य श्रीअमुकमन्त्रस्य ब्रह्मणं ऋषये नमः इति शिरसि, गायत्र्यै छन्दसे नमः इति मुखे, अमुकदेवतायै नमः इति हृदये, ॐ बीजाय नमः इति गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः इति पादयोः, मम सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः इति करसम्पुटे च न्यस्य, मूलेन त्रिव्यापकं कृत्वा, उक्तपङ्क्तं कराङ्गयोः विन्यस्य, तत्तदेवताऽनुगुणं ध्यात्वा, श्यामाक्रमोक्तान्यतमया माल्या श्रीक्रमोक्तविधिना जप्त्वा स्तुवीत ॥

देवतास्तुतिः

यथा—

सचित्सुखैकरूपं सकलजगद्भाससंश्रयीभूतम् ।
 भक्तेष्वनुग्रहवशात् बहुधोपास्यात्मकं भजे वस्तु ॥ १ ॥
 पीतारुणादिभासं फलदानायाभिसन्धिभेदेन ।
 आसेचनकावयवामासेवे देवतामिहोपास्याम्, ॥ २ ॥
 द्विचतुःप्रमुखैर्दोर्भिर्विधृतधराभीतिशूलचक्राद्यैः ।
 पालितविश्वत्रितयः पायान्मां कोऽपि निरवधिर्भूमा ॥ ३ ॥
 बिन्दुत्रिकोणपङ्करद्विपदल्लेदच्छदैः सचतुरस्रैः ।
 चारुणि विहारशीलं चक्रे कलयामि किञ्चन ज्योतिः ॥ ४ ॥
 इच्छाऽऽदिभिस्ताथाऽङ्गैः ब्राह्म्याद्याभिर्गणेश्वरप्रष्टैः ।
 इन्द्रादिभिश्च पद्मभिरावरणैः स्तौमि दैवतं सेव्यम् ॥ ५ ॥
 एकार्णादिशतार्णावधिकैर्मनुभिर्निरुच्यमानात्मा ।
 यन्त्रमनुदेशिकस्वोपासकभेदातिगा चिदाविः स्यात् ॥ ६ ॥
 कल्पोक्तसङ्घजपतद्दशांशहोमादिमोदितस्थान्तम् ।
 वाञ्छितदायि विपक्षव्ययदक्षं भातु साधकश्रेयः ॥ ७ ॥
 दीनाधीनदयारसवशंवदस्मेरमुन्दरापाङ्गा ।
 मूर्तिमती मम मुनिभिर्महनीया भाग्यघोरणी जयति ॥ ८ ॥
 साधारणमपि तदिदं स्तोत्रमसाधारणप्रभावाढ्यम् ।
 पठतां क्रमावसाने प्रथते पुंसां मनीषितमशेषम् ॥ ९ ॥

इति श्रीभासुरानन्दनाथान्तेवासिना शुभा ।

कृतोमानन्दनाथेन साधकश्रेयसे स्तुतिः ॥

मुषासिनीपूजादि विशेषार्च्यविसर्जनान्तम्

अथ श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण पञ्चमवर्जं यथार्हपञ्चमसहितं वा मुषासिनीपूजनम्, तत्त्वत्रयशोधनम्, हविःप्रतिपत्तिं च निर्वर्त्य, मूलेन देवतामावाहनविलोमक्रमेण आत्मन्युद्भास्य, विशेषार्च्यं विसृजेत् ।

मन्त्रसाधनम्

एवं नित्यसपर्यां कुर्वन् श्यामाक्रमोक्तेन क्रमेण पुरश्चरणजपं तत्तत्कल्पोक्तसङ्ख्याकं, अनुक्तावक्षरलक्षसङ्ख्याकं, कलौ तच्चतुर्गुणितं, प्रत्यहं त्रिसहस्रादिक्रमेण कृत्वा, होमतर्पणब्राह्मणभोजनानि तत्तद्दशांशं कुर्यात् । होमश्च द्रव्यविशेषादर्शने आज्येनैव । अथ सिद्धमन्त्रः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनपरो यदि काम्यमभिलषेत् तदुक्तप्रकारेण जपादिकं विद्वेष्यात् ॥ इति सर्वदेवतासाधारणक्रमः ॥

मन्त्राणां जातिनिर्णयः अधिकारिभेदश्च

अत्रोपदेश्यानां मन्त्राणां सामान्यतो जातिनिर्णयोऽधिकारिभेदश्च निरूप्यते ।
संग्रामणितन्त्रे—

मायाबीजं ब्राह्मणः स्याच्छ्रीबीजं क्षत्रियः स्मृतम् ।

कामबीजं भवेद्देवो वाग्भवं शूद्र ईरितम् ॥

चतुर्बीजपरित्यक्तो मन्त्रः पौलस्त्यसंज्ञकः ।

चतुर्बीजं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां त्रिबीजकम् ॥

बीजद्वयं तु वैश्यानां शूद्राणां त्वेकबीजरुम् ॥ इति ॥

अस्यार्थः—मा ये ति हृदयेषा । श्रीकामबीजवाग्भवैः प्रत्येकं सम्बद्धा मन्त्राः क्रमेण ब्राह्मणादयः स्युः इत्यर्थः । च तु बी ज प रि त्य क्तः उक्तबीजचतुष्टयहितः । च तु रि ति प्रत्येकं प्रणवादिबीजचतुष्टयसम्बद्धाः मन्त्राः इत्यर्थः । दातव्या इति शेषः । इदं च पदं

प्रत्येकमिति च पदं उत्तरत्राप्यनुगम्यते । त्रि वां ज कं श्यादिवीजत्रययुक्ता इत्यर्थः ।
बीजद्वयं कामबीजवाग्भवयुक्ता इत्यर्थः । ए क मिति वाग्भवबीजयुक्ता इत्यर्थः ।

अथ मन्त्रविशेषाणां अधिकारिणः । कुटुम्बलावतारं—

उमामहेश्वरं चैव दक्षिणामूर्त्यघोरकम् ।
हयग्रीवं च वाराहमहाक्षरमतः परम् ॥
प्रणवायं वासुदेवं लक्ष्मीनारायणं तथा ।
वर्णत्रये तु दातव्यं नान्यवर्णे कदाचन ॥
नारसिंहं पाशुपतं तथा चैव सुदर्शनम् ।
वर्णद्वये च दातव्यं नान्ययोर्धैव कर्हिचित् ॥
अग्निमन्त्राश्च ये केचित् सूर्यमन्त्राश्च ये तथा ।
तारादिघृणिमन्त्राश्च दातव्याश्च त्रिवर्णके ॥
आनुष्टुभं शक्तिमन्त्रास्तथा विन्ध्यनिवासिनी ।
समनीलसरस्वत्या दातव्याश्चादिवर्णके ॥
मातङ्गिन्युप्रतारा च काळिका श्यामला तथा ।
छिन्नमस्ता च बाला च दातव्या सर्ववर्णके ॥
तारादिस्तु गणेशस्य हरिद्रासंज्ञकस्तथा ।
त्रिवर्णेष्वेव दातव्यः कथितः सर्वसिद्धिदः ॥
त्रिपुरायाश्च ये मन्त्राः ये मन्त्रा वटुकादयः ।
सर्ववर्णेषु दातव्याः पुरन्ध्रीणां विशेषतः ॥
हृदादिह्रस्वफटकारादि सङ्कराणां प्रशस्यते ॥ इति ॥

कलौ सिद्धमन्त्राः

अथ कलौ सिद्धमन्त्राः—

ज्यर्ण एकाक्षरोऽनुष्टुप् त्रिविधो नरकेसरी ।
एकाक्षरोऽर्जुनोऽनुष्टुप्द्विविधस्तुरगाननः ॥
चिन्तामणिः क्षेत्रपालो भैरवो यक्षनायकः ।
गोपालो गजवक्त्रश्च चेटका यक्षिणी तथा ॥

मन्त्राणां व्यक्तिविशेषाः

पुंस्त्रीनपुंसकाः प्रोक्ता मनवद्विविधा बुधैः ।

वयडन्ताः फडन्ताश्च पुमांसो मनवः स्मृताः ॥

वौषट्स्वाहाऽन्तिमा नार्यो हुंनभोन्ता नपुंसकाः ॥ इति ॥

एतेषां विनियोगस्तु—

वश्योच्चाटनरोधेषु पुमांसः सिद्धिदायकाः ।

क्षुद्रकर्मरुजां नाशे स्त्रीमन्त्राः शीघ्रसिद्धिदाः ।

अभिचारे स्मृताः स्त्रीषु एवं ते मनवद्विविधा ॥ इति ॥

सिद्धारिशोधनप्रकारः

अथाशङ्कादीनां बहूनां विचार्यत्वेऽप्यावश्यकमात्रं लिख्यते । तत्र सिद्धारिशोधनप्रकारः—

ऊर्ध्वाभिध तिरश्चीभिः रेखाभिः पद्म पद्मभिः ।

कोष्ठपोडशकं कृत्वा मातृकार्णैः प्रपूरयेत् ।

एकत्रिरुद्रनवदङ्निगमार्कपंक्ति-

पण्णागभूपमनुबाणहयेषु तिष्ठाम् ॥

कामे क्रमादकथहप्रमृतीन् मनीषी

वर्णान् समालिखतु पोडशपोडशत्रीन् ॥

अस्यार्थः—रुद्रः एकादशकोष्ठम् । दृक् द्वितीयम् । निगमाः चतुर्थम् ।

अर्कः द्वादशम् । पंक्तिः दशमम् । नागः अष्टमम् । भूपः षोडशम् । मनवः

चतुर्दशम् । बाणाः पद्ममम् । हयाः सप्तमम् । तिथिः पद्मदशम् । ऋमः

अथोदशं चेत्यर्थः । एकादितिष्ठन्तेषु कोष्ठेषु प्रथमं क्रमात् अकारादीन् स्वरान्

बिदिल्य, ततः फादितान्तान्, ततः थादिसान्तान् वर्णान् बिदिल्य, ततः प्रथमकोष्ठे

तृतीये एकादशे च हृत्क्षान् बिदिलेत् इति ॥

विदिग्गतेषु कोष्ठानां चतुर्थेषु चतुर्थिह ।

यत्र साधकनामादिवर्णस्तसिद्धिसंज्ञकम् ॥

^१पाञ्चमी • इति 'न'

पित्तुरित्युपलक्षणं मातामहादीना-
दर्शनात् । सिद्धमन्त्रग्रहणे तु ना

तथा च सिद्धयामळे—

यदि भाग्यवशेनैव ।

तदैव तां तु दीक्षेत् ।

“सिद्धमन्त्रो न दुष्यति”

पित्रादेरपि इष्टमन्त्रो प्राण

शौनकां प्रति—

प्रसन्नहृदयः स्वस्व-

कुरुक्षेत्रे महातीर्थे

प्रकरणात् मन्त्रमिति सम्बन्धतः

भिक्षुभ्यश्च वनस्ते

गृहस्थो भोगमो

त्यक्ताग्रयः क्रिय

वनस्थास्तादृशा

वर्णां ब्रह्मचारी न्यूनाश्रमी

इत्यवगम्यते ॥

अथ बाल्ययौवन-

बीजमन्त्रास्त

बीजमन्त्रा ट

विंशत्यधिक

एत एव अवस्थान्तरेष्वपि

ऋणघनशोधनप्रकारः

द्विगुणीकृत्य साध्यस्थं स्वरव्यञ्जनमण्डलम् ।
 साधकाख्याजुपा तेन मेळयित्वाऽष्टभिर्हरेत् ॥
 शेषः साध्यस्य राशिः स्याद्योजयेत्^१साधकेऽन्यथा ।
 साधकाधिकशेषस्तु ऋणी साध्यः शुभावहः ॥
 शोधितो न्यूनशेषस्तु वर्णलक्षजपाच्छुभः ॥ इति ॥

साध्यो मन्त्रः, तेन स्वरव्यञ्जनसमुदायेन । अन्यथेति साधकनामगतं स्वरव्यञ्जनम् ।
 द्विगुणीकृत्य साध्यगतस्वरव्यञ्जननिकरेण सम्मेळ्य अष्टभिः हरेत् । शेषं साध्यस्य
 जानीयादित्यर्थः शोधित इति-उक्तेन सिद्धाधिक्येण शोधितोऽनुकूलो मन्त्रो ऋ-
 साधकान्यूनशेषः स्यात्तदा यावत्ता वर्णसङ्ख्याया न्यूनता तावत्लक्षजपादिना ऋणनिराकरण-
 पुरश्चरणादिकं कुर्यादित्यर्थः । प्रकारान्तराणि चान्यतो ज्ञातव्यानीति दिक् ॥

^२ऋणघनिचक्रम्

कोष्ठान्येकादशान्येव वेदेन पूरितानि च ।
 अकारादिहकारान्तं लिखेत् कोष्ठेषु तत्त्ववित् ॥
 प्रथमं पञ्चकोष्ठेषु ह्रस्वदीर्घकमेण तु ।
 द्वयं द्वयं लिखेत्तत्र विचारे खलु साधकः ॥
 शेषेष्वेकैकवर्णास्तु क्रमतस्तु लिखेत् सुधीः ।
 पट्कालकालविपदप्रिसमुद्रवेद-
 खाकाशान्यदहनाः खलु साध्यवर्णाः ।
 युग्मद्विपञ्चविपदम्बरयुक्शशाङ्क-
 व्योमान्धिवेदशशिनः खलु साधकार्णान् ।
 नामाञ्जलादकटबाद्भ्रजभुक्तशेषं
 ज्ञानोभयोरधिकशेषमृणं धनं स्यात् ।

^१ साधके—अ, भ.

^२ अयं खण्डः (धी) शेष एवोपलभ्यते.

अस्यार्थः—साध्यवर्णान् स्वरव्यञ्जनस्यैव वृषन् वृषक् तान् वृष्यत्वायङ्केः
गणितान् तथा साधकनामाधरान् गुणावङ्केः गणयित्वा, अष्टसङ्गानिः ह्य्या
उभयोश्च साध्यसाधकयोः अधिकं भूयं शेषं धनं शान्ता मन्त्रं दद्यात् ॥

यदा मन्तधेष्टणी भवति तदा मन्तः सुभद्रापको भवति ।
धनी येनन्ते यदाधिकारः स्यात् तदा मन्त्रं जपेत् गुपीः ॥
समेऽपि च जपेन्मन्त्रं न जपेत् ऋणाधिकम् ।
शून्ये मृत्युं विजानीयात् तस्माच्छून्यं परित्यजेत् ॥

रुद्रयामळे—

इन्द्रर्क्षनेत्ररविपद्मदशर्तुवेद-

षड्दयायुगाष्टनवभिर्गणितान्ध साध्यान् ।

दिग्मुर्गिरिः[!]भ्रुतिगजाग्निमुनीयुवेद-

पड्वह्निभिस्तु गणितान्ध साधकार्यान् ॥

नामाञ्जलादित्यादिवचनं विश्वविषयम्, रामार्चनचन्द्रिकोद्भूतत्वान् इति
केचित् । यस्तुतस्तु—पूर्वस्यैव विचारणं हतशेषं इन्द्रर्क्षर[!]मित्यादिनामाधरमारन्व
यावत् साधकाक्षरं भवेत् तावत्सङ्घं सप्तगुणं कृत्वा त्रिभिः हरेत् । यद्वा—

साध्यनामाद्विगुणितं साधकेन समन्वितम् ।

अष्टभिध हरेच्छेषं तदन्यद्विपरीतकम् ॥

अस्यार्थः—साध्यनामाद्विगुणितं साधकाक्षरसमन्वितम् । अष्टभिध
हरेत्तदन्यत् । साधकनामान् स्वरव्यञ्जनभेदेन द्विगुणीकृत्य साध्येन युक्तं कृत्वा
अष्टभिः हरेत् ॥ इति ऋणिधनिचक्रम् ॥ ^१इति कुलाकुलचक्रविचारः ॥

कुलाकुलचक्रविचारापवादः

अथ तदपवादः—कुलार्णवसोमसिद्धान्तरत्नसागररुद्रयामळकुलमूलावतारागस्त्य-
संहितासिद्धान्तशेखरादिवचनगतोऽपुनरुक्तः संगृह्यते—

एकाक्षरे तथा कूटे त्रैपुरे स्त्रीसमर्पिते ।

स्वप्नलब्धे नृसिंहार्धवराहाणां मनुष्यपि ॥

^१ अत्रमूले कुलाकुलचक्रविचारो लिखित इति भावि । तथापि लेखकप्रमादाद्गलितः ।
अतोऽन्यतोन्वेष्टलिखितः परि० ३ये.

मन्त्राणां संस्काराः

छिन्नत्वादिकपञ्चाशदोपशान्त्यै निरूप्यते ।
 संस्कारदशकं सप्तकोटिमन्त्रगणे क्रमात् ॥
 जननं जीवनं पश्चात् ताडनं बोधनं तथा ।
 अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः ।
 तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैता मन्त्रसंस्क्रियाः ॥

जननं यथा—

भूर्जपत्रे लिखेत् सम्यक् त्रिकोणं रोचनादिभिः ।
 वारुणं कोणमारभ्य सप्तधा विभजेत् समम् ॥
 एवमीशाग्निकोणाभ्यां जायन्ते तत्र योनयः ।
 नववेदमितास्तत्र विलिखेन्मातृकाः क्रमात् ॥
 अकारादिहकारान्तामीशादिवरुणावधि ।
 देवी तत्र समावाह्य पूजयेच्चन्द्रनादिभिः ॥
 ततः समुद्धरेन्मन्त्रं जननं तद्गुदीरितम् ॥

दीपनं यथा—

जपो^१ हंसपुटस्यास्य सहस्रं दीपनं स्मृतम् ॥
 (हंसः+मन्त्रः+सोऽहम् ॥)

बोधनं यथा—

नभोवहीन्दुयुक्ताधीं सम्पुटस्य जपो मनो ।
 सहस्रपञ्चमितो बोधनं तत् स्मृतं पुंशुः ॥
 (ह्रस्वः+मन्त्रः+ह्रस्वम् ॥)

ताडनं यथा—

सहस्रं प्रजपेदखण्डितं ताडनं तु तत् ॥
 (फट्+मन्त्रः+रुट् ॥)

^१ हंसपु—४२, ४३, ५१.

इदं तु सदुरोरभाये । तत्संभये तु तत एव गृह्णीयात् इति । प्रासादे प्रासादबीजाये । पाशः पाशबीजम् । व्योर्मव्यापिनि इकारादेशे । मायायां हृल्लेखायाम् । अङ्कं नवाक्षरे । दन्तार्णं द्वात्रिंशदक्षरे । हरिद्रोच्छिष्टयोः तत्तद्रणपत्योः । अणुः मन्त्र इति । केषांचिन्मन्त्राणां शापाभाव उक्तो वातुलागमे—

पुरा शापविहीनं च वर्तते मन्त्रपद्यकम् ।

श्रीविद्यासालुवं मन्त्रं नृसिंहार्कवराहकम् ॥ इति ॥

तन्त्रान्तरे तु—

मन्त्रादिषु च सर्वेषु हृल्लेखाकामबीजकम् ॥ इति ॥

श्रीबीजं वा विनिक्षिप्य जपेन्मन्त्रस्य सिद्धये ।

तारसम्पुटितो वाऽपि दुष्टमन्त्रोऽपि सिध्यति ॥ इति ॥

हिरण्यगर्भसंहितायाम्—

स्वनामादिवर्णैः स्वमित्राक्षरैर्वा

मनुं सम्पुटीकृत्य येऽनुस्मरन्ति ॥

स मन्त्रस्तेषां सिध्यतीति शेषः । अनुस्मरणं जपः । तन्त्रान्तरे तु—

यत्र यस्य भवेत् भक्तिविशेषः स मन्त्रतमः ।

वैरिक्वोष्टमनुप्राप्तः सिद्धिदस्तस्य जायते ॥

गुरोरनुज्ञामात्रेण दुष्टमन्त्रोऽपि सिध्यति ।

गुरुं विलङ्घ्य शास्त्रेऽस्मिन्नाधिकारः सुरेश्वरि ॥ इति ॥

अथापि रिपोरनुकूलेन मन्त्रेण अभिचारादौ क्रियमाणे साधकस्यैवानिष्टापत्त्या सिद्धार्यादिविचारः कर्तव्य इति तन्त्रराजमतम् । वस्तुतस्तु—

नित्यनैमित्तिकान्मुक्तिः काम्यादैहिकमेव हि ।

प्रयोगात् परलोकस्य हानिरेव तु जायते ॥

इति वचनात् नित्यनैमित्तिकमात्रपरो भवेत् इत्युचितमिति दिक् ॥

मन्त्रदेवतां वा । च न्द ना दि मिः—आदिशब्देन पुष्पादीनि गृह्यन्ते । पञ्चोपचारैः
इत्यर्थः । समुद्धरेत् स्वोपास्यमन्त्रवर्णान् क्रमेण तत्तत्कोष्ठेभ्यो गृहीत्वा पत्रान्तरे
लिखेदित्यर्थः । जननं जननाख्यसंस्कारः । एवमेव दीपनादयोऽपि । हंसपुटस्य
आद्यन्तयोः हंसमन्त्रसम्पुटितस्य । अस्य स्वोपास्यमन्त्रस्य । नभो हकारः, बद्धिः
रकारः, इन्दुः बिन्दुः, तैर्युक्तोऽर्धा ऊकारः, तेन ह्रूं एतेन सम्पुटितस्य मन्त्रस्य
सहस्रपञ्चकजपेन बोधनमित्युक्तम् । अस्त्रं फट्कारं, तत्पुटितेन मन्त्रेण सहस्रजपेन
ताडनमित्युक्तम् । वागिति ऐं हंसः ओ इति त्रिभिरभिपिबेत् । पत्रान्तरे लिखितं
भक्तुं कुशाप्रतौयबिन्दुभिः प्रोक्षयेदित्यर्थः । हरिः तकारः, बह्वृषन्वितो रकारयुतः,
तारी प्रणवयुतः, त्रोम् । भुवस्तारः तदादिकः ॐ त्रों वषट् । तत्पुटं एभिः
सम्पुटितम् । मा या ह्रींकारः । बा ला तृ ती य बी जं सौः, ग ग नं ह, ह्रसौरिख्येन ।
शेषं सुगममिति । तन्त्रसारादिषु तु संस्काराणां प्रयोगभेदोऽपि दृश्यते । एतेषां
संस्काराणां सकृदेवानुष्ठानम्, नत्वभ्यासः इति दिक् ॥

पुष्पविचारः

अथ प्राक्चिकीर्षितः पुष्पविचारः—

पुष्पाणि तावत् पञ्चधा—परं अपरं उत्तमं मध्यमं अधमं चेति । मणिरत्न-
सुवर्णादिनिर्मितं कुसुमं परं, तच्च न कदाचिन्निर्मात्यम् । चित्रवसनादिकर्तनजं अपरम्,
तच्च प्रतिदिनप्रोक्षणेन शुष्येत् । उत्तमं वृक्षभवं, तच्च प्रातरपचितं तत्सन्ध्यात्रितयावधि
न निर्मात्यम् । मध्यमं फलरूपम् । अधमं पत्रजलरूपम् । एते च तत्तत्काल
एवार्पणार्हे इति प्रयोगपारिजाते नारदः ॥

देवतायोग्यानि पुष्पादीनि

भविष्यपुराणे—

पुष्पररुष्यसम्भूतैः पत्रैर्वो गिरिसम्भवेः ।

अपर्युपितनिष्ठिद्रेः प्रोक्षितैर्जन्तुवर्जितैः ॥

आत्मरामोद्भवैर्वाऽपि भक्त्या समूजयेत् सुरान् ॥

अभिषेको यथा—

वाग्चंसतारैर्जितेन सहस्रं पाथसा मनुम् ।
अभिषिञ्चेत वागादरभिषेकोऽयमीरितः ॥
(ऐं हंसः ॐ इति ॥)

विमलीकरणं यथा—

हरिर्वह्यन्वितस्तारी वपडन्तो धुवादिफः ।
सहस्रं तत्पुटं जप्याद्विमलीकरणं मनोः ॥
(ॐ त्रों वपट्+मन्त्रः+वपट् त्रों ॐ ॥)

जीवनं यथा—

स्वधावपट्पुटं जप्यात् सहस्रं जीवने मनुम् ॥
(स्वधा वपट्+मन्त्रः+वपट् स्वधा ॥)

तर्पणं तथा—

क्षीराज्ययुतपाथोभिस्तर्पणे तर्पयेन्मनुम् ॥

गोपनं यथा—

जपेन्मायापुटं मन्त्रं सहस्रं गोपनं हि तत् ॥
(ह्रीं+मन्त्रः+ह्रीम् ॥)

आप्यायनं यथा—

वालातार्तीयबीजेन गगनाद्येन सम्पुटम् ।
सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रमेतदाप्यायनं मतम् ॥
(ह्रसौः+मन्त्रः+ह्रसौः)
संस्कारदशकं प्रोक्तं मन्त्रां दोषनाशकम् ॥

अस्यार्थः—वि भ जे त् तिर्यग्रेखाभिरित्यर्थः । एवं
योनयोऽल्पानि त्रिकोणानि । न व वे द मिताः एव
कोणादि । वरुणा वधि स्वाप्रवारुणकोणपर्यन्तम् ।

ज्वालतेति मध्याह्नान्नोत्तरमानयने निर्गन्धः । निर्गन्धेष्वपि केषां चिदुपादानमुक्तं
स्वच्छन्दसारे—

निर्गन्धपुष्पजातीषु पलाशकुमुमैरपि ।

जपाबन्धूकपुष्पैश्च मन्दारैरपि पूजयेत् ॥ इति ॥

पुष्पसारसुधानिधौ—

पुष्पं वस्त्रे न बध्नीयात् शिरसा न बहेद्बुधः ।

नयेत् पत्रपुटेनैव पाणिनाऽऽलम्ब्य वाग्यतः ।

आश्लयनः—

नाग्निना सह पुष्पं वा जलं चान्नं न चानयेत् ।

जलाग्निगन्धपुष्पान्नं न मूर्धाऽस्तेन वाहयेत् ॥

ग्रन्थान्तरे—

देहोपरि धृतं यच्चाप्यधोवस्त्रधृतं च यत् ।

वामहस्ते धृतं यच्च जलेन क्षाळितं च यत् ॥

देवतास्तत्र गृह्णन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम् ।

समित्पुष्पकुशादीनि बहन्तं नाभिवादयेत् ॥

तद्द्वारी चैव नान्यान् हि निर्माल्यं तत् भवेत्तपोः ।

शुष्कं पर्युषितं कृष्णं भूमिग नार्पयेत् सुमम् ॥

चम्पकं कमलं त्यक्त्वा कठिकामपि वर्जयेत् ॥ इति ॥

सर्षपदेयतासाधारणानि विहितानि च

भविष्यपुराणे—

जातीशमीकुशाः कङ्कुमहिडिकाकरवीरजम् ।

नागपुन्नागकाशोकरक्तनीलोत्पलानि च ॥

चम्पकं बहुलं चैव पद्मं बिल्वं पवित्रकम् ।

एतानि सर्षपदेवानां विहितानि समानि च ॥

विष्णुधर्मोत्तरे—

धर्मार्जितधनक्रीतैः यः कुर्याद्देवतार्चनम् ।

उद्धरिष्यत्यसन्देहात् सप्त पूर्वान् तथा परान् ॥

इति विप्रातिरिक्तविषयम्,

समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत् ।

शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः ॥

इति भविष्योक्तेः । अयं च निषेधो ब्राह्मणस्य नित्यार्चन एव, न तु नैमित्तिके काम्ये च ॥

लक्षपुष्पार्चनादौ तु क्रयक्रीतमपीष्यते ।

इति मन्त्रकोशकारोक्तेः । परोपवनादेः चौर्येणापि कुसुममादेयम् ॥

देवतार्थे च कुसुममस्तेयं मनुरब्रवीत् ॥

इति वचनात् । याचितपुष्पार्चनस्य ब्राह्मपुराणे अपराधेषु गणितत्वाच्च याचनमपि जलोपान्त एव निषिद्धम्, तीरादन्यत्र याचने तु न दोष इति प्रयोगपारिजातोक्तेः । तत्रैव स्वजात्याहृतं पुष्पं द्रव्येण आत्मीयं कृत्वा पूजयेदिति । अनेन विप्रस्यापि क्रयक्रीतार्चनाम्यनुज्ञा दृष्टा ॥

घर्जनीयानि

कृमिकीटावपन्नानि शीर्णपर्युपितानि च ।

स्वयं पतितपुष्पाणि त्यजेदुपहतानि च ॥

उपहतिस्तु मलादिना ।

निर्गन्धं केशकीटादिदूषितं चोपग्रन्थकम् ।

मलिनं तुच्छसंस्पृष्टनात्रातं स्वविक्रासितम् ॥

अशुद्धभाजनानीतं श्लाघ्यं नीतं च याचितम् ॥

बोपदेवः—

बिल्वापामार्गजातीतुळसिशमिशताकेतकीभृङ्गदूर्वा-

कुंदांभोजाहिदर्भा मुनितिळतगरा ब्रह्मकल्हारमण्डः ।

चम्या चारातिकुम्भी दमनमरुवका बिल्वतोहानि शस्ताः

त्रिशाख्यङ्कार्यरीशोदधिनिधिवसुभू भूयसा भूय एवम् ॥

त्रिशादयो बिल्वप्रभृतीनां दिनसह्यावाचकाः । मुद्गरावर्त्याश्च ॥

विहितनिषिद्धानि

पाटला च शमीपत्रं दुर्गायास्तु हिताहितम् ॥

विहितनिषिद्धमित्यर्थः ॥

तिळकं मालती बाणस्तुळसी भृङ्गराजकम् ।

तमाळं शिवदुर्गार्थं निषिद्धविहितं भवेत् ॥

बाणो भापया फरसाळा ॥

जयः काशः श्वेतपत्रं श्वेतमन्दारकं तथा ।

दुर्गायाश्चैव विष्णोश्च निषिद्धविहितं भवेत् ॥

जयः जयन्ती ॥

अगस्तिरतिमुक्तं च तिरीटं च हरे हरौ ।

अपामार्गस्य पुष्यं च दुर्गायाश्च हिताहितम् ॥

अतिमुक्तो माधवीलता । तिरीटं लोध्रम् ॥

निषिद्धानि

अक्षतानर्कधुसूतौ विष्णोर्नैवार्येत् सुधीः ॥

अक्षतनिषेधः साळग्रामपर एव न तु मूर्त्यामिति हेमाद्रिः ॥

बन्धूकं केतकी कुन्दं केसरं कुटजं जपाम् ।

शङ्करे नार्पयेत् विद्वान् माळती युधिकामपि ॥

शक्तौ दूर्वाकर्मन्दारान् माद्धरं तगरं रवी ।
 विनायके तु तुळसीं नार्पयेत् जातुचिद्बुधः ॥
 इहाकनिपेधो दुर्गेतरविषयः, विहितेषु तस्याप्युपादानात् ॥

मध्यमं फलरूपं कुसुमम्

जम्बूदाडिमज्भीरचिञ्चिणीवीजपूरकाः ।

रम्भा धात्री च बदरी रसालः पनसोऽपि च ॥

एषां फलैर्यजेद्देवं ॥

देवमित्युपलक्षणं देव्या अपि ॥

अधमम्

तुळसी वकुळो वृक्षः चम्पकश्च सरोजिनी ।

बिल्वकल्हारदमनास्तथा मरुवकं कुशः ॥

दूर्वाहिवल्ल्यपामार्गा धिष्युक्रान्ता मुनिद्रुमः ।

धात्रीयुतानामेतेषां पत्रैः कुर्यात् सुरार्चनम् ॥

इह तुळस्यादीनां पूर्वोक्तानां केयां चित् वकुळादिपत्रप्रायपाठेऽपि नाधमत्वम् ।
 पत्रैरित्युपलक्षणं फलस्यापि ॥

पर्युपितकुसुमविचारः

भविष्यत्पुराणे—

न पर्युपितदोपोऽस्ति जलजोत्पलचम्पके ।

तुळंस्वगस्त्यवकुळे बिल्वे गङ्गाजले तथा ॥

अन्यत्र—

तुळस्यां बिल्वपत्रे च जलजेषु च सर्वशः ।

न पर्युपितदोपोऽस्ति मालाकारगृहेषु च ॥ इति ॥

पर्युपितापवादः

पारिजाते—

जलं पर्युपितं व्याज्यं पत्राणि कुमुमानि च ।

गात्रं वारि न दुष्यति ॥ इति ॥

स्कान्दे—

तस्य माला भगवतः परमप्रीतिकारिणी ।

शुष्का पर्युषिता वाऽपि न दुष्टा भवति क्वचित् ॥

तस्येत्युपक्रमात् दमनकस्य । भगवत इत्युपलक्षणं भगवत्या अपि ॥

पर्युषितमात्रस्यापि ग्राह्यत्वम्

प्रयोगपारिजाते—

यद्वा पर्युषितैश्चापि पुष्पाद्यैरविकारिभिः ।

गन्धोदकेन चैतानि त्रिः प्रोक्ष्यैव प्रयुजयेत् ॥ इति ॥

अथवा बिल्वतुळसीपत्रैर्बकुळपुष्पकैः ।

शुष्करपि पूजयेत् ॥ इति ॥

सर्वस्यैतस्यापचादः

ग्रन्थान्तरे—

देवीपूजा सदा कार्या जलजेः स्थलजेरपि ।

विहितैर्वा निषिद्धैर्वा भक्तियुक्तेन चेतसा

सर्वपुष्पैः सदा पूजा विहिताविहितैरपि ।

कर्तव्या सर्वदेवानां भक्तिरेवात्र कारणम् ॥ इति ॥

इतोऽपि विस्मारोऽन्यत्र द्रष्टव्यः इति दिक् ॥

नियन्धाभ्ययनमहिमा

एतन्निबन्धाभ्ययनेनापि सर्वदेवतोऽस्ति कृतं भवति । तदुक्तं भगवत्प

सूत्रकृता—

य इमां दत्तखण्डी महोदनिन्द नद्यारेपुरनिबन्तमर्स्वनूतामरीते स

सर्वेषु यज्ञेषु यथा भवति । यं यं वदन्मर्षिणे तेन तेनास्वेष्टं भवति इति हि श्रूयते

इत्युपनिषदिति सिद्धम् ॥ इति ॥

शक्तौ दूर्वाकर्मन्दारान् माद्धरं तगरं रवौ ।
 विनायके तु तुळसीं नार्पयेत् जातुचिद्बुधः ॥
 इहार्कनिषेधो दुर्गेतरविषयः, विहितेषु तस्याप्युपादानात् ॥
 मध्यमं फलरूपं कुसुमम्
 जम्बूदाडिमज्भीरचिञ्चिणीवीजपूरकाः ।
 रम्भा धात्री च बदरी रसाळः पनसोऽपि च ॥
 एषां फलैर्यजेद्देवं ॥
 देवमित्युपलक्षणं देव्या अपि ॥

अधमम्

तुळसी वकुळो वृक्षः चम्पकश्च सरोजिनी ।
 बिल्वफल्हारदमनास्तथा मरुवकं कुशः ॥
 दूर्वाहिवल्ल्यपामार्गा विष्णुक्रान्ता मुनिद्रुमः ।
 धात्रीयुतानामेतेषां पत्रैः कुर्यात् सुरार्चनम् ॥
 इह तुळस्यादीनां पूर्वोक्तानां केषां चित् वकुळादिपत्रप्रायपाठेऽपि नाधमत्वम्
 पत्रैरित्युपलक्षणं फलस्यापि ॥

पर्युपितकुसुमविचारः

भविष्यसुराणे—

न पर्युपितदोषोऽस्ति जलजोत्पलचम्पकं ।
 तुटस्यगस्पवकुळे बिल्वे गङ्गाजले तथा ॥

अन्यत्र—

तुटस्यां बिल्वपत्रे च जलजेषु च मर्षताः ।
 न पर्युपितदोषोऽस्ति नाट्यभारगृहेषु च ॥ इति ॥

पर्युपितापवादः

कारिका—

यत्तं पर्युपितं स्वान्यं पत्रानि कुमुदानि च ।
 तुटस्यगस्पवकुले गङ्गां कारि न दृष्यति ॥ इति ॥

नित्योत्सवोदाहृतग्रन्थग्रन्थकारभूची

| ग्रन्थनाम | पुटसङ्ख्या | ग्रन्थनाम | पुटसङ्ख्या |
|-------------------------------------|-------------------|----------------------------------|------------|
| अगस्त्यसंहिता | २१२ | प्रयोगपारिजातः | २१७, २१८, |
| आश्वलायनः | २१० | | २२०, २२३ |
| कादिमत् | ८७ | बोपदेव | २२१ |
| कुलमूलावतारः | २०६, २१०, २१२ | भविष्यपुराणम् २१७, २१८, २१०, २२२ | |
| कुलार्णवः | ४१, १३६, १४१, २१२ | मन्त्रकोशः | १५६ |
| गणेशविमर्शनी | २०७ | मन्त्रकोशकारः | २१८ |
| ग्रन्थान्तरम् | २१९, २२३ | मन्थानभैरवतन्त्रम् | २ |
| ज्ञानार्णवः १४, ४४, ५१, ७२, ०७, १६६ | | मुहूर्तचिन्तामणि | १६८ |
| डामरम् | ७० | योगिनीतन्त्रम् | २०७ |
| तन्त्राजः ६, १३६, १४२, २१०, २१४ | | रत्नमागरः | २१२ |
| तन्त्रासारः | ११, २१७ | रहस्यनामसाहस्रम् | २२० |
| तन्त्रान्तरम् ४, १४३, २१३, २१४-२ | | रुद्रयामउम् १६८, २०७, २१२-२, २२० | |
| ताराभक्तिसुधार्णव | २२० | उद्भगपुराणम् | १६१ |
| देवीपुराणम् | ०२० | वराहपुराणम् | २१८ |
| देवीयामत्रम् | २६० | बन्धु श्रमणः | २१४ |
| नारदपाभरात्रम् | १६०, २०७ | बामदेवधर्मत्रम् | ८६ |
| पराशरः | १६१ | विदालः | ५८ |
| पारिजातः | ००२ | विष्णु | १६० |
| पुत्रमागमुनिर्धारः | २१०, २२० | विष्णुसंस्कृतम् | २१८ |

परिशिष्टम्

अथ रक्तशुक्रविद्यामंत्रो (पत्र ९, पंक्ति २२)

रक्तविद्यामंत्रः—ओं ऐं हीं श्रीं ह्रीः ह्रीः रक्तविद्यामहापीठशुक्रपुष्परक्तमंडलम्
 त्रमहापीठरक्तदीपरक्तमुद्रामहापीठरक्तनतिमहाप्रकाशिनी परांना ह्रीः ह्रीः इन्द्र इन्द्र
 रणविद्याधीपादुकां पूजयामि ॥

शुक्रविद्यामंत्रः—ओं ऐं हीं श्रीं ह्रीः ह्रीः शुक्रविद्यामहापीठशुक्रपुष्परक्तमंडलम्
 शुक्रमंत्रमहापीठशुक्रदीपरक्तमुद्रामहापीठशुक्रनतिमहाप्रकाशानन्दनाथ ह्रीः ह्रीः इन्द्र इन्द्र
 चरणविद्याधीपादुकां पूजयामि ॥

अथ तत्त्वमंत्राः—(पत्र ११, पंक्ति १४) ओं ऐं हीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ॡं
 ऐं औं अं अः ऐं क ए ईं ल हीं आत्मतत्त्वं आणवमलं स्थूलदेहं शोषयामि जुहोमि स्वाहा ॥
 ऋं न मम ॥ १ ॥ ओं ऐं हीं श्रीं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं वं
 नं पं फं बं भं मं ह्रीं ह स क ह ल हीं विद्यातत्त्वं कर्मणमलं सूक्ष्मदेहं शोषयामि जुहोमि
 स्वाहा ॥ मुकुंदादेहं न मम ॥ २ ॥ ओं ऐं हीं श्रीं यं रं लं वं शं षं हं लं धं यौः सुदुःखं
 तत्त्वं मायिकमलं कारणदेहं शोषयामि जुहोमि स्वाहा ॥ पशुपतय इदं न मम ॥ ३ ॥

अथ चालामंत्रः—(पत्र १२, पंक्ति १६) ऐं ह्रीं सौः ॥ भ्यधरः ॥

अथ महाविद्येश्वरीमंत्रः—(पत्र ५६, पंक्ति १५) आं हीं क्रौं सः नित्यक्रिन्ने मददने स्वाहा ॥
 अनुदंशासः ॥

अथ कामेश्वरकामेश्वर्योरायुधर्मंत्राः ॥ (पत्र ६९, पंक्ति ५)

कामेश्वरायुधर्मंत्राः—

बाणमंत्रः । सों तं लीं बीं शीं सर्वभूतमेष्यो बाणेभ्यो नमः ॥

धनुर्मंत्रः । धं सर्वसंभोदनाय धनुषे नमः ॥

पाशमंत्रः । आं सर्ववशीकरणाय पाशाय नमः ॥

शंशुभमंत्रः । शौं सर्वसंभनाशाय नमः ॥

कामेश्वर्योरायुधर्मंत्रास्तृण्य पृ. ६८, पं. १९

- ६ ईं जलधिरूपायै कमलायै नमः ॥
 ६ ईं गिरिरूपायै विष्णुवाहभायै नमः ॥
 ६ उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः ॥
 ६ ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः ॥
 ६ ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः ॥
 ६ ॠं वनरूपायै कमलवासिण्यै नमः ॥
 ६ ऌं आश्रमरूपायै इंद्रियायै नमः ॥
 ६ ॡं गुह्यरूपायै मायायै नमः ॥
 ६ एं नदीरूपायै रमायै नमः
 ६ ऐं चत्वररूपायै पद्मायै नमः ॥
 ६ औं उद्भिज्जरूपायै नारायणप्रियायै नमः ॥
 ६ औं ह्वेदजरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः ॥
 ६ अं अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः ॥
 ६ अः जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः ॥
 ६ कं लवरूपायै आर्यायै नमः ॥
 ६ खं वृत्तिरूपायै उमायै नमः ॥
 ६ गं कलारूपायै चंडिकायै नमः ॥
 ६ घं काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः ॥
 ६ ङं निमेषरूपायै शिवायै नमः ॥
 ६ चं श्वासरूपायै अपर्णायै नमः
 ६ छं घटिकारूपायै अंबिकायै नमः ॥
 ६ जं मुहूर्त्तरूपायै सत्यै नमः ॥
 ६ झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः ॥
 ६ ञं दिवसरूपायै शांभव्यै नमः
 ६ टं संध्यारूपायै ईशान्यै नमः ॥
 ६ ठं रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः ॥
 ६ डं त्रिधिरूपायै सर्वमंगलायै नमः ॥
 ६ ढं वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः ॥
 ६ णं नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नमः ॥
 ६ तं योगरूपायै महामायायै नमः ॥
 ६ थं करणरूपायै महेश्वर्यै नमः ॥
 ६ दं पक्षरूपायै गृहान्यै नमः ॥

- ६ धं मासरूपायै रुद्राण्यै नमः ॥
 ६ नं राशिरूपायै शर्वाण्यै नमः ॥
 ६ पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः ॥
 ६ फं अयनरूपायै काल्यै नमः ॥
 ६ वं वत्सररूपायै कार्यायन्यै नमः ॥
 ६ भं युगरूपायै गौर्यै नमः ॥
 ६ मं प्रलयरूपायै भवान्यै नमः ॥
 ६ यं पंचभूतरूपायै ब्राह्म्यै नमः ॥
 ६ रं पंचतन्मात्ररूपायै वागीश्वर्यै नमः ॥
 ६ लं पंचकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः ॥
 ६ वं पंचज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नमः ॥
 ६ शं पंचप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः ॥
 ६ पं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नमः ॥
 ६ सं अंतःकरणचतुष्टयरूपायै वाक्प्रदायै नमः ॥
 ६ हं अवस्थाचतुष्टयरूपायै शारदायै नमः ॥
 ६ लं सप्तधातुरूपायै भारत्यै नमः ॥
 ओं ऐं हीं धीं ह्रींः ह्रौंः ह्रौंः शं दोषत्रयरूपायै विचारिमकायै नमः ॥

इत्येकपंचाशच्छक्तीमातृकास्थानेषु विन्यस्य ॥ ततः ओं ऐं हीं धीं ह्रींः ह्रौंः अकारादि-
 क्षकारांतां मातृकामुधार्यं स्रुतप्रपंचाधिदेवतायै धीपरांवादेश्यै नमः ह्रौंः ह्रौंः धीं हीं ऐं ओं सर्वायै
 ध्यापकं जुषोत् ॥ इति प्रपंचन्यासः ॥

॥ अथ भुवनन्यासः ॥

तत्र-पादयोः ओं ऐं हीं धीं ह्रींः ह्रौंः अं आं इं अतल्लोकनित्यस्रतकोटिगुप्राययोगिनीमूलदेवतायुतापारशरवम्बादेश्यै नमः ॥

गुल्फयोः ६ ईं उं ऊं वितल्लोकनित्यस्रतकोटिगुप्रायवतानन्तयोगिनीमूलदेवतायुतापारशरवम्बा-
 देश्यै नमः ॥

त्र्यंशयोः ६ ऋं ऋं मूं सुतल्लोकनित्यस्रतकोटिभ्रतिगुप्राचिन्नययोगिनीमूलदेवतायुता ॥

शान्दोः ६ लूं ऐं ऐं महातल्लोकनित्यस्रतकोटिमहागुह्यस्वतन्त्रयोगिनीमूलदेवतायुता ॥

ऋदोः ६ ओं धीं तल्लोकनित्यस्रतकोटिपरमगुह्ययोगिनीमूलदेवतायुता ॥

स्त्रियोः ६ अं धः रमातल्लोकनित्यस्रतकोटिरहस्यज्ञानयोगिनीमूलदेवतायुता ॥

मूलपारैः ६ कं खं यं धं पं पाः तल्लोकनित्यस्रतकोटिरहस्यतर्कमायोगिनीमूलदेवतायुता ॥

स्वाधिष्ठाने ६ षं छं जं झं ञं भूर्लोकनिलयशतकोटिअतिरहस्यहाकिनीयोगिनीमूल-
देवतायुता • ॥

मणिपूरके ६ टं ठं डं ढं णं भुवर्लोकनिलयतकोटिमहारहस्यराकिनीयोगिनीमूलदेवतायुता • ॥

अनाहते ६ तं थं दं धं नं स्वर्लोकनिलयशतकोटिपरमरहस्यलाकिनीयोगिनीमूल-
देवतायुता • ॥

विद्युद्धौ ६ पं फं बं भं मं महर्लोकनिलयशतकोटिगुप्तकाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुता • ॥

आज्ञाय ६ यं रं लं वं जनोलोकनिलयशतकोटिगुप्ततरसाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुता • ॥

ललाटे ६ र्णं पं सं हं तपोलोकनिलयशतकोटिअतिगुप्तहाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुता • ॥

प्रद्वारंभ्रे ६ लं क्षं सत्यलोकनिलयशतकोटिमहागुप्तयाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधार-
शक्त्यम्बादेव्यै नमः ॥ इति विन्यस्य ॥ ६ समस्तमातृकामुच्चार्य सकलभुवनाधिपत्यै श्री-
पराम्बादेव्यै नमः ह्रीः ह्रीः धी ही ऐ ओ इति व्यापकं कुर्यात् ॥ इति भुवनन्यासः ॥

॥ अध मूर्तिन्यासः ॥

तत्र—शिरसि ओं ऐं ही धी ह्रीः ह्रीः अं केशवायाक्षरशक्त्यै नमः ॥

मुखे ६ आ नारायणायाशक्त्यै नमः ॥

दक्षिणांसे ६ इं माधवायेष्टदायै नमः ॥

वामांसे ६ ईं गोविन्दायेवान्यै नमः ॥

दक्षपार्श्वे ६ उं विष्णवे उग्रायै नमः ॥

वामपार्श्वे ६ ऊं मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नमः ॥

दक्षकट्यां ६ ऋं त्रिविक्रमाय ऋद्धयै नमः ॥

वामकट्यां ६ ॠं वामनाय रूपिण्यै नमः ॥

दक्षोरी ६ लं श्रीधराय लतायै नमः ॥

वामोरी ६ लूं हृषीकेशाय लूनरोपायै नमः ॥

दक्षजानुनि ६ एं पद्मनाभायैकनाथिकायै नमः ॥

वामजानुनि ६ ऐं दामोदरायैकारिण्यै नमः ॥

दक्षत्रंपायां ६ ओं वामुदेवायौपवत्यै नमः ॥

वामत्रंपायां ६ औं संकर्षणायौर्वेद्यायै नमः ॥

दक्षपादे ६ धं प्रपुत्राय अन्नप्रभायै नमः ॥

वामपादे ६ अ. अनिरुद्धायस्थिमालाधरायै नमः ॥

॥ अथ देवतान्यासः ॥

तत्र-दक्षपादे ओं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रस्रौः ह्रस्रौः अं आं सहस्रकोटिकृपिकुलसेवितायै निवृत्त्याचार-
देव्यै नमः ॥

वामपादे ६ ई ई सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवितायै प्रतिग्राम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षगुल्फे ६ उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुलसेवितायै विद्याम्वादेव्यै नमः ॥

वामगुल्फे ६ ऋं ॠं सहस्रकोटिशान्तकुलसेवितायै शान्ताम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षजंघायां ६ लं लं सहस्रकोटिसुनिकुलसेवितायै शान्त्यतीताम्वादेव्यै नमः ॥

वामजंघायां ६ एं ऐं सहस्रकोटिदैवतकुलसेवितायै हृष्ट्याम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षजानुनि ६ ओं औं सहस्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्वादेव्यै नमः ॥

वामजानुनि ६ अं आः सहस्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्षाम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षोरी ६ कं खं सहस्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुभ्याम्वादेव्यै नमः ॥

वामोरी ६ गं घं सहस्रकोटिसाध्यकुलसेवितायै करालिकाम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षोद्गमूले ६ ङं ञं सहस्रकोटिअम्सरःकुलसेवितायै जयाम्वादेव्यै नमः ॥

वामोद्गमूले ६ जं ङं सहस्रकोटिगंधर्वकुलसेवितायै विजयाम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षपार्श्वे ६ क्षं नं सहस्रकोटिगुह्यकुलसेवितायै अजिताम्वादेव्यै नमः ॥

वामपार्श्वे ६ टं ठं सहस्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षस्तने ६ डं ढं सहस्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्वादेव्यै नमः ॥

वामस्तने ६ णं तं सहस्रकोटिपद्मगुलसेवितायै ज्येष्ठाम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षदोर्मूले ६ थं दं सहस्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्रम्वादेव्यै नमः ॥

वामदोर्मूले ६ धं नं सहस्रकोटिगणेशकुलसेवितायै मायाम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षमुजे ६ पं फं सहस्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुंडलिन्यम्वादेव्यै नमः ॥

वाममुजे ६ यं भं सहस्रकोटिवटुककुलसेवितायै काह्यम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षासे ६ मं यं सहस्रकोटिश्रेयसकुलसेवितायै कालराभ्यम्वादेव्यै नमः ॥

वामासे ६ रं लं सहस्रकोटिप्रलयकुलसेवितायै भगवत्यम्वादेव्यै नमः ॥

दक्षकर्णे ६ वं शं सहस्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वेश्वर्यम्वादेव्यै नमः ॥

वामकर्णे ६ यं सं सहस्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञाभ्यम्वादेव्यै नमः ॥

भासे ६ हं लं सहस्रकोटिदृष्टकुलसेवितायै सर्वकृष्ण्यम्वादेव्यै नमः ॥

ब्रह्मन्त्रे ६ शं सहस्रकोटिचण्डरकुलसेवितायै कुलशय्यम्वादेव्यै नमः ॥

ददः ओं ऐं ईं श्रीं ह्रस्रौः ह्रस्रौः सहस्रमानृष्टामुषायां समस्तदेवतापिपायै श्रीपराम्वादेव्यै नमः

ह्रीः ह्रौः श्रीं ह्रीं ऐं औं ह्रौं ह्रौं व्यापकं मुपां ॥ ह्रौं देवतान्यासः

भार्याभिमन्त्राद्यमायुषं प्रविभक्तविभूषणम् ।
 फोटिकंदर्पलावण्यं सदा पौडशवार्षिकम् ॥ ३ ॥
 मंदस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चंद्रसेखरम् ।
 दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम् ॥ ४ ॥
 पानपात्रं च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः
 विद्यासंसृदि विभ्राणं सदानंदमुखेक्षणम् ॥ ५ ॥
 महापोढोदिताशेषदेवतागणसेवितम् ।
 एवं चित्ताभ्युजे ध्यायेदर्दनारीश्वरं शिवम् ॥ ६ ॥
 पुरुषं वा स्मरेद्देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत् ।
 अथवा निष्कलं ध्यायेत् सखिदानंदलक्षणम् ॥ ७ ॥
 सर्वतेजोमयं ध्यायेत् सचराचरविग्रहम् ॥

इति स्वाभेदेन ध्यात्वा योनिलिंगसुरभिकपालज्ञानप्रिशूलपुस्तकवनमालानभोमहामुद्रा इति दश मुद्रा
विरच्य शिरसि श्रीगुरुं ध्यायेत् । यथा ।

सहस्रदलपंकजे सकलशीतलसिप्रभं
 वराभयकराभ्युजं विमलगंधपुष्पांबरम् ।
 प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवताहृषिणं
 स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुह्यं ॥

इति श्रीगुरुं ध्यात्वा । तद्विद्यया तत्पादुकां शिरसि विन्यस्य प्रणम्य स्वगुरुकृतं स्वनाम
स्वमूलाधारे स्मृत्वा शिवरूपं स्वात्मानं ध्यायेत् ॥

॥ अथ महापोढान्यासफलं कुलार्णवे ॥

एवं न्यासे कृते देवि साक्षात् परशिवो भवेत् ।
 मंत्री न चात्र संदेहो निग्रहानुग्रहक्षमः ॥
 महापोढाह्वयं न्यासं यः करोति दिने दिने ।
 देवाः सर्वे नमस्यन्ति तं नमामि न संशयः ॥
 महापोढाह्वयं न्यासं यत्र मंत्री न्यसेत्ततः ।
 दिव्यश्रेष्ठं समुद्दिष्टं समन्ताद्दशयोजनम् ॥
 कृत्वा न्यासमिमं देवि यत्र गच्छति मानवः ।
 तत्र श्रीर्विजयो लाभः स मान्यः पुरुषः प्रिये ॥

नमः इति दक्षिणोरी ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ऊं रूपाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति दक्षजानुनि ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ऋं रसाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति दक्षगुल्फे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ॠं मंधाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति दक्षपादतले ॥ ओं ऐं हीं श्रीं लृं चित्ताकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति वामपादतले ॥ ओं ऐं हीं श्रीं लृं धैर्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति वामगुल्फे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं एं स्मृत्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति वामजानुनि ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ऐं नामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति वामोरी ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ओं बीजाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति वामकरपृष्ठे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं औं आत्माकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति वामकूर्परे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं अं अमृताकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति वामासे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं अः शरीराकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः इति वामभ्रुवपृष्ठे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ऐं ह्रीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरेश्वर्यै नमः इति हृदये ॥ तस्या दक्षिणे ओं ऐं हीं श्रीं लभिमासिद्धयै नमः ॥ वामे ओं ऐं हीं श्रीं ह्रीं सर्वविद्याविद्याविणीमुद्रायै नमः ॥ इति विन्यस्य ॥ एताः पुस्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सबाहनाः सपरिवाराः संपूजिताः सन्तु नमः इति व्यापकं न्यसेत् ॥ इति द्वितीयाचरणन्यासः ॥ ततः ओं ऐं हीं श्रीं ह्रीं ह्रीं धीः अपृच्छपद्माय सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः इति व्यापकं विन्यस्य ॥ ओं ऐं हीं श्रीं कं खं गं घं ङं अनंगकुमुदायै नमः इति दक्षशंखे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं चं छं जं झं ञं अनंगमेखलायै नमः इति दक्षजनुनि (बाहुमूलसंधी) ॥ ओं ऐं हीं श्रीं टं ठं डं ढं णं अनंगमदनायै नमः इति दक्षोरी ॥ ओं ऐं हीं श्रीं तं थं दं धं नं अनंगमदनानुरायै नमः इति दक्षगुल्फे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं पं फं बं भं मं अनंगरेखायै नमः इति वामगुल्फे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं यं रं लं वं अनंगवेगिन्यै नमः इति वामोरी ॥ ओं ऐं हीं श्रीं घं यं सं हं अनंगानुशायै नमः इति वामजनुनि ॥ ओं ऐं हीं श्रीं लं धं अनंगमालिन्यै नमः इति वामशंखे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ह्रीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यै त्रिपुरसुंदर्यै नमः इति हृदये ॥ तस्या दक्षिणे ओं ऐं हीं श्रीं मादिमासिद्धयै नमः ॥ वामे ओं ऐं हीं श्रीं ह्रीं आकर्षिणीमुद्रायै नमः ॥ इति विन्यस्य ॥ ओं ऐं हीं श्रीं एताः पुस्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सबाहनाः सपरिवाराः ससोपचारैः संपूजिताः संतु नमः इति व्यापकं कुर्यात् ॥ इति तृतीयाचरणन्यासः ॥ ततः ओं ऐं हीं श्रीं ईं ह्रीं इक्षीः चतुर्दशारचक्राय सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः इति व्यापकं विन्यस्य ॥ ओं ऐं हीं श्रीं कं सर्वसंधोभिणीशय्यै नमः इति श्वाटदशभागे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं खं सर्वविद्याविणीशय्यै नमः इति दक्षगंडे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं गं सर्वाकर्षिणीशय्यै नमः इति दक्षासे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं घं सर्वाह्लादिनीशय्यै नमः इति दक्षपार्श्वे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ङं सर्वसंभोदिनीशय्यै नमः इति दक्षोरी ॥ ओं ऐं हीं श्रीं चं सर्वतंभिनीशय्यै नमः इति दक्षशंखाय ॥ ओं ऐं हीं श्रीं छं सर्वत्रंभिनीशय्यै नमः इति वामशंखाय ॥ ओं ऐं हीं श्रीं जं सर्वसंभक्तिशय्यै नमः इति वामोरी ॥ ओं ऐं हीं श्रीं झं सर्वतंभिनीशय्यै नमः इति वामपार्श्वे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ञं सर्वोन्मादनकरिणीशय्यै नमः इति वामसे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं टं सर्वांध्यापिनीशय्यै नमः इति वामगंडे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ठं सर्वसुहृदिनीशय्यै नमः इति श्वाटकानभागे ॥

ओं ऐं हीं श्रीं ह्रस्वकहलही नित्यनृत्ताशक्तिघात्रे शिरोदेव्यै नमो इति वामस्तने ॥
 ओं ऐं हीं श्रीं सकलही अनादिबोधशक्तिघात्रे शिखादेव्यै नमः इति दक्षगले ॥ ओं ऐं हीं श्रीं क
 ए ई ल हीं स्वतंत्रशक्तिघात्रे कवचदेव्यै नमः इति वामगले ॥ ओं ऐं हीं श्रीं ह्रस्वकहल
 हीं नित्यमल्लशक्तिघात्रे नेत्रदेव्यै नमः गळीचे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं सकलही अनंतशक्तिघात्रे
 अक्षदेव्यै नमः इति गलोर्ध्वे ॥ ओं ऐं हीं श्रीं कएईलही ह्रस्वकहलही सकलही श्रीमहात्रिपुरसुंदर्यै
 नमः इति हृदये ॥ एवं विन्ध्यस्य विंदुचक्रमध्ये देव्युपरिवृत्ताकारेण पंचपंचकदेवता विन्ध्यसेत् ॥ तद्यथा ॥
 ओं ऐं हीं श्रीं मूलं धीविद्यालक्ष्म्यंवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं लक्ष्मीलक्ष्म्यंवादेव्यै नमः ॥ ओं
 ऐं हीं श्रीं मूलं महालक्ष्मीलक्ष्म्यंवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं त्रिशक्तिलक्ष्म्यंवादेव्यै नमः ॥ ओं
 ऐं हीं श्रीं मूलं साम्राज्यलक्ष्म्यंवादेव्यै नमः ॥ इति प्रथमपंचकं ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं धीविद्याकोशांवा-
 देव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं परंज्योतिःकोशांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं परनिष्कल-
 शांभवीकोशांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं अजपाकोशांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं
 मातृकाकोशांवादेव्यै नमः ॥ इति द्वितीयपंचकं ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं धीविद्याकल्पलतांवादेव्यै नमः ॥
 ओं ऐं हीं श्रीं मूलं पंचकामेश्वरीकल्पलतांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं पंचकल्पलतेश्वरीकल्पलतांवादेव्यै
 नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं कुमारीकल्पलतांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं पंचबाणेश्वरी-
 कल्पलतांवादेव्यै नमः ॥ इति तृतीयपंचकम् ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं श्रीविद्याकामदुघांवादेव्यै
 नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं अमृतपीठेश्वरीकामदुघांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं सुधासु-
 कामदुघांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं अमृतेश्वरीकामदुघांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं
 अप्रपूर्णाकामदुघांवादेव्यै नमः ॥ इति चतुर्थपंचकं ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं श्रीविद्यारत्नांवादेव्यै
 नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं सिद्धलक्ष्मीरत्नांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं मातंगीरत्नांवादेव्यै
 नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं भुवनेश्वरीरत्नांवादेव्यै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं वाराहीरत्नांवादेव्यै
 नमः ॥ इति पंचमपंचकम् ॥ इति पंचपंचिकादेवतान्यासः ॥ ततो वक्ष्यमाणेषु स्थानेषु
 पद्दर्शनदेवता विन्ध्यसेत् ॥ तद्यथा ॥ ओं ऐं हीं श्रीं बौद्धदर्शनदेवताताण्डये नमः इति दशांसष्टुत्तो
 हृदयावधि ॥ ओं ऐं हीं श्रीं वैदिकदर्शनदेवताद्वन्द्वे नमः इति दशरुणंष्टुत्तो हृदयावधि ॥ ओं ऐं हीं
 श्रीं शैवदर्शनदेवतादशाय नमः इति दशसंखतो हृदयावधि ॥ ओं ऐं हीं श्रीं शैवदर्शनदेवतायै सूर्याय
 नमः इति दशगलतो हृदयावधि ॥ ओं ऐं हीं श्रीं शैवदर्शनदेवतायै विष्णवे नमः इति दशभालादि-
 हृदयांतम् ॥ ओं ऐं हीं श्रीं शाक्तदर्शनदेवतायै भुवनेश्वरी नमः इति त्रिपुरादिहृदयांतम् ॥ इति
 पद्दर्शनदेवतान्यासः ॥ ततो विन्दुके एव चतुःसमयदेवता विन्ध्यसेत् ॥ तद्यथा ॥ ओं ऐं हीं
 श्रीं मूलं कामेश्वरीसमयदेवतायै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं वज्रेश्वरीसमयदेवतायै नमः ॥ ओं ऐं हीं
 श्रीं मूलं भगवतीसमयदेवतायै नमः ॥ ओं ऐं हीं श्रीं मूलं श्रीमहात्रिपुरसुंदरीसमयदेवतायै नमः ॥
 इति विन्ध्यस्य ओं ऐं हीं श्रीं ह्रस्वकहल ह्रस्वकहल ह्रस्वकहल हीं इति व्यापकं सर्वांगे ॥ ओं ऐं हीं
 श्रीं मूलं महाव्याणरीटनिलदसंबंधकभूःप्रातःपंचमीपंचकोषपंचकल्पलतापंचकामदुघांपंचरत्नां
 धीविद्यासंक्षरिषत्, सर्वदर्शनसेवित, परंज्योतिःस्तुत, चतुस्रसमयदेवतापूर्वित, महाशंभाश्वरानन,

सर्वरक्षाकरचक्राय नमः इति व्यापकं विन्यस्य ॥ ओं ऐं हीं धीं मं सर्वज्ञादेव्यै नमः इति दक्षनेत्र-
मूले ॥ ओं ऐं हीं धीं यं सर्वशक्तिदेव्यै नमः इति दक्षापागे ॥ ओं ऐं हीं धीं रं सर्वश्र्वर्य-
प्रदायिनीदेव्यै नमः इति दक्षभोत्रे ॥ ओं ऐं हीं धीं लं सर्वज्ञानमयीदेव्यै नमः इति दक्षभोत्रपृष्ठे ॥
ओं ऐं हीं धीं वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेव्यै नमः इति दक्षचूडे ॥ ओं ऐं हीं धीं शं सर्वोधार-
स्वरूपादेव्यै नमः इति वामचूडे ॥ ओं ऐं हीं धीं पं सर्वपापहरादेव्यै नमः इति वामभोत्रपृष्ठे ॥
ओं ऐं हीं धीं सं सर्वानंदमयीदेव्यै नमः इति वामभोत्रे ॥ ओं ऐं हीं धीं हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेव्यै
नमः इति वामापागे ॥ ओं ऐं हीं धीं क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेव्यै नमः इति वामनेत्रमूले ॥ इति विन्यस्य
स्वाधिष्ठानचक्रे पूर्वोक्ता त्रिपुरामालिनीचक्रेभरी विन्यस्य तद्दक्षिणवामयोः प्राकाम्यसिद्धिं महाकुशमुद्रां
प्राग्बन् विन्यसेत् ॥ ततः एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरचक्रे समुद्राः इत्यादि व्यापकं विन्यसेत् ॥
ततः ह्रौं ह्रस्वीं ह्रसीं बहिर्दशाक्षक्राय सर्वार्थसाधकचक्राय नमः इति व्यापकं विन्यस्य ॥ कंठे
विद्युच्चक्रे षोडशदलेषु एकस्मिन्, त्रये; पुनः एकस्मिन्, त्रये; पुनः एकस्मिन्, त्रये इति एकैकां शक्तिं
विन्यस्य अवशिष्टचतुर्दले अवशिष्टचतुःशकीः न्यसेत् ॥ एवं प्रादक्षिण्येन सर्वसिद्धिप्रदादि
दशशक्तीर्विन्यस्य मूलाधारे त्रिपुराधीचक्रेभरीं प्राग्बन्विन्यस्य तद्दक्षिणवामयोः बशित्वसिद्धिं उन्मा-
दिनीमुद्रां च प्राग्बन् विन्यस्य ॥ ओं ऐं हीं धीं एताः कुलकौलयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः
इत्यादि व्यापकं न्यसेत् ॥ ततः ह्रौं ह्रस्वीं ह्रसीं चतुर्दशाक्षक्राय सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः इति
व्यापकं विन्यस्य ॥ हृदये अनाहतचक्रे द्वादशदलकमले दशदलेषु सर्वसंशोभण्यादिदशशक्तीर्विन्यस्य
अंतिमदलेषु प्रतिदले शक्तिद्वयं शक्तिद्वयमिति शिष्टशक्तिचतुष्टयं विन्यस्य ॥ ऊरुद्वये पूर्वोक्तां त्रिपुर-
वासिनी चक्रेभरीं प्राग्बन् विन्यस्य तद्दक्षवामयोः ईशित्वसिद्धिं नशंकरां मुद्रां च प्राग्बन्विन्यस्य ॥
ओं ऐं हीं धीं एताः संप्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः इत्यादि व्यापकं न्यसेत् ॥ ततः
हीं ह्रीं सौः अष्टदलाय सर्वसंशोभणचक्राय नमः इति व्यापकं विन्यस्य ॥ ओं ऐं हीं धीं
कं खं गं घं ङं अनंगमुष्टुभाये नमः इति पृष्ठवेगे ॥ ओं ऐं हीं धीं चं छं जं झं यं अनंग-
मेखलायै नमः इति वामपार्श्वे ॥ ओं ऐं हीं धीं टं ठं डं णं अनंगमदनायै नमः इति
उदरे ॥ ओं ऐं हीं धीं तं थं दं धं नं अनंगमदनायै नमः इति दक्षपार्श्वे ॥
ओं ऐं हीं धीं पं फं बं भं मं अनंगरेखायै नमः इति पृष्ठवामपार्श्वयोर्मध्ये ॥ ओं ऐं हीं धीं यं रं लं वं
अनंगवेगिन्यै नमः इति वामपार्श्वउदरयोर्मध्ये ॥ ओं ऐं हीं धीं शं यं सं हं अनंगांशुभायै नमः इति उदर-
दक्षिणपार्श्वयोर्मध्ये ॥ ओं ऐं हीं धीं लं धं अनंगमाळिन्यै नमः इति दक्षिणपार्श्वपृष्ठबंधयोर्मध्ये ॥
इति विनस्य जानुद्वये पूर्वोक्तां त्रिपुरसुंदरीचक्रेभरीं पूर्वबन्विन्यस्य ॥ तद्दक्षिणवामपार्श्वयोः महिमासिद्धिं
आवर्षिणीमुद्रां च विन्यस्य एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंशोभणचक्रे समुद्राः इत्यादि व्यापकं न्यसेत् ॥
ततः ऐं ह्रीं धीः षोडशदलचक्राय सर्पांशापरिपूरकचक्राय नमः इति व्यापकं विन्यस्य ॥
स्याधिष्ठाने षट्दलकमलेष्वदि प्रादक्षिण्येन पंचमु दलेषु प्रतिदले शक्तिप्रयं अंतिमदले स्वैकां शक्ति-
मिति वामावर्षिणीआदिषोडशशक्तीर्विन्यस्य ॥ अंधयोः पूर्वोक्तां त्रिपुरेभरीं विन्यस्य तद्दक्षिणवामयोः
अभिमासिद्धिं बिम्बिणीं च मुद्रां विन्यस्य ॥ ओं ऐं हीं धीं एताः गुप्तयोगिन्यः सर्पांशापरिपूरक-

हृद्गी ह्रीः त्रिपुराधीचक्रेश्वर्यै नमः ॥ विद्युद्धिस्थितसर्वरक्षाकरचक्रे ५ हीं ह्रीं न्ले त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वर्यै
 नमः ॥ लंबिकाप्रस्थितसर्वरोगहरचक्रे ५ हीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वर्यै नमः ॥ आङ्गाचक्रस्थ
 सर्वसिद्धिप्रदचक्रे ५ ह्रै ह्रै ह्रै ह्रीः त्रिपुराविकाचक्रेश्वर्यै नमः ॥ महाबिन्दुस्पयिन्दुचक्रे सर्वानन्दमयचक्रे
 ५ मूलं महात्रिपुरसुन्दरीमहाचक्रेश्वरीश्रीपादुकायै नमः ॥ इति विन्यस्य ततश्च परस्परसंलग्नतत्त्वचक्र-
 श्रयधिष्ठितां सन्यग् ध्यात्वा पुनः करशुद्धिं विधाय विन्यस्य ॥ चारुभयं मूलाधारे कामराजं हृदये
 तृतीयं धूमध्ये तुरीयचिदां ब्रह्मरंध्रे विन्यस्य ओं ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसंप्रदाय-
 कुलकौलनिगर्भरहस्यपरापररहस्यपरातिरहस्यश्रीचक्रयोगिनीश्रीपादुकेभ्यो नमः इति स्वशरीरं
 चक्ररूपं ध्यायन् व्यापकं कुर्यात् ॥ इति स्थितिधीचक्रन्यासः ॥ इत्येवं संहारसृष्टिस्थिति
 धीचक्रन्यासः ॥

अथ धीचक्रन्यासफलम् ॥ तत्र हृदयामले ॥ यः एवं विन्यस्य देहे साधकः स्थिरमानसः ॥
 विमुच्य मानुषं भावं स सद्यः शिवतां व्रजेत् ॥ १ ॥ त्रिकालं धारयेद्यत् तस्य सर्वांगसंगतं ॥ सततं
 भासते देवे समस्तयोगिनीपदं ॥ २ ॥ भूतप्रेतपिशाचादौर्बाधितुं नैव शक्यते ॥ सिद्ध (मित्र)
 वचरते लोके तापत्रयाविवर्जितः ॥ ३ ॥ यत्र योगीश्वरो न्यस्तस्तस्मादारभ्य सर्वतः ॥ धरणी क्षेत्रतां
 याति यावद् द्वादशयोजनम् ॥ ४ ॥ एतत्ते कथितं भद्रे न्यासं त्रैलोक्यदुर्लभम् ॥ शिष्याय भक्तिगुण्णाय
 द्वापकाय प्रकाशयेत् ॥ ५ ॥ भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्यो वा बाधवेभ्यो न दर्शयेत् ॥ दत्तं चेत् सिद्धिदानिः
 स्यादिराहा शांकी मता ॥ ६ ॥ मंत्राः पराद्मुखा यांति कुदा भवति सुन्दरी ॥ अशुभं च भवेत्तस्य
 तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥ ७ ॥

इति फलम् ॥ इति त्रिविधधीचक्रन्यासः ॥ हरि. ओं तत्परम् ॥

| | | | | | | |
|--------------------------------|-----------------|-----------------------|---------------------|--------------------------|---|-----------------------------------|
| १ अं आ पीः | चतुरस्र | त्रैलोक्य मोहनचक्र | अणिमा सिद्धि | संक्षोभिणी मुद्रा | अणिमादि | त्रिरांदा- पर्यंतं |
| २ ऐं क्ली पीः | षोडशदल | सर्वांशा परिपूरक | अणिमा सिद्धि | विद्याविणी मुद्रा | कामा- कर्मणी | आदिशरीरा कर्मणी |
| ३ हीं क्ली पीः | अष्टदल | सर्वसंक्षो भण | महिमा सिद्धि | आकर्षिणी मुद्रा | अनंग- कुमुभा | अनंग- मालिनी |
| ४ ह्रैं ह्र्क्लीं ह्र्सीः | चतुर्दशार | सर्वसौभा- ग्यदायक | इशित्व सिद्धि | सर्ववशं- करी मुद्रा | सर्व- संक्षोभिणी | सर्वद्वंद्व- क्षयं करी |
| ५ ह्र्सें ह्र्क्लीं ह्र्सीः | बहिर्दशार | सर्वार्थ- साधक | वशित्व सिद्धि | सर्वोन्मादि नी मुद्रा | सर्वसिद्धि- प्रदा | सर्व सौभाग्यदा |
| ६ हीं क्लीं प्लें | अंतर्दशार | सर्वरक्षाकर | प्राकाम्य सिद्धि | महाकुशा मुद्रा | सर्वज्ञा | सर्वस्मित- फलप्रदा |
| ७ हीं श्रीं पीः | अष्टकोण | सर्वरोगहर | भुक्ति सिद्धि | खेचरी मुद्रा | वशिनी | कौलिनी |
| ८ ह्र्सें ह्र्क्लीं ह्र्सीं | मध्य त्रिकोण | सर्वसिद्धि- प्रद | इच्छा सिद्धि | सर्वधीज मुद्रा | गुरुत्रयपद्- युवती कामे श्वर्योदित्रय | आयुधपंच दश नित्या |
| ९ तुरीय विद्या | विन्दुचक्र | सर्वानंद- मयचक्र | प्राप्ति सिद्धि | योनि मुद्रा | मन्त्रोच्चारण पीठादि | पंचपंच देव- ता पञ्चदश- नामि |
| | | | सर्वकाम सिद्धि | त्रिखंडा मुद्रा | | समय- देवता |

हैं ह क ल ह ह हीं ह्रीः ऊर्ध्वसिंहासनगता प्रथमसुंदरी श्री० ॥ अ ह सैं अ ह सीं अ ह सीः ऊर्ध्व० द्वितीय० श्री० ॥ ऐं ह स ए हं स सैं ह ३ क ल हीं ह ३ हीः ऊर्ध्व० तृतीयसुं० श्री० ॥ क ल ह ह स स स हीं कट्टे कट्टे ? ऊर्ध्व० चतुर्थसुं० स ह ह स ल क्ष ह सैं ह स ह स ल क्ष ह सीं ह स ल क्ष स ह स हीः ऊर्ध्व० पंचमसुं० ॥ इति पंचसिंहासनपूजा ॥

अथ पंचपंचिकाः—

प्रथमपंचिका = पंचलक्ष्मी

- १ मूलविद्या—पंचदशी अथवा षोडशी
- २ श्री — लक्ष्मी
- ३ ओं श्री हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री हीं श्रीं ओं महालक्ष्म्यै नमः—महालक्ष्मी
- ४ श्रीं हीं ह्रीं—त्रिशक्ति
- ५ श्री स ह क ल हीं श्रीं—साम्राज्यलक्ष्मी

द्वितीयपंचिका—पंचकोशा

- १ मूलविद्या
- २ ओं हीं हं सः सोहं स्वाहा—परं ज्योतिः
- ३ ओं — — परा निकलशांभवी
- ४ हं सः — अजपा
- ५ अं० क्षं — मातृका

तृतीयपंचिका—पंचकल्पलता

- १ मूलविद्या
- २ हीं ह्रीं ऐं म्दं ह्रीं — पंचकामेश्वरी
- ३ ओं ह्रीं ह्रीं हीं ओं सरस्वत्यै नमः—पारिजातेश्वरी
- ४ ह्रीं ऐं सौः—कुमारी
- ५ द्रो द्रो ह्रीं म्दं सः—पंचबाणेश्वरी

चतुर्थपंचिका—कामदुपापंचकम्

- १ मूलविद्या
- २ ओं हीं हं सः संजीवनि जूं जीवं प्राणमंथिर्यं कुरु कुरु सः स्वाहा—अमृतपीठेश्वरी
- ३ वद वद वाग्वादिनि ह्यै द्वित्रे द्वेदिनि महाशोभं कुरु ३ ह्यै ओं मोक्षं कुरु कुरु ह्यै—

शुभम्:

५ ऐं छं झीं जूं सः अमृतो अमृतोद्भवे अमृतेश्वरी अमृतवर्षिणि अमृतं खावय खावय स्वाहा—
अमृतेश्वरी

५ ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ओं नमो भगवति माहेश्वरी अप्रपूर्णं ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा—अन्नपूर्णा

पंचमपंचिका—रत्नपंचक

१ मूलविद्या

२ ज्झ्रीं महाचंडतेजः संरूप्यं कालिमंधाने ह—सिद्धलक्ष्मी

३ ऐं हीं धीं ऐं ह्रीं स्रीः ओं नमो भगवति राजमातंगीश्वरी सर्वजनमनोहरि सर्वमुखरंजिनि
ह्रीं ह्रीं धीं सर्वराजवशंकरि सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि सर्वदुष्टभृगवशंकरि सर्वसत्त्ववशंकरि सर्वलोकवशंकरि
सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा स्रीः ह्रीं ऐं धीं हीं ऐं राजमातंगी

४ धीं हीं श्रीं—भुवनेश्वरी

५ ओं ऐं ग्लीं स्रीः ह्रीं ओं नमो भगवति वार्त्तालि वार्त्तालि वाराहि वाराहि वाराहमुखि वाराह-
मुखि ऐं ग्लीं ऐं अंधे अंधिन्यै नमः हंधे हंधिन्यै नमः जंभे जंभिन्यै नमः स्तंभे स्तंभिन्यै नमः
मोहे मोहिन्यै नमः ऐं ग्लीं स्रीः सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वपां वाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिमतिक्रोध-
बिह्वस्तंभनं कुरु कुरु धीप्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लीं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा—वाराही •

अथ पद्मदर्शनानिः—

५ तारे तुतारे तुरे स्वाहा—तारादेव्यपिष्ठितबीजदर्शन श्री • ॥ १ ॥

५ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । परो रजसे यावरो—मन्त्र-
देवतापिष्ठितवैदिकदर्शनश्री • ॥ २ ॥

५ ओं ह्रीं—रत्नदेवतापिष्ठितशैबदर्शनश्री • ॥ ३ ॥

५ हां हीं हं सः—मूर्तिदेवतापिष्ठितसौरदर्शनश्री • ॥ ४ ॥

५ ओं नमो नारायणाय—विष्णुदेवतापिष्ठितवैष्णवदर्शनश्री • ॥ ५ ॥

५ ह्रीं—भुवनेश्वरीदेवतापिष्ठितशाक्तदर्शनश्री • ॥ ६ ॥

अंगदेव्यामंत्राः—जपप्रकरणे दृश्य—

भूतराकिमंत्राः—

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|----|---|---|---|---|---|---|---|---|------------|
| उ | ऊ | ओ | ग | ख | ङ | च | छ | ज | झ | — | पु-बी-जी-म |
| फ | ब | भ | प | घ | ण | त | थ | द | ध | — | ५०-जी-म |
| ड | ड | ऐ | य | र | ळ | व | श | स | ह | — | म-नि-जी-म |
| ल | ळ | ए | क | ख | ट | ठ | ड | ध | न | — | ५-पु-जी-म |
| त | ट | अं | र | न | ब | व | ध | न | ह | — | ५-६-जी-म |

चतुःसमयमंत्राः—

ऐ ह्रीं लीः ॐ नमः कामेश्वरि इष्टाद्यामकलप्रदे सर्वसर्वसंकरि सर्वनागराजोन्नहरि कुं ॐ
श्रीं ह्रीं च्छं तः लीः ह्रीं ऐं । कामेश्वरीसमयदेवता ॥ १ ॥

ऐं ह्रीं सर्वकार्योत्थापिनि पत्रेश्वरि पत्रप्रदे वज्रपञ्चरमभ्यं ह्रीं ह्रीं ऐं लीं निर्यमददे
श्रीं ह्रीं पत्रनित्याथै नमः । पत्रेश्वरीसमयदेवता ॥ २ ॥

भगमालिमंत्र एव भगमालिनीसमयदेवतामंत्रः ॥ ३ ॥

४ ह्रीं भगवति च्छं कामेश्वरि ह्रीं सर्वसर्वसंकरि वः त्रिपुरभैरवि ऐं विदे ह्रीं महात्रिपुरसुंद
नमः । महात्रिपुरसुंदरीसमयदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ कुलाकुलचक्रम् ॥ (पत्र २१२, पंक्ति २०)

कुलाकुलस्य भेदं हि वक्ष्यामि मंत्रिणाभिह । तथा निबन्धे—(शारदायां)

वाय्वभिभूजलाकाशाः पंचासद्विषयः क्रमान् ।

पंचलक्षाः पंचदीर्घाः बिन्द्वन्ताः संधिसंभवाः ।

कादयः पंचराः वक्षलसहान्ताः प्रसीर्तिताः ।

अ आ ए क च ट त प य पा मारुताः ।

इ ई ऐ स छ ठ थ फ र क्षा आमेयाः ।

उ ऊ ओ ग ज ङ द ष ल लाः पार्थिवाः ॥

क ऋ औ घ ङ ढ ध भ य सा वारुणाः ।

लृ लृ अं ङ ञ न म श ह्य नाभसाः ।

तथा

साधकस्याक्षरं पूर्वं मंत्रस्यापि तद्दृश्यम् ।

यथेरुभूतदेवत्यं जानीयात् स्वकुलं हि तत् ॥

भौमस्य वारुणं मित्रमाभेयस्यापि मारुतम् ।

मारुतं पार्थिवानां चाग्नेयश्चाभसां रिपुः ॥

पार्थिवानां चेति चकारादाभेयं च पार्थिवानां रिपुः ।

नाभसं सर्वमित्रं स्यात् विरुद्धं नैव शीलयेत् ॥

तथा च रुद्रयामले—

पार्थिवे वारुणं मित्रं तैजसं शत्रुरीरितम् ।

ऐंद्रवारुणयोः शत्रुमारुतः परिकीर्तितः ॥

इत्यादि राघवभट्टवृत्तवचनात् जलमारुतयोः शत्रुता बोध्या ॥

इति कुलाकुलचक्रविचारः

GAEKWAD'S ORIENTAL SERIES.

Critical editions of unprinted and original works of Oriental Literature, edited by competent scholars, and published by the Oriental Institute, Baroda.

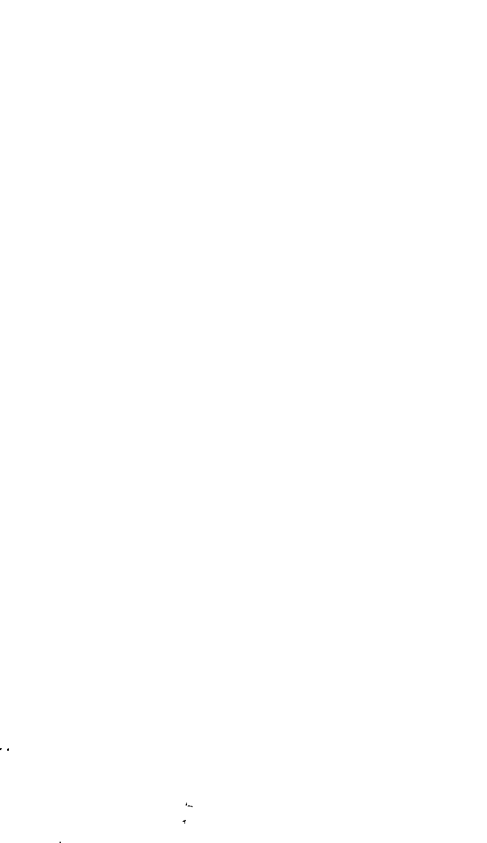
I. BOOKS PUBLISHED

- | | Rs. | A. |
|--|------|---------------------|
| 1. <i>Kāvya-mīmāṃsā</i> : a work on poetics, by Rājasekhara (850-920 A D.), edited by C D Dalal, and R Ananta Krishna Sastry, 1916 Re-issue 1924 | 2-4 | |
| <i>This book has been set as a text-book by the Bombay and Patna Universities</i> | | |
| 2. <i>Naranārāyanānanda</i> a poem on the Paurāṇic story of Arjuna and Kṛṣṇa's rambles on Mount Girnar, by Vasatupāla, Minister of King Viradhavala of Dholka, composed between Samvat 1277 and 1287 i.e. A D 1221 and 1231 edited by C D Dalal and R Anantakrishna Sastry, 1916 | | <i>out of print</i> |
| 3. <i>Tarkasangraha</i> . a work on Philosophy (refutation of Vaiśeṣika theory of atomic creation) by Anandajātina or Ānandagiri the famous commentators on Sāṅkara cārya's <i>Bhāṣyas</i> , who flourished in the latter half of the 13th century edited by T M Tripathi 1917 | 2-0 | |
| 4. <i>Pārthaparākrama</i> a drama describing Arjuna's recovery of the cows of King Virāta by Prahlaḍanadeva the founder of Pālanpur and the younger brother of the Paramara king of Chandravati (a state in Mirpur) and a feudatory of the kings of Guzerat who was a Yuvarāja in Samvat 1220 or A D 1164 edited by C. D Dalal, 1917 | 0-6 | |
| 5. <i>Rāṣṭraudhavamśa</i> an historical poem (Mahākāvya) describing the history of the <i>Bhāṅgas</i> of <i>Mayastagiri</i> from Rāṣṭraudha, king of <i>Bhāṅga</i> and the originator of the dynasty, to Naraya a <i>Sauha</i> of <i>Mayastagiri</i> by Rudra Kavi composed in <i>Saka</i> 1515 or A D 1100 edited by Pandit Lalbat Kṛishṇa Sastry with Introduction by C D Dalal 1917 | 1-12 | |
| 6. <i>Līṅgānusūbhāṣā</i> . an Grammar by Vāmana composed between the last quarter of the 8th century and the first quarter of the 10th century edited by C D Dalal, 1918 | 0-6 | |
| 7. <i>Vasantavilāsa</i> . an historical poem (Mahākāvya), describing the life of Vasantadeva and the country of | | |

| | Rs | A. |
|--|--------------|----|
| A.D. : edited by C. D. Dalal and G. K. Shrigondekar, 1925 | 2-0 | |
| 20 Bhaviṣayattakahā or Pañcamikahā : a romance in Apabhramśa language by Dhanapāla (circa 12th century) : edited by C. D. Dalal, and Dr. P. D. Gune, 1923 | 6-0 | |
| 21. A Descriptive Catalogue of the Palm-leaf and Important Paper MSS. in the Bhandars at Jessalmer, compiled by C. D. Dalal, and edited by Pandit L. B. Gandhi, 1923 | 3-4 | |
| 22. Paraśurāmakalpasūtra : a work on Tantra, with commentary by Rāmesvara edited by A. Mahadeva Sastry, B. A., 1923 Cloth copies | 8-8 | |
| 23. Nityotsava : a supplement to the Paraśurāmakalpasūtra by Umānandanātha edited by A. Mahadeva Sastry, B. A., 1923 | out of print | |
| 24. Tantrarahasya : a work on the Prābhākara School of Pūrvamīmāṃsā, by Rāmanujacārya. edited by Dr. R. Shamasastri, 1923 | 1-8 | |
| 25, 32. Samarāṅgaṇa : a work on architecture, town-planning and engineering, by king Bhoja of Dhara (11th century) edited by Mahamahopadhyaya T. Ganapati Shastri, Ph. D., 2 vols., 1924-1925 | 10-0 | |
| 26, 41. Sādhanamālā : a Buddhist Tantric text of rituals, dated 1165 A. D. consisting of 312 small works, composed by distinguished writers edited by Benoytosh Bhattacharyya, M. A., Ph. D., 2 vols., 1925-1928 | 14-0 | |
| 27. A Descriptive Catalogue of MSS. in the Central Library, Baroda : Vol. 1 (Veda, Vedāngana and Upaniṣads), compiled by G. K. Shrigondekar, M. A. and K. S. Ramaswami Shastri, with a Preface by B. Bhattacharyya, Ph. D., 1925 | 6-0 | |
| 28. Mānasollīsa or Abhilaṣitārthacintāmaṇi : an encyclopaedic work divided into one hundred chapters, treating of one hundred different topics by Somavaradeva, a Chalukya king of the 12th century edited by G. K. Shrigondekar, M. A., 3 vols., vol. I 1925 | 2-12 | |
| 29. Nalavilāsa : a drama by Hemačandraśūri, pupil of Hemačandraśūri, describing the Paurāṇika story of Nala and Damayanti edited by G. K. Shrigondekar and L. B. Gandhi, 1926 | 2-4 | |
| 30, 31. Tattvasaṅgraha : a Buddhist philosophical work of the 6th century by Santarakṣita, a Professor at Nalanda with Pañjikā (commentary) by his disciple Kamalaśīla, also a Professor at Nalanda : edited by Pandit Embar Krishnaswami Sastry with a Foreword in English by B. Bhattacharyya, M. A., Ph. D., 2 vols. 1926 | 24-0 | |

- Guzerat, by Bālachandrasūri (from Modheraka or Modhera in Kadi Prant, Baroda State), contemporary of Vastupāla, composed after his death for his son in Samvat 1296 (A D. 1240): edited by C. D. Dalal, 1917 1-8
- 8 Rūpakaṣaṭkam : six dramas by Vatsarāja, minister of Paramardideva of Kalinjara, who lived between the 2nd half of the 12th and the 1st quarter of 13th century : edited by C D Dalal, 1918 2-4
- 9 Mohaparājya
overcoming o
sion of Kun
to Jainism,
deva, son of
to 1232: edit
tion and Appendices by C. D. Dalal, 1918 .. 2-0
10. Hammīramadamardana : a drama glorifying the two brothers Vastupāla and Tejapāla and their King Viradhavala of Dholka, by Jayasimhasūri, pupil of Virasūri, and an Ācārya of the temple of Munisuvrata at Broach, composed between Samvat 1276 and 1286 or A D 1220 and 1239 : edited by C. D Dalal, 1920. 2-0
11. 1
- 2-4
12. Mahāvīdyāvidambana : a work on Nyāya Philosophy, by Bhatta Vādindra who lived about A.D. 1210 to 1274: edited by M. R. Telang, 1920 .. 2-8
13. Prācinagurjarakāvysangraha : a collection of old Guzerati poems dating from 12th to 15th centuries A.D.: edited by C. D. Dalal, 1920 .. 2-4
- 14 7-8
- 15 Gaṇakārikā : a work on Philosophy (Pāsupata School) by Bhāsarvajña who lived in the 2nd half of the 10th century : edited by C. D. Dalal, 1921 .. 1-4
16. Saṅgītamakaranda : a work on Music by Nārada : edited by M. R. Telang, 1920 .. 2-0
17. Kavīndrācārya List : list of Sanskrit works in the collection of Kavīndrācārya, a Benares Pandit (1656 A.D.): edited by R. Anantakrishna Shastry, with a foreword by Dr Ganganatha Jha, 1921 .. 0-12
18. Vārāhaḡḡhyasūtra : Vedic ritual (domestic) of the Yajurveda : edited by Dr. R. Shamasastri, 1920 .. 0-10
19. Lekhapaddhati : a collection of models of state and private documents, dating from 8th to 15th centuries

12. K : : abulary:
Pandi
13. Padmānanda Mahākāvya : giving the life history of Rābbhadēva, the first Tirthānkara of the Jains by Amara-chandra Kavi of the 13th century: edited by H. R. Kapadia, M.A.
14. Daṇḍaviveka ; a comprehensive Penal Code of the ancient Hindus by Vardhamāna of the 15th century A D : edited by Mahamahopadhyaya Kamala Krishna Smrititirtha
15. Nityotsava : a supplement to the Paraśurāmakaṣpasūtra by Umānandanātha : second edition by Swami Trivikrama Tirtha
16. Saktisaṅgama Tantra : a voluminous compendium of the Hindu Tantra comprising four books on Tara, Kālī, Sundarī and Chinnamastā : edited by B Bhattacharyya, Ph.D.
17. Pārānanda Sūtra : an ancient Tāntric work of the Hindus in Sūtra form giving details of many practices and rites. edited by Swami Trivikrama Tirtha.
18. Udbhaṣālaṅkāravivṛti : an ancient commentary on Udbhaṭa's Kāvyaṅkāraśraṅgaha generally attributed to Mukula Bhaṭṭa (10th century A.D.): edited by K. S. Ramaswami Sastrī.
19. Nāṭyadarpaṇa, Vol II: introduction in Sanskrit giving an account of the antiquity and usefulness of the Indian drama, the different theories of Rāsa, and an examination of the problems raised by the text: by L. B. Gandhi.
20. Śabdaratnasamuccaya : an interesting lexicon in Sanskrit by an anonymous author, compiled during the reign of the Mahratta King Saḥāji: edited by Parāśa Vāṭhala Sastrī, Sanskrit Paṭhāśālā, Baroda.
21. Iyāsiddhi : on Vedānta philosophy by Viśvāśītana disciple of Ayaśātma with the author's own commentary edited by M. Hiriyanna, M.A., Retired Professor of Sanskrit, Maharaja's College, Mysore



12. **Kalpadrūkoṣa**, Vol. II: indexes and vocabulary; edited by the late Mahamahopadhyaya Pandit Ramavatara Sarma Sahityācārya of Patna.
13. **Padmānanda Mahākāvya**: giving the life history of Rābhadrava, the first Tirthaṅkara of the Jainas by Amaraachandra Kavi of the 13th century: edited by H R Kapadia, M A.
14. **Daṇḍaviveka**: a comprehensive Penal Code of the ancient Hindus by Vardhamāna of the 15th century A D : edited by Mahamahopadhyaya Kamala Krishna
15. **Nāṭya Darpaṇa** :
krama Tirtha
16. **Śaktisāngama Tantra**: a voluminous compendium of the Hindu Tantra comprising four books on Tārā, Kālī, Sundarī and Chhinnamastā: edited by B Bhattacharyya, Ph D.
17. **Pārānanda Sūtra**: an ancient Tāntrio work of the Hindus in Sūtra form giving details of many practices and rites: edited by Swami Trivikrama Tirtha.
18. **Udbhaṭālaṅkāravivṛti**: an ancient commentary on Udbhaṭa's Kāvyaḷaṅkārasārasaṅgraha generally attributed to Mukula Bhaṭṭa (10th century A D.). edited by K. S. Ramaswami Sastri.
19. **Nāṭyadarpaṇa**, Vol II: introduction in Sanskrit giving an account of the antiquity and usefulness of the Indian drama, the different theories of Rāsa, and an examination of the problems raised by the text: by L. B Gandhi.
20. **Śabdaratnasamuccaya**: an interesting lexicon in Sanskrit by an anonymous author, compiled during the reign of the Mahratta King Sahaḷi: edited by Pandit Viṭṭhala Śāstri, Sanskrit Pathaśāla, Baroda.
21. **Iṣṭasiddhi**: on Vedānta philosophy by Vimuktātmā, disciple of Avyayātmā with the author's own commentary: edited by M. Hiriyanna, M.A., Retired Professor of Sanskrit, Maharaja's College, Mysore.

